ढोढ़ाय चरितमानस

(विश्व का एक महान् उपन्यास)

•







ढोड़ाय चरितमानस

सतीनाथ भादुड़ी





भूमिका

स्वर्गीय श्री सतीनाथ भादुड़ी का कथा-साहित्य बंगला-भाषा का कीमती दस्तावेज है। उन्होंने समाज के हर तबके के लोगों का बड़ा ही गहन अध्ययन किया है। मन के भीतर उठने वाले भावों का चित्रण करने में वे अतुलनीय हैं। उनके साहित्य के तमाम पात्र हमारी आँखों के आगे जीवित इन्सानों की तरह साकार हो उठते हैं। यह उनकी कला की महानता है।

भादुड़ी जी ने भारतीय स्वतंत्रता-आन्दोलन को अपने महान् उपन्यास 'ढोड़ाय चरितमानस' में आधार बनाया है। आजादी के लिये संघर्ष करते हुए अधपेटे, अधनंगे, निरक्षर लोगों की जैसी मर्मान्तिक कथा उन्होंने कही है, अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने लालची भू-पतियों, स्वार्थी व्यावसायियों तथा अवसरवादी बुद्धिजीवियों की दो-रंगी भूमिका का निर्देश उसी समय कर दिया, जब देश आजाद होने को था। उनके भविष्य-द्रष्टा होने का सबूत आज हमें मिल रहा है।

उन्होंने शोषण, अत्याचार और सामाजिक दुर्नीतियों को निकट से देखा था। समाज के दलित, शोषित और उपेक्षितों के प्रति उनके मन में अपार स्नेह था। यही कारण है कि उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम राम की महत्ता, ततमा-वंश में पैदा एक निर्धन, निरीह, निरक्षर 'ढोड़ाय' को दी है और वर्ण-भेद की समर्थक तुलसी कृत 'रामायण' की आज के समाज में परिवर्तित भूमिका की वांछनीयता दिखलाने के लिये रामायण रची—ततमा, कोइरी धाङ्गरों की महिमा उद्गायक अपने उपन्यास को 'ढोड़ाय चरितमानस' कहा। भारतीय समाज-व्यवस्था के ऐसे नये चिन्तकों ने ही, सही अर्थों में, प्रजातान्त्रिक, समाजवादी भारत की बुनियाद डाली है।

'ढोड़ाय चरितमानस' एक महान् उपन्यास है। वह अपने पात्र-पात्रियों को सम्पूर्ण रूप-रेखाओं के साथ पाठकों के मन पर उतार देता है। सही प्रवृत्तियों के प्रतीकों के प्रति ममता और गलत के प्रति विकर्षण पैदा करता है। ऐसे उपन्यास को पढ़ लेने पर उसके पात्रों और आदर्शों का प्रभाव वर्षों तक मन पर रहता है। इसलिये, इस उपन्यास को 'नवोदित भारत का महाकाव्य' कहा जा सकता है।

इसका अनुवाद हिन्दी के प्रसिद्ध कथा-शिल्पी मधुकर गंगाधर ने किया है। उनकी भी कथा-भूमि पूर्णियाँ ही है। अतः बंगला के इस 'कठिन भाषा' वाले उपन्यास

का अनुवाद उन्होंने बड़े ही सहज ढंग से किया है। भादुड़ी जी ने बंगला में भी पूर्णियाँ की लोक-भाषा 'अंगिका' के शब्द एवं मुहावरों का बहुतायत से प्रयोग किया है। यह अनुवाद हू-ब-हू 'मूल उपन्यास' जैसा बन पड़ा है।

इस महान् उपन्यास के हिन्दी-संस्करण का लोग स्वागत करेंगे, ऐसी मेरी आशा है। मेरे ख्याल से, ऐसे उपन्यास को तमाम भारतीय भाषाओं में आना चाहिए।

—देवकान्त बरुआ

२३, तुगलकरोड
नई दिल्ली

अनुवादकीय

लगभग पन्द्रह वर्ष पहले, मैंने कहा था : भादुड़ी जी, 'ढोड़ाय चरितमानस' को हिन्दी में आना चाहिये।

उन्होंने सरल ढंग से मुस्कराते हुए कहा था : जरूर आना चाहिये। मगर यह काम तुम्हें ही करना है।

फिर, जब भी घर जाता, भादुड़ी जी से भेंट होती और वे अनुवाद और प्रकाशन सम्बन्धी चर्चा करते। मैं प्रकाशन के लिये उद्योग करता रहा। और, एक दिन सुना, वे इस पृथ्वी पर नहीं रहे।....काश ! यह हिन्दी अनुवाद उनके जीवित रहते छप पाता ! अब, इस पुस्तक का प्रकाशन मेरे लिये कर्त्तव्य है, उछाह नहीं। कर्त्तव्य इसलिये भी कि हिन्दीवाले काफी दिनों से इस पुस्तक की प्रतीक्षा में हैं।

अनुवाद में अनन्य सहयोग प्रो० दीपक सेन तथा श्रीमती मंजुला सिंह का रहा है।

पुस्तक के प्रकाशन का श्रेय असमिया के ख्यात-कवि तथा भारत सरकार के पेट्रोलियम तथा रसायन मंत्री श्री देवकान्त बरुआ को है।

मैं इनलोगों का कृतज्ञ हूँ।

—डॉ० मधुकर गंगाधर

प्रथम खंड



आदि काण्ड

जिरानिया विवरण

अयोध्या जी नहीं—यह है जिरानिया। राम-चरित-मानस में इसका उल्लेख है—जीर्णारण्य। खुद नहीं पढ़ सकते तो मिसिर जी से पढ़वा लीजिये। यह अतीत में जैसा था, आज भी वैसा ही है। बलुआही जमीन पर छितराया हुआ झरबेरियों का जंगल। रेल-गाड़ी के स्टेशन पहुँचने के पहले ही औंघाते हुए यात्री को बगलगीर कोहनी मार कर जगाते हुए कहता है—जंगल आ गिया, जिरानिया आ गिया।

ततमाटोली के लोग इसी को कहते हैं—टौन। जैसा-तैसा हेंच-पेंच सहर नहीं, मा""आ ""री सहर""अ"" ऽ-ऽ। पीरगंज से भी बड़ा। बिसारिया से भी बड़ा। पीरगंज में 'कलस्टर साहब' की कचहरी है? बिसारिया में 'धरमसाला' है? पादरी साहब का 'गिरजा' है? मा""आ री सहर जिरानिया। क्षण-क्षण सड़क होकर टमटम गुजरती है—पक्की सड़क होकर। दो तल्ला""पक्का, दोतल्ला मकान! चेरमैन साहेब का।

शहर के 'बाबू-भैया' बंगाली; वकील, मोख्तार, डॉक्टर, अमला—सब। उनके बाल-गोपालों को भी इस शहर पर ततमाटोली के लोगों की तरह ही नाज़। उन्हीं दिनों, एक बार, विराट-वपु राय साहेब ने काली-पूजा-समिति की रिपोर्ट पढ़ते समय, मुँह सिकोड़ते हुए जिरानिया को 'एक अदना-सा गाँव' कह दिया, तो लड़कों का दल चीत्कार कर उठा और रिपोर्ट से 'गाँव' की संज्ञा निकाल देने के लिये आग्रह किया था। उन लोगों के नागरिक-गर्व को आघात लगा था।



ततमाटोली की कथा

ऐसे ही शहर की 'सहरतली'—ततमाटोली। जब शहर है, तो 'सहरतली' होगी या नहीं? जिरानिया और ततमाटोली के बीच कोई गाँव नहीं। इसीलिये ततमाटोली को 'शहरतली' कहा जाता है। शहर से लगभग चार मील की दूरी होगी; ततमालोग बोलते हैं—कोसभर। ततमाटोली से पश्चिम, सेमल-पेड़ के निकट, बकरहट्टा को परती है, उसके बाद है पांडरटोली। दक्षिण की तरफ से 'कारीकोशी' की सूखी धारा गुजरती है—लोग कहते हैं—'मरनाधार'। परती के बीचोबीच गुजरती है—कोशीसिलीगुड़ी रोड। ततमाटोली के लोग इस सड़क को कहते हैं—'पक्की'।

संभवत: ततमा जाति के लोग तांती हैं। वे जब यहाँ आये थे, तो सिर्फ एक आदमी के पास गमछा बुनने का टूटा-भांगा तांत था। दरभंगा जिले के रोसड़ा गाँव के निकट से, बहुत दिन हुए, रोजी-रोटी की खोज में ये लोग यहाँ आये। उन्हें किसी ने आज तक कपड़ा बुनते नहीं देखा। ये लोग भी अपने को तांती नहीं कहते। ये खेती-पाती नहीं करते। गृहवास की जमीन के अलावे जमीन की इच्छा नहीं करते। और, घर में एक जून का भोजन रहने से काम पर नहीं जाते। लगता है, दरभंगा जिले में वह भी नहीं जुट पाता था। इसी से फूकन मंडल के आगे आकर 'धरना' दिया था। वे, उस समय, एक बड़े किसान थे। उन्हें 'जमींदार' बनने का बड़ा शौक। नाम-मात्र का खजाना लेकर उन्होंने ततमालोगों को, लगभग जबर्दस्ती, इस जमीन पर बसाया था। घर बनाने के लिये अपनी ओर से खर-बांस दिया था। लेटर-पैड पर मोनोग्राम बनवाया था—बकरहट्टा स्टेट, ड्योढ़ी फूकन नगर। किन्तु यह नाम जुबान पर चढ़ नहीं पाया। नाम हो गया—ततमाटोली। वे जब तक जीवित थे, रोज एक बार यहाँ आते थे। उन्हें आते देखकर लड़के रास्ते से हट जाते और बोलते—हट जाओ! हट जाओ! जमींदार साहेब का कैम्प ततमाटोली जा रहा है—निमस्तिन की जेब में स्टेट की कचहरी के साथ। मोटे लेन्स के चश्मे के भीतर से वे नित्य धांङरटोली की ओर—हरे-भरे बांस-वन के परे धांङरों के साफ-सुथरे फूस के घर, जैसे वे यहीं से देख पाते थे। आंगन, बरामदा, आमगाछ के नीचे फूस की बदारियाँ—सभी साफ-सुथरे, झकाझक। लोग किच-किच काले—सुन्दर, स्वस्थ। वहाँ के छागल, कुत्ते, पेड़, नंगे बालक—जैसे इतनी दूर से ही दिखलाई पड़ते हैं। केले पत्ते की 'खार' में धोये हुए 'धप-धप उजले' वस्त्र। मांदल की आवाज जैसे कानों में आ रही हैं—पिड़ि····पिड़ि···

बकरहट्टा-स्टेट के जमींदार बाबू मन ही मन सोचते हैं—उनकी ततमा-प्रजा धांङरों की तरह क्यों नहीं हुई? धांङरों की तरह ठीक समय पर 'खजाना' क्यों नहीं देती? जमींदारी से रोजी-रोटी नहीं चले तो न चले, किन्तु प्रजा अगर साफ-सुथरी रहती है, गाँव-टोला देखने में सुन्दर लगे, तो जमींदार की इज्जत बढ़ती है! बंगाली वकील हरगोपाल बाबू ही कितने दिन हुए कि जिरानिया आये? तीस वर्ष भी तो नहीं हुए? जिस वर्ष रेल लाइन आई—बंगाली बाबू लोग चींटियों की तरह दल-के-दल आ धमके और शहर के इस किनारे बस गये। उस ओर साहबों का मोहल्ला है—साहबों ने ही रेल लाइन अपने मोहल्ले होकर मँगाई। उधर बंगालियों की दाल नहीं गली। वे लोग इधर आ गये। उन दिनों धांङर वहाँ रहते थे। लोग देखते ही वे भागते हैं। इसीलिये, वहाँ से भागकर वे लोग यहाँ आकर बसे, जहाँ आज हैं। हरगोपाल बाबू भारी बुद्धिमान—पैसा कमाना जानते हैं। कचहरी से नीलाम खरीदी—परती। लोग गाय-गोरू चराने के लिये भी खरीदने में हिचकते! वही 'परती' धांङरों के बीच में बांटी! और, वही जमीन आज किस तरह फूल-फल उठी है? इन किरिस्तान धांङरों की बंगालियों के साथ ही पटरी बैठती है! जाय जहन्नुम में! हे रामचन्द्र जी! कृपा

तुम्हारि सकल मगवाना''''यह बहुत पुरानी बात है।

इसके बाद, बहुत बार 'मरनाधार' में पानी आया और बकरहट्टा की परती हरी हुई, बहुत बार घेर पकने के समय सेमल-वन में फूलों की अग्नि जली, लू-बातास में सेमल-फूलों के उड़ने के समय 'पक्की' से लगे पाकड़ की नंगी डालियों में उगती हुई कोपलें ततमाटोली के अचार के लिये तोड़ी गईं। ततमाटोली का कोई अगर हिसाब लगाये, तो कहेगा—'ढेर साल' की बात; दस साल, बीस साल, एक कोड़ी, दो कोड़ी, तीन कोड़ी साल की बात। मन ही मन गुनने की मिथ्या चेष्टा करेगा—इस बीच 'झोटहा लोगों' ने कितनी बार स्नान किया? (ततमा की औरतें साधारणतः वर्ष में एक बार छठ के अवसर पर स्नान करती हैं।)



ततमाटोली महात्म्य

ततमाटोली में प्रवेश करते समय मदार-पेड़ की डालों से सर बचाना पड़ता है। प्रवेश करते-न-करते टोली की दुर्गन्ध नाक पर छा जाती है—सूखे पत्तों की गंध। फूस के घर—टेढ़े-पिचके; दियासलाई का खोल पैर के नीचे पड़ने पर पिचक जाता है, उसे फिर से अपने आकार में कर देने पर जैसा दिखलाई देता है, ठीक वैसे ही लगते हैं यहाँ के घर। साफ वस्त्र देखकर यहाँ के कुत्ते भौंकने लगते हैं। कमर में करधनी बाँधे नंगे बच्चे भय से घर के भीतर भाग जाते हैं। बाँस की मचान पर धूर खाता कंकालवत अर्द्धनग्न बूढ़ा भी आदर देने के लिये उठ-बैठने की चेष्टा करता है। लड़कियाँ, किन्तु, जरा अन्य किस्म की हैं। इसके घर की 'पिछात' और उसके घर की 'ओलती' के बीच से रास्ता है। काई और कुकुरमुत्ता के हल्दिया फूलों भरे 'एक-चलिया' के नीचे बैठकर, जो लड़की तम्बाकू पी रही है, वह न तो हुक्के को रखेगी और न सहस्र-खंडी वस्त्र के भीतर से झाँकते शरीर को ढकने की चेष्टा करेगी। कुएँ के निकट झगड़ा एकरस चलता रहता है—कोई अवरोध नहीं मानता। तेल का बोतल हाथ में लिये जाती हुई बूढ़ी, हो सकता है, देखकर फिक्क-से हँस दे और पूछ बैठे; बाबू, किधर जायेंगे?

यह हुआ बाहरी रूप, लेकिन बाहरी रूप ही तो सब कुछ नहीं!

ततमाटोली के लोग कहते हैं—रोजा, रोजगार, रामायन, इसी तीन से जीवन चलता है। असुख-बिसुख, आपद-विपद में रोजा की जरूरत होती है। रोजा—याने गुनी, ओझा। रोजगार 'घरामी' का और कुएँ से बालू निकालने का। जिरानिया मे अधिकांश घर फूस के हैं और प्रत्येक घर में कुआँ। किसी तरह चल ही जाता है। पढ़ाई-लिखाई से कोई वास्ता नहीं, किन्तु बात-बात पर रामायन की नजीर देंगे। मर्द

संभवतः ततमा जाति के लोग तांती हैं। वे जब यहाँ आये थे, तो सिर्फ एक आदमी के पास गमछा बुनने का टूटा-भांगा तांत था। दरभंगा जिले के रोसड़ा गांव के निकट से, बहुत दिन हुए, रोजी-रोटी की खोज में ये लोग यहाँ आये। उन्हें किसी ने आज तक कपड़ा बुनते नहीं देखा। ये लोग भी अपने को तांती नहीं कहते। ये खेती-पाती नहीं करते। गृहवास की जमीन के अलावे जमीन की इच्छा नहीं करते। और, घर में एक जून का भोजन रहने से काम पर नहीं जाते। लगता है, दरभंगा जिले में वह भी नहीं जुट पाता था। इसी से फूकन मंडल के आगे आकर 'धरना' दिया था। वे, उस समय, एक बड़े किसान थे। उन्हें 'जमींदार' बनने का बड़ा शौक। नाम-मात्र का खजाना लेकर उन्होंने ततमालोगों को, लगभग जबर्दस्ती, इस जमीन पर बसाया था। घर बनाने के लिये अपनी ओर से खर-बांस दिया था। लेटर-पैड पर मोनोग्राम बनवाया था—बकरहट्टा स्टेट, ड्योढ़ी फूकन नगर। किन्तु यह नाम जुबान पर चढ़ नहीं पाया। नाम हो गया—ततमाटोली। वे जब तक जीवित थे, रोज एक बार यहाँ आते थे। उन्हें आते देखकर लड़के रास्ते से हट जाते और बोलते—हट जाओ! हट जाओ! जमींदार साहेब का कैम्प ततमाटोली जा रहा है—निमस्तिन की जेब में स्टेट की कचहरी के साथ। मोटे लेन्स के चश्मे के भीतर से वे नित्य धांङरटोली की ओर देखते—हरे-भरे बाँस-वन के परे धांङरों के साफ-सुथरे फूस के घर, जैसे वे यहीं से देख पाते थे। आँगन, बरामदा, आमगाछ के नीचे फूस की बदारियाँ—सभी साफ-सुथरे, झकाझक। लोग किच-किच काले—सुन्दर, स्वस्थ। वहाँ के छागल, कुत्ते, पेड़, नंगे बालक—जैसे इतनी दूर से ही दिखलाई पड़ते हैं। केले पत्ते की 'खार' में धोये हुए 'धप-धप उजले' वस्त्र। मांदल की आवाज जैसे कानों में आ रही हैं—पिड़ि···पिड़ि···

बकरहट्टा-स्टेट के जमींदार बाबू मन ही मन सोचते हैं—उनकी ततमा-प्रजा धांङरों की तरह क्यों नहीं हुई? धांङरों की तरह ठीक समय पर 'खजाना' क्यों नहीं देती? जमींदारी से रोजी-रोटी नहीं चले तो न चले, किन्तु प्रजा अगर साफ-सुथरी रहती है, गाँव-टोला देखने में सुन्दर लगे, तो जमींदार की इज्जत बढ़ती है! बंगाली वकील हरगोपाल बाबू ही कितने दिन हुए कि जिरानिया आये? तीस वर्ष भी तो नहीं हुए? जिस वर्ष रेल लाइन आई—बंगाली बाबू लोग चींटियों की तरह दल-के-दल आ धमके और शहर के इस किनारे बस गये। उस ओर साहबों का मोहल्ला है—साहबों ने ही रेल लाइन अपने मोहल्ले होकर मँगाई। उधर बंगालियों की दाल नहीं गली। वे लोग इधर आ गये। उन दिनों धांङर वहाँ रहते थे। लोग देखते ही वे भागते हैं। इसीलिये, वहाँ से भागकर वे लोग यहाँ आकर बसे, जहाँ आज हैं। हरगोपाल बाबू भारी बुद्धिमान—पैसा कमाना जानते हैं। कचहरी से नीलाम खरीदी—परती। लोग गाय-गोरू चराने के लिये भी खरीदने में हिचकते! वही 'परती' धांङरों के बीच में बांटी! और, वही जमीन आज किस तरह फूल-फल उठी है? इन किरिस्तान धांङरों की बंगालियों के साथ ही पटरी बैठती है! जाय जहन्नुम में! हे रामचन्द्र जी! कृपा

तुम्हारि सकल भगवाना''''यह बहुत पुरानी बात है।

इसके बाद, बहुत बार 'मरनाधार' में पानी आया और बकरहट्टा की परती हरी हुई, बहुत बार बेर पकने के समय सेमल-वन में फूलों की अग्नि जली, लू-बातास में सेमल-फूलों के उड़ने के समय 'पक्की' से लगे पाकड़ की नंगी डालियों में उगती हुई कोंपलें ततमाटोली के अचार के लिये तोड़ी गईं। ततमाटोली का कोई अगर हिसाब लगाये, तो कहेगा—'ढेर साल' की बात; दस साल, बीस साल, एक कोड़ी, दो कोड़ी, तीन कोड़ी साल की बात। मन ही मन गुनने की मिथ्या चेष्टा करेगा—इस बीच 'मोटहा मोगीं' ने कितनी बार स्नान किया? (ततमा की औरतें साधारणतः वर्ष में एक बार छठ के अवसर पर स्नान करती हैं।)

□

ततमाटोली महात्म्य

ततमाटोली में प्रवेश करते समय मदार-पेड़ की डालों से सर बचाना पड़ता है। प्रवेश करते-न-करते टोली की दुर्गन्ध नाक पर छा जाती है—सूखे पत्तों की गंध। फूस के घर—टेढ़े-पिचके; दियासलाई का खोल पैर के नीचे पड़ने पर पिचक जाता है, उसे फिर से अपने आकार में कर देने पर जैसा दिखलाई देता है, ठीक वैसे ही लगते हैं यहाँ के घर। साफ वस्त्र देखकर यहाँ के कुत्ते भौंकने लगते हैं। कमर में करधनी बाँधे नंगे बच्चे भय से घर के भीतर भाग जाते हैं। बाँस की मचान पर धूप खाता कंकालवत अर्द्धनग्न बूढ़ा भी आदर देने के लिये उठने-बैठने की चेष्टा करता है। लड़कियाँ, किन्तु, जरा अन्य किस्म की हैं। इसके घर की 'पिछात' और उसके घर की 'ओलती' के बीच से रास्ता है। काई और कुकुरमुत्ता के हल्दिया फूलों भरे 'एकचलिया' के नीचे बैठकर, जो लड़की तम्बाकू पी रही है, वह न तो हुक्के को रखेगी और न सहस्र-खंडी वस्त्र के भीतर से झाँकते शरीर को ढकने की चेष्टा करेगी। कुएँ के निकट झगड़ा एकरस चलता रहता है—कोई अवरोध नहीं मानता। तेल का बोतल हाथ में लिये जाती हुई बूढ़ी, हो सकता है, देखकर फिक-से हँस दे और पूछ बैठे; बाबू, किधर जायेंगे?

यह हुआ बाहरी रूप, लेकिन बाहरी रूप ही तो सब कुछ नहीं!

ततमाटोली के लोग कहते हैं—रोजा, रोजगार, रामायन, इसी तीन से जीवन चलता है। असुख-बिसुख, आपद-बिपद में रोजा की जरूरत होती है। रोजा—याने गुनी, ओझा। रोजगार 'घरामी' का और कुएँ से बालू निकालने का। जिरानिया में अधिकांश घर फूस के हैं और प्रत्येक घर में कुआँ। किसी तरह चल ही जाता है। पढ़ाई-लिखाई से कोई वास्ता नहीं, किन्तु बात-बात पर रामायन की नजीर देंगे। मर्द

बोलेंगे—गांव में है पंचैती, केवल पंचैती ! पंचैती याने महतो—मड़र। चार मातवर हुए 'नायव'। 'लुटिश' तामिल करनेवाला और लोगों को बुलाने वाला—'छड़ीदार'। महतो और चार नायव—पांच जन—पंच।



धांङरटोली वृत्तान्त

धांङरटोली से ततमाटोली का चिरकालिक झगड़ा और तनाव चला आ रहा है। धांङर के पूर्व-पुरुष असल में उरांव थे। वे लोग कव संताल परगना से गंगा के इस पार आ गये, कोई नहीं जानता। किन्तु आज भी, संताल परगना के उरांवों के साथ उनकी भाषा मिलती है। धांङर आपसी वातचीत के अलावे हिन्दी में वात करते हैं।

धांङरों में कई घर क्रिश्चियन हैं। अधिकांश धांङर 'साहवों' की कोठी में माली का काम करते हैं। जिन्हें माली का काम नहीं मिलता है या करना नहीं चाहते, वे अन्य काम करते हैं। वेर की डाल काटने से केले का मोचा काटने तक, किसी भी काम से उन्हें आपत्ति नहीं। लोग काफी हृष्ट-पुष्ट हैं और काम में फाँकी नहीं देते, जिससे हर आदमी उन्हें मजदूरी में रखना चाहता है।

धांङर, ततमा को 'गन्दा जानवर' कहता है और ततमा, धांङरों को 'वुरवक किरस्तान'।

धांङरटोली 'धरमपूर परगना' में पड़ता है और ततमाटोली 'हवेली परगना' में। राजा टोडरमल के युग में परगना का सृजन हुआ था। उस समय दोनों परगने की सीमा के रूप में एक ऊँचा रास्ता था। उसी को पक्का वनाकर अव नाम दिया गया है : कोशी-सिलीगुड़ी रोड। किन्तु आज यह सड़क सिर्फ धरमपूर परगना और हवेली परगना की सीमा-रेखा मात्र नहीं, यह धांङर तथा ततमा के हृदयों की विभाजक रेखा भी है।

छोटी-मोटी वातों को लेकर धांङरों और ततमाओं में झगड़ा लगा ही रहता है। ततमा आगे वढ़कर झगड़ा शुरू करता है। झगड़ा अच्छी तरह वझ जाने के वाद भागने का रास्ता नहीं ! मगर आदत जायेगी कहाँ ?



[illegible]

[illegible]

[illegible]

ततमाटोली के मुख्य रास्ते के किनारे एक विशाल पीपल-पेड़ है, जिसके नीचे सिन्दूर-सिक्त माटी का 'पिंडा' है। यही है ततमा टोली का 'गोसाईं'। गोसाईं के आगे एक विराट 'महिसासुर' (काठ, जिसमें फँसा कर छागल काटा जाता है) है। इस स्थान का नाम 'गोसाईं-थान' है। लोग संक्षिप्त कर बोलते हैं—थान। प्रतिवर्ष भ्रातृद्वितीया या उसके दूसरे दिन 'महिसासुर' पर तेल-सिन्दूर पोता जाता है, एवं पताका गाड़ी जाती है और चन्दा उगाह कर एक भेड़ा खरीदा जाता है और उसकी बलि दी जाती है।

यही 'थान' बौका बाबा का स्थान है। बौका बाबा के पहले या बाद में ततमाओं के बीच कोई साधु-संन्यासी नहीं हुआ। छुटपन में बौका अपनी माँ के साथ भिक्षा के लिये निकलता था। शहर के गृहस्थों के दरवाजे पर 'खोखा आ···नू-नू···ऊँ-ऊँ' की पुकार सुनते ही घर के लोग बोल उठते थे—लो, बौका माय आ गई, अब दो घंटे तक यह रें-रें चलेगा। मातायें बच्चों को भय दिखलातीं—रोओगे तो बौका-माय से पकड़ा देंगे।

यही बौका बड़े होने पर, जब दाढ़ी-मूँछें उग आईं, एक दिन एक छोटा-सा त्रिशूल लिये 'गोसाईं-थान' में बैठा देखा गया। टोले के लोग देखने आये तो बौका ने त्रिशूल को ईंट से ठोंककर अच्छी तरह धरती में गाड़ दिया। उस दिन से 'थान' ही उसका स्थान हो गया। इतने दिन का बौका उस दिन से बौका बाबा हो गया।

कुछ दिन बाद की बात है। गोसाईं-थान के निकट ही, रास्ते के किनारे, वर्षा में गिरा हुआ एक पाकड़ का पेड़ था। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की चीज, किन्तु ततमा लोग नियमित रूप से सूखी लकड़ी काटते आ रहे थे। जड़ की मोटी लकड़ी को जमीन खोद कर काट निकाला था। केवल मोटा तना पड़ा था। एक ओर पड़ा हुआ तना एक रोज सीधा खड़ा देखा गया। और, देखा गया कि बौका बाबा उस पेड़ की परिक्रमा कर रहे हैं तथा प्रत्येक परिक्रमा के बाद सूर्य को नमस्कार कर रहे हैं। लोगों की भीड़ लग गई। रेवन 'गुनी' इसे जिन्न का काण्ड कहते हैं। चश्मा लगाये पेशकार साहब राय देते हैं: डिस्ट्रिक्ट बोर्ड वाले रास्ते के किनारे डाल रोपकर पेड़ लगाते हैं, जिसके 'मुसरा' नहीं होता। वैसा नहीं होने से इस तरह कैसे होगा? बिजन बाबू वकील का कॉलेज-पढ़ा बेटा फरीदपुर के सूर्योपासक पेड़ की कथा शुरू करता है। स्कूली छोकरे आपस में चर्चा करते हैं—नन्द दा पंडित क्यों नहीं होगा! वह तो कॉलेज में बूटानी (बोटानी) पढ़ता है। इन बातों में ततमा बांकुरों को नहीं रखता।

उस दिन से बौका बाबा की प्रसार-प्रतिपत्ति कई गुणा ज्यादा बढ़ गई। उनका नाम ततमाटोली के बाहर भी फैलने लगा।

गोसाईं-थान की वेदी पर तेल-सिन्दूर का लेप और भी गहरा हो उठा। बाबा के स्थान के लिये लोग खुद-ब-खुद खर-बाँस-डोरी पहुँचाने लगे।

ततमा लोगों में व्याह के समय वर-पक्ष से कन्या-पक्ष को रुपये दिये जाते हैं। ततमाटोली की बूढ़ियाँ बोलती हैं—आह! रुपयों के अभाव में बौका व्याह नहीं कर पाया और संन्यासी हो गया।

ततमा में व्याह होने के बाद बेटा, साहबों की तरह, माँ-बाप से अलग हो जाता है। इसी भय से बौका की माँ ने भिक्षा से प्राप्त पैसों को किसी दिन बौका के हाथ पर नहीं रखा।

माँ के मरने के दिन, जब बौका नारियल-खोली से मुँह में पानी दे रहा था, तो माँ ने बेटे को खींचकर कलेजे से लगाते हुए कहा था—बेटा! अजोध्या जी जाकर वास करना, वहाँ खूब भिच्छा मिलती है। पीपल का पेड़ कभी नहीं काटना। धांङर-टोली का 'करमा-धरमा' नाच देखने कभी मत जाना, उन लोगों की छोकरियाँ बड़ी खराब होती हैं। अदौरी खाने की बड़ी इच्छा हो रही है। नारियल की खोली जहाँ देखना, उठा लेना, वह जूठी नहीं होती!

इसके बाद की बात माँ के मुख के निकट कान ले जाने पर भी सुन सकना संभव नहीं था। सिर्फ दो सूखे होंठों को हिलते देखा था। माँ की अधखुली आँखों के कोर से ढरकने वाले अश्रु-बिन्दुओं को लंगोटी का छोर खोल कर पोंछ डाला था। होंठों के किनारे लगी छोटी 'पिपड़ी' को दो अँगुलियों से पकड़ कर दूर फेंक दिया—मारने की इच्छा नहीं हुई।



बाल काण्ड

ढोड़ाय का जन्म

बुधनी को अच्छी तरह याद है, ढोड़ाय के जन्म के ठीक पाँचवें दिन 'टौन' में भारी 'तमाशा' हुआ था। यदि ढोड़ाय एक दिन पहले जन्मा होता, तो बुधनी, छठी का स्नान कर, तमाशा देखने गई होती, किन्तु अभी लोग निकलने देंगे! लहसुन-गुड़ और पीसे हुए अदरख को एक साथ सिद्धकर तेल में भूँज दिया—बैठकर खाओ! मरन! बुधनी बैठकर रोती है।

उसका पति बड़ा ही सज्जन है। लोग बोलते हैं, वह बहुत सीधा-सादा है, जिससे रोजगार कम मिलता है। बुधनी खुद रोजगार करती है, इसलिये किसी प्रकार चल जाता है। उसके पति से तत्मालोग घर छाने के समय खपड़ा ढोलाता है, खपड़े की झोली लेकर सीढ़ी चढ़ाता है, पूस-माघ में कुआँ 'कारते' समय उससे ही अधिक देर तक पानी में काम कराता है।

बुधनी को रोते देखकर वह पूछता है—अभी क्यों रोने बैठी? बच्चे की तरफ देखो—गर्दन टेढ़ी क्यों किये है? तेरे लिये फिर दो पैसे की मसूर की दाल लानी होगी। मसूर की दाल कैसी गरम होती है—बस्स!

उसके पति ने कभी मसूर की दाल नहीं खाई। वही क्यों, किसी तत्मा ने नहीं खाई। इतनी गरम चीज खाने से शरीर में कुष्ठ हो जायेगा, इसी डर से। सिर्फ औरतें खाती हैं, वह भी बच्चा होने के बाद, क्योंकि उसके शरीर के रस को गर्मी से सुखाने की जरूरत होती है!

बुधनी बोलती है—हाँ, खाते ही, जैसे आग जल उठती है।

'मैं तमाशा देखकर आऊँगा, तो तुम्हें सब सुनाऊँगा—रो मत!'

उस दिन 'टौन' से 'तमाशा' देखकर लौटते समय ढोड़ाय के बाप का कलेजा धक्-धक् कर रहा था। उसके पास दो पैसे थे। तमाशा में उसने एक पैसे का एक पाकेट 'बत्तीमार' [लालटेन छाप सिगरेट, जिसका ट्रेड-नेम था 'रेड-लैम्प'] तथा एक पैसे की खैनी खरीदी। घर लौटकर बुधनी को मसूर-दाल के संबंध में क्या बतायेगा यही सोचते घर लौट रहा था; लोग उसे जितना बोका समझता है, वह उतना नहीं है!

'इस 'राजा के जुलूस' को देखना छोड़कर कौन दूकान खोलता है भला।' बोलते हुए वह घर में प्रवेश करता है!

बुधनी काफी देर से उसकी प्रतीक्षा कर रही थी—तमाशा की खबर सुनने के लिये।

'किसका ? कपिल राजा का जुलूस ?'

कपिल रेजा वेर के जंगल का ठेकेदार है—लाह का व्यापारी। उसी को सब 'कपिल राजा' कहते हैं।

'नहीं, रे ! विलेत के राजा का (दिल्ली दरबार १६३२ ई०) जिसके आगे कलस्टर तो कलस्टर, दरोगा तक काँपते हैं थर-थर-थर-थर....'

दरबार की बात अच्छी तरह ढोड़ाय के बाप की भी समझ में नहीं आई। मन ही मन सोचता, संभव है, यह जुलूस ही 'दरबार' कहलाता है। कहीं बुधनी यह सब पूछ नहीं बैठे, इसी डर से वह जल्दी-जल्दी जुलूस के हाथी-घोड़े-ऊँट का वर्णन शुरू कर देता है।

बाप रे ! कितने बड़े-बड़े हाथी ! सोने के झोल ओढ़े ! यह बड़े-बड़े दाँत—चान्दी से ढँके ! कितनी चान्दी थी ? उससे कितना गहना बन सकता है—हिसाब नहीं ! एक हाथी था, जिसके दाँत कद्दू बराबर थे। ऊँट चलते थे, टिम-टाम, टिम-टाम, आगे-पीछे, ठीक लँगड़े चतुरी की चाल समझो ! हाथी की पीठ पर चाँदी का हौदा—जिस पर कलस्टर साहेब, दूसरे हाथी पर बुध नगर के कुमार और कितने साहेब, कितने हाकिम थे—सबको क्या चीन्हा जा सकता ! सादा घोड़े पर भैसचरमैन साहेब ! की तेज घोड़ा ! टकस-टकस, टकस-टकस—क्या चाल थी ? उसके निकट जाने की किसकी हिम्मत ? छत्तीस बाबू की दुकान के बरामदे पर बंगाली स्त्रियों को जुलूस दिखाने के लिये चिक डाल दिया गया था—घोड़ा दोनों पैर उठाकर उस चिक पर डालना चाहे ! बाप रे ! ताल के फल जैसी बड़ी-बड़ी खुर !

बुधनी भय से चिहुँकती है—गे मैय्या ! सेऽन की ?

तमाशा की और भी अनेक खबर बुधनी सुनती है। उसके दुख की सीमा नहीं। ऊँट और कलस्टर साहेब को देखना रामजी ने उसकी किस्मत में लिखा ही नहीं था—वह भला किसको दोष दे !

बच्चा रो उठता है।

ढोड़ाय का बाप व्यस्त हो उठता है। ले-लें—दूध दे इसे। ऐसे मत उठाओ—'बिलड़वा' की गर्दन टूट जायेगी ! उसके बाद 'बिलड़वा' ढोड़ाय की ओर देखता है। हाथ भांजता है।

....ए नू नू ! एत्ता भात खाओगे...बकरी चराओगे....

बच्चे को दूध पिलाते बुधनी का कलेजा गर्व से भर उठता है। बच्चे को पिता द्वारा दुलार करते देख उसे हँसी आती है। तेरा 'बिलड़वा' अभी सुन सकता है ? अभी तो रोशनी की तरफ भी नहीं देखता है, और उसे ताली बजा कर दुलार किया जा रहा है ?...पागल !

ढोड़ाय का बाप आज बाल-बाल बच गया। तमाशा के वर्णन और बेटे के दुलार में मसूर दाल का नहीं लाना—ढक गया। किन्तु उसके मन में कचोट है—

बच्चा की खुराक माँ का दूध है, और माँ का दूध मजूर की दाल पर निर्भर है।

थोड़ी देर बाद महतो-पत्नी आती है। गृहस्थी की तदारुक करने। साथ ही, बुधनी अभी बच्ची ही तो है! माँ होने से क्या होता है—पेट से निकलते ही कोई सौरी-घर का विधि-विधान थोड़े जान लेता है? कब स्नान करने का दिन है। महतो-पत्नी के नहीं देखने-सुनने से काम कैसे चलेगा—और किसे गरज है यह सब देखने-सुनने की? महतो-पत्नी होने का दायित्व तो कम नहीं! आते ही बुधनी से पूछा—मजूर दाल में लहसुन का फोड़न दिया था या अदरख का? क्या? दुकान बन्द थी? किसने कहा? तुम्हारे 'पुरुख' ने? मैंने खुद देखा है कि दुकान खुली है, बल्कि मैंने नमक भी खरीदा है!···

इसके बाद महतो-पत्नी ढोढ़ाय के बाप को गाली-गलौज करती है। बुधनी चुप-चाप सकुचाती है। टोले के अन्य वयस्क पुरुष को महतो-पत्नी इस तरह निरवद ही डाँट नहीं सकती। लेकिन इस आदमी को तो कोई भी बात सुना सकता है।

महतो-पत्नी के चले जाने के बाद यह 'पुरुख' अपनी पत्नी के निकट जाकर सारी बातें सच-सच कह डालता है और अपनी गलती स्वीकारता है।

बुधनी मन ही मन हँसती है। ऐसे 'पुरुख' पर क्या गुस्सा कर, रहा जा सकता है! लोगों की हँसी-ठट्ठा भी नहीं समझ पाता। नहीं तो भला कल हें-हें करते हुए मुझसे कैसे कहता कि रतिया 'छड़ीदार' ने उससे पूछा है—बेटे के शरीर का रंग मकसूदन बाबू की तरह हुआ है क्या?

□

बुधनी का वैधव्य और पुनर्विवाह

ढोढ़ाय काफी मोटा-तगड़ा हुआ था। रंग भी काला नहीं, बल्कि उज्ज्वल श्यामवर्ण—उतना जिसे गेहुँआ रंग कहते हैं। उसका बाप साँझ पड़ते ही काम-धाम से आकर उसे गोद में ले बैठता। बेटा होने के बाद से उसने भजन-मंडली में रात को जाना बन्द कर दिया। इस बात को लेकर टोले के लोग खूब मजाक करते। बुधनी आँगन में चूल्हे के निकट बैठती और वह दरवाजे की फरकी के नजदीक बेटे को गोद में लेकर बैठता और बुधनी से गप-शप करता।

"चकर-हट्टा-आ-आ-
बरद-चट्टा-आ-आ-
सोजा-पट्टा-आ-आ-
···बूझती हो बुधनी! यह छौंरा बड़ा होकर हमारे वंश का नाम रखेगा!

'किसका ? कपिल राजा का जुलूस ?'

कपिल रेजा बेर के जंगल का ठेकेदार है—लाह का व्यापारी। उसी को सब 'कपिल राजा' कहते हैं।

'नहीं, रे! विलैत के राजा का (दिल्ली दरबार १९३२ ई०) जिसके आगे कलस्टर तो क़लस्टर, दरोगा तक कांपते हैं थर-थर-थर-थर....'

दरबार की बात अच्छी तरह ढोड़ाय के बाप की भी समझ में नहीं आई। मन ही मन सोचता, संभव है, यह जुलूस ही 'दरबार' कहलाता है। कहीं बुधनी यह सब पूछ नहीं बैठे, इसी डर से वह जल्दी-जल्दी जुलूस के हाथी-घोड़े-ऊँट का वर्णन शुरू कर देता है।

बाप रे! कितने बड़े-बड़े हाथी! सोने के झोल ओढ़े! यह बड़े-बड़े दांत—चान्दी से ढँके! कितनी चान्दी थी? उससे कितना गहना बन सकता है—हिसाब नहीं! एक हाथी था, जिसके दांत कद्दू बराबर थे। ऊँट चलते थे, टिम-टाम, टिम-टाम, आगे-पीछे, ठीक लँगड़े चतूरी की चाल समझो! हाथी की पीठ पर चाँदी का हौदा—जिस पर कलस्टर साहेब, दूसरे हाथी पर बुध नगर के कुमार और कितने साहेब, कितने हाकिम थे—सबको क्या चीन्हा जा सकता! सादा घोड़े पर भैसचरमैन साहेब! की तेज घोड़ा! टकस-टकस, टकस-टकस—क्या चाल थी? उसके निकट जाने की किसकी हिम्मत? छत्तीस बाबू की दुकान के बरामदे पर बंगाली स्त्रियों को जुलूस दिखाने के लिये चिक डाल दिया गया था—घोड़ा दोनों पैर उठाकर उस चिक पर डालना चाहे! बाप रे! ताल के फल जैसी बड़ी-बड़ी खुर!

बुधनी भय से चिहुँकती है—गे मैय्या! सेज्न की?

तमाशा की और भी अनेक खबर बुधनी सुनती है। उसके दुख की सीमा नहीं। ऊँट और कलस्टर साहेब को देखना रामजी ने उसकी किस्मत में लिखा ही नहीं था—वह भला किसको दोष दे!

बच्चा रो उठता है।

ढोड़ाय का बाप व्यस्त हो उठता है। ले-लें—दूध दे इसे। ऐसे मत उठाओ—'बिलड़वा' की गर्दन टूट जायेगी! उसके बाद 'बिलड़वा' ढोड़ाय की ओर देखता है। हाथ भाँजता है।

....ए नू नू! एत्ता भात खाओगे...बकरी चराओगे....

बच्चे को दूध पिलाते बुधनी का कलेजा गर्व से भर उठता है। बच्चे को पिता द्वारा दुलार करते देख उसे हँसी आती है। तेरा 'बिलड़वा' अभी सुन सकता है? अभी तो रोशनी की तरफ भी नहीं देखता है, और उसे ताली बजा कर दुलार किया जा रहा है?...पागल!

ढोड़ाय का बाप आज बाल-बाल बच गया। तमाशा के वर्णन और बेटे के दुलार में मसूर दाल का नहीं लाना—ढक गया। किन्तु उसके मन में कचोट है—

बच्चा की ताकत माँ का दूध है, और माँ का दूध मसूर की दाल पर निर्भर है।

थोड़ी देर बाद महतो-पत्नी आती है। गृहस्थी की तदारुक करने। लाख हो, बुधनी अभी बच्ची ही तो है! माँ होने से क्या होता है—पेट से निकलते ही कोई सौरी-घर का विधि-विधान थोड़े जान लेता है? कल स्नान करने का दिन है। महतो-पत्नी के नहीं देखने-सुनने से काम कैसे चलेगा—और किसे गरज है यह सब देखने-सुनने की? महतो-पत्नी होने का दायित्व तो कम नहीं! आते ही बुधनी से पूछा—मसूर दाल में लहसुन का फोड़न दिया था या अदरख का? क्या? दुकान बन्द थी? किसने कहा? तुम्हारे 'पुरख' ने? मैंने खुद देखा है कि दुकान खुली है, बल्कि मैंने नमक भी खरीदा है!…

इसके बाद महतो-पत्नी ढोड़ाय के बाप को गाली-गलौज करती है। बुधनी चाप-चाप ढकमाती है। टोले के अन्य वयस्क पुरुष को महतो-पत्नी इस तरह निश्चय ही डाँट नहीं सकतीं। लेकिन इस आदमी को तो कोई भी बात सुना सकता है।

महतो-पत्नी के चले जाने के बाद यह 'पुरख' अपनी पत्नी के निकट आकर सारी बातें सच-सच कह डालता है और अपनी गलती स्वीकारता है।

बुधनी मन ही मन हँसती है। ऐसे 'पुरख' पर क्या गुस्सा कर, रहा जा सकता है! लोगों की हँसी-ठट्ठा भी नहीं समझ पाता। नहीं तो भला कल हँ-हँ करते हुए मुझसे कैसे कहता कि रतिया 'छड़ीदार' ने उससे पूछा है—बेटे के शरीर का रंग मकसूदन बाबू की तरह हुआ है क्या?



बुधनी का वैधव्य और पुनर्विवाह

ढोड़ाय काफी मोटा-तगड़ा हुआ था। रंग भी काला नहीं, बल्कि उज्ज्वल श्यामवर्ण—उसमा जिसे गेहुँआ रंग कहते हैं। उसका बाप साँझ पड़ते ही काम-धाम से आकर उसे गोद में ले बैठता। बेटा होने के बाद से उसने भजन-मंडली में रात को जाना बन्द कर दिया। इस बात को लेकर टोले के लोग खूब मजाक करते। बुधनी आँगन में चूल्हे के निकट बैठती और वह दरवाजे की फरकी के नजदीक बेटे को गोद में लेकर बैठता और बुधनी से गप-शप करता।

"बकर-हट्टा-आ-आ-
बरद-बट्टा-आ-आ-
सोजा-पट्टा-आ-आ-
…बुझती हो बुधनी! यह छौंरा बड़ा होकर हमारे वंश का नाम रखेगा!

इसको चिमनी-बाजार के बूढ़े गुरुजी के पास भेजकर लिखना-पढ़ना सिखायेंगे। रामायन पढ़ना सीखेगा, टोले-मुहल्ले के लोगों को पढ़कर सुनायेगा। धांङरटोली, करगामा, दूर-दूर से लोग खजाने की रसीद पढ़वाने इसके पास आयेंगे। छौंरा खूब 'तेज' है, देखती नहीं हो, गोद लेते ही भट से छोटी-छोटी अंगुलियों से मेरी नाक और कान नोचना चाहता है! सोते हुए बच्चे के गालों को टीपते हुए जिज्ञासा करता है—ओनामासी धं, गुरुजी पतंग—क्या रे, पढ़ेगा?

पढ़-पढ़ कर हमारा बौआ भिरंगी तसीलदार की तरह जज साहेब के निकट कुर्सी पर बैठकर 'सेसरी' करेगा। मेरा सेसर-साहेब सोया मेरा सेसर-साहेब सो रहा है··· ले, बुधनी, चटाई झाड़कर इसे सुला दे!····"

किन्तु बुधनी को इतना सुख नहीं 'धारा'!

जिस साल जिरानिया के कलस्टर ने पहली बार शहर में हवागाड़ी (कलक्टर श्री किलबी साहब १६१३ ई०) मँगवाई थी, उसी साल ढोड़ाय के बाप की मृत्यु हो गई। ढोड़ाय उस समय लगभग डेढ़ वर्ष का था।

शहर में, देहात में, ततमाटोली में, विश्व-ब्रह्मांड तमाम जगह हल्ला—कलस्टर साहेब ने अनेक रुपये खर्च कर हवागाड़ी मँगाई है। अपने-आप चलेगी—बगैर घोड़े की। पानी और हवा के सहारे। आज पहली बार हवागाड़ी चलेगी। गाड़ी पर चढ़कर कलस्टर साहेब चानमारी-मैदान जायेंगे—जहाँ साहेब लोग फौजी वर्दी लगाकर बन्दूक चलाते हैं—दमा-दम्म् दमा-दम्म्·· कलस्टर साहेब का निशाना बड़ा 'पक्का'—साहेब का माली बड़का बुद्ध सुनाता है—मेम साहेब के हाथ में पियाला रखकर साहेब निशाना मारता है और पियाला चूर-चूर··। चानमारी के मैदान में किसी को जाने का हुक्म नहीं—वह साहेब-पाड़ा में पड़ता है। कोई अगर चला गया, तो सीधा हिसाब, नौ-दो-ग्यारह। एकदम सीधे फाटक!

उसी मैदान के किनारे-किनारे कमदाहा-रोड के दोनों ओर हवागाड़ी देखने के लिये लोग खड़े थे। ढोड़ाय के बाप को कई दिनों से बुखार था। अमरूद खाने से हुआ होगा, क्योंकि 'डाभ-नीबू' खाने का समय तो था नहीं। बुखार क्यों होता है, ततमा लोगों को बताने की जरूरत नहीं—वे जानते हैं, आसिन के बाद 'डाभ-नीबू' खाने से बुखार होता है, और आसिन के पहले अमरूद खाने से।

कलक्टर साहब चानमारी मैदान कब जायेंगे, किसी को मालूम नहीं। इसलिये लोगों के संग ढोड़ाय का बाप सवेरे से ही हवागाड़ी देखने के लिये धूप में खड़ा था। भीतर भय भी हो रहा था। इसलिये नहीं कि वह ऐसा सोचता हो कि हवागाड़ी के भीतर भूत-पिशाच बैठा रहता है, जो गाड़ी को चलाता है—ऐसा तो लड़के-बच्चे या देहाती-मुच्चड़ सोचते हैं। उसे भय हो रहा था कि हवागाड़ी कहीं उसकी देह पर होकर न गुजर जाय—कलपुर्जे की बात, कुछ कहा नहीं जा सकता।

वो आ रहे हैं···आ रहे हैं!

रेलगाड़ी की तरह आवाज हो रही है। कुछ दिखलाई नहीं पड़ता—केवल धूल का गुब्बार ! नहीं, धूल क्यों उड़ेगी—धुआँ है। धुआँ···धुआँकार ! अचानक हवागाड़ी की आवाज बन्द हो जाती है। धप्प से आग जल उठती है—पहले जरा-सी, फिर धू-धू कर। क्या हो गया हवागाड़ी को ? हवा और पानी की गाड़ी भस्म हो गई। अधिकांश लोग, जिधर जगह मिलती है, भाग रहे हैं। कई आग की तरफ भी आ रहे हैं ?

शरीर में बुखार लिये ढोड़ाय का बाप भाग नहीं सकता है।

हाँफते-हाँफते जब घर पहुँचा तो ढोड़ाय सो रहा था। बुधनी 'फौजी इनारा' से पानी लेकर आ रही थी। कोसी-सिलीगुड़ी-रोड होकर फौज को मार्च करते समय पानी की जरूरत हो सकती है, यही सोचकर किसी समय इस सड़क के किनारे-किनारे कुआँ बनाये गये थे। कुआँ के निकट पहले ही हल्ला हो चुका कि हवागाड़ी में पानी नहीं था, सो आग लग गई। इसी से बुधनी हाँफुस-धाँफुस करती हुई अपने 'पुरुख' के निकट खबर लेने आई। माय गे ! ई का ? आते ही देखती है 'पुरुख' चटाई पर तड़प रहा है। आँखें सेमल-फूल की तरह लाल हो रही हैं। शरीर तप रहा है। कलशी-भर पानी पीना चाहता है। और आओ अमरूद ! बाप की कुहराहट सुनकर ढोड़ाय जगता है। इधर बाप चिल्ला रहा है, उधर ढोड़ाय ! चमत्कार बाप-बेटे का चमत्कार ! उसके बाद कई दिनों तक ज्वर से बेहोश। झाड़-फूँक, ओझा-गुनी, जड़ी-बूटी, टोटका-टोटकी—अनेक किया गया। किन्तु किसी से कुछ नहीं हुआ। गिजिर-गिजिर, गिजिर-गिजिर—क्या सब सो बकता रहता है, कभी समझ में आता है, कभी नहीं। कभी ढोड़ाय, कभी सेसर साहेब, कभी हवागाड़ी। कई दिनों तक बुधनी बड़ी तनावपूर्ण परेशानी में रही। उसके बाद तो सब खत्म ही हो गया।

घर में एक पैसा नहीं। ज्वर के कारण पहले से ही रोजगार बन्द था। बूढ़ा दुखलाल थे 'महतो'। वे थे 'महतो' जैसे 'महतो'। पुलिस के हाथ से असामी छीन लेने का उन्हें 'अख्तियार' था ! उन्होंने पंचैती के रुपयों में से एक रुपया दस आना खर्च कर, नौआ, घाट एवं अन्य 'किरिया करम' कराया। डेढ़ वर्ष का ढोड़ाय मुड़ा हुआ सर हिलाकर हँसता है और लोगों के मुड़े हुए सर देखता है—चीन्हे चेहरे को भी नहीं चीन्हता। बुधनी सीथ का सिन्दूर पोंछ, फूट-फूट कर रोती है।

सहज अभ्यासी स्वर में महतो बोलते हैं—

छिति जल पावक गगन समीरा
पंच रचित अति अधम शरीरा।

उठ बुधनी ! इस तरह बैठकर रोने से क्या काम चलेगा ? गोद के बच्चे की बात भी तो सोच ?

बुधनी लगभग डेढ़ वर्ष तक विधवा रही। वर्षा उतरते ही चकरहट्टा की परती जमीन घास से हरी हो उठती है। बुधनी कुछ महीनों यहाँ से घास ले जाकर 'टौन' में बेचती है। अगहन में धान काटने 'पूरब' जाती है। माघ में झरबेरियाँ चुनती है।

फागुन-चैत में सेमल की रुई जमा करती है और बाबू भैया के घर जाकर कच्चे आम बेचती है। इस तरह पेट चलाना बड़ा कठिन है। और किसी तरह की मजदूरी करना ततमा की औरतों के लिये वर्जित है। फिर ढोड़ाय ने भी तो धीरे-धीरे भात खाना शुरू कर दिया। दो-दो पेट पालने के लिये बहुत मिहनत करनी पड़ती है। फिर भी चलता नहीं!

बाबू भैया लोगों की आवाजाही शुरू होती है। बाबू लाल उसके घर का चक्कर काटता है। अड़ोसी-पड़ोसी, महतो-नायक—सभी ताना मारते हैं—औरत भी कहीं विधवा रहती है?

बुधनी भी सोचती है कि अगर दूसरों के पैसे पर ही जीना संभव है तो उम्र रहते ब्याह कर लेना ज्यादा अच्छा। उसकी उम्र थी और सिन्दूर पहनने का शौक नहीं था, ऐसा भी नहीं कहा जा सकता। बाबू लाल इसी बीच डिस्टिक-बोड के 'भैस चेरमेन' का चपरासी बन गया। बड़ा ही हिसाबी आदमी। बीड़ी में एक बार में दो टान से ज्यादा नहीं मारता! बुझा कर कान पर रख लेता है। बुधनी से ब्याह करना चाहता है, किन्तु तीन वर्ष के ढोड़ाय को रखना नहीं चाहता। मन हो तो 'चुमौना' करो, मन न हो तो मत करो, किन्तु दूसरे के बेटे को स्वीकारने से वह रहा।

अनेक दिन सोच-विचार करने के बाद बुधनी ने अपना मन पक्का किया।

एक दिन प्रातःकाल गोसाईं-थान जाकर बौका बाबा के चरणों पर ढोड़ाय को रखती है। कुछ देर रो-धोकर अपनी व्यथा-कथा सुनाती है। उसके बाद ढोड़ाय को वहीं रख सीधे बाबू लाल के घर जा पहुँचती है। ढोड़ाय उस समय अँगूठा चूसना छोड़कर बाबा के त्रिशूल से खेल रहा था। बाबा देखते हैं कि उसकी नाभी के ऊपर तीन रेखायें उभरी हुई हैं—ठीक रामचन्द्र जी की तरह!

□

वस्त्र-लाभ उपाख्यान

बुधनी को बौका बाबा दोष नहीं देते—टोले का कोई नहीं देता। बेचारी कर ही क्या सकती! अगर लड़के-बच्चे होने की उम्र गुजर नहीं गई है, तो विधवा को ब्याह करना ही है। रही बेटे की बात! जब बाबू लाल खिलाने के लिए राजी नहीं, तो बुधनी क्या करे!

माँ को छोड़ते बेटे ने खूब रोना-धोना नहीं किया। शुरू-शुरू में जब-तब माँ के निकट भागकर पहुँच जाता था। बाबू लाल घर में होता तो विरक्त हो उठता और बुधनी बेटे को गोद में उठाकर 'थान' रख आती। कुछ ही दिनों में बेटे ने जान लिया कि दोपहर को बाबू लाल घर में नहीं रहता है। लेकिन दो-तीन महीनों के भीतर दोपहर

में मुधनी के पास जाने का अभ्यास भी धीरे-धीरे छूट गया। वह उस घर में अवांछित है—यह सोचकर या दोस्तों के साथ खेलने में भूलकर—कहा नहीं जा सकता।

· धौरा ने रोना-धोना तो नहीं किया, किन्तु धीरे-धीरे दुबला होने लगा। बाबा व्यस्त हो उठते हैं—क्या दिव्य स्वास्थ्य था!

बहुत दिन पहले, एक पछाँही व्यक्ति फौज से इस्तीफा देकर या पेंशन पाकर जिरानिया आया था और बाजार में रामचन्द्र का मंदिर बनवाया था। उस समय के लोग उन्हें 'मिलिटरी बाबा' कहते थे। उन्होंने एक चोता पाला था। उसी ने 'मिलीटरी बाबा' की जान ली। मंदिर के आँगन में एक ओर उनका समाधि-स्थान है। इसी कारण इस ठाकुरबाड़ी का नाम हो गया—मिलिट्री-ठाकुरबाड़ी।

बौका बाबा रोज मिलिट्री-ठाकुरबाड़ी जाते—कहने को रामायण सुनने; असल में गाँजा पीने।

बाबा ने देखा कि ढोढ़ाय रोगी होता जा रहा है; पँजरे की हड्डी गिनी जा सकती है। माँ द्वारा तिरस्कृत, बिना बाप का बच्चा। रामजी ने उसके पास भेज दिया है; उनके मन में क्या है, कौन जाने! रोग जाना हुआ है—सर्व परिचित रोग धौरे को हुआ है—बाय उखड़ गया है। यह जानी हुई बात है कि इस रोग में जड़ी-बूटी से कुछ लाभ नहीं होता—लाभ होता है दूध से। लेकिन दूध तो 'बाबू-भैया' के लिए है। वे लोग 'राजा' हैं। परमात्मा ने उन्हें दूध खाने का सामर्थ्य दिया है। बाय उखड़ने पर गुखनी के साग से भी फायदा होता है—दोनों बेला भात और मुखनी का साग; भात नहीं हो तो मुखनी का साग और कच्चा या भिगोया हुआ चूरा। मूढ़ी'''खबरदार! नहीं। पेट खराब करे मूढ़ी, घर खराब करे बूढ़ी'''

सोचते-सोचते बाबा के दिमाग में एक बात आती है—ढोढ़ाय को दूध-दूध खिलाने का एक उपाय किया जा सकता है!

वे ढोढ़ाय को अपने साथ मिलिट्री-ठाकुरबाड़ी लिये जाते हैं। एक मिनट में ढोढ़ाय ने महन्थ के संग गप-शप द्वारा हेल-मेल कर लिया। नंगे ढोढ़ाय को चिमटा दिखाते हुए महन्थ जी कहते हैं—खबरदार! यहाँ पेशाब मत करना। और, हड्डी झलकने वाले मौकिया धौरे को भय क्या होगा—उल्टे खिल-खिल कर हँसता है! उसी दिन से रामायण सुनने के बाद ढोढ़ाय के लिये 'पक्का परसादी' मंजूर हो गया। इसी से बाय-उखाड़-रोग से ढोढ़ाय को राहत मिलती है।

नहीं-नहीं'''इसमें बाबा का कोई कृतित्व नहीं। जिन्होंने ढोढ़ाय को उनके निकट भेजा, उन्होंने ही 'प्रसाद' का प्रबंध किया है। उन्हीं की कृपा से धौरा बच गया और बाबा का उपयुक्त चेला बनेगा। बाबा की आँखों के आगे स्वप्न-राज्य मँस उठता है'''गोसाईं-थान में प्रकाण्ड मंदिर बनता है, मिलिट्री-ठाकुरबाड़ी से भी बड़ा, नैवेद्य की बड़ी थाल में मंदिरनुमा स्तूपाकार पेड़ा सजाया हुआ है। ढोढ़ाय को इस मंदिर का

पुजारी बनाकर—नहीं, पुजारी क्यों; महन्थ की 'चादर' देकर, बावा अयोध्या जी चले जाते हैं...

करउँ काह मुख एक प्रशंसा......मात्र एक मुँह से क्या बोला जाय ? इससे तुम्हारी कितनी प्रशंसा की जाय रामजी !

तुम्हारी कृपा नहीं होने से भला, जिस दिन महन्थ जी ने सरकार को युद्ध में विजय दिलाने के लिए मिलिट्री-ठाकुरवाड़ी में यज्ञ किया था, उस दिन अपने सामने बैठाकर ढोड़ाय को पूड़ी-हलुआ खिलाते—जितना खा सके। इस्स ! कैसा हलुआ ! घी से लब-लब ! जितना घी होमाद की आग में डाला गया था, लगता है, उससे भी ज्यादा घी हलुआ में डाला गया ! चारों ओर से सभी ढोड़ाय का खाना देख रहे थे। ढोड़ाय को कैसी तो लाज लगती है। महन्थ जी ढोड़ाय के पत्तल की एक पूड़ी को दिखलाते हुए बौका बावा को बुझाते हैं—पूड़ी की मोटी पीठ को इस तरह 'कड़ा' कर कहीं नहीं तला जाता है—किसी भोज में नहीं। यह बनता है 'सीता राम' के भोग के लिये, इसमें फांकी क्या चलेगी ?

उसके बाद महन्थ जी, बावा को भी, 'कड़ा' पूड़ी का प्रसाद चखाने का हुक्म अपने बड़े चेले को देते हैं।

ढोड़ाय और बावा की आँखा-आँखी होती है। बावा के मन में होता है कि यह रत्ती-भर का छोकरा शायद यह सोच रहा है कि बावा को पूड़ी का प्रसाद इसलिये चखने मिला कि ढोड़ाय का महन्थ जी से खूब अपनापा है...

हो सकता है, यह बावा की भूल हो ! किन्तु उस दिन घर लौटते समय महन्थ जी ने बावा को एक खंड कपड़ा दिया, लँगोट और गमछा बनाने के लिए, उस समय ढोड़ाय की कैसी रुलाई थी ? जैसे उसी को कपड़ा पाने की बात थी।

एस० डी० ओ० साहेब सवेरे यज्ञ देखने आये थे। उन्होंने ही खुश होकर मिलिट्री-ठाकुरवाड़ी के यज्ञ के लिये तीन जोड़ा 'लट्ठू मार रैली' (लट्ठू मार्का रैली ब्रदर्स का कपड़ा) सरकारी खजाने से दिया था। उसमें से ही एक खंड महन्थ जी ने बावा को दिया था।

ढोड़ाय का रोना रुके ही नहीं। बावा उसे प्रबोधते हैं—तेरे लिए ही तो ले जा रहे हैं ! तुम्हें ही तो महन्थ जी ने दिया है।

...नहीं, अब मैं कभी रामायन सुनने नहीं जाऊँगा...मुझे अगर देते, तो इतना बड़ा कपड़ा क्यों देते ?....

बाबू लाल कपड़े को देखकर कहता है—बावा ! तुम तो लँगोट धारण करते हो, यह पाढ़-वाला कपड़ा क्या करोगे ? सरकारी 'गिरानी' दुकान से, जहाँ से हाकिम, बाबू-भैया तथा चपरासी लोग सस्ता कपड़ा-चावल खरीदते हैं, मुझे खूब अच्छा जापानी मारकिन, पाँच सौ पचपन नंबर से भी अच्छा—आठ आने की दर से मिला है। उसी से तुम्हें पाँच गज देता हूँ, तुम यह धोती मुझे दे दो।

बाबा भी छुन होते हैं। ऐसा नहीं होने से भला ढोढ़ाय इतनी बड़ी धोती कैसे ना ?

इसी मारकिन के टुकड़े से ढोढ़ाय के लिये प्रथम वस्त्र तैयार हुआ। लँगोट के ा, उसने पहली बार यह वस्त्र पाया। बाबा इन कपड़ों को पक्की के किनारे कपिल ा के घर ले जाते हैं। कपिल राजा बेर की डालियों के कोट से लाह तैयार कर ान करता है। गमला में लाल रंग घोला रहता है। उसी से बाबा ने ढोढ़ाय की ती रँगाई।

इस धोती को किसी तरह कमर से लपेट कर वह पूरे टोले को दिखा आता —मिन्दिरी-ठाकुरबाड़ी के महन्थ जी ने उसे दी है। कोई समझे या न समझे, वह लोगों को जताना चाहता है कि महन्थ जी ने यह कपड़ा बाबा को नहीं दिया। पाँच वर्ष की तो उम्र होगी, किन्तु किसी के सामने छोटा होना नहीं चाहता—बाबा के सामने भी नहीं। तब बाबू-भैया 'बड़े आदमी' होते हैं, उनका आदर तो करना ही होगा और साहेब को देखते ही निकट नहीं जाना चाहिये—यह बात ततमाटोली के बच्चे अच्छी तरह जानते हैं। इसमें 'छोटे होने' का सवाल ही नहीं उठता।

ढोढ़ाय चाहता है कि कपड़े पहने रखे—उसके किसी साथी को वस्त्र नहीं है—इन कपड़ों से वह अपनी जमात में जरा ऊँचा होता है, लेकिन बाबा हैं कि किसी भी हालत में कपड़े पहनने नहीं देंगे, खोलकर रख देते हैं। लाल कपड़ा पहन कर भीख माँगने के लिये जाने पर लोग एक मुट्ठी चावल भी नहीं देंगे। ऐसा कपड़ा पहनकर तो तमाशा, मेला, मोहर्रम का दुलदुल घोड़ा देखने के लिए जाया जा सकता है। लेकिन हरामजादा छोकरा मुँह लटका कर बैठेगा। ढोढ़ाय को डर दिखाने के लिये बाबा चिमटा उठाते हैं।

□

ढोढ़ाय-माँ की संतानवत्सलता

धौरा, बुधनी के पास जाना नहीं चाहता, इसके लिये बाबा बुधनी को दोष नहीं देते। जहाँ तक बाबा की जानकारी है, बुधनी ने कभी भी ढोढ़ाय को दुत्कार नहीं है। दुत्कारेगी कैसे—अपने पेट से जन्म दिया है न? 'चुमौना' कर लेने मात्र से क्या नामी के संबंध को धो-पोंछकर समाप्त किया जा सकता है? ऐसा संभव नहीं है कभी संभव नहीं। रामजी ने मनुष्य का सृजन उस रूप में नहीं किया है। समय कुसमय बुधनी ने ढोढ़ाय के लिये बहुत किया है।

'जर्मनवाला' रथ तारों के बीच होकर आकाश-पथ से गुजर कर कहाँ जा

पुजारी बनाकर—नहीं, पुजारी क्यों; महन्थ की 'चादर' देकर, बाबा अयोध्या जी चले जाते हैं ...

करउँ काह मुख एक प्रशंसा......मात्र एक मुँह से क्या बोला जाय ? इससे तुम्हारी कितनी प्रशंसा की जाय रामजी !

तुम्हारी कृपा नहीं होने से भला, जिस दिन महन्थ जी ने सरकार को युद्ध में विजय दिलाने के लिए मिलिट्री-ठाकुरबाड़ी में यज्ञ किया था, उस दिन अपने सामने बैठाकर ढोड़ाय को पूड़ी-हलुआ खिलाते—जितना खा सके। इस्स ! कैसा हलुआ ! घी से लब-लब ! जितना घी होमाद की आग में डाला गया था, लगता है, उससे भी ज्यादा घी हलुआ में डाला गया ! चारों ओर से सभी ढोड़ाय का खाना देख रहे थे। ढोड़ाय को कैसी तो लाज लगती है। महन्थ जी ढोड़ाय के पत्तल की एक पूड़ी को दिखलाते हुए बौका बाबा को बुझाते हैं—पूड़ी की मोटी पीठ को इस तरह 'कड़ा' कर कहीं नहीं तला जाता है—किसी भोज में नहीं। यह बनता है 'सीता राम' के भोग के लिये, इसमें फाँकी क्या चलेगी ?

उसके बाद महन्थ जी, बाबा को भी, 'कड़ा' पूड़ी का प्रसाद चखाने का हुक्म अपने बड़े चेले को देते हैं।

ढोड़ाय और बाबा की आँखा-आँखी होती है। बाबा के मन में होता है कि यह रत्ती-भर का छोकरा शायद यह सोच रहा है कि बाबा को पूड़ी का प्रसाद इसलिये चखने मिला कि ढोड़ाय का महन्थ जी से खूब अपनापा है...

हो सकता है, यह बाबा की भूल हो ! किन्तु उस दिन घर लौटते समय महन्थ जी ने बाबा को एक खंड कपड़ा दिया, लँगोट और गमछा बनाने के लिए, उस समय ढोड़ाय की कैसी रुलाई थी ? जैसे उसी को कपड़ा पाने की बात थी।

एस० डी० ओ० साहेब सवेरे यज्ञ देखने आये थे। उन्होंने ही खुश होकर मिलिट्री-ठाकुरबाड़ी के यज्ञ के लिये तीन जोड़ा 'लट्टू मार रैली' (लट्टू मार्का रैली ब्रदर्स का कपड़ा) सरकारी खजाने से दिया था। उसमें से ही एक खंड महन्थ जी ने बाबा को दिया था।

ढोड़ाय का रोना रुके ही नहीं। बाबा उसे प्रबोधते हैं—तेरे लिए ही तो ले जा रहे हैं ! तुम्हें ही तो महन्थ जी ने दिया है।

...नहीं, अब मैं कभी रामायन सुनने नहीं जाऊँगा...मुझे अगर देते, तो इतना बड़ा कपड़ा क्यों देते ?....

बाबू लाल कपड़े को देखकर कहता है—बाबा ! तुम तो लँगोट धारण करते हो, यह पाढ़-वाला कपड़ा क्या करोगे ? सरकारी 'गिरानी' दुकान से, जहाँ से हाकिम, बाबू-भैया तथा चपरासी लोग सस्ता कपड़ा-चावल खरीदते हैं, मुझे खूब अच्छा जापानी मारकिन, पाँच सौ पचपन नंबर से भी अच्छा—आठ आने की दर से मिला है। उसी से तुम्हें पाँच गज देता हूँ, तुम यह धोती मुझे दे दो।

बाबा भी खुश होते हैं। ऐसा नहीं होने से भला ढोड़ाय इतनी बड़ी धोती कैसे पहनेगा ?

इसी मारकिन के टुकड़े से ढोड़ाय के लिये प्रथम वस्त्र तैयार हुआ। लँगोट के सिवा, उसने पहली बार यह वस्त्र पाया। बाबा इन कपड़ों को पक्की के किनारे कपिल राजा के घर ले जाते हैं। कपिल राजा बेर की डालियों के कीट से लाह तैयार कर चलान करता है। गमला में लाल रंग घोला रहता है। उसी से बाबा ने ढोड़ाय की धोती रँगाई।

इस धोती को किसी तरह कमर से लपेट कर वह पूरे टोले को दिखा आता है—मिसिरी-ठाकुरबाड़ी के महन्थ जी ने उसे दी है। कोई समझे या न समझे, वह लोगों को जताना चाहता है कि महन्थ जी ने यह कपड़ा बाबा को नहीं दिया। पाँच वर्ष की तो उम्र होगी, किन्तु किसी के सामने छोटा होना नहीं चाहता—बाबा के सामने भी नहीं। तब बाबू-भैया 'बड़े आदमी' होते हैं, उनका आदर तो करना ही होगा और साहेब को देखते ही निकट नहीं आना चाहिये—यह बात ततमाटोली के बच्चे अच्छी तरह जानते हैं। इसमें 'छोटे होने' का सवाल ही नहीं उठता।

ढोड़ाय चाहता है कि कपड़े पहने रखे—उसके किसी साथी को वस्त्र नहीं है—इन कपड़ों से वह अपनी जमात में जरा ऊँचा होता है, लेकिन बाबा हैं कि किसी भी हालत में कपड़े पहनने नहीं देंगे, खोलकर रख देते हैं। लाल कपड़ा पहन कर भीख माँगने के लिये जाने पर लोग एक मुट्ठी चावल भी नहीं देंगे। ऐसा कपड़ा पहनकर तो तमाशा, मेला, मोहर्रम का दुलदुल घोड़ा देखने के लिए जाया जा सकता है। लेकिन हरामजादा छोकरा मुँह लटका कर बैठेगा! ढोड़ाय को डर दिखाने के लिये बाबा चिमटा उठाते हैं।



ढोड़ाय-माँ की संतानवत्सलता

छौंरा, बुधनी के पास जाना नहीं चाहता, इसके लिये बाबा बुधनी को दोष नहीं देते। जहाँ तक बाबा की जानकारी है, बुधनी ने कभी भी ढोड़ाय को दुत्कारा नहीं है। दुत्कारेगी कैसे—अपने पेट से जन्म दिया है न ? 'चुमौना' कर लेने मात्र से क्या नाभी के संबंध को धो-पोंछकर समाप्त किया जा सकता है ? ऐसा संभव नहीं है। कभी संभव नहीं। रामजी ने मनुष्य का सृजन उस रूप में नहीं किया है। समय-कुसमय बुधनी ने ढोड़ाय के लिये बहुत किया है।

'जर्मनवाला' रथ तारों के बीच होकर आकाश-पथ से गुजर कर कहाँ जाता

है, क्या करता है—भला कौन बतला सकता ? बाबा ने भी 'रथ' को नहीं देखा है, किन्तु कञ्चू के पत्ते पर रथ की छाया के काले दाग ततमाटोली के सभी देखते हैं। वैसी ही निझूम रात में कितनी ही बार बुधनी ने बाबू लाल से छुपाकर ढोड़ाय को भात खिलाया है। चावल का भाव दो आने में आधा सेर ! ऐसे अकाल में भला भिक्षा कौन देता है—चाहे साधु हो या सन्त ! उन दिनों 'अफसर' के लिये सरकारी दुकान से सस्ते दाम पर चावल मिलता था। इसलिये बाबू लाल के घर चावल का अभाव नहीं था। अगर बुधनी चोरी-लुकी से ढोड़ाय को खाने नहीं देती, तो बाबा की औकात थी कि लड़के को पाल-पोस सकते ! उस समय छोटे से लड़के द्वारा रामायण की चौपाई गा कर भीख माँगने पर भी 'टौन' का कोई गृहस्थ हाथ उठा कर कुछ देनेवाला नहीं था।

केवल खिलाना ही नहीं, ढोड़ाय पर बुधनी की आन्तरिक ममता को एक बार बाबा ने महसूस किया था। झूठ क्यों बोला जाय ! टोले की लड़कियाँ चाहे जो बोलें। बाबा स्वयं साक्षी हैं और साक्षी है भूपलाल सोनार। भूपलाल को नहीं भी याद रह सकता है···वह राजा आदमी है, ग्राहकों की भरमार ! ढोड़ाय उस समय पाँच-छः वर्ष का रहा होगा। बाबू लाल कई दिनों के लिये 'भैसचरमेन साहेब' के साथ देहात गया था। बुधनी के पेट में दुखिया था। वैसे बाबू लाल अपनी पत्नी को घर से बाहर काम करने नहीं भेजता 'इज्जत वाला' आदमी ठहरा ! बाबू लाल की गैरहाजिरी में बुधनी ने सात आने का रोजगार किया था। लग्गी द्वारा सेमल-फल को तोड़कर रुई निकाली और किरानी बाबू की 'जनाना' के हाथ बेचा। 'किरानी बाबू' बाबू लाल का अफसर-मालिक ! बुधनी की बड़ी इच्छा कि ढोड़ाय को कोई 'जेवर' दिया जाय, कभी तो कुछ दिया नहीं ! बुधनी बाबा को कहती है—बाबा, भूपलाल सोनार की दुकान से ढोड़ाय की करधनी में लगाने के लिये चाँदी की एक सुक्की खरीद दो ! बाबा तो सुनकर गद्‌गद हो गये। थोड़ा भय भी होता है···चान्दी की 'घुन्सी' को लँगोट के नीचे छुपा कर रखना पड़ेगा··· नहीं तो भिक्षा नहीं मिलेगी। बाबा के मन में सारी बातें ज्यों-की-त्यों रखी हैं····उनके ढोड़ाय को गहना मिले और उन्हें याद नहीं रहे ! उस दिन जब बाबा और ढोड़ाय मिलिट्री-ठाकुरबाड़ी से रामायण सुनकर भूपलाल सोनार की दुकान पर आये, तो बुधनी वहाँ इंतजार कर रही थी। सोनार से बातें करते समय अनेक लोगों के समक्ष ढोड़ाय को खींच कर गोद में ले लिया। उस दिन सोनार की सीढ़ी पर एक बीड़ी भी सुलगा कर बुधनी ने ढोड़ाय को दिया था। ढोड़ाय खाँसने लगा। भूपलाल सोनार तो सुनते ही अगिया-वैताल ! भारी आदमी, उसकी बातों में झाँझ रहेगी न ? वह बोलता है···सुक्की का दाम ही तो आठ आने हुए···फिर साली पुलिस की नजर बचा कर देना होगा। बुधनी डर कर कहती है···घुन्सी बनाने में अगर पुलिस का भय है तो कुछ और चीज बना दें। भूपलाल हुँकार कर उठता है··· जाहिल औरत ! कुछ बात भी समझेगी या बना दो, बना दो रटेगी ? सीधी-सी बात है····सात आने में नहीं होगा। सुक्की में छेद करने का मिहनताना भी तो चाहिये !

वह दूसरे खरीदार से बातें करने लगता है। फिर क्या किया जाय। बावा बुधनी को लेकर सौदा कराने छत्तीस बाबू की दूकान जाते हैं। वहाँ पूरे सात आने में बुधनी पेट के बच्चे के लिये 'कजरौटी' खरीदती है। इसके डेढ़-दो महीने बाद दुखिया उसकी गोद में आता है। बावा को उस दिन कितना दुख हुआ था? इस तरह ढोड़ाय एक गहना पाते-पाते रह गया! किसके ऊपर गुस्सा किया जाय? भूपलाल सोनार ने भी कुछ अन्याय नहीं कहा। बुधनी को भी क्या कहा जाय? डेढ़ मास बाद ही 'कजरौटी' की जरूरत—उसकी अपनी कमाई के पैसे और माँ के मन का शौक! भूपलाल के देने पर क्या वह चाँदी नहीं खरीद लेती?

ढोड़ाय की भी आँखें उस समय छलछला आई थीं—रोना तो वह जानता ही नहीं।

बुधनी ने मन के लोभ में आकर 'कजरौटी' तो खरीद ली, किन्तु बाद में जरा अपराधी-सी महसूस करने लगी। अनुभव करती कि जैसे बावा और ढोड़ाय द्वारा पकड़ी गई है! उसके गर्भस्थ बच्चे के लिये 'कजरौटी' तो बाबू लाल भी खरीद देता, फिर उस काम के लिये स्वयं-अर्जित पैसे को खर्च करने की क्या जरूरत थी?

असल में ढोड़ाय के प्रति उसके आकर्षण में थोड़ी कमी आई है। ढोड़ाय ने ठीक ही समझा है। छोटे बच्चे की तरह इन बातों को और कौन समझ सकता?

इस बीच बुधनी, बावा और ढोड़ाय पर यह जाहिर करना चाहती है कि बेटे पर उसका स्नेह कम नहीं हुआ है—लोग जो कमी महसूस करते हैं, वह बाबू लाल के डर से करना पड़ता है। इसी बात को प्रमाणित करने के लिये वह ढोड़ाय को लेकर भूपलाल सोनार की दुकान पर गई थी।

अपने कसूर को ढकने के लिये थोड़े दिन के भीतर बुधनी ने ढोड़ाय को बुलाकर भर-पेट मिठाई खिलाई। हठात्! युद्ध रुक जाने की खुशी में 'भैसचरमैन साहेब' ने डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड में भोज और दीवाली का आयोजन किया था। उस दिन मच्छड़ की तस्वीरों का 'तमाशा' हुआ था वहाँ। पूरी दीवाल बराबर कहीं मच्छड़ हुआ है? धत्त! बो-सब देहाती लोगों को समझाओ! किरानी बाबू मूँछ मुड़ा कर 'किसुन भगवान' बने थे। देखते ही प्रणाम करने का मन होता था। कलक्टर साहेब—जिनको वहाँ 'चेरमैन' बोलता है—उन्होंने भी तमाशा देखा था। 'भैसचरमैन' उनको 'लाटक' बुझाते जा रहे थे। उस दिन बाबू लाल घर आया, तो 'भैसचरमैन साहेब' की चिट्ठी रखनेवाली बेंत की टोकरी में रंग-बिरंग की मिठाइयाँ भर कर लाया था। बुधनी तो सारी मिठाइयों का नाम भी नहीं जानती। जानना चाहा भी नहीं। उसकी किस्मत ही ऐसी है! उस बार 'दरबार' के समय वह प्रसूति-गृह में थी, और इस बार युद्ध बन्द होने के उपलक्ष्य वाले 'तमाशा' में भी प्रसूति-गृह में। प्रसूतिका को मिठाई खाना वर्जित है, सो इतनी मिठाइयों का क्या होगा? इसलिये उसने खुद बाबू लाल से कहा कि ढोड़ाय को बुला लाये। बाबू लाल का भी मन खुश था—अभी-अभी बेटा हुआ है।

उदारतापूर्वक बड़े से कच्चू-पत्ते पर ढोंड़ाय को खाने के लिये सजा दिया। बोलती है—बाबा तो कंठी-धारी 'भगत' हैं, नहीं तो उन्हें भी खिलाती।

बुधनी नये बेटे को गोद में लिये मचिया पर बैठी थी। बाबू लाल से कहती है—तुम जरा बाहर चले जाओ, तुम्हारे सामने ढोंड़ाय को खाने में संकोच हो रहा है।

संकोच किस बात का—बोलता और थोड़ा विरक्त होता हुआ बाबू लाल बाहर चला जाता है।

खाने के बाद बुधनी ढोंड़ाय को निकट बुलाती है—दुलार करने के लिये। इतने छोटे बच्चे को गोद लिये उठते और जाते नहीं बनता।

ढोंड़ाय लुंज की तरह खड़ा है—दूसरी तरफ देखते हुए। उसे लाल रंग का यह नन्हा बच्चा और उसकी माँ जरा भी अच्छी नहीं लगती। बाबा के पास जाने की इच्छा होती है। बुक्का फाड़कर रोने का मन होता है। राम ! राम ! वह कुछ भी नहीं बोलता है और 'थान' की तरफ भाग जाता है।

□

रेवन गुनी की कृपा
ढोंड़ाय का पुनर्जीवन

दुखिया के जन्म के साथ बुधनी हो गई दुखिया की माँ। मुहल्ले के सभी उसे इसी नाम से पुकारने लगे। और, सचमुच इसके बाद से उसे ढोंड़ाय की बात बहुत कम ही समय याद आती थी। एक तो ढोंड़ाय ही माँ से दूरी रखकर चलता है, उस पर दुखिया की माँ के भी परिवार के पचासों झंझट। दुखिया की माँ के मन की छोटी-सी जगह का प्रायः समूचा अंश दुखिया छेंक रखता है। यह सहज बात बाबा मन-ही-मन में समझते हैं, और इसीलिए, आज जरूरत पड़ने पर भी वे उसे बुलाने में हिचक रहे हैं।

उस बार कई महीनों से ततमाटोली में गौरैये नहीं दीख पड़ रहे थे। सब कहा-सुनी कर रहे थे। कोई बड़ी बीमारी जल्द ही आ रही है। इस पर घर-घर नम्बर देकर लोगों की गिनती की गई है। लोग भय से स्तब्ध हैं। उसके बाद, जैसी आशंका की गई थी, वैसा ही हुआ। जिरानिया में, ततमाटोली में, धांगरटोली मे कैसी भयानक बीमारी फैली ? वाय उखड़ने की बीमारी—बेहोशी-ज्वर—'झट-बीमार पट-खतम'।

उस बार इसी रोग से कपिल राजा का घर उजड़ गया ! कैसे न उजड़े भला ! उसने बकरहट्टा के मैदान के तमाम सेमल-पेड़ों को काटा था; लाह चलान करने के बक्स बनाने के लिए। सेमल की रुई ततमानियों की रोजी है—यह बात उसने ए

बार भी नहीं सोची। कटवा रहे थे उन उजड्ड, विवेकहीन धांडरों से। वे बेवकूफ यह नहीं समझते कि सेमल की रुई से धांडरनियों को भी कुछ आमदनी ही होती थी। निर्वंश तो हुआ कपिल राजा, लेकिन जाने से पहले वह 'झोटाहों' की रोजी मारकर चला गया। जाने दो, जिनकी बहू-बेटियाँ हैं, वे ही चिंता करें। उसका तो एकमात्र सम्बल है—ढोड़ाय।

सुबह ढोड़ाय नींद से नहीं उठा था। मिजिट्री-ठाकुरवाड़ी में रामायण सुनने की बेला हुई, फिर भी वह नहीं जगा। बाबा भयभीत हो त्रिशूल से धक्के देते हैं। हुआ क्या छोकरे को! बाबा का मन भय से चौंक उठता है! कपिल राजा के घर से एक-पर-एक मुर्दे निकाले गये हैं—एक-एक कर चार मुर्दे। नुनूलाल महतो खत्म हो गया गत सप्ताह·······

देह पर हाथ देकर देखने में डर-सा लगता है। देह पर हाथ देकर देखा। जैसी शंका की थी, वैसा ही पाया। ओ ढोड़ाय, बोल न? चुप क्यों हो? भिक्षा में निकलना और रामायण सुनने जाना बन्द हो जाता है। यह क्या किया तुमने, रामजी! यह रोग तो सोचने भर का समय नहीं देता है। दुखिया की माँ को खबर दूँ कि नहीं, उसे बुलाऊँ या नहीं, बाबा यही सोचने लगे। लगता है, दुखिया की माँ ने ढोड़ाय को अपने मन से एकदम मिटा कर साफ कर दिया है। साल भर में एक दिन भी ढोड़ाय की खबर नहीं ली है। बाबा सोचकर कुछ तय नहीं कर पाते हैं।

अन्त में वे खबर देते हैं। आखिर उसके पेट की संतान है, कहीं कुछ भला-बुरा हो जाय तो जीवन-भर के लिए दुःख रह जायेगा। उसकी आने की इच्छा हो तो आयेगी, और न इच्छा होगी तो नहीं आयेगी। बाबा क्यों अपना कर्तव्य छोड़ें?

खबर देते ही दुखिया की माँ आतंकित हो उठती है। दुखिया को बाबू लाल की गोद में फेंक कर वह पगली-सी दौड़ जाती है। जैसे वह दुखिया की माँ हो नहीं हो, जैसे पुरानी बुधनी फिर लौट आयी है। बाबू लाल पीछे से आपत्ति करता है, पर सुनता कौन है? स्वयं गोसाईं भी अगर चले आते, तो वह भी उस वक्त दुखिया की माँ का रास्ता नहीं रोक सकते। आते ही वह शिथिल पड़े बच्चे को गोद में उठा लेती है। ढोड़ाय उस वक्त तक काफ़ी बड़ा हो गया है—कोई आठ वर्ष का होगा उस वक्त। उसे गोद में लेकर वह दौड़ती है रेवन गुनी के घर की तरफ़। उसकी देह में उस वक्त महावीर जी शक्ति जुटा रहे हैं। बाबा तो गुनी के घर नहीं जा सकते हैं, जाने पर लोग उस संन्यासी की कदर नहीं करते हैं। इसलिए वे कुछ दूर तक दुखिया की माँ के साथ-साथ जाकर रास्ते के एक किनारे बैठ गए। वहाँ पहुँचकर दुखिया की माँ ने ज्यों ही झाड़-फूँक की बात उठायी, रेवन गुनी फूँक के सहारे चिलम सुलगाते हुए बोला—तू तो बासी पेट आई है न?

दुखिया की माँ घबड़ा जाती है। सुबह उसने क्या खाया है, याद करने की

चेष्टा करने लगी। गुनी ने जब कहा है, तब तो जरूर ही उसने कुछ खाया होगा। माय गे, ठीक ही तो है। खैनी उसने खायी है। वह जो उस वक्त बाबू लाल ने खैनी मलकर खुद खाते समय उसे भी दी थी। उत्कंठा के स्थान पर अब भय उभरता है उसके चेहरे पर। रेवन गुनी तो गुस्से में लाल है..........बच्चा पैदा कर तेरी बुद्धि चली गई! सात युग ततमाटोली में रहकर तू यह भी नहीं जानती है कि झाड़-फूंक करवाना हो तो खाली पेट आना पड़ता है। भोर को आना पड़ता है?........

रेवन गुनी के नाम से मुहल्ले के लोग काँपते हैं। ततमाटोली की क्वाँरी लड़कियाँ उसे देखते ही भागती हैं। माँओं का भी बेटियों पर ऐसा ही हुक्म है। एक तो उसके तूक-ताक का डर है लोगों को, उस पर चौबीसों घंटे पीये हुए रहता है। एक-पर-एक छह-छह शादियाँ की हैं उसने, अब भी दो लेकर रहता है। गोसाईं-थान में जिस दिन भेंड़ का बलिदान होता है, उस दिन उसी पर हर साल गोसाईं सवार होते हैं। उस समय वह भेंड़ का कच्चा खून पीता है, मुँह और देह में भेंड़ का रक्त लीपकर हुंकार देता है। वह खुद ये सब थोड़े ही करता है? स्वयं गोसाईं उसके अन्दर से बोलते हैं। अपने हाथ के बेंत के सोंटे से छूकर वह जिसको जो कह देगा, वही हो जायेगा। क्वाँरी लड़कियाँ उस समय वहाँ से डर के मारे भाग जाती हैं। पाँच बार उसने एक-एक लड़की को छूकर उन्हें शादी करने की बात कही है। किसी माँ-बाप की क्षमता नहीं है कि उस वक्त के गोसाईं की बात इधर-उधर होने दे।

आते समय रास्ते में ही दुखिया की माँ को ये सब बातें याद हो रही थीं। लेकिन गरज बड़ी बला है। ढोड़ाय को बचा सकता है, तो उस गुनी को छोड़कर और दूसरा कोई व्यक्ति नहीं। 'टौन' के 'हस्पताल' में जाने पर कोई लौटा नहीं है। कपिल राजा ने तो बंगाली डाक्टर से भी दिखाया था, पर हुआ कुछ?

रेवन गुनी दुखिया की माँ को गालियाँ देता जा रहा है। भरी दुपहरिया में मन्तर का प्रभाव रहता है? निकल जा जल्द यहाँ से। दुखिया की माँ गुनी के पैरों से लिपट जाती है, चीखकर रोती है, इसका बाप नहीं है गुनी! तुम इसे पैरों से न ठेलो!

गुनी का मिजाज शायद नरम हुआ। बोला—कल ही तो शनीचर है। कल आना। कल तो 'हड़ताल' न क्या कहते हैं वही है........वह जो एक नई चीज हुई है आजकल—पिछले साल भी हुई थी एक बार। दिन को सौदा नहीं मिलेगा, साँझ के बाद दुकानें खुलती हैं, वही फिर कल भी है। साँझ के बाद दुकान खुलने पर पान और सुपारी खरीद कर रात को आना। सिन्दूर तो तेरे पास है ही। 'भानमती' की दया से यह 'बदमास' अच्छा हो जायगा। इतना कहकर ओठ के कोर में हँसी लाकर ढोड़ाय की तरफ देखता है।

दुखिया की माँ का मन जरा हल्का होता है। रेवन गुनी का मन अब पिघला

है। उसने कहा है—ढोड़ाय अच्छा हो जाएगा, उसकी दुश्चिन्ता आधी दूर हो गई। किन्तु, कल रात तक विलम्ब करना क्या ठीक होगा? इलाज शुरू करने भर का धीरज उससे नहीं धरा जाता। इस 'हड़ताल' को भी कल ही होना था? पूरी दुनिया का गुस्सा क्या केवल उसी पर है! यहाँ आने के पहले रेवन गुनी से जितना डर लग रहा था, अब बातचीत करने के बाद उतना डर नहीं लगता है।

साहस बटोर कर दुखिया की माँ गुनी से पूछती है—'अच्छा, आज पान और सुपाड़ी खरीदकर कल आने से नहीं चलेगा—कल शनीचर है' ...... 'जैसे कहा वैसे कर।' चिल्ला उठता है गुनी, 'तेरी बुद्धि से मैं चलूँगा या मेरी बुद्धि से तू चलेगी?'

दुखिया की माँ भय से काँपती है। गुनी के मुँह पर बोलना ही नहीं चाहिए।

गुनी जरा नरम स्वर में बोला—'आज के खरीदे हुए पान और सुपाड़ी में अन्तर नहीं पड़ेगा और बच्चे को लाने की जरूरत नहीं है। यहीं से काम हो जायेगा। तेरे अकेली आने से ही काम चलेगा। आज रात को सोते समय बेटे की आँखों में तरोई-फूल का रस डाल देना। और 'मरनाधार' की मन्तर पढ़ी हुई यह मिट्टी ले जा, उसके ललाट पर लेप कर देना।'

ढोड़ाय उस वक्त दुखिया की माँ की गोद में शिथिल होकर पड़ गया था। ढोड़ाय को लेकर लौट आते समय दुखिया की माँ ने सुना, रेवन गुनी अपने आप कह रहा है ......गत अमावस्या में आधी रात को जब देखा 'मुड़कट्टा फ़ौज' का दल 'पक्की' से होकर जा रहा है, तब ही जान गया कि यह गाँव उजड़ जाएगा। कटी हुई गर्दन पर एक-एक दीप जल रहा था।....डर से दुखिया की माँ के प्राण उड़ गये।.... ... खैर, उस बार रेवन गुनी की कृपा से ढोड़ाय बच गया। झाड़-फूँक के लिए दुखिया की माँ को जितना दाम देना पड़ा था, उसके लिए वह कभी दुःखित नहीं हुई। उस रोग से, न जाने, कितने लोग गाँव में मर गये थे, केवल रेवन गुनी के मन्त्र के बल से ही ढोड़ाय बच गया है—यह उपकार दुखिया की माँ भूल न सकेगी। शनीचर की रात के मन्त्र का ऐसा प्रभाव है कि ज्वर छूटने पर भी कई दिनों तक शरीर में जितना जहर था, खून के काले-काले पिंड बनकर नाक के रास्ते से निकला था।

बीमारी छूटने पर भी एक हफ़्ता तक दुखिया की माँ ने ढोड़ाय को अपने ही यहाँ रखा था। यह ढोड़ाय का एक नया अनुभव है। उसका शरीर उस वक्त कमजोर था। ओलती में खोंसी कजरौटी की ओर, लेटकर, कुछ ही देर देखते रहने से आँखें दुखने लगती हैं। हँड़िया लटकाने वाले छीके जैसा बिना हवा के ही काँपता है। भात लाने में विलम्ब करने से गुस्से में रुलाई आती है। बाँस की मचान पर एक ओर सोता है ढोड़ाय और एक ओर सोता है दुखिया, और बीच में सोती है दुखिया की माँ। देह की उष्णता में मुँह गाड़कर ढोड़ाय किस्से सुनता है ...राजपुत्र सदावृक्ष मिट्टी के नीचे सुरंग खोदा करता है राजकन्या के महल में पहुँचने के लिए, सुरंग में घुप्प अँधेरा है, पाँव फिसलने वाली दीवाल है, और उससे जल चू रहा है टप्-टप्.......

ढोड़ाय की देह कंटकित होती है। वह दुखिया की माँ का हाथ जोरों के साथ पकड़ लेता है। अँधेरे में डर रहा है क्या रे! लो! मैं तो पास ही हूँ। वात वोल रही हूँ, फिर भी डर लगता है! वीमारी के वाद ऐसा ही होता है।........

उधर डाही दुखिया उठकर वैठा है, अपनी मुट्ठी से नाक मलते हुए। अपने नन्हे-नन्हे हाथों से वह ढोड़ाय को धक्के देकर हटा देना चाहता है और ढोड़ाय विरक्त हो जाता है।

'छिः दुखिया, ढोड़ाय भइया बीमार हैं।' दुखिया रोना शुरू करता है। वावू लाल दूसरे खटिये से चिल्लाता है—वह रोता क्यों है?—और अन्त में विरक्त होकर दुखिया को अपने पास ले जाता है।

ढोड़ाय छोटा होने पर भी यह समझता है कि वावू लाल गुस्से में आकर ही दुखिया को उठा ले गया, और यह गुस्सा शायद उसी के ऊपर है। दुखिया की माँ भी चुप हो गई है। उसके वालों की महक आ रही है, नाक में वावा की जटा की गन्ध जैसी नहीं, दूसरी तरह की। उसने सोच रखा था कि आज इसके वाद विजा सिंह का किस्सा सुनेगा, पर वावू लाल ने सव नष्ट कर दिया। वड़ा अच्छा लगता है विजा सिंह का किस्सा। घोड़ा दौड़ाकर, तलवार लेकर जा रहे हैं विजा सिंह—किसी की हिम्मत नहीं कि उनके सामने खड़ा हो—हवागाड़ी से भी अधिक वेग से उनका घोड़ा दौड़ता है। दुखिया की माँ को वह पूछेगा कि इंजन से भी अधिक वल क्या विजा सिंह की देह में है? नहीं, दुखिया की माँ वावू लाल के डर से अभी वोलेगी नहीं, इसलिए वह चुपचाप सोई हुई है।

'क्या रे ढोड़ाय। सो गया क्या?'

ढोड़ाय उत्तर नहीं देता है। चुपचाप आँखें मींचकर पड़ा रहता है। अव दुखिया माँ उठती है। ढोड़ाय जानता है कि ततमाटोली की प्रत्येक औरत रात को 'पुरुख' के पैर दवा देती है—तेल रहने से पैर में तेल लगाती है। उसे वावा की याद आती है। दुखिया की माँ अगर वावा के पैर में तेल लगाती तो वड़ा अच्छा होता। वावू लाल अच्छा नहीं है,..........दुखिया की माँ अच्छी नहीं है..........और दुखिया भी अच्छा नहीं है। वावा अभी क्या कर रहे हैं, कौन जानता है! आज भी तो वे ढोड़ाय को ले जाने के लिए आये थे, पर दुखिया की माँ ने जाने न दिया। कल ही वह चला जायेगा। थान पर, वावा के पास...... विजा सिंह के घोड़े पर चढ़कर......तलवार हाथ में लेकर, राजपुत्र सदावृछ की तरह......

ढोड़ाय सो जाता है।

गुरु-शिष्य-संवाद

चौका बाबा ढोढ़ाय की कद्र समझते हैं। छोकरा अक्लमन्द है। बाबा गूँगा है, फिर भी ढोढ़ाय से बातें करने में उन्हें जरा भी असुविधा नहीं होती है। आँखों के इशारे से ही वे मन की सब बात जान जाते हैं। और, उसके कारण भीख भी खूब मिल जाती है। उसका गला खूब अच्छा है न। माई जी लोग उसे घर के अन्दर बुलाकर 'सीय राम-पद अंक बचाये। लखन चलहिं मगु दायें बायें' सुनती हैं। कुछ दिन से बाबा गौर कर रहे हैं कि उस गाने से अब कोई खास भीख नहीं मिल रही है। छोकरे ने भी समझा है। जब से 'हड़ताल-बरताल' शुरू हुआ है, सबको 'बटोही' वाले देहाती गाने की हवा लग गई है। कैसा गाना है, समझ में नहीं आता—जिस किसी भी बात के अन्त में 'रे बटोहिया' जोड़ दो, बस गाना हो गया। नये जमाने की नई बातें चलती हैं, और क्या?

बाबा ढोढ़ाय को इशारे से पूछते—'इस बगल वाली कोठी को छोड़कर तू चला कहाँ?'

'वहाँ बीमारी है।'

सब खबर ढोढ़ाय रखता है, किस घर में बीमारी है, किस कोठी की माईजी घर गई हैं! किस कोठी में दोपहर को बाबू लोगों के ऑफिस-दफ्तर जाने पर उसे कुछ मिल सकेगा, किस घर में उपनयन-संस्कार है, शादी है, पूजा है—सब ढोढ़ाय को मालूम है। बाबा को वही चालित करता है, बाबा की भिक्षा की जानकारी उनके दो पुरखों की है, फिर भी ....

ढोढ़ाय गा रहा है............

सुन्दरऽ आऽ सू। भूमि भईया आऽ।

भरत आऽ के। देस-बाऽ से।

मोरा प्राण-आऽ बसे हिम ऽऽ।

होहरे बटोहिया-आ-आ ....।

बाबा बोले—चल, यहाँ से कोई आवाज नहीं देगा, सब कंजूस हैं। एक दरवाजे पर कितनी देर तक गला फाड़कर चिल्लाएगा?

ढोढ़ाय सोचता है—बाबा तो समझते कुछ नहीं, खाली 'चल-चल' करते हैं। हड़बड़ करने से क्या भिक्षा मिलती है? माईजी अभी पूजा पर बैठी हैं। बाबू के ऑफिस जाने पर स्नान कर वे पूजा पर बैठती हैं। तुरंत वे उठेंगी।

जैसा उसने सोचा था वैसा ही हुआ।

बूढ़ी माईजी *'मटका का धान'* भिक्षा में दे गईं—साथ में एक बैगन भी।

बाबा अप्रस्तुत हो जाने पर भी मन-ही-मन खुश होते हैं—यह छोकरा बड़ा होने पर उपयुक्त चेला होगा। केवल जरा शासन में रखना होगा। बड़ा नटखट लड़का

ढोड़ाय की देह कंटकित होती है। वह दुखिया की माँ का हाथ जोरों के साथ पकड़ लेता है। अँधेरे में डर रहा है क्या रे! लो! मैं तो पास ही हूँ। वात वोल रही हूँ, फिर भी डर लगता है! वीमारी के वाद ऐसा ही होता है।.........

उधर डाही दुखिया उठकर वैठा है, अपनी मुट्ठी से नाक मलते हुए। अपने नन्हे-नन्हे हाथों से वह ढोड़ाय को धक्के देकर हटा देना चाहता है और ढोड़ाय विरक्त हो जाता है।

'छिः दुखिया, ढोड़ाय भइया बीमार हैं।' दुखिया रोना शुरु करता है। वावू लाल दूसरे खटिये से चिल्लाता है—वह रोता क्यों है?—और अन्त में विरक्त होकर दुखिया को अपने पास ले जाता है।

ढोड़ाय छोटा होने पर भी यह समझता है कि वावू लाल गुस्से में आकर ही दुखिया को उठा ले गया, और यह गुस्सा शायद उसी के ऊपर है। दुखिया की माँ भी चुप हो गई है। उसके वालों की महक आ रही है, नाक में वावा की जटा की गन्ध जैसी नहीं, दूसरी तरह की। उसने सोच रखा था कि आज इसके वाद विजा सिंह का किस्सा सुनेगा, पर वावू लाल ने सव नष्ट कर दिया। वड़ा अच्छा लगता है विजा सिंह का किस्सा। घोड़ा दौड़ाकर, तलवार लेकर जा रहे हैं विजा सिंह—किसी की हिम्मत नहीं कि उनके सामने खड़ा हो—हवागाड़ी से भी अधिक वेग से उनका घोड़ा दौड़ता है। दुखिया की माँ को वह पूछेगा कि इंजन से भी अधिक वल क्या विजा सिंह की देह में है? नहीं, दुखिया की माँ वावू लाल के डर से अभी वोलेगी नहीं, इसलिए वह चुपचाप सोई हुई है।

'क्या रे ढोड़ाय। सो गया क्या?'

ढोड़ाय उत्तर नहीं देता है। चुपचाप आँखें मींचकर पड़ा रहता है। अव दुखिया की माँ उठती है। ढोड़ाय जानता है कि ततमाटोली की प्रत्येक औरत रात को 'पुरुख' के पैर दबा देती है—तेल रहने से पैर में तेल लगाती है। उसे वावा की याद आती है। दुखिया की माँ अगर वावा के पैर में तेल लगाती तो वड़ा अच्छा होता। वावू लाल अच्छा नहीं है,..........दुखिया की माँ अच्छी नहीं है..........और दुखिया भी अच्छा नहीं है। वावा अभी क्या कर रहे हैं, कौन जानता है! आज भी तो वे ढोड़ाय को ले जाने के लिए आये थे, पर दुखिया की माँ ने जाने न दिया। कल ही वह चला जायेगा। थान पर, वावा के पास...... विजा सिंह के घोड़े पर चढ़कर......तलवार हाथ में लेकर, राजपुत्र सदावृक्ष की तरह......

ढोड़ाय सो जाता है।

□

गुरु-शिष्य-संवाद

ढोका बाबा ढोड़ाय की कद्र समझते हैं। छोकरा अक्लमन्द है। बाबा गूंगा है, फिर भी ढोड़ाय से बातें करने में उन्हें जरा भी असुविधा नहीं होती है। आँखों के इशारे से ही वे मन की सब बात जान जाते हैं। और, उसके कारण भीख भी खूब मिल जाती है। उसका गला खूब अच्छा है न। माई जी लोग उसे घर के अन्दर बुलाकर 'सीय राम-पद अंक बचाये। लखन चलहिं मगु दायें बायें' सुनती हैं। कुछ दिन से बाबा गौर कर रहे हैं कि उस गाने से अब कोई खास भीख नहीं मिल रही है। छोकरे ने भी समझा है। जब से 'हड़ताल-बरताल' शुरु हुआ है, सबको 'बटोही' वाले देहाती गाने की हवा लग गई है। कैसा गाना है, समझ में नहीं आता—जिस किसी भी बात के अन्त में 'रे बटोहिया' जोड़ दो, बस गाना हो गया। नये जमाने की नई बातें चलती हैं, और क्या?

बाबा ढोड़ाय को इशारे से पूछते—'इस बगल वाली कोठी को छोड़कर तू चला कहाँ?'

'वहाँ बीमारी है।'

सब खबर ढोड़ाय रखता है, किस घर में बीमारी है, किस कोठी की माईजी घर गई हैं। किस कोठी में दोपहर को बाबू लोगों के ऑफिस-दफ्तर जाने पर उसे कुछ मिल सकेगा, किस घर में उपनयन-संस्कार है, शादी है, पूजा है—सब ढोड़ाय को मालूम है। बाबा को यही चालित करता है, बाबा की भिक्षा की जानकारी उनके दो पुरखों की है, फिर भी ....

ढोड़ाय गा रहा है..........

सुन्दरऽ आऽ सू। भूमि भईया आऽ।
भरत आऽ के। देस-वाऽ से।
मोरा प्राण-आऽ बसे हिम अऽ।
होहरे बटोहिया-आ-आ..........।

बाबा बोले—चल, यहाँ से कोई आवाज नहीं देगा, सब कंजूस हैं। एक दरवाजे पर कितनी देर तक गला फाड़कर चिल्लाएगा?

ढोड़ाय सोचता है—बाबा तो समझते कुछ नहीं, खाली 'चल-चल' करते हैं। हड़बड़ करने से क्या भिक्षा मिलती है? माईजी अभी पूजा पर बैठी हैं। बाबू के ऑफिस जाने पर स्नान कर वे पूजा पर बैठती हैं। तुरंत वे उठेंगी।

जैसा उसने सोचा था वैसा ही हुआ।

बूढ़ी माईजी 'मटका का धान' भिक्षा में दे गईं—साथ में एक बैगन भी।

बाबा अप्रस्तुत हो जाने पर भी मन-ही-मन खुश होते हैं—यह छोकरा बड़ा होने पर उपयुक्त चेला होगा। केवल जरा शासन में रखना होगा। बड़ा नटखट लड़का

है यह, दिन रात खेलने में इसका मन लगा रहता है। रोजगार की तरफ मन ही नहीं है। सुवह अगर पकड़ सको तो साथ आएगा, और जरा-सा भी नजरों से अलग किया कि सट् गायव। कब थान से भाग जाएगा, किसी को मालूम न हो सकेगा। उसके वाद दिन भर सैर-सपाटा, आज इसके साथ झगड़ा, तो कल उसके साथ मारपीट। जो-जो काम वावा को पसन्द नहीं है, चुन-चुन कर वे ही सब करेगा। एक दिन वावा ने देखा कि वह एक गधे को पकड़ कर उसकी पीठ पर चढ़ा है। उन क्रिश्चन धांङरों के साथ उसका परिचय है। महतो ने एक दिन उसके पास शिकायत भी की है। वूढ़ा सुक्रा धांङर, जो वकील साहव के वगीचे में माली का काम करता है, ढोड़ाय को कहता है—'सन् वेटा'। रतिया छड़ीदार ने कुछ ही दिन पहले ढोड़ाय के नाम से नालिश की है 'गया था चिमनी वाजार में सकरकन्द खरीदने। देखा, तुम्हारा गुणधर लड़का ढोड़ाय, गले में एक रस्सी डालकर गूँगा वन गृहस्थों के घर—'गाय मारी है' कहकर भीख माँग रहा है। ततमाओं का नाम हँसाया इसने। तुम्हारे साथ भिक्षा माँगने जाना तो अच्छा है, इसमें तो कोई वेइज्जती नहीं है। इसका एक उचित प्रतिकार तुम्हें करना ही है।'

वावा गुस्से में आग हो उठते हैं। छोकरे ने छुपकर अपना अलग रोजगार करना सीखा है। उन चावलों और पैसों का वता, तूने क्या किया? चिलम का तम्वाकू अंत तक नहीं खींचता, इस डर से कि कहीं वह छोकरा यह न समझ वैठे कि उसके लिए कुछ रखा नहीं, फिर यह छुपाकर रोजगार? नमक हराम, हरामी कहीं का! कुंडी लगा हुआ त्रिशूल उठाकर वे ढोड़ाय को मारने के लिए रगेदते हैं। लेकिन वे ढोड़ाय के साथ दौड़ सकेंगे क्या? वहुत दूर जाने के वाद ढोड़ाय, वावा की नकल कर चलने लगता है—जैसे त्रिशूल और झोली लेकर वावा सुवह भिक्षा में निकले हैं। रतिया छड़ीदार हँस पड़ता है। वावा और भी ज्यादा गुस्सा होते हैं—हँसते हो क्या? तुम लोगों के लड़के रोजगार में जाते हैं—खुरपी लेकर घास छीलने, नहीं तो टोकरी लेकर वेर वटोरने। यह छोकरा जाएगा उन लोगों की वरावरी करने! रोजगार की वात न करो, तो वह खुश रहेगा। मैं ला दूँगा तभी दो मुट्ठी खाकर मेरा उपकार करेगा। नाः, देखता हूँ, छोकरे ने धांङर-टोली का रास्ता पकड़ा है। जा, तू अपने सात जन्म के वापों के पास।'' ....उसके वाद गुस्सा जरा कमने पर, वावा की उत्कंठा की सीमा नहीं है। विगड़ाहा, पगला लड़का कहीं कुछ कर न वैठे। मरनाधार के उस पार 'गोसाइँ' डूव जाता है। वकरहट्टा के मैदान के ताल-वृक्षों पर फैली किरणें समाप्त होती हैं। गोसाईं-थान के पीपल के पेड़ पर पक्षियों की चहचहाट वन्द हो जाती है। फिर भी ढोड़ाय नहीं आता। अनुताप से वावा की आँखें छल-छल करती हैं। तम्वाकू में स्वाद नहीं पाते हैं। वह क्या अभी गया है? उस वक्त 'गोसाइँ' थे माथे के ऊपर। वे ताल-पत्र की चटाई को झाड़कर वे-वक्त ही सो जाते हैं। कुछ देर के वाद लकड़ी का वोझ गिराने के शब्द से वे समझ गये—ढोड़ाय जलावन की लकड़ी वटोरकर लौटा है। ढोड़ाय पहले वात नहीं शुरू करेगा, वावा भी उसकी ओर नहीं देखेंगे। किसी तरफ

न देखकर वह फूंक से चूल्हा सुलगाने की चेष्टा करता है। आवाज से ही बाबा समझ गये—अब मिट्टी के बर्तन में उसने पानी चढ़ाया⋯⋯अब भिक्षा की झोली से चावल निकाल रहा है। और अधिक चुप नहीं रहा जाता। बाबा को खाने के लिए जिवछी की माँ कुछ सुथनियाँ दे गई हैं। अब भी वे सिरहाने के पास रखी हुई हैं। ढोढ़ाय जानता नहीं कि अभी-अभी उन्हें 'अदहन' में नहीं डालने से वे सीझेंगी कैसे। बाबा त्रिशूल हिलाकर झम्-झम् की आवाज करते हैं। इतनी देर के बाद ढोढ़ाय का अभिमान टूटता है—बाबा ने उसे पुकारा है।

'इतनी जल्द सो गये बाबा? भोजन नहीं करेंगे?' रात को फिर ढोढ़ाय, बाबा की चटाई पर उनकी देह से सटकर सो जाता है। बाबा उसकी पीठ सहला देते हैं। वह कब सो जाता है, पता नहीं।

यह है नित्य की घटना। बाबा कभी-कभी ऊब जाते हैं। फिर सोचते हैं, कम उम्र है। जैसी उम्र वैसी रीति। अपने हमउम्र-बच्चों के साथ न खेल-कूद करने से क्या अभी उसे अच्छा लगेगा? खेलो, पर अपने रोज के काम को कर के, और दल की पंडा-वृत्ति छोड़ दो। अभी तुरंत वह थान लौटेगा। फिर 'गोसाईं' डूबने के पहले उपाय नहीं है कि वह नजर आए। और, कितना जिद्दी है। डाँट-फटकार कर थोड़े ही उसे सँभाला जा सकता है? एक लगन सवार होने भर की देर है, बस। यह लगन बड़े होने पर भिक्षा की तरफ हो, तो अच्छा है। तभी न मेरा उपयुक्त चेला हो सकेगा! रामजी के मन में जो है, आखिर वही तो होगा। सेताराम! सेताराम! ढोढ़ाय गाये जा रहा है वही 'बटोही' वाला गाना। छाती में दम है छोकरे को। गान के अन्त में बटोहिया के 'आ' को उसने ऐसा चढ़ाया है कि भैमचेरमैन साहब के दरवान की कोठी की खिड़कियों को खुलवा छोड़ा। वह देखता है, बिजलीघर का मिस्त्री भी खिड़की से ताक रहा है। झोली भर गई है रे ढोढ़ाय, चल, अब थान लौट चल। साव जी की दुकान से जरा नमक लेना है।

□

गान्ही बाबा की चर्चा

कपिल राजा का मकान भुतहा कोठी-सा एक साल से पड़ा हुआ था। घर के लोगों के मर जाने के बाद, उसका दामाद आया था उस मकान को बेचने। ग्राहक नहीं जुटा था। मकान तो वैसा ही है, उस पर शहर से इतनी दूर! जमीन का दाम यहाँ नाम मात्र है। उस भूत वाले मकान के खर के छप्पर के लिए कौन पैसे खर्च करने जाता है? फिर कुछ दिन हुए कपिल राजा का दामाद लौट आया है। सुनने में आ रहा है कि वह चमड़े का व्यवसाय करेगा। लोग कहते हैं कि आज उसने बदरी मोची

के साथ बहुत देर तक बातचीत की है। कल दो गाड़ी नमक आया है उसके यहाँ।

यही प्रसंग छिड़ा था संध्या-भजन के अखाड़े में। धनुआ महतो ने कहा—यह चमुच सोचने का विषय है। बावू लाल को आने दो। एक तो वह मुहल्ले की पंचायत ा एक 'नायव' है, और उस पर है 'अफ़सर—आदमी'। हाकिम-वाकिम के साथ उसने ातें की हैं। कुछ दिन पहले से उसकी वर्दी और पगड़ी के रंग बदले हैं—उसके भैस-रमेन साहब ने कलस्टर की जगह ली है। बावू लाल ने कहा है कि उसके भैसचेरमेन ाहब को अब चेरमेन साहब न कहने से वे असन्तुष्ट होते हैं। अच्छा भाई, दरमाहा कर नौकर रखा है, तो जो कहो, वही कहने को राजी हूँ।

बावू लाल द्वारा चेरमेन साहब को कहलाने से कपिल राजा के दामाद की यह ब्रुराफात बन्द की जा सकती है। बदरी मोची को ही अगर चेरमेन साहब एक बार डाँट दें तो उसी से चाम का व्यापार बन्द हो जायगा। छिः, छिः, जात-धरम अब नहीं रहेगा! दुर्गन्ध के मारे मुहल्ले में रहना मुश्किल हो जायगा। हजारों की तायदाद में गिद्ध हम लोगों के मुड़ेरों पर बैठेंगे। और, वह सब जिसका नाम मुँह में नहीं लाया जा सकता है। हैक् थूः! थूः! सेत्ताराम!

परन्तु बावू लाल आज आता ही नहीं ऑफिस से! चेरमेन साहब की कोठी में चिट्ठी की टोकरी पहुँचाकर, उसके बाद सौदा खरीद कर वह रोज संध्या होते-ही-होते लौट आता है। पर आज रात तो दस बज गये। अरे ढोड़ाय! दुखिया की माँ से पूछ तो जरा कि बावू लाल घर पर कुछ कहकर गया है या नहीं?

'मैं वहाँ नहीं जाता हूँ।'

महतो कहता है कि बाबा ने उस छोकरे की बुद्धि एकदम चबा डाली है। नमकहराम कहीं का! पर साल भी तो बीमार होकर उतने दिनों तक दुखिया की माँ के पास तू पड़ा रहा! अच्छा गूदर, तू ही जा, बावू लाल के घर पूछ आ। उसके बाद उसने विकृत उच्चारण के साथ ढोड़ाय की ओर ताक कर कहा—'मैं ऐं उ॰॰॰॰हाँ॰॰॰॰आँ नहीं जाता हूँ! बदमाश कहीं का।'

'काहुहि बादि न देइय दोषू'—दुखिया की माँ और बावू लाल को मिथ्या दोष मत दो।

इसी बीच बावू लाल आ जाता है। वह किसी को यह पूछने का अवकाश नहीं देता है कि आज क्यों इतनी देर हुई।

डिस्टिबोड-ऑफिस में आज बड़ा हल्ला था। मास्टर साहब ने नौकरी से इस्तीफा देकर सब लड़कों को छुट्टी दे दी। लड़के लोग डिस्टिबोड के घड़ी-घर के सामने 'साभा' करने आये थे। मुफीलुद्दीन साहब मोख्तार हैं न, वे जो हर वक्त अफीम खाकर ऊँघते हैं—लाल किताब हाथ में लेकर 'सदर' बने थे।

'ले हलुआ, मास्टर साहब की॰॰॰॰॰॰॰॰'

'छूट गई नौकरी, सटक गया पान।'

'क्यों ? मास्टर साहब को फिर पगले कुत्ते ने काटा क्यों ? नौकरी से सरकार ने ही बरखास्त किया है। रुपये-पैसे की कुछ बात जरूर है ?'

बावू लाल सब को समझा देता है—नहीं, नहीं, यह सब कुछ नहीं, मास्टर साहब गान्ही बाबा के चेले हुए हैं। गान्ही बाबा कौन हैं ? गान्ही बाबा ? बड़ा गुणी आदमी। बौका बाबा और रेवन गुनी से भी 'नामी'। सिरिदास बाबा से भी बड़े। न होते तो क्या मास्टर साहब उनके चेले होते ?,गान्ही बाबा मांस-मछली, गांजा-भांग से परहेज रखते हैं। शादी-ब्याह नहीं किया है, नंगे रहते हैं।

बिलकुल ! बंगाली बाबू, मछली खाबू। इतनी तकलीफ क्या वे सह सकेंगे ? मास्टर साहेब !!

जमीन-जायदाद भी शायद बनाई होगी ?

उत्तर देते-देते बावू लाल झुँझला उठता है। बहुत रात तक तरह-तरह की बातें हुईं। बंगाली लोग बुद्धि में एक नम्बर हैं, पर जरा पागल-से हैं, ठीक साहबों के जैसे ही। पर, उनसे जरा-सा कम विगरैल। उनसे बातें करने में डर-सा लगता है। विजन बाबू वकील के मकान का खपड़ा पलटने के वक्त उस रोज भी देखा है—जयसिंह चौधरी, ब्राह्मण, और उतने बड़े किसान, विजन बाबू वकील ने उनके कागजात फेंक दिये। एक बार बैठने तक नहीं कहा, कितना गुस्सा था ! रेलगाड़ी में बंगाली बाबुओं से टिकटबाबू टिकट भी माँगे, तो देख लूँ। और, 'बाजा छाजा केस, तीन बँगला देश।'

आज सभा में सरकार को, लाट साहब को, बादशाह को मास्टर साहब ने अनेक बातें सुनाई हैं।

यह सब सिर्फ बात की रुई धुनना है, कहो जरा दारोगा साहब के खिलाफ तब न समझूँगा कि हिम्मत है ! कहो तो जरा टामस साहब के खिलाफ ! गोली से उड़ा देते हैं कि नहीं ? चाँदमारी में सधा हुआ है उनका हाथ।

चेरमेन साहब कलस्टर साहब को खबर देने गये कि उनके अड्डे में लोगों ने 'सभा' की है, मना करने से भी वे नहीं सुनते।

तब फिर तूने क्यों कहा कि तेरे चेरमेन साहब ने कलस्टर साहब की जगह अख्तियार किया है ?

बावू लाल इन बेवकूफों की मूर्खता पर झुँझला कर कहता है—अरे, यह तो डिस्ट्रिबोड में, मगर जिले के मालिक तो कलस्टर साहब ही हैं।

वही तो कहता, कलस्टर की जगह वे कैसे लेंगे ?

'लेकिन चेरमेन साहब जो गये, सो आज भी गये और कल भी गये। और, साँझ तक नहीं आये—न कलस्टर, न सिपाही, न कोई ! ऑफिस के बाबू लोग इन्हीं की इन्तजारी में अब भी चकित होकर बत्ती जलाकर बैठे हुए हैं। इसीलिए इतनी देर हुई।'

बावू लाल का अब तक भोजन नहीं हुआ है। बातचीत करते हुए ...

बीती। उसके उठने के साथ-साथ सभी उठ पड़ते हैं। ढोड़ाय डाँट सुनने के बाद से ही अब तक एक कोने में चुपचाप बैठा था। केवल उसी ने गौर किया कि जिस चमड़े का नाम न लेना चाहिए, उस चमड़े के गुदाय के मुहल्ले के पास होने वाली बात एकदम गुम हो गई है। बिल्ली जैसी मूँछ वाला बाबू लाल कितनी ही कहानियाँ सुना गया। गान्ही बाबा रेबन गुनी से भी बड़े हैं, बौका बाबा से भी बड़े हैं, मिलिट्री-ठाकुरबाड़ी के महन्थजी से भी बड़े हैं, एक नम्बर का गप्पी है बाबू लाल। झूठ-फूस कहने से ही हो जाता है?



गान्ही बाबा का आविर्भाव और माहात्म्य

'पक्की' के किनारे वाले पीपल के पेड़ में मधुमक्खियों का छत्ता शायद बहुत दिनों से है। शायद किसी ने देखा नहीं है, परन्तु एक दिन अगर कोई उसे देख ले तो जितनी बार वहाँ से गुजरेगा, उतनी ही बार उसकी नजर उस छत्ते पर पड़ेगी। गान्ही बाबा की खबर के वक्त भी ऐसा ही हुआ। यों तो किसी ने उनका नाम ही नहीं सुना है। उस दिन रात को बाबू लाल से उनकी खबर सुनी, उसके बाद से ही कुछ दिनों तक नित्य-नूतन खबरें चलीं। मास्टर साहब को मसजिद की 'साभा' में दरोगा साहब ने 'गिरफ्फ' किया है। गान्ही बाबा के चेलों के उपद्रव के मारे 'कलाली' की ओर जाने का उपाय नहीं है। चेले लोग आज कचहरी में, कल छत्तीस बाबू की दूकान के सामने क्या-क्या बकते हैं, करते हैं और चिल्लाते हैं, कुछ समझ में नहीं आता है। विचित्र-विचित्र खबरें आती हैं। इस कान से सुनते हैं, उस कान से निकल जाती है।

एक दिन एक घटना मन में जम गई। भोर को बौका बाबा ने अपने हाथ के दाँतून से धक्के देकर ढोड़ाय को जगाया ही था, कि रबिया की गला-तोड़ चीख सुनाई पड़ी। वह क्या कह रहा था, ठीक समझ में नहीं आया। बाबा और ढोड़ाय रबिया के घर की ओर दौड़ते हैं। रबिया पागल की तरह चिल्लाता दौड़ा आ रहा है—कोंहड़े के ऊपर गान्ही बाबा! पागल हो गया है क्या? भाँग के साथ धतूरे का बीज खाकर? ठहर कर बातों का जवाब देगा—इसकी फुर्सत नहीं है रबिया को। रबिया का आँगन मुहल्ले के लोगों से भर गया है। नीचे, छप्पर की ओलती से एक कोंहड़ा लटक रहा है। उसी पर सब टूट पड़े हैं।

ठीक ही, जैसा कहा है, वैसा ही। कोंहड़े के छिलके पर गान्ही बाबा की मूरत अंकित हो गई है। हरे रंग के ऊपर सफेद रंग। मुँह के पास मूँछ जैसा भी प्रतीत हो रहा है। कोई सन्देह नहीं है। अब क्या किया जाय? इस भाँति तो गान्ही बाबा को

ओस और धूप में छोड़ कर रखा नहीं जा सकता है ! ठाकुर-देवता की बात है ! महतो और मायब लोग बौका बावा को ही सागिर्द मानते हैं। ढोड़ाय को बड़ी खुशी होती है कि महतों इन सब बातों में बौका बावा से छोटे हैं। कोंहड़े का डंठल काटने का अधिकार बावा को ही मिला। बाबू लाल भी नहीं, महतो भी नहीं। डंठल काटने के समय आँगन में इकट्ठे हुए लोगों की डर से साँसें बन्द होने लगती हैं, बावा का हाथ थर-थर काँपता है। ढोड़ाय सोचता है, उस दिन बाबू लाल ने झूठ नहीं कहा है कि गान्ही बावा बौका बावा से भी अधिक गुनी हैं, नहीं तो क्या वे कोंहड़े पर आ सकते ?

पान में उस कोंहड़े को पूजा होती है—पान, कसैली और गुड़ से। उस दिन ढोड़ाय की खातिर देखने लायक थी। बावा पूजा में ही व्यस्त हैं। ढोड़ाय को ही मुहल्ले-बाजार में दौड़-धूप करनी पड़ी। उस दिन एक अच्छा मौका पाकर बावा ने सब के समक्ष ढोड़ाय के गले में तुलसी की माला पहना दी। माला गले में डालने से ही ढोड़ाय हो जाता है 'भगत'। और, अब कोई उसे ढोड़ाय ततमा अथवा ढोड़ाय दास नहीं कह सकेगा। वह अब जैसा-तैसा आदमी नहीं है, उसे अब कहना होगा—ढोड़ाय भगत। बावा के समान बड़ा हो गया है वह—गान्ही बावा के आविर्भाव के दिन ही। आज से उसे रोज स्नान करना पड़ेगा। दूसरे-दूसरे लड़कों की तरह नहीं। मांस-मछली से एकदम परहेज। गुदर को देखकर उस दिन ढोड़ाय को दया आती है—बेचारे के गले में कंठी नहीं है !

उसके बाद गान्ही बावा की मूरत वाला वह कोंहड़ा माथे पर लेकर ढोड़ाय आता है मिलिट्री-ठाकुरबाड़ी। देह पर वही लाल कपड़ा। आगे-आगे ढोड़ाय और बावा, और पीछे ततमा लोग। यहाँ तक महतो भी।

ठाकुरबाड़ी पहुँचने पर उन लोगों के उत्साह पर पानी फिर जाता है। महंथ जी कहते हैं—क्या रे ढोड़ाय, तेरा तो दर्शन ही नहीं होता है ! जिस ठाकुरबाड़ी में राम-सीता की मूर्ति है, वहाँ गान्ही बावा की मूरत रखना ठीक नहीं है। तुलसी दास ने ऐसा ही कहा है—मुखिया सरकार....

तुलसी दास के निर्देश तक ततमा लोग समझ पाये पर उसके साथ 'मुखिया सरकार' का क्या सम्पर्क है, यह वे लोग ठीक से नहीं समझ सके।

'मूरत' को लेकर बड़ी आफत है। अब क्या किया जाय ? क्या करना चाहिए ? इस ढंग से मूरत का दर्शन मिला है कि राम-सीता के बगल में कैसे रखा जा सकता है ? महंथ गर्दन हिलाते हैं—नहीं, यह तो हो ही नहीं सकता है ! तब क्या होगा ! यह कैसी परीक्षा में डाल दिया रामजी ने ? इतनी कृपा कर हम लोगों के घर में आये ही गान्ही महाराज, और हम लोग तुम्हें रखने की जगह नहीं दे पा रहे हैं। अगर साहब लोगों, बाबू-भैया लोगों या राज-दरभंगा की तरह धन रहता तो गान्ही बावा के लिए एक ठाकुरबाड़ी बना देता। तुलसी दास ने ठीक ही कहा है—'नहीं दरिद्र सम दुख जग माहीं'। बावा की आँखों के कोर आँसू से भर जाते हैं। उनका सारा जीवन

भिक्षा माँगते ही बीता है। पैदाइश से लेकर आज तक कभी दोनों शाम भात खाया है, स्मरण नहीं है। एक शाम जलपान और एक शाम भात, सो भी अगर जुटा तब—यही तो सभी ततमा लोग खाते हैं। यह सिर्फ उसकी अपनी बात नहीं है, फिर भी 'नहीं दरिद्र सम दुख जग माँही' इन अस्पष्ट शब्दों का अर्थ इस विपद् की झलक में जैसे सहसा स्पष्ट हो उठता है।

कपिल राजा के 'पाखंडी चमड़ेवाला' दामाद ने गान्ही बाबा के नाम से उगाही देने के लिए जो गुड़, आटा और केले भेज दिये हैं, वे यों ही पड़े रहते हैं।

ऐसे ही समय अचानक रेवन गुनी हांफता हुआ दौड़ा आता है। आजकल अपराह्न के समय गान्ही बाबा के चेले 'कलाली' में बड़ा दिक करते हैं। इसलिए वह दोपहर को ही अपना काम समाप्त कर आता है। वहां से लौटते वक्त अचानक मुंह से उसने गान्ही बाबा के आविर्भाव की बात सुनी। इसीलिए वह हांफता हुआ आया है। बेर की तरह उसकी आंखें बाहर निकलती-सी प्रतीत होती हैं, दौड़ने के श्रम से भी हो सकता है, शराब के कारण भी हो सकता है। वह आकर उस कोंहड़े पर झुक जाता है। और कोई होता तो सब दौड़कर रोकने जाते। पर किसकी गर्दन पर अनेक सर हैं कि रेवन गुनी के मुख पर कुछ कहे। ढोड़ाय का कलेजा डर के मारे काँपने लगता है। शायद अभी वह मूरत पर कुछ कर बैठे—जैसा मिजाज है उसका। ततमा लड़कियाँ रेवन गुनी को देखकर माथे पर कपड़ा खींच लेती हैं।

ठीक ही तो, टौन में जैसा सुना था, वह बिलकुल ठीक है। ठीक। ठीक-ठीक। गान्ही बाबा कोंहड़े में उग रहे हैं, सिर्फ जगन्नाथ जी की तरह हाथ-पैर उगे हैं।

रेवन गुनी कोंहड़े को प्रणाम करता है। फिर चिल्लाकर कह उठता है—'लोहा मान लिया, लोहा मान लिया मैंने गान्ही बाबा का।'

सभी अवाक् हो जाते हैं। रेवन गुनी ने लोहा मान लिया। छत्ते पर मधुमक्खी के जरा-सा हिलकर बैठने जैसी उत्तेजना का प्रवाह दौड़ जाता है दर्शकों में। रेवन गुनी जिसका लोहा माने, वह तो प्रायः रामजी के समान है। उतना बड़ा न हो, तो कम-से-कम गोसाईं अथवा भानमती की तरह जाग्रत देवता तो जरूर है।

मृदु गुंजन उठने के पहले ही गुनी फिर बोल उठता है—आज से कौन हरामी का बच्चा है जो कलाली में जाकर गान्ही बाबा की बातों के खिलाफ करे। आज जो किया है, उसके लिए तो कोई चारा नहीं है। कल से गान्ही बाबा 'पचइ' छोड़ कर और कुछ नहीं पीऊँगा। जैसे अब वह रो पड़ा—'देख लेना महतो।'

अब महतो वर्तमान समस्या की बात उठाते हैं।

गुनी जैसे आसमान का चाँद हाथों में पाया है। गान्ही बाबा की जय हो—कहकर उठ खड़ा होता है। वह और अपनी पगड़ी ठीक कर लेता है। महतो ढोड़ाय को कहते हैं—जा, तू उसके घर मूरत को पहुँचा दे। उसे गुनी पर ठीक यकीन नहीं हो रहा है। ढोड़ाय भी वही सोच रहा था। महतो उसके मन की बात ठीक समझते हैं।

उस रात रेवन गुनी के घर पर भजन-मंडली जमती है—जो गाँव के इतिहास में और कभी नहीं हुआ था। ढोढ़ाय भगत ने गान्ही बावा के नाम का जिस बटोहिया के गाने में उल्लेख था, उसे ही गाया। रेवन ने उसके साथ तान पकड़ी। वह गान्ही बावा की बदौलत रेवन गुनी की बराबरी का हो गया।

दूसरे दिन कोहड़े को कपड़े से ढँक कर रेवन गुनी मेले में गया था और बहुत दिनों के लिए शराब का खर्च भी उसने जुटा लिया था, लोगों को वह मूरत दिखाकर। एक पैसा देते ही वह कपड़े का आवरण उठाकर उस कोहड़े को दिखा देता था।

□

झोटाहा उद्धार

ततमा-टोली की पंचायत में यह तय हो गया कि बहुत ही ऊँची कोटि के संन्यासी हैं गान्ही बावा। मुसलमानों को भी प्याज-गोश्त छुड़ा दिया है उन्होंने। एक बार उन्हें बुलाकर कपिल राजा के दामाद को दर्शन कराने से अच्छा होता। अरे, नहीं आयेंगे रे, नहीं आयेंगे। मास्टर साहब की तरह बानू-बेला रहते तुम लोगों के यहाँ नहीं आयेंगे, नहीं तो छप्पर के ऊपर प्रकट होकर रबिया के घर को वे थोड़े ही पवित्र करते। 'थान' के जैसा घर-द्वार-आँगन साफ-सुथरा रख सको, तभी न साधु-संत आकर खड़े हो सकते हैं। यह वाकई एक मार्के की बात कही है तूने। सब के मन को वह जँचती है। भरगामा के ग्वाले लोग इतवार को गाय नहीं दुहते हैं। उस दिन वे अपने घर-द्वार साफ करते हैं, वे लोग खिरिदास बाबाजी के चेले हैं न! धनुआ महतो सोचता है—रविवार को गान्ही बाबा के नाम से काम में न जाने से अच्छा होता। रविवार त्योहार का दिन है। सरकार-बहादुर तक कचहरी बन्द रखते हैं। चेरमैन साहब डिस्टिबोड बन्द रखते हैं। पादरी साहब दूध बाँटते हैं क्रिश्चन धांगरों को। सब को इस बात का बड़ा उत्साह है। इतवार को कचहरी बन्द रहने की वजह से बाबू घर पर रहते हैं, और तब तक तमाम लोग उनके घर में काम करते हैं, उनके काम की देखभाल करते हैं।

ढोढ़ाय के माथे पर वज्राघात होता है। अच्छे घरों में रविवार को ही लोग भीख देते हैं, खासकर वे लोग, जो अधेले देते हैं। बौका बाबा तो पंचायत में आते ही नहीं हैं। वे अगर आते तो इसका प्रतिवाद कर सकते। ढोढ़ाय की बात का तो किसी को ख्याल ही नहीं था। छोकरा ढोढ़ाय दूर से कहता है, हम लोगों का पेट मत काटो महतो, इतवार की रोजी ही हम लोगों की असली कमाई है। नई-उम्र की धृष्टता पर नायब और महतो लोग अवाक् होते हैं। इतना छोटा लौंडा पंचायत में बोलने आया है!

अरे। कंठी पहनकर बड़ा भगत बना है! गान्ही बावा बड़े हैं कि तेरा रोज-गार!

कौन बड़ा है, ढोड़ाय सचमुच इस प्रश्न का जवाब नहीं दे सकता है। शर्माया मुंह लेकर वह बैठ जाता है। उसकी और उसके बावा की कमाई की बात तो मुखियों ने एक बार भी नहीं सोची। गान्ही बावा कहें, तो उसमें कुछ कहने का नहीं है, वह तो ढोड़ाय चाहता ही है, गान्ही बावा तो उसी के दल के व्यक्ति हैं। लेकिन अपना पेट काटकर गान्ही बावा का कहना माने, यह उसकी समझ में नहीं आता। कमाई की बात इसी उम्र में ढोड़ाय ने ठीक से समझी है। बौका बावा चाहे जितना ही सोचें कि छोकरे का उस तरफ कोई ध्यान नहीं है।

ढोड़ाय का समूचा क्रोध इकट्ठा होता है पंचायत के घुनुआ महतो और बाबू लाल पर। उसके लिये सोचने पर पंचायत एक मिनट भी बेकार समय बरबाद करने को राजी नहीं है। वहां एक बड़ा प्रश्न उठा है झोटाहा लोगों को लेकर। सिर्फ इतवार को ही आँगन साफ करने से नहीं चलेगा। झोटाहा लोगों को जरा पाक-साफ रहना होगा। औरत-जाति ही ऐसी है, हजार कहने पर भी उन लोगों से कोई काम नहीं करा सकोगे।

कौन 'झोटाहा' बात नहीं सुनेगी? महीने में एक दिन सब 'झोटाहा लोगों' को स्नान कर पाक-साफ होना पड़ेगा। गाँठ के पैसे खर्चकर शादी की है न? या मँगनी की है?

लँगड़ा चतूरी दूर बैठा था। उसकी बहू उसके साथ नहीं रहना चाहती है, इसीलिए महतो और नायब लोगों ने इसरा के साथ उसकी सगाई कर दी है। वह कहता है, महतो और छड़ीदार ने इसरा से घूस खायी है। वह चिल्ला उठता है—तुम्हीं लोग तो 'झोटाहा लोगों' को माथे पर चढ़ाते हो। पंच लोग अगर जरा कड़े हों, तो 'झोटाहा लोगों' की क्या हिम्मत है कि वे इधर-उधर करें। टेक कर चलने वाली अपनी लाठी को अपने माथे पर एक बार घुमा कर वह कहता है—'जरा-सा भी 'चाल से बेचाल हुई कि....।' तब तक एक तरफ हल्ला होता है, उसके शेष शब्द समझ में नहीं आते, लेकिन लँगड़े चतूरी की बाहर निकल आई आँखों से प्रतीत होता है कि उसने कोई भयानक दवा की बात कही है। जिधर से हल्ला उठा था, वहाँ देखा गया कि कुछ लोग मिलकर इसरा को शांत कर बैठा रहे थे।

और भी कितने ही प्रकार के प्रश्न वहां उठते हैं। रिवाज के खिलाफ इतना बड़ा प्रश्न यों ही सुलझ नहीं सकता है। सबसे बड़ा प्रश्न है 'झोटाहा लोगों के' कपड़े सुखाने का। एक ही तो कपड़ा है, माना गरमी में देह में ही सूख सकता है, पर जाड़े में?

अन्त में तय होता है—महीने में 'झोटाहा लोगों' को एक दिन स्नान करना ही होगा। किसी तरह की दलील नहीं सुनी जायेगी। 'गोसाइँ' माथे के ऊपर आने पर

कोई मर्द फौजी ईनारे के उत्तर वाली उस बाँस की वाड़ी तरफ नहीं जा सकते—वहाँ 'कोटाहा सोग' कपड़े सुखाएँगी।

इसके बाद नित्य नया कांड होता। गान्ही बाबा की अजीव-अजीव खबरें। बौका बाबा और अन्य लोग देखने गये काम्हा-गनेशपुर। ढोड़ाय को अपने साथ नहीं ले जायेंगे—बहुत दूर है—सात कोस। उतनी दूर तू नहीं चल सकेगा। किन्तु जब उन लोगों ने वन-भाग के पुल को पार किया तो देखा, ढोड़ाय भगत अपना लाल रंग का कपड़ा पहनकर पीछे से दौड़ता हुआ आ रहा है। कैसा जिद्दी लड़का है, रे बाप। ढोड़ाय को विश्राम का अवसर देने के ध्येय से बाबा को पेड़ के नीचे बैठना पड़ा। उसके बाद काम्हा-गनेशपुर में बेल के पेड़ के नीचे पहुँचकर देखा, जैसा सुना गया है, ठीक वैसा ही है। बेल के उस विशाल पेड़ की डालों के पत्ते धीरे-धीरे हिल रहे हैं—तीन-तीन पत्ते एक साथ। पत्तों में जैसे कुछ लिखा हुआ है—ऐसा ही प्रतीत होता। ठीक ही गान्ही बाबा का नाम है! जय हो! नयन सार्थक हुए। जीवन सार्थक हुआ आज! ढोड़ाय का इतनी तकलीफ सहकर आना सार्थक हुआ। जय हो गान्ही बाबा! तुम्हारे नाम के गुण से ही न इतने लोगों ने बेल के पेड़ की डाली-डाली में हुक्के बाँध दिये हैं। उस बेल के पेड़ के नीचे की धूल ढोड़ाय अपने लाल कपड़े की खूँट में बाँधकर ले आता है।

दूसरे दिन, भोर को 'थान' पहुँचते ही, बाबा ने अपना हुक्का देकर ढोड़ाय को चढ़ा दिया महतो के घर के बगल वाले ब्रह्मभूतवाले बेल के पेड़ पर। ढोड़ाय ने पेड़ पर बाबा का वह हुक्का लटका दिया।

तम्बाकू न पीकर उस दिन बाबा का छटपटाना देखने लायक था। ढोड़ाय चुपचाप बाबा के पास बैठा रहता है। दो दिनों से रोजगार नहीं है, झोली खाली है। मटियाले आलू की तरह एक प्रकार का कंद धाङर लोग खाते हैं। ढोड़ाय ने उन्हीं से सीखा है कि उन आलुओं को चूने में उबाल लेने पर तिक्तता खत्म हो जाती है। ये आलू अगल-बगल पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं, पर ततमा लोग इन्हें जहर कहते हैं। ढोड़ाय बहुत देर तक उन आलुओं को उबालता है। वक्त जैसे बीतता ही नहीं। फिर, ऐसे दिन में बाबा को छोड़कर दूर रहने को ढोड़ाय का मन भी नहीं चाहता। बाबा ढोड़ाय को इशारा करते हैं—तेरे लिए अच्छा ही हुआ। मेरे लिए और तुझे चिलम नहीं भरना पड़ेगा। बाबा मुर्दे की तरह पड़े रहते हैं। ढोड़ाय को बाबा पर बड़ी दया आती है। जरूर उनका देह-हाथ दर्द कर रहा है। पाँव जरा दबा दूँ। बाबा कोई एतराज नहीं करते बल्कि देह पर खड़े होकर दबा देने को कहते हैं।

बाबा को देह दबाते-दबाते न जाने क्यों ढोड़ाय को दुखिया की माँ की याद आती है। बड़ा अच्छा होता, अगर वह बाबा के पैर दबा देती। उसकी अपनी बीमारी की उस रात की बात उसे याद आती है। दुखिया की माँ उस बिल्ली जैसी मूँछवाले के पैर में तेल मालिश कर रही थी—साला नवाब....

'परनाम बाबा।'

'महतो? रात को आये हो, क्या बात है? छड़ीदार को भी साथ देख रहा हूँ।'

'योंहीं संगत करने चला आया। लड़के की खूब सेवा पा रहे हो।'

ढोड़ाय बाबा से भी अधिक लज्जित हो जाता है—बाबा की देह पर पैर रखते बाहर के लोगों ने देख लिया न इसलिए। चेला, गुरु की देह से पाँव लगायेगा। कल महतो इसी को लेकर लोगों से दस तरह की बातें कर सकता है।

बाबा लज्जित होते उठकर बैठते हैं। छड़ीदार और महतो बिना काम के 'थान' में आनेवाले आदमी नहीं हैं।

ढोड़ाय लज्जा भंग करने के लिए कहता है—आज तम्बाकू न पीने के कारण बाबा की तबीयत बेचैन है। महतो मजाक से पूछते—'और तेरी?'

'पाता तो एक कश लेता, न पाने से परवाह नहीं।'

महतो अफसोस कर कहते हैं, मुझे ही केवल मुसीबत है। तम्बाकू बीड़ी न पीने से एक घंटा भी नहीं रहा जाता है। समझता तो हूँ कि तम्बाकू बहुत खराब चीज है। फिर सुनता हूँ, आजकल अनेक जगह तम्बाकू में गाय का रोयाँ पाया जा रहा है....कहकर वह कई बार खँखारकर थूक फेंकता है—जैसे, उसके गले में उस वक्त भी एक रोयाँ फँसा हो....

छड़ीदार कहता है—'समझता तो सब हूँ। रामजी का दिया हुआ शरीर तम्बाकू के पत्ते से बनी हुई कोई भी चीज नहीं लेना चाहता है। खैनी खाओ, तो थूक के साथ फेंक देना होगा, नस लो, तो नाक साफ करना होगा, जर्दा खाओ, तो पान की पीक के साथ फेंक देना होगा, तम्बाकू-सिग्रेट पीओ तो धुएँ को बाहर फेंक देना होगा। इस हरामजादे का नशा लेकिन छोड़ नहीं सकूँगा। बाबा, तुम्हारे भी सात दिन बीतें तब जानूँगा।'

'सुराज उतना सहज नहीं है' कहकर महतो तम्बाकू का प्रसंग दबा देता है।

उसके बाद महतो असल काम की बात छेड़ता है—उन लोगों की इच्छा है भगत होने की।

महतो ने भगत होने की सभी सुविधा-असुविधाओं को अच्छी तरह विचार कर देखा है। पहली असुविधा है, मांस-मछली नहीं खा सकोगे। मांस तो भेड़ के बलिदान के रोज खाता है, मछली कदा-क्वचित मरनाधार में पानी आने पर एक-आध बार जुट जाती है। इसलिए वह कोई बात नहीं है, रोज स्नान करना—वह जरा गड़बड़ है, पर थोड़ा-सा कष्ट झेलने को वह राजी है। एकमात्र बड़ी असुविधा यह है कि वह भगतों को छोड़कर और किसी के यहाँ भोज और श्राद्ध में खा नहीं सकेगा। लेकिन इसके बदले में वह पायेगा बहुत कुछ। लोगों की नजर में वह बड़ा हो जायेगा। यों तो कुछ दिनों से लोगों ने महतो, छड़ीदार और नायबों के बारे में थोड़ी-बहुत स्पष्ट

बार कहनी शुरू की है। ऐसा पहले नहीं था। उस दिन लंगड़े पचुरी ने पंचायत के अन्दर चिल्लाकर सभा सब बन्द किया। महतो अपनी जगह और जरा मजबूत बनाना चाहता है। साल भर में एक दिन अगर महतो गाना छोड़कर लोगों के मुँह बन्द किये जा सकते हैं, तो महतोगिरी से कुछ पैसे कमा लिए जा सकते हैं। उस समाज में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी, कौन जाने वह अपने पहलेवाले महतो नुनूलाल के मन की बराबरी का भी हो जा सकता है।

इसीलिए ये लोग आये हैं बाबा से सलाह लेने।

ढोंढ़ाय को यह बात जरा भी अच्छी नहीं लगती है। जैसे उन लोगों के घर की चीज पर बाहर का कोई हस्तक्षेप कर रहा हो। रविवार को रोजगार बन्द करवाने के समय बाबा की सलाह की जरूरत नहीं थी, और अभी गरज है, तो जरूरत हुई है बाबा की सलाह की। बाबा अगर सलाह नहीं दें, तो बड़ा अच्छा हो।

बाबा लेकिन विचित्र किस्म के 'जीव' हैं। वह शुरू शुरू होते [illegible] छड़ीदार और महतो के प्रस्ताव से। ये उन लोगों को पीठ ठोंककर हँसने में विदग्ध हैं। अंगुली को गिनकर, आकाश दिखाकर, पैर दिखाकर ये समझा देते हैं कि इतवार को सुबह स्नान कर आने से ही बाबा उनके गले में तुलसी की माला पहना देंगे।

ढोंढ़ाय बाबा पर गुस्सा करता है। उनका कोई पैर दबाने आयेगा? महतो के जैसे आदमी के भगत होने से वह खुद नहीं चाहता है भगत रहना।



ततमा-धाङर संवाद

ढोंढ़ाय गान्ही बाबा को ठीक से नहीं समझता है। महतो और छड़ीदार के भगत होने के बाद से ही देखा गया, गान्ही बाबा उन्हीं पर सदय हैं, ढोंढ़ाय पर नहीं।

सुबह स्नान करने के पश्चात् ही महतो और छड़ीदार ततमा टोली के चबूतरे पर कुछ जगह गोबर से लीपकर बैठते हैं। वहाँ वे एक लोटा रखते हैं। उसके बाद महतो उस लोटे में कुछ पानी डाल देता है। रबिया छड़ीदार उस लोटे को गमछे से ढककर उस पर तुलसी के तीन पत्ते रख देता है। साथ-ही साथ, महतो मन-ही-मन गान्ही बाबा का मन्तर पढ़ने लगता है।

प्रणाम के अंत में गमछा हटाकर देखा गया तो गान्ही बाबा लोटे के पानी में आये हैं, पानी घट गया है। घट गया है, सो आँखों से देख नहीं रहे हो! दो ही अंजुली तो केवल पानी बाकी था। सच में, छूता भी उस लोटे को, हर्गिज न छूता। वह पानी

सौरा नदी में फेंक आना होगा।

ढोड़ाय को ईर्ष्या होती है, महतो और छड़ीदार के ऊपर। वे भगत होने के साथ ही गान्ही वावा को वुला रहे हैं। वह स्वयं भी 'थान' के एकान्त में चेष्टा कर देखता है। लेकिन उसके लोटे में गान्ही वावा नहीं आते, जल ज्यों का त्यों रह जाता है। गान्ही वावा का यह पक्षपात। उसके मन में वड़ा आघात पहुँचता है। लेकिन वह किसी के सामने यह व्यक्त नहीं कर पाता है कि उसकी भगतगिरी में ताकत नहीं है? लोगों के यह जान जाने पर वह मुहल्ले के लोगों के सामने छोटा हो जायगा।

लेकिन ढोड़ाय की उस दिन की प्रार्थना शायद गान्ही वावा ने सुनी। महतो और छड़ीदार की धाङर लोगों ने अच्छी तरह वेइज्जती की। रविवार को दिन-दहाड़े महतो का दल गया था धाङर-टोली में तुलसी की नई माला दिखाने। धाङरों के साथ ततमा लोगों का असली झगड़ा है रोजगार को लेकर। वे सभी काम करने को राजी हैं। इस पर साहव-पादरी लोग, वावू-भइया सव उन्हीं की तरफ हैं। कपिल राजा के लिए उन लोगों ने सेमल के पेड़ों को एकदम जड़ से उखाड़ डाला था। लड़ाई के जमाने में वे लोग कपिल राजा के लाह के लिए वेर की डाल काटते थे। सुअरखोर, मुर्गीखोर उन आदमियों को गान्ही वावा के प्रति प्रीति दिखाने के लिए गये थे, ये दो नये भगत। जाते ही इन लोगों ने उनसे कहा—तुम लोगों को सुअर, मुर्गी छोड़ना होगा। गान्ही वावा का हुक्म है। मास्टर साहव ने भी 'ससुरा' से निकलकर यही कहा है। जैसवाल-सोडा-कम्पनी में काम करता है वूढ़ा इतवारी। वह तो अपने दन्तहीन मुंह से हँसकर लोट-पोट हो गया। अरे, गान्ही वावा ने तुम लोगों को खत दिया है क्या? तव वोलो, तुम्हारे मुहल्ले में डाक-पिउन आया है? सनीचरा धाङर कहता है—ले डिग-डिग। वही कहो। महतो, तू भगत वना है? और, छड़ीदार को भी देखता हूँ, वना है। विल्ली-भगत और वगुला-भगत! इसीलिए गान्ही वावा का हुक्म छाँटने आये हो। अरे परसों भी तो मैंने छड़ीदार को साँझ के वाद कलाली में देखा है।

'खवरदार! झूठ मत वोलो जीभ खींच लूंगा।'

'आओ न, हिम्मत देखूं।'

इतवारी, सनीचरा को चुप होने को कहता है। उसके वाद महतो को साफ-साफ कह देता है—साहव और मेमसाहवों के पास सुअर का मांस और मुर्गी के अंडे वेचकर रोजगार होता है। गान्ही वावा अगर हम लोगों के पेट काटते हैं, तो वे तुम्हारे ही रहें। और, पचई हम लोगों की पूजा में चढ़ती है, उसे नहीं छोड़ सकूंगा। मास्टर साहव हैं वावू-भइया लोग। उन्हें जो करना शोभता है, वह हम लोगों को नहीं शोभता है। वह जो 'दुश्मन' का तमाशा हुआ था—झिकरीहाट का मैदान घेरकर, उसमें जो रंग्रेज-जर्मन की लड़ाई हुई—उसमें हम लोगों को घुसने दिया गया था? तुम लोगों को घुसने दिया गया था? गिरानी की दुकान का सस्ता चावल तुम लोगों को दिया जाता था उस वक्त? एस० डी० ओ० साहव की सरकारी कचहरी की दूकान का 'लट्ठमार'

और 'अमरूद-मार्का रेली' हम लोगों को दिया है किसी दिन ? फिर रोज स्नान करना—तुम लोग आज भगत बनकर यह कर रहे हो। यहाँ तक कि हम लोगों की औरतें हर रोज स्नान करती आयी हैं। महतो और उसके दल के लोग गुस्से से आगबबूला हो उठते हैं। हमारी औरतों पर व्यंग कसना ! उन मेमसाहब धाङरनियों को भेज देना साहबों के टोले में और मुसलमानों के घरों में, जिन लोगों के साथ मिलकर तुम लोगों ने सेमल के पेड़ों को सपाट कर दिया है। भेज देना सनीचरा की बहू को मौलों साहब के पके बालों को नोंचने।

भयानक काण्ड छिड़ जाता है। हल्ला-गुल्ला में किसी की बात समझ में नहीं आती है। ततमा लोगों को सजीव गालियों के वेग से धाङर लोग आकुल हो जाते हैं। अंत में एक तरह से तंग आकर ही उन लोगों ने ततमा लोगों को रगेदा। हर वक्त की तरह आज भी ततमा लोग भागते हैं। सीधे पक्की की ओर—लाठी फेंककर, टीक उड़ाकर, पक्की के पत्थर से ठोकर खाते—भागो, भागो ! उसके बाद सड़क पार कर ततमा टोली की तरफ पेड़ों की कतार में रास्ते के लिये कटी हुई मिट्टी के गड्ढे में जाकर खड़े होते हैं। वहाँ फिर मोर्चाबन्दी कर वे लोग गाली-गलौज शुरू करते हैं। धाङर लोग हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाते हैं। उन लोगों का यह नियम है कि वे लोग पक्की पार कर कभी भी ततमा लोगों से मारपीट नहीं करते हैं। सिर्फ चिल्लाकर कह जाते हैं—हवेली परगन्ने में पहुँचा दिया है। 'सिन्दूर' लगाना, सिन्दूर। दोनों भगत मिलकर—बिल्ली-भगत और बगुला-भगत। 'झोटाहा लोगों' को अपने गले का हार दिखाना न भूलना। उसके बाद धाङर लोग लौटते समय अपने में चर्चा करते हैं—सालों के खून का कोई ठीक है ? साँझ के वक्त बाबू भइया लोग ततमा टोली की गली-गली में घूमते-फिरते हैं। साहब आयेगा कहाँ से ? सब खून पानी हो जा रहा है। हम लोगों का टोला होता तो मजा चखा देता बाबू लोगों को। बाबू-भइया लोग महीन चावल का भात खाते हैं और नाम से डरते हैं।

सनीचरा कहता है—मैंने भी तो शादी के पहले कितने बाबू लोगों के यहाँ भात खाया है। इतना सुफेद चावल। एकदम मीठा, है न ? सेर भर से कम में उस चावल से तो पेट ही नहीं भरता है। उसके बाद एक लोटा पानी पीओ। आधे घंटे के अन्दर सब फुस्स-सुस—कहकर वह चुटकी बजाता है।

एकमात्र सुक्रा धाङर इस अनधिकार चर्चा का प्रतिवाद करता है। जानते हो, महीन चावल खाने से बुद्धि खुलती है। उस महीन चावल के बल पर ही बाबू-भइया को हाकिम बैठने के लिए कुरसी देते हैं। तुमको देते हैं ? ततमा टोली को देते हैं ? इन सब टोलियों में डाक-पिउन आता है चिट्ठी लेकर ? जो मुमकिन है, वही कहो।

ततमाओं को भगाने के उल्लास में, सुक्रा बाबू-भइया-लोगों की तरह-तरह की बातें लाकर सारी चीज को गड्ड-मड्ड कर डालता है।

बूढ़ा इतवारी लाल चावल न खाने पर भी बुद्धिमान है। वह उस प्रसंग का रुख

बदल देता है। वह कहता है—'चल, चल। सिंगाबाद से सनीचरा नया मृदंग लाया है। मोचिया का मृदंग क्या ठठेगा इसके सामने ! चल, जल्दी खा-पीकर बांगा-पेड़ के नीचे। गोइंठा जलाकर लाना न भूलना सनीचरा। जल्दी करो।

विरौली के हटिया—आ—
दौड़े दुकनिया—आ—
ठस-ठस रे बोले बुनियाँ—आ-आ-आ-आ····
जल्दी रे जल्दी !

□

समुअर की भर्त्सना

ढोड़ाय बड़ा हो गया है। वह अब ततमा टोली की अली-गली में कनैल खेलने की 'घुच्ची' खोदता नहीं फिरता, बांस के भोंपू के अन्दर अरदमैदा का फल डालकर बन्दूक नहीं छोड़ता, मुरब्बे के पत्ते से घर छाँहने का खेल नहीं खेलता। वह सब बच्चों को करने दो। वह अब मुहर्रम के वक्त फुदी सिंह के दल में मिलकर मातम गाता है दुल-दुल घोड़े के मेले में····

हिन्दु मुसलमान भइया, जोरहुँ रे पिरितिया
रे भाई, हाय रे हाय !···

बरसा शेष होने पर भी जैसे मरनाधार में पानी रह जाता है, गान्ही बाबा की हवा बहने के बाद उसकी व्यंजना रह जाती है, इस मातम-गाने में भी।

मरगामा के ततमा लोगों के 'झुगिरा-नृत्य' के दल में उसे लेकर खींचा-तानी पड़ गयी। मरगामा के लोग हैं 'मुंगेरिया ततमा' और ततमा टोली के हैं 'कनौजिया ततमा।' मुंगेरिया ततमा जाति में छोटे हैं, इसलिए उन लोगों के साथ इतना लगाव ततमा टोली के लोग पसन्द नहीं करते हैं।

लेकिन वह छोकरा क्यों किसी की बात सुने। यहाँ तक कि धाङर टोली के करमा-धरमा के नाच में जाकर बैठ जाता है। धाङर टोली में ही जाना उसने नहीं छोड़ा, फिर दूसरी जगह जाना उसने छोड़ा या नहीं, इसमें क्या आता जाता है।

बाबा मन-ही-मन एक बात के लिए बड़े खुश हैं। वह यह कि धाङर टोली से आम, लीची आदि तरह-तरह के फल ढोड़ाय ले आता है। ऐसी-ऐसी चीजें जिन्हें ततमा लोगों ने किसी दिन भी नहीं खाया है। धाङर लोगों ने साहबों के बागीचे से इन कलमियों को चुरा लाकर रोपा है। वे लोग उन्हें अपने 'सन बेटे' को खाने के लिए देते हैं। फिर ढोड़ाय उन्हें मुहल्ले की अपनी टोली के लड़कों को देता है, बाबा

के लिए रख देता है। किसके साथ ढोड़ाय का परिचय नहीं, यहाँ तक कि काली घँघरावाली वह पादरी मेम साहब, जो धाङर टोली में आती है, उसके साथ भी ढोड़ाय का परिचय है।

बाबा ढोड़ाय के सभी दोष सह जाते, पर रोजगार में निकलते ही उसका लापता हो जाना—यह उनसे एकदम सहा नहीं जाता है। भिक्षा के रोजगार में ढोड़ाय का दूसरों के पास न जाना, कैसा कुंठित भाव है—बाबा की नजर में यह जरा भी छिपा नहीं है। इसीलिए बाबा को सबसे अधिक चिन्ता है। भोर को उठते ही छोकरा भागता है। उसके सब दोस्त लोग तो रोजगार में निकले हैं। पर वह कहाँ रहता है, क्या करता है, सो बाबा कुछ भी नहीं अन्दाज कर सकते हैं। शायद ढोड़ाय उस वक्त मरलाधार के काठ के पुल पर पाँव लटकाकर बैठ बगुलों का कीड़े खाना देख रहा हो। मन चला गया है किस अनजाने स्वप्न लोक में····बिजा सिंह घोड़े पर सवार होकर, चले हैं, कुहरे के राज्य से होकर, असंख्य जुगनू टिमटिमाते हुए अँधेरे में जल रहे हैं"वह उससे भी तेजी से रेलगाड़ी चलावेगा····किसी अनजानी जगह में चला जायगा इंजन की सीटियाँ देते। बाबा की देख-भाल करेगी दुखिया की माँ···· नहीं, उस 'मौगी' को क्या गरज पड़ी है।····बिजा सिंह अगर तलवार से दुखिया की माँ और ढोड़ाय को काट डालते।····

इस भाँति बगुले पग धरते हैं कि देखते ही हँसी आ जाती है—'बगुला चुनि-चुनि खाय'····मरगामा की लम्बी गुआरिन जा रही है, वहाँ, दूर, पक्की के ऊपर। सूखे ठेंहुने पर से उसने कपड़ा उठा लिया है, शायद रास्ते में कीचड़ है, ठीक बगुले के चलने की तरह चल रही है····ये····ए····ए····लम्बी गुआरिन। 'बगुला चुनि-चुनि खाय'—कहकर ढोड़ाय खुद ही हँसता है। लम्बी गुआरिन इस ओर देखती है। जैसे उसने ढोड़ाय की बात न समझी हो। हाथ के इशारे से वह दिखा देती है कि वह 'टीन' जा रही है। बगुला गर्दन टेढ़ी कर कोई चीज बड़े गौर से देख रहा है। भिक्षा मिलने के बाद 'थान' में आने पर बाबा ठीक उसी तरह एक मुट्ठी चावल को गर्दन झुकाकर देखते हैं—चावल अच्छा है या खराब। चावल खराब निकलते ही बाबा के मुँह पर अंधकार छा जाता है। वह उस थोड़े-से चावल को झोली में फेंककर जोर-जोर से पाँव पटकने लगता है। त्रिशूल में अटकाये पीतल की कुंडी झम् कर बोल उठती है। ढोड़ाय का मुँह बदमाशी की हँसी से भर उठता है।···

राख के रंग के परवाले बगुले से सफेद बगुले जरूर घृणा करते हैं। बाबू भइया लोग थोड़े ही ततमा लोगों के साथ रह सकते हैं! राख के रंग वाले पर होने से ही क्या उसका हुक्का-पानी एकदम बन्द कर देना होगा? बगुला भगत देखने में तो भोला-भाला है, पर उसके पेट में शैतानी है!

'अरे बगुला-भगत, क्या कर रहे हो, बगुले की तरह टाँग लटकाकर?' समुअर हँसता हुआ ढोड़ाय से पूछता है।

ढोड़ाय चौंक उठा है। समुअर कहाँ से आ गया है, ढोड़ाय अन्यमनस्क रहने के कारण अब तक ध्यान न दे सका था। यह खाकी हाफपैन्ट पहना हुआ क्रिस्तान—धाङर का लड़का 'गुन' जानता है क्या? नहीं तो उसने अचानक उसे बगुला-भगत कहकर पुकारा क्यों? वह भी तो भगत की ही बात सोच रहा था। वह पादरी साहब का टट्टू समुअर क्या एक क्षण भी उसे एकान्त में नहीं रहने देगा। उसका असली नाम है सैमुएल, उम्र में ढोड़ाय से दो-एक साल का बड़ा, गोरा, नीली आँखें, भूरे केश, मुँह में बीड़ी, मुँह और आँखों में भरी हुई बातें, जरूरत से ज्यादा क्रियाशील! केश में खूब सरसों का तेल लगाकर उसने सँवारा है। जेमसन साहब ने नील-कोठी-बहुल जिरानिया में, नील-युग में एक पावरोटी की दुकान खोली थी। बाद में स्नान के कमरे में, अस्तुरे से अपना गला काटकर, उसने आत्महत्या की थी। उसके मकान के मीठे बेर के पेड़ ततमा और धाङर लड़कों के लिये लोभ और भय की वस्तु हैं, जब कभी किसी मीठे फल की तुलना देनी पड़ती है, तो वे कहते हैं, गलकट्टा साहब के हाते के बेर की तरह मीठा। दिन को भी गाय चराने वाले लड़के उस पेड़ के नीचे अकेले बैठने से डरते हैं। उस गलकट्टा साहब की मेम को पावरोटी बनाने के काम में मदद करती थी समुअर की नानी। गलकट्टा साहब पान खाता था और हुक्का पीता था। समुअर की नानी के स्नान की जगह के लिए, चुनार से, नाव द्वारा एक चौकोण पत्थर लाया था। वह अभी भी पड़ा हुआ है समुअर के आँगन में। काले घँघरेवाली पादरी मेम को धाङर टोली में आने पर उस पत्थर के ऊपर ही बैठाया जाता है।

आबनूस की तरह काली समुअर की नानी को जब मोटी मेम की तरह बच्ची हुई, तो कोई आश्चर्य नहीं हुआ। समुअर ने भी माँ का रंग पाया है। 'क्यों रे बगुला भगत, आज इतवार है न? आज बौका बाबा के साथ भीख माँगने नहीं निकला क्या?'

इस प्रश्न से ढोड़ाय को जैसे अपमान का बोध होता है।

'किसी का नौकर भी नहीं, न किसी का उधार ही लिया है। तुम लोगों की तरह तो नहीं कि आज गिर्जे में जाना ही होगा, नहीं तो पादरी साहब दूध बन्द कर देंगे।'

'अरे जाओ, जाओ। लबर-लबर मत बोलो। घर-घर से मुठिया भीख लेने से पादरी साहब का दिया हुआ दूध कहीं अच्छा है।'

'मुंह सम्हालकर बोलो। चुकन्दर कहीं का! साधु-सन्त को लोग भीख थोड़े ही देते हैं, वह तो गृहस्थ लोग रामजी के हुक्म के अनुसार साधुओं का ऋण चुका देते हैं। नहीं तो क्या बाबा बरहमभूत के द्वारा मरनाधार के नीचे से असरफी का घड़ा नहीं निकलवा सकते?'

'रहने दो, तेरे बाबा का पौरुष मुझे मालूम है। उस बार जब टोले में पिशाच का उपद्रव हुआ, उस वक्त कहाँ था तेरा बाबा? रेबन गुनी ने तुक कर ज्यों ही बालू फेंककर बान मारा, वह पिशाच जंगली भैंसा बनकर काँस-वन से भागकर मरनाधार

के पानी में कूद पड़ा। उसकी दोनों आँखों से आग निकल रही थी। पूछ लेना अपने महतो से।'

इस अकाट्य युक्ति के सामने ढोड़ाय का तर्क नहीं टिकता है, पर बाहर किसी के मुँह से बावा की निन्दा वह कदापि नहीं सह सकता है।

'ठहर, ठहर! फिर छोटे मुँह से बड़ी बात बोला, तो पीटकर तेरा सफेद चमड़ा काला कर दूँगा। गिर्जे में जो टोपी में पैसा लेते हो, उसका नाम क्या है? तूने खुद ही तो दिखाया है।'

'हाँ, हाँ, जानता हूँ सब ततमा लोगों को।'

'बिल्ली की तरह आँख, किरिस्तान, तू जात को गाली देता है!' ढोड़ाय समुअर पर टूट पड़ता है। 'और बोलोगे? बोलोगे और? बोल?'

समुअर को 'न' कहलाकर ढोड़ाय उसे छोड़ देता है। समुअर देह की धूल झाड़ता है और जाते समय कह जाता है—आज इतवार है, नहीं तो दिखा देता।

यह ढोड़ाय के जीवन की नित्य की घटना है। वह दूसरे ततमा लोगों की तरह स्वेच्छा से झगड़ा नहीं शुरू करता है, और झगड़ा आरम्भ हो जाने पर भागता भी नहीं है।

□

पंचायत काण्ड

दुखिया की माँ का दुख

बहुत-से लोग 'दुखिया की माँ' न कहकर कहते हैं, 'बाबू लाल का आदमी।' यह दुखिया की माँ को बड़ा प्यारा लगता है, खासकर जब ऑफिस की वर्दी-पगड़ी पहने हुए बाबू लाल का चेहरा उसे याद आता है। कैसी शोभती है बाबू लाल को यह पोशाक! बुधनी सोचती, मुहल्ले के सभी डाह से जलते हैं। सच मे, दुखिया की माँ को कमाना नहीं पड़ता है, इसलिए मुहल्ले की स्त्रियाँ उससे डाह करती हैं। इतने लोगों की विषैली नजर से बचकर दुखिया जिन्दा रहे, तो खैर है। बड़े होने पर वह भी वर्दी-पगड़ी पहनकर बाप के स्थान पर काम करेगा। उस काम की क्या थोड़ी इज्जत है? दुखिया की माँ ने बाबू लाल से सुना है कि चेरमेन साहब के घर में—नहीं, नहीं, चेरमेन साहब कहने से फिर बाबू लाल आजकल बिगड़ता है, आजकल कहना होगा—राय बहादुर, घंटे-घंटे में नाम बदलने से याद न रहने का क्या दोष?—कि जिस राय बहादुर के घर में यहाँ तक कि ठेकेदार साहब लोग, गुरुजी लोग भी घुस नहीं पाते हैं, वहाँ बाबू लाल के लिए द्वार खुला रहता है। गर्व से दुखिया की माँ का सीना तन जाता है। शाम से ऑफिस से लौटने पर बाबू लाल को वह अच्छी तरह खिलायेगी। इसीलिए वह ताड़ घोटने बैठती है। उसमे गुड़ और चूने का पानी मिलाकर बरफी बनायेगी। राय बहादुर का ड्रायवर ही तो कितना बड़ा आदमी है, नहीं तो क्या उसकी बहू को लड़का होने के वक्त बाबू लाल चपरासी आधी रात को दगरिन को बुलाने दौड़ता? ड्रायवर साहब तो धनुआ महतो जैसा अख्तियार वाला आदमी है। उस ड्रायवर साहब को ही नौकर रखते हैं राय बहादुर! इतने बड़े आदमी को एक बार देखने को दुखिया की माँ का मन चाहता है। कितनी ही बातें उसने बाबू लाल से सुनी हैं उनके बारे में। ज्यों वे घंटी पर हाथ देंगे, त्यों बाबू लाल चपरासी को कहना होगा 'हुजूर!' अजीब दुनियाँ है यह, बड़े के ऊपर भी बड़ा है। राय बहादुर के ऊपर भी हैं—दरोगा, कलस्टर""ढोड़ाय के बाप की बात सहसा बुधनी को याद आती है—जिस बार ढोड़ाय पैदा हुआ था, कलस्टर को देख आयी थी। हालाँकि बाबू लाल के जैसा, इतना इज्जतदार आदमी वह नहीं था, पर था बड़ा भोला-भाला आदमी।""रत्ती भर के ढोड़ाय को गोद में उठाकर उसे झुलाता हुआ वह सुर के साथ गाता था—'बकरहट्टा बरद्हट्टा, सो जा पट्ठा""' यह है ही कितने रोज की बात! याद पड़ने के सभी दाग प्रायः मिट गये हैं। अनुताप नहीं, पर फिर भी, न जाने कहाँ पर कोई चीज थोड़ी-सी खच्-खच् कर चुभती है""खाने के लोभ से दुखिया के दो-एक दस्त होते हैं। सभी एक

एक ताड़ की गुठली चूस रहे हैं। किसके ताड़ की दाढ़ी लम्बी है, इसी पर झगड़ा जम गया है, लेकिन सबकी नजर है दुखिया की माँ की ही तरफ।

'ले दुखिया! लो तुम लोग सभी आओ, थोड़ा-थोड़ा लो। जा, अभी जल्दी भाग।'

एक पल भी निश्चित नहीं रहा जा सकता है इन लोगों के कारण। सुअर के दल जैसे टोले के लड़कों-बच्चों को दुखिया की माँ ने ताड़ की मिठाई खिलायी। लेकिन ढोड़ाय? आज बहुत दिनों के बाद ढोड़ाय की उसे बहुत ज्यादा याद आ रही है। बहुत दिनों से उसकी कोई खबर भी नहीं ली गई है। रास्ते में कभी-कभी उससे भेंट होती है, छोकरा बगल से सटक जाना चाहता है। जाने दो, छोकरा अच्छी तरह से ही रहता है। गोसाईं-थान की मिट्टी के प्रभाव से और बाबा के आशीर्वाद से छोकरा बचा-जीता रहे, तो यही बहुत है। वह उस लड़के से और चाहती ही क्या है।

बहुत दिन हुए, उसने ढोड़ाय को कुछ खिलाया नहीं है। घर में बुला भेजने से भी वह आयेगा या नहीं, कौन जानता है। दुखिया की माँ एक कंटे के पत्ते में कुछ ताड़ की बरफी लेकर गोसाईं-थान के लिए रवाना होती है। छोकरा क्या अभी गोसाईं-थान में होगा? शायद मुँह जले धाङर-छोकरों के साथ पक्की पर, बिसारिया से जो नई लौरी खुली है, उसे देखने गया हो। लौरी आने के वक्त वे लोग रास्ते में गर्द उड़ाकर, नहीं तो सड़क पर पेड़ की डाल छोड़कर भाग आते हैं। एक दिन पकड़ेगा महलदार 'रोड सरकार' तो मजा चखा देगा।···ढोड़ाय अब कितना बड़ा हो गया है! कैसा सुन्दर स्वास्थ्य!···वह महलदार, डिस्टिबोर्ड का रोड-सरकार, जिसका नाम लेकर बाबू लाल पक्की के पक्के-अंश पर से बैलगाड़ी जाते हुए देखने पर गाड़ीवान से पैसे वसूल करता है और दोनों आधा-आधा बाँट लेते हैं—उसी महलदार ने एक दिन ढोड़ाय को देखकर धाङर का लड़का समझा था, फिर जानकारी कर देने पर उसने कहा था—ऐसे पट्ठे-जवान तो ततमा के लड़के नहीं होते हैं। वह आदमी अन्धा है क्या? ढोड़ाय का रंग धाङरों की तरह काला थोड़े ही है। रामुअर की तरह गोरा न हो, तो कम-से-कम, आँखों की तरह काला भी नहीं है वह। मकसूदन बाबू की देह के रंग से मिलता-जुलता भी होगा उसका रंग, कहा नहीं जा सकता है!···

'अरे कहाँ चली दुखिया की माँ?'

'जरा इस ओर, कुछ काम है।' इतने दिनों के अनभ्यास के बाद, ढोड़ाय के पास जा रही हूँ—यह लोगों से कहने में उसे शर्म आती है।···आज कोई भी उसे ढोड़ाय की माँ कहकर नहीं पुकारता है। परन्तु ढोड़ाय ही है उसकी पहली सन्तान—उसी का दावा सबसे अधिक है। उस प्रथम सन्तान के जनमने के पहले कैसा भय, आनन्द, बूढ़े नुनूलाल महतो की स्त्री का लाड़-दुलार और डाँट; कितनी ही नई अनुभूति और आकांक्षाओं से मिश्रित है। ढोड़ाय का धरती पर आगमन। उन सभी पुरानी अस्पष्ट स्मृतियों का हल्का स्पर्श लग रहा है उसके मन में।···नहीं, ढोड़ाय नजर आता

है—बाबा का लोटा मांज रहा है। आज भाग्य अच्छा है उसका। बाबा ने आज उसे दोपहर में निकलने नहीं दिया है, देखती हूँ!····

लेकिन भीख माँगकर और कितने दिन ऐसे चलेगा?····

'बाबा के दर्शन करने आई'—कहकर दुखिया की माँ गोसाईं की मिट्टी की वेदी को प्रणाम करती है। उसके बाद बाबा को कहती हैं—'परनाम'। बाबा ने पहले ही कनखियों से उसके हाथ के कंडे के पत्ते वाले ठोंगे को देख लिया है। वह ढोड़ाय के पास आई है, यह दुखिया की माँ व्यक्त नहीं करना चाहती है। ढोड़ाय भी उसकी तरफ न देखकर मन लगाकर अपना काम करता रहता है। वह लोटा माँजता है, बाबा का त्रिशूल राख से घसकर चमकदार और साफ बनाकर रख देता है। उसके कामों का जैसे अन्त ही नहीं है। एक बार जब पकड़ा जाता है वह, पेड़ के नीचे बिना झाड़ू दिये, बाबा के हाथ से उसकी मुक्ति नहीं है। उसके बाद फिर कौन-सा काम बाबा को याद पड़ जाय, कौन कहे। दुखिया की माँ बे-वक्त कहाँ से आ, जम कर बैठ गई है! कैसी जमकर गप्प कर सकती हैं ये औरतें! धनुआ महतो की एक दिन की बात ढोड़ाय को अच्छी तरह याद है। धनुआ ने अपनी स्त्री को डाँटा था—'काम तो है सिर्फ घास छीलना और चूल्हे के पास बैठकर लबर-सबर बकना! चाबुक पर रखने से ही औरत-की चाल नहीं बिगड़ती है।' महतो-पत्नी बढ़ गई थी महतो के सामने-'रामजी ने मुँह दी है, इसलिए क्या जो मन में आवे कह जाओगे? चाबुक! मर्द होकर चाबुक दिखाने आये हो! आओ न देख लूँ।'···· धनुआ महतो की उस दिन की बात ढोड़ाय के मन को खूब जँची थी। औरत जात ही ऐसी है! ठीक कैसी है, यह अभी वह नहीं जान सका है, पर खराब जरूर ही है। और, बाबू लाल के परिवार से सभी ततमा मन-ही-मन विरक्त हैं। लोग कहते हैं कि दुखिया की माँ के पैर गर्व से जमीन पर नहीं पड़ते हैं—चपरासी की बहू है, इसीलिए वह घास नहीं बेचती है, किसी तरह का रोजगार नहीं करती है, और, जहाँ तक हो सके, बाबू लाल उसे घर से नहीं निकलने देता है। बाबू-भइया लोगों के घर की स्त्रियों की तरह वह अपनी स्त्री को रखना चाहता है। जब-तब वह बिगड़ कर दुखिया की माँ को मारने लगता है—तेरे लिए ततमानी रहना ही अच्छा है, फिर तुझे चपरासी की बहू होने का शौक क्यों है?

ढोड़ाय पेड़ के तले झाड़ू देना शुरू करता है। रोज झाड़ू पड़ता है, फिर भी इतनी गन्दगी कहाँ से आती है, ढोड़ाय की समझ में नहीं आता है। मुहल्ले की बकरियों का अड्डा है इस पेड़ के नीचे!

चेयरमेन साहब के ड्रायवर के सामने बाबू लाल चपरासी चुपचाप चोर की भाँति बना रहता है, और, बाबू लाल की यह स्त्री गोसाईं-थान में प्रणाम करने के लिए आकर भी चुपचाप नहीं रह सकती है। गोसाईं ऊपर से सब देख रहे हैं। ·· सहसा दुखिया की माँ की बातें सुनाई पड़ती है....

'आप लोग साधु-संत आदमी हैं! आप लोग भीख माँगते हैं, सो एक बार

लेकिन छोकरे का भी सारा जीवन क्या भीख माँगते ही बीतेगा ? वह लड़का क्या किसी दिन आपका चेला हो सकेगा ? किरिस्तान धाङरों से उसका परिचय है, उसकी बात का ढंग, और उसके मन का ठिकाना नहीं, वह भला साधुबाबा कैसे बनेगा ? दूसरे घर का लड़का होता तो अब तक कोई रोजगार-धंधा ठीक कर लेता। उम्र भी तो कम नहीं हुई ! उसकी उम्र के थोताई और गुदरी ने तो घरामी के काम पर निकलना शुरू कर दिया है। आपने तो बाबा उस छोकरे को सर पर चढ़ा रक्खा है....'

ढोड़ाय के कान खड़े हो गये हैं। बाबा के मुँह पर इतनी बड़ी बात !

'कहिए तो चपरासी साहब को कहकर ढोड़ाय को डिस्टिबोड में पंखा खींचने के काम पर बहाल करवा दे सकती हूँ। साल भर में चार महीने काम है; आठ रुपये की दर से तनख्वाह पायेगा। उसमें से दो रुपये के हिसाब से चपरासी साहब को बहाली के कारण देना पड़ेगा। बाकी रुपये वह तुम्हारे हाथ में लाकर देगा। साल के बाकी आठ महीने वह किरानी बाबू के यहाँ नौकरी करेगा—उनके बाल-बच्चों को सम्हालेगा। एतराज न हो, तो कहिए बाबा ! कितने ही लोग इसके लिए चपरासी साहब के पास आना-जाना कर रहे हैं'...

ढोड़ाय ने गौर किया; बाबा का मुख गुस्से से लाल हो उठा है। ढोड़ाय और बाबा की नजरें मिलती हैं। दोनों स्वस्ति की साँस लेते हैं। प्रस्ताव किसी को स्वीकार नहीं होता है। बाबा सोचते हैं, ढोड़ाय जायेगा नौकरी करने ? दूसरे के लड़के को अपना बनाया ही क्यों ? उसके लिए इतनी तकलीफ झेली ही क्यों ?

और ढोड़ाय सोचता है, आखिर बाबू लाल की खुशामद कर दिन गुजारना होगा, उसी की दया की कमाई ! यह भी रामजी ने माथे पर लिखा था ? बाबा की वह सेवा करता है—दिन तो इसी से उसके मजे से कट रहे हैं। कौन इसके लिए दुखिया की माँ की छाती पर मूंग दल रहा है ? सभी उस पर भीख के नाम से व्यंग्य कसते हैं। बाबू लाल के परिवार में भी इसी से दुश्चिन्ता का अन्त नहीं है। हृदय से सभी उन लोगों को भिखारी के अतिरिक्त और कुछ नहीं समझते हैं।

बाबा सोचते हैं—ममता ! इतने दिनों के बाद माँ की ममता छलक पड़ी है।

वे कुंडी लगे अपने त्रिशूल को दुखिया की माँ के सामने जमीन पर तीन बार ठोकते हैं, उसके बाद तीन बार गर्दन हिलाते हैं—नहीं ! नहीं !! नहीं !!!

अपमान के कारण दुखिया की माँ की आँखों में आँसू आ जाते हैं। वह कंडे के पत्ते में समेटती हुई ताड़ की बरफी छोड़कर उठ खड़ी होती है। किसके लिए इतना सोच कर मरती हूँ !

किसके लिए वह ताड़ की बरफी लाई थी, यह अकथित ही रह जाता है।

उसके चले जाने पर जरा अप्रस्तुत होकर बाबा ढोड़ाय की तरफ देखते हैं। ढोड़ाय एक-ब-एक कंडे के पत्तेवाले उस ठोंगे को उठाकर दूर झाड़ी में फेंक देता है। झाड़ी के नीचे भादों की भरी नाली में एक मेढक कूद पड़ता है।....

'भीख देने आई है, भीख ! तेरी दी हुई भीख जो खाता है, उसके बाप का ठीक नहीं है। डिस्टिवोड का पैसा दिखाने आई है। वैसी मिठाई को मैं...'

उसके बाद ढोढ़ाय और बावा चुपचाप एक दूसरे के आमने-सामने होकर बैठे रहते हैं। एक ही वेदना से दोनों का मन मिलकर एक हो जाता है।

□

ढोड़ाय की युद्ध-घोषणा

दूसरे दिन, भोर को उठते ही ढोड़ाय चला जाता है। धांगर-टोली, सनीचरा के पास। इतने सवेरे उसे देखकर सनीचरा को आश्चर्य होता है।

'क्यों रे ? सब अच्छा तो है ?'

'अच्छा भी है और बुरा भी है। मैं पक्की के मरम्मत करने वाले दल में काम करना चाहता हूँ, मुझको साथ कर लोगे ?'

सनीचरा पहले विश्वास नहीं करना चाहता है। फिर हो-होकर हँस उठता है। इतने दिनों के बाद अब ततमा लोगों की बुद्धि खुली है ? ग्वालों की खाट सालों पर पर और ततमा लोगों की सत्तर पर बुद्धि खुलती है। अरे इतवारी, मुन्ना, अकलू, बिरसा, बड़का-बुधू, छोटका बुधू सुन लो खुशखबरी। मजे की खबर। भैंसे के बच्चे की आँख फूटी है...

सब आकर इकट्ठे होते हैं। हँसी-मजाक में स्त्रियाँ भी आकर साथ देती हैं।

'इतने दिनों में ततमा लोग बेलदार होने चले।'

'अरे भई, करोगे तो मजदूरी ! जहाँ पैसे पाओ, वहाँ काम करोगे तो इसमें फिर पसंद की क्या बात है ?'

मुन्ना बाधा डालते हुए कहता है—'इसलिए क्या अपनी इज्जत-कदर भी नहीं रखनी है ? पैसा पाने में ही क्या मेहतर का काम भी करना होगा ?'

इतवारी मुन्ना को शांत करता है—'मेहतर का काम क्यों, मिट्टी काटने का काम है।'

'धीरे-धीरे, लेकिन हर किसी की फूटानी छूटेगी। देखो इतने बड़े गृहस्थ जैसिंघ चौधरी, जिनका परिवार खानदानी ब्राह्मण है, उन्होंने ही मुहल्ले भर के लोगों के सामने हल चलाया है। जातियों के राजा दरभंगा महाराज तक ने इसके विरुद्ध कोई आवाज उठाने का साहस नहीं किया। इसको शौक का हल चलाना मत समझना। दिन आ रहा है, चनरचूड़ झा, अब तक फूटानी छाँटता आया है कि वह बैलगाड़ी पर नहीं चढ़ता है, सो उस दिन देखा, वही कामाख्यास्थान के मेले में बैल-गाड़ी पर से उतर

रहा है। लोटे में जमाये हुए पैसे घर के अन्दर गाड़े हुए रहने से ही बीवी को काम करने के लिए मना किया जा सकता है।'

'यह सब तो बेकार की बातें हैं! अब बेटा तू बोल, रास्ता मरम्मत का काम करेगा, सो मुहल्ले के महतो—नायबों को पूछा है?'

'वे मुझे थोड़े ही खाने को देते हैं! उन्हें क्यों पूछने जाऊँगा और यह जाना हुआ है कि पूछने पर वे मुझको मिट्टी काटने का काम नहीं करने देंगे।'

'देखना न, पंचायत तेरा क्या करती है। नोखे बेलदार पच्छिम से आकर बीस सालों से ऊपर हुआ इस इलाके में रह रहा है। उसे क्या तेरे भाई आदमी भी समझते हैं? वह बेचारा रोज काम करते समय इस बात पर बड़ा अफसोस करता है।

उसी दिन से ढोड़ाय कोशी-सिलगुड़ी रोड के इक्कीस से लेकर पच्चीस मील के गैंग में बहाल होता है।

धांङर उसे मजाक से कहते हैं कि तुझे अब से हम 'बच्चा बेलदार' बोलेंगे—सुक्रा धांङर अपने मालिक के घर की माँ-जी से अपनी तनख्वाह से एक रुपया अग्रिम लेता है—'सन बेटे' के लिए कुदाल खरीदने। बूढ़ा इतवारी धांङर-दल को लेकर निकलता है बकरहट्टा के मैदान से डाल चुनने—बच्चा बेलदार के कुदाल की बेंट के लिए...

बाँस की बाड़ी से लौटते वक्त ढोड़ाय की भेंट होती है धांङर टोली की बूढ़ी डाइन अक्लू की माँ से। वह मिट्टी खोदकर क्या तो निकाल रही थी मिट्टी के भीतर से ढोड़ाय को देखते ही हँसकर लोटपोट हो गई। छिलका जैसे कीड़ों के द्वारा खाया हुआ हो—ऐसा एक बड़ा मिसरी-कंद वह ढोड़ाय के हाथ में देती है। 'लो नाती! असमय की चीज है।' सभी इसे डाइन समझकर डरते हैं। पर इसकी आँखों में एक अननुभूत कोमलता का आभास देखकर ढोड़ाय नहीं डरता है।

□

महतो, नायब आदि की मंत्रणा

उसी रात धनुआ महतो के घर पर पंचायत बैठती है। अन्य समय यह पंचायत बैठती थी उसके घर के सामने वाले मदार के पेड़ के नीचे, बाँस की एकचाल की बगल में। दो-एक विशिष्ट दर्शक बैठते एक चाल पर। अभी भादों की टिप्‌टिपाती बारिश में बाहर नहीं बैठा जाता है। इसलिए सभी बैठे हैं, एकचाल के अन्दर। छड़ीदार और नायब लोग बाँस की चटाई पर, धनुआ महतो बैठा है घर के जियल के खूँटे से पीठ टिकाये। खूँटे से पत्तों का एक गुच्छा निकला है। ततमा लोगों की तरह

जियल की डाल भी मरना नहीं जानती है। महतो के सामने एक गोइठे से धुँआ निकल रहा है—बाबूलाल का खर्च आज बच जायेगा। तेतर खाँस रहा है, शायद अब वह कुछ कहेगा। वह बोलता है—'चटाई का, देखता हूँ, अब कुछ बाकी नहीं बचा है!'

जवाब देता है रबिया छड़ीदार—बाबू लोगों के घर से जो बाँस के टुकड़े लाते हो, सो तो पंचायत को मिलना चाहिए। मुनूलाल महतो के समय से ऐसा ही होता आया है। वहाँ से लाया औजार, घास और रस्सी होगी उसकी, जो उन्हें लायेगा, और बाँस लाने पर आधा होगा पंचायत का—यही है पुराना नियम। किसी ने दिया है, दो वर्ष के अन्दर, कि चटाई नई रहेगी?

सभी कसूरवार हैं, फिर कोई उस बात को बढ़ाना नहीं चाहता है। लल्लू बाहर के अँधेरे की तरफ ताकना शुरू करता है—'इस साल सिर्फ टिप-टिप वर्षा है। अरे, होना है, तो जोर से हो। इस पानी में कौन खपड़े बदलवायेगा? लेकिन मेढ़क की बोली में कमी नहीं।'

यमुना कहता है—'होता एक दिन तिसुर साल की तरह पानी! एक ही वर्षा में उस बार मरनाधार का काठ का पुल डूब गया था।'

बाबू भइया लोगों ने उस दिन कैसी दौड़-धूप की थी। वैसा और कभी नहीं देखा है। महतो ने उस बार बाबू-भइया लोगों के पास खूब हिम्मत दिखाई थी।

महतो इस प्रशंसा से खुश होकर सलज्ज हँसी के साथ कहता है—'वर्ष में कितने दिन घर पर बैठा रहता हूँ, सो नहीं देखेगा, पर एक आना पैसे अधिक माँगने से ही खपड़े की नाप का हिसाब दिखायेगा। मौका मिलने पर बाबू-भइया लोगों से वसूल लूँगा, मेरे पास छोड़ने-चोड़ने का प्रश्न नहीं है! खाता तो गेहूँ, नहीं तो एहूँ।'

महतो हुक्का लेकर सीधा होकर बैठता है। अपनी स्त्री को वह कहता है—'गुदर की माई! बाहर की सूखी घास को तो उठाया ही नहीं है तूने! कैसी अक्ल तुम लोगों की है, समझ में नहीं आता, जैसी माँ, वैसा लड़का है। फिर बुढ़ू की तरह ताक क्या रही है। ये सब सड़-गल जायेगी। हरनन्दन मोख्तार के यहाँ काम करने के दिन इन्हें लाया था, सो आज भी पड़ा हुआ है। हम लोगों के काम खत्म होने के वक्त वे पहरेदार तैनात कर देते हैं। उन्हें ही भिगो रही है? उस घास को सड़ने में कितने दिन लगेंगे। पिछली बार ठेकेदार बाबू के यहाँ काम करते वक्त लाया था एक बड़ी-सी कटारी, वजन में तीन पाव होगी—उसे भी खा डाला है इन माँ-बेटों ने मिलकर! कर लो फुटानी, जब तक यह महतो जिन्दा है। न जाने परमात्मा ने किस वस्तु से आजकल के लड़कों को बनाया है। अब देखो न ढोढ़ाय का काण्ड!

बायस पालहु अति अनुरागा।
होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा॥

'वे कभी गले में तुलसी की माला डालकर साधु बनेंगे?'

सभी लोग अब तक इसी बात की प्रतीक्षा कर रहे थे। बाबा के पालित का क्या हुआ? सर फिर गया है?

'भला पंच की खिलाफत करता है बित्तेभर का लौंडा! हरामजादा।'

आज की पंचायत में महतो, नायब, छड़ीदार द्वारा—जिसको एक पैसा भी नहीं मिलता, केवल जाति की भलाई के लिए, और दस-पाँच लोगों के मंगल के लिए पंचायत की बैठक में आते हैं—ढोड़ाय को बुलाया गया था। वह अभी भी नहीं आया है।

ततमा टोली में नित्य पंचायत लगी रहती है—इसकी बहू उसको देना, किस पक्ष के कौन-से लड़के ने मुर्दे पर कूद कर मुखाग्नि कर दिया है—मुर्दे के घर के बाँस कौन पायेगा, किस ने जबरदस्ती पति के सामने उसकी स्त्री की माँग में सिन्दूर लगाकर उसे अपनी स्त्री कहने का दावा किया है...आदि रोजमर्रे की जिन्दगी के मामले।

लेकिन इतनी उम्र वाले पंचों ने कभी ऐसा देखा ही नहीं है कि जात की पंचायत में किसी को बुलाया गया और वह नहीं आया। कहावत है कि पंच यदि साँप को भी बुलावें तो साँप आएगा, बाघ को बुलावें तो बाघ आएगा, फिर आदमी का क्या कहना! इतना साहस है उस रत्ती भर के छोकरे में? यह अपमान पंचों के लिए असहनीय है।

आसामी ततमा टोली की पंचायत में आने से डरते हैं। सजा की पहली दफा पंचायत की बैठक में ही समाप्ति हो जाती है। मोटे तौर पर फैसला हो जाते ही अपराधी पर घूँसे-थप्पड़ बजने लगते हैं! पर यह हुआ असली सजा का फाव, इसके बाद अंतिम राय निकलती है—जुर्माना, गधे की पीठ पर चढ़ाना, भोज खेल नहीं है—भात का भोज! और भी, कितनी ही तरह की चीजें। बचपन से ढोड़ाय ने ये सब न मालूम कितनी बार देखे हैं। पूरन ततमा को उस बार आधा सर मुड़वाकर, आधी मूँछ मुड़वाकर, एक बड़ी बकरी की पीठ पर बैठाया गया था। ढोड़ाय को साफ याद है कि वह, गुदर तथा और सभी लड़के छड़ी लेकर कतार में खड़े थे। एक! दो! तीन! सभी बकरी के पीठ पर छड़ी बजा रहे हैं—सपा-सप! बाबू लाल ने कहा 'तुम लोग जरा रुको।' चेरमैन साहेब की हवागाड़ी का पेट्रोल वह एक शीशी में रखता है, दर्द में मालिस करने के लिए। उसी शीशी से वह बकरी की पीठ पर थोड़ा-सा पेट्रोल डालता है। वै, वै....कर भीषण रूप से चिल्ला रही है बकरी, अनवरत चक्कर काटने की चेष्टा कर रही है। ऐसा अद्‌भुत काण्ड है। बकरी आखिर छटपटाती हुई लेट जाती है। सभी लोग जबरदस्ती पूरन ततमा को उसके ऊपर चाँप कर रखने की चेष्टा करते हैं। ले पूरन, शौक पूरा ले...सूंघ ले केवड़ा की गंध। वह बात ढोड़ाय किसी दिन भूल नहीं सकेगा!

महतो, नायब, छड़ीदार—सबों के हाथ चुटचुटा रहे हैं, ढोड़ाय एक बार कब्जे में आ तो जाए।

धनुआ महतो हुक्के में दो-एक कश खींचकर उसके ऊपर का लार पोंछता है और उसे लल्लू के हाथ में देता है—उसके मन के लायक धुंआ अभी भी नहीं निकल रहा है।

'ले लल्लू! तम्बाकू को खींचकर अच्छी तरह सुलगा तो दे। तुम लोग अभी भी जवान मर्द हो, छाती में अभी भी ताकत है। हम लोगों की तरह बूढ़े नहीं हो गये हो! तेरी उम्र में हम लोगों से एक कोस के अन्दर से कोई औरत जाने का साहस नहीं करती थी।'

महतो की रसिकता पर सभी हँसते हैं। महतो के अपने जमाने के अनेक कांड लोगों को याद हैं। महतो-पत्नी और उसकी पंगु लड़की फुलझरिया बाहर से कान लगाये मौजूद थी। माँ गर्व-प्रसन्न दृष्टि से अपनी लड़की की ओर देखकर कहती है—ऐसी-ऐसी बातें बोलता है कि हँसते-हँसते पेट दुखने लगता है।

मेढ़क की विरामहीन आवाज के बीच भी धनुआ महतो की ऊँची हँसी कानों में बजती है। अचानक वह उद्गत हँसी को निगल कर गम्भीर और सीधा होकर बैठता है! महतो के पद की एक मर्यादा है। सभी समझते हैं, अब असल काम की बात शुरू होगी। बैठक की आबहवा गम्भीर हो जाती है।

'लड़का बाप का नहीं होता है, लड़का होता है जाति का। फिर लड़के पर टोले का दावा होता है। यह जिमल—डाल की खूंट लग गई है न, अब यह समूचे छप्पर को लेकर ऊपर उठेगी! उसी तरह देखो इस बाबूलाल ने ततमा जाति की कितनी इज्जत बढ़ायी है! हैजे का डाक्टर ततमा टोली के फौजी-कुएँ में जब लाल रंग देने आता है, तब मेरा कलेजा सचमुच भय से कांपता है। और, बाबू लाल को देखता हूँ, वह मूँछ पर ताव देता हुआ उससे बातें करता है। तभी न वह ततमा जाति को अकेला इतना आगे बढ़ा दे सका है!'

बाबू लाल ऐसा भाव दिखाता है, जैसे उसने अपनी प्रशंसा अपने कानों से सुनी ही नहीं है।

'और दूसरी ओर देखो—सभी बदमाशियों की जड़ है यह ढोड़ाय।'

सभी ढोड़ाय के नाम से सीधा होकर बैठते हैं। लल्लू आवाज के साथ थूक फेंकता है, बसुआ चिक्-सा एक शब्द करता है। बाबू लाल कहता है, छि:! छि.! फिर मूँछ के एक अवाध्य बाल को दांत से काटने की वृथा चेष्टा करता है।

'वह कुत्ते का बच्चा आखिर मिट्टी काटने का काम करेगा? जो कि हम लोगों के सात पुरखों में किसी ने भी नहीं किया है। ततमा जाति का मुँह काला किया! इससे अच्छा मुसलमान का जूठा खाना था। उसने ततमा लोगों के लिए समाज में मुँह दिखाने का कोई उपाय नहीं रखा। यहाँ आया तक नहीं नवाब का पूत! बौका बाबा ने भी क्या लड़का बनाया है। उसी के अत्यन्त स्नेह की वजह से ही तो उसकी इतनी तरक्की हुई है! देखो तो भला कांड। नोखे बेलदार और सनीचरा धाङर ततमा लोगों

के समान हो गया। अरे मिट्टी काट कर ही अगर पैसा कमाना होता, तो हम लोग अब तक फूलकर भाथी हो जाते! अपनी सात वर्ष की अवस्था से देख रहा हूँ इस पक्की की मरम्मत के लिए कितने दूर-दूरान्तर से मिट्टी काटने के लिए लोग आते हैं। धनुआ महतो के उंगली उठाने से ही तो तीन-सौ ततमा को रास्ता मरम्मत के काम में लगाया जा सकता है। बाप-दादों का नाम हँसाया तूने! इस शर्म की वजह से ही तो धांगर लोगों का पाँव बाहर है। दिन-रात पचई पीने पर भी दोनों शाम वे लोग भात-दाल के साथ तरकारी भी खाते हैं, हमलोगों के भाग्य में मकई-मड़वे का दाना भी नहीं जुटता है। एक 'दाव' खरीदना हो तो अनिरूध मोख्तार से दो रुपये कर्ज लेने पड़ते हैं, दो आने की दर से इतवार के इतवार उसे सूद देने की शर्त्त पर! यह देखो न, मेरी दाव उँगली-सी पतली हो गई है।'

'नारियल की रस्सी इससे नहीं काटी जा सकती है। पैसा न रहे, तो कम-से-कम एक इज्जत, प्रतिष्ठा तो है। उस छोकरे के कारण वह भी शायद हमें खोनी पड़ेगी।'

इतनी देर में पंचलोग काफी गर्म हो उठे हैं।

'बन्द करो साले का हुक्का-पानी!'

'भगाओ उसे गोसाईं थान से।'

'बाबा ही सारी हरकतों की जड़ है।'

'जाके नख अरु जटा बिसाला
सोई तापस प्रसिद्ध कलि काला'

'लुटिस दो बाबा को!'

'चलो सभी थान! छोकरे की खाल खींचकर आज उसकी हड्डी और मांस अलग करेंगे।'

'चलो। चलो।'

बाहर काफी जोर से पानी आया है।

'पड़ने दो पानी'—कहकर दम्मे का रोगी तेतर घर से निकल पड़ता है। और, किसी का ध्यान पानी पर नहीं है।

'लाठी ली है न?



दुखिया की माँ की प्रार्थना

आगे-आगे चल रहे हैं बड़े लोग—महतो, चार नायब और छड़ीदार। इसके पीछे हैं लड़के-बूढ़े सभी। ये सब अब तक थे कहाँ? शायद महतो के डेरे के आस-पास

सभी इकट्ठे हुए थे, वर्षा में भी। आज की पंचायत का तमाशा देखने पानी, कादो, वेंग रौंदकर अर्धनग्न वीरों का दल नैग-अभियान में निकला है। उन लोगों के आत्म-भिमान पर चोट पहुँची है। अंधकार भरे संकीर्ण पथ पर सभी वन्दात्र से पग धरते हुए चल रहे हैं, पैरों के नीचे कुचले हुए केंचुओं से रोशनी का आभास हो रहा है, घोंघे चुरमुराते हुए चूर हो रहे हैं! पगले सियार की तरह वे विक्षुब्ध होकर दौड़ रहे हैं, जैसे भी हो, जाति के इस अपमान का प्रतिकार तो वे करेंगे ही!

मुहल्ले की औरतें भी एक-एक कर धनुआ महतो के सद्यः छानी किये हुए एक-चाले में आकर इकट्ठी होती हैं। बाहर अँधेरे में कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता है। फिर भी, सभी भींगे कपड़े निचोड़ती हुई, बाहर क्या तो देखने की कोशिश करती हैं। सभी एक ही साथ बोलना चाहती हैं, किसी के मुँह पर भय-डर, माया-ममता की छाया भी नहीं है, केवल अभियान में निश्चित सफलता के लिए उल्लास है, और कुछेक में अनिश्चित मजे की खबर के लिए कौतूहल भी! उस रत्ती भर के छोकरे का यह कांड! असीम उत्साह के साथ गुदर की माँ आज की पंचायत का सम्पूर्ण कार्य-विवरण दूसरों को समझाने की कोशिश करती है। ढिबरी के प्रकाश में उसका चेहरा साफ़ दिखाई नहीं पड़ रहा है! कौन उसकी बात सुनने जाय? शायद एक बार धांगड़ टोली में आग लगाने के समय को छोड़कर उन लोगों में इतनी उत्तेजना और कभी नहीं हुई है। धनुआ, लल्लू, वैतर इन तीन नायकों की स्त्रियाँ भी अपने को महतो पत्नी की अपेक्षा इस गौरव का कम हिस्सेदार नहीं समझती हैं। वे भी एक आवाज में चिल्ला रही हैं। पाखंड-दमन में वीर लोग निकले हैं, वीर-पत्नियाँ यात्रा के पहले ललाट पर जय-तिलक नहीं लगा दे सकी हैं, अब उसे पूरा कर रही हैं—चिल्लाहट और गाली-गलौज से!

केवल दुखिया की माँ इन लोगों में नहीं है। उसे भय से काठ मार गया। दुखिया चटाई पर एक नन्हा-सा टाभ नींबू लेकर खेलता हुआ न मालूम कब सो गया है। आज रसोई करने का मन नहीं है। साँझ को बाबू लाल के घर से निकलने के बाद से ही उसके माथे पर वज्रपात हुआ है। वह चौकठ पर कान लगाकर खड़ी थी—शायद कोई हल्ला-गुल्ला सुनने में आवे, पंचायत कभी भी बिना हल्ले-गुल्ले के शेष नहीं होती है। क्यों वह सुबह छोकरे के लिए ताड़ की बरफी लेकर मरने गई थी। उसी से तो इतना कांड हुआ! कल गोसाईं-थान में न जाने से शायद छोकरा यह कांड नहीं करता। चिरदिन से बिगड़ैल है छोड़ाय—जब गोद में था तभी से, पर गुस्से की भी तो एक सीमा है। कहते गई उल्टी बात, और बाबा और छोड़ाय दोनों ने ही उसका अर्थ लगा लिया उल्टा। महतो, नायब लोग, और खासकर वह चपरासी साहब आज उस रत्ती भर के लड़के का कुछ भी बाकी नहीं रखेंगे! हड्डी-गुड्डी तोड़ देंगे। चपरासी साहब ने किसी दिन उस लड़के को पसन्द नहीं किया है। पंचायत का हल्ला महतो के घर से इतनी दूर नहीं पहुँचता है, सिर्फ़ वर्षा का रिम्-झिम् शब्द सुनाई पड़ता है।

टप्-टप् कर छप्पर की ओलती से पानी पानी टपक रहा है। जल का टोप

गिरते ही एक टोप के आकार का बन जा रहा है। एक नेपाली फौजी ने चपरासी साहब को टोप दी थी। वह अपने पेन्शन के रुपये सरकारी ऑफिस से नहीं ले सक रहा था। बाबूलाल ने रुपये में चार आने लेकर उसके रुपये लेने में मदद की थी। इसीलिए उसने बाबू लाल को वह पुरानी टोप दी थी। दुखिया की माँ ने फिर एक दिन उस टोपी के अन्दर बाबू लाल के लिए कटहल छीलकर रखा था। कैसी मार मारी थी उस दिन बाबू लाल ने दुखिया की माँ को! चपरासी की बहू बनने की साध होती है, रह तू तत-मानी।···

बाबूलाल पर वितृष्णा से उसका मन भर उठता है। ढोड़ाय की बात याद कर उसकी आँखों से आँसू ढल पड़ते हैं। नीचे पानी का ठोप गिरकर टोपी बन रहा है या नहीं, उस तरफ और ध्यान नहीं रहता। ध्यान रहने पर भी अस्पष्ट आँखों से वह देख नहीं पाती।

अब एक हल्ला सुनाई पड़ रहा है। वे लोग शायद पंचायत में ढोड़ाय को पीट रहे हैं। हे रामजी! हे गोसाईं जी! तुम्हारे थान की धूल-मिट्टी लगा कर वह लड़का इतना बड़ा हुआ है। गल्ती कर डाली है, इसलिए उसे पैरों से न ठेलना।···छोकरा शायद अबतक चीखकर रो रहा है।···नहीं, रोयेगा क्यों वह? ढोड़ाय को तो कभी किसी ने रोते नहीं देखा है।···हल्ला-गुल्ला जैसे दूर हट जा रहा है, शायद गोसाईं थान की ओर। यह पंचों ने क्या फैसला किया? बाबा का तो वे कुछ नहीं करेंगे? शायद ढोड़ाय को उन्होंने इतना मारा है कि उसे चलने-फिरने की ताकत नहीं है, मुँह-नाक से खून निकल कर बेहोश हो गया है वह, इसीलिए शायद सहारा देकर उसे बौका बाबा के पास ले जा रहे हैं।

हल्ले की आवाज बढ़ती रहती है। वर्षा का भी विराम नहीं है, नहीं तो बात-चीत भी शायद कुछ सुनाई पड़ती। फरकी के सामने ढिबरी के प्रकाश से वर्षा की धार सुफेद-सी मालूम हो रही थी—आँसू के कारण सो भी अस्पष्ट हो गई।····मईया गे! तेरे केश में बाबा की जटा-सी महक क्यों नहीं है?····ऑफिस से लौटते बाबू लाल को दूर पर देखकर धूल-कादो से लिपा हुआ छोकरा चोर की तरह निकल भागता है।···

सहसा पैर की आवाज होती है। छप्-छप् कर कादो होकर न जाने कौन इस तरफ आ रहा है। हाँफता हुआ बाबू लाल आकर घर में प्रवेश करता है। वह जैसे धक्का देकर दुखिया की माँ को दरवाजे पर से हटा देता है। उसकी देह से जल की धारा बह रही है। चूल्हे के पाट से ढिबरी उठाकर वह घर के कोने की तरफ बढ़ जाता है। जरा-सा ही बचा वर्ना सोये हुए दुखिया को तो उसने कुचल ही डाला था। हरे और गुलाबी रँग से रँगे हुए मूँज की पौती के अन्दर से बाबूलाल पेट्रोल की शीशी निकालता है। हिफाजत से रखी हुई दुखिया की कजरौटी दूर छिटक पड़ती है। बाबू लाल फिर पानी में निकल जाता है। दुखिया की माँ सशंक जिज्ञासा की दृष्टि से एक बार शीशी की ओर, तथा एक बार बाबू लाल की ओर देखती है। दरवाजे से बाहर

निकलते समय बाबू लाल कह जाता है—साला, थान में नहीं है।''''

दुखिया की माँ को लगता है जैसे उसका दम घुट रहा है। अपनी धूल की इज्जत रखना गोसाईं! मेरे ढोड़ाय को आज इन चमारों के हाथों से बचाना! बाबा जैसे भगत जिसे चौबीसों घन्टे अगोरे रहते हैं, उसका यह बाबू लाल, तेतर, लल्लू, बसुआ क्या कर सकते हैं? बाबू लाल चपरासी का विश्वास नहीं किया जा सकता है। वह पूर्व जन्म की 'सुकृतियों' के फल से सबको अतिक्रम कर जा सकता है, यह विश्वास दुखिया की माँ को है। उस पर पंच की राय, दसों का फैसला, उनकी ताकत गोसाईं और रामजी की ताकत के समान है। पीपल के पेड़ के अहाते में पलकर वह छोकरा कैसे पंच के कथन के खिलाफ हो सका! उसके सर पर अभी शैतान सवार है। निश्चय ही धांङर टोली की अबलू की माँ, अथवा लम्बी गोआरिन जैसी किसी डाइन औरत ने उस पर चलकर दिये हैं। नहीं तो क्या, कोई कभी ऐसा कर सकता है? कितने ही पाप मैंने किये हैं गोसाईं।....पेट्रोल की शीशी लेकर फिर बाबू लाल अभी क्या करने गया?....

दुखिया की माँ कुछ भी निश्चित नहीं कर पाती है।....कोई जली-जली सी गंध है न? ठीक ही तो।... धुएँ की गंध, वर्षा में धुँआ ऊपर नहीं उठता है, फर्श पर गिरे किरासिन के तेल-सा चारों ओर फैल जाता है! धुएँ-सा चारों ओर भर जाता है, दम घुटने लगता है। बाहर की ओर देखने में भी डर लगता है। घने अंधकार को भेदकर थान की तरफ आकाश में उग्र लाल आलोक की झलक उठती है।

□

अग्नि-परीक्षा

ढोड़ाय को गोसाईं थान में न पाकर ततमा फौज कुछ-ठीक नहीं कर पाती है।

साला, इतनी रात गये घर नहीं लौटा है, इस वर्षा-तूफान के दिन भी! जरूर दीवानी से धांङर टोली में वह बैठा हुआ है—ततमा लोगों को और अधिक बेइज्जत करने के लिए। धांङर और मुसलमान के घर में भात खाना ही बाकी था। सो वह शौक भी पूरा कर ले! खा लेना उनके साथ मुरगी का अंडा! उसे अभी पाने से—लोग जैसे सूअर को मारते हैं, उसी तरह....

कुछ लोग बाबा को घर से निकालते हैं। वे किसी प्रकार की बाधा नहीं देते हैं। बाबा का अपराधी मन इसी प्रकार की आशा कर रहा था। लेकिन इतना उत्तेजित होने के बावजूद भी बाबा को मारने का उन्हें साहस नहीं होता है। उन्हें कादो में लाकर गिराया जाता है। उसके बाद चलती है जिरह—बोल, कहाँ है ढोड़ाय! कहाँ

भेज दिया है तूने ? सुक्रा धांङर के घर, नोखे वेलदार के घर ! कहाँ वह छिपा हुआ है ? वोल ? पक्की के पेड़-तले ?

गर्दन हिलाकर वावा का जवाव मिलता है। वे निर्विकार रूप से मिटमिटाते हुए ताकते हैं। इशारे से क्या कहते हैं, अँधेरे में समझ में नहीं आता है। उँगली से दिखा नहीं दे सकते हो ! वह किस तरफ गया है ? दो, जटा में आग लगा दो ! हाँ ठीक है, माथे के चाँदी में जरा-सा गर्मी लगने से ही पेट की वात निकलेगी !

वावू लाल ने पेट्रौल की शीशी और दियासलाई आगे वढ़ाई !

वावा के भींगे छप्पर को जलाने के वाद इस पागल-दल का क्रोध जरा घटता है। महतो और नायव लोग बुद्धिमान हैं। वे समझते हैं कि जितना करना था, उससे कहीं अधिक कर डाला गया है। वावू लाल को डर लगता है, उसी ने पेट्रौल की शीशी दी थी ! एक-एक कर वे चले जाते हैं। लोग गोसाईं-थान के विषय में तरह-तरह की वातें शुरू करते हैं।

वाकई, अलवत्त है पेट्रौल की क्षमता। नहीं तो क्या इससे हवागाड़ी चल सकती है। मदार-घाट की बूढ़ी मोदियाइन उस वार जाड़े में गठिये के दर्द से मरने-मरने पर थी ! डेरायवर ने उसे जरा-सी पेट्रौल दी थी ! शीत से अकड़कर ज्यों-ही उसने पैर पर पिट्रौल ढालकर घूर की आग पर वैठाया, त्यों-ही पैर में आग लग गई, और चमड़ा-उमड़ा झुलसकर एकाकार हो गया !

'तूने तो फिर उस चुड़ैल की कथा शुरू की।'

'खवरदार ! मुँह सम्हालकर वात वोलना ! क्या मैं झूठ वोलता हूँ ? वसुआ नायव को पूछ लो—मोदियाइन की वात सच है या नहीं।'

'ए वसुआ !'

वसुआ नहीं मिलता है। सभी ताककर देखते हैं—महतो और नायव लोग कोई भी नहीं हैं। वहुत दूर से दम्मा के रोगी तेतर की खाँसी की आवाज सुनाई पड़ती है। ततमा-सुलभ भय और अपनी जान वचाने का प्रयास सव पर सवार होता है। एक-एक कर दल टूट जाता है।

प्रेतों के दल का मात्र एक आदमी रह जाता है—रतिया छड़ीदार।

रतिया के सामने वावा माथे पर हाथ देकर वैठे हैं। राख और आग की स्तूप से तव भी धुएँ की कुंडलियाँ निकल रही हैं। रतिया वावा से सटकर वैठता है। हाथ की लाठी से जले हुए खर और राखों को हटा देता है। नीचे से अधजला यूप-काष्ठ निकल आता है ! यह क्या ! यूप-काष्ठ जल गया है ! किये हुए पाप का भार उसके वक्ष पर वैठा है। सव के चले जाने पर भी वह रह गया—वावा के पास एक प्रस्ताव रखने के लिए। भीख के जमाये हुए पैसे अगर कुछ हों, तो उससे पंचों को शांत करने की कोशिश करना चाहिए—इस सीधी वात को वावा के मस्तिष्क में प्रविष्ट कराने के लिए वह उनसे सटकर वैठा था ! लेकिन यूप-काष्ठ जल गया है। पाप की अग्नि से,

और रेवन गुनी के डर से उसका हृदय काँपने लगता है। इसी यूप-काष्ठ के बगल में हर साल सारे अंग में खून लगे रेवन गुनी पर गोसाईं सवार होते हैं। डर के मारे छड़ीदार पसीना-पसीना होता है। बाबा के पैरों को पकड़ लेने से शायद पाप का बोझ कुछ घटता! यह क्या कर डाला है सब ने। रेवन गुनी तो सभी जान सकता है! यूप-काष्ठ जलने वाली बात वह अब तक जरूर जान गया है। अब यही देखना है कि उसका क्रोध किस पर फूटता है...

आग और धुएँ से उद्भ्रांत पक्षी पीपल के पेड़ पर अभी भी शांत नहीं हो पाये हैं। पीपल के झूलते हुए पत्ते धुएँ में काँप रहे हैं। इतने में दूर हल्ला सुनाई पड़ता है। साँप के डर से तालियाँ बजाते हुए न मालूम कौन आ रहा है!

क्या हुआ है रे? आग किस चीज की है? बाबा कहाँ है? धाँगरों का दल आग देखकर आ गया है।

ढोड़ाय दौड़कर बाबा के बगल में जाकर बैठता है। उसने पल भर में पूरी बातों का अन्दाज कर लिया है। बाबा के कादो लगे हाथ को वह अपनी मुट्ठी में लेता है। कोई किसी तरह की बात नहीं बोलता है। बाबा सिसक-सिसक कर रोते हैं। ढोड़ाय भी जीवन भर में न रोने के कारण ही अपने को सम्हाल लेता है। सभी धाङर उन्हें घेरकर बैठ जाते हैं। छड़ीदार भागने की राह नहीं पाता है।

सनीचरा ने उठकर उसके दोनों हाथ कसकर पकड़ लिए हैं—'बोल कौन-कौन था? खिसियाई बिल्ली गुस्से के मारे खूँटा नोचती है। मुनिया पक्षी-सा फड़-फड़ क्यों करता है? ज्यादा हिल-डोल करेगा, तो इसी आग में डाल दूँगा।' बिरसा कहता है—'पंचायत के भोज का फैसला करने बाबा के पास आया था क्या? डेढ़ रुपये पाने से ही तो भात का भोज वह माफ कर देगा!'

इतवारी कहता है—'बेकार बातें जाने दो! बोल, कौन-कौन था? किसने आग लगायी? बाबा को तूने मारा है क्या? बाबा तुम ही बोलो न?'

बाबा गर्दन हिलाकर कह देते हैं—नहीं, किसी ने उन्हें नहीं मारा है।

ढोड़ाय बाबा के बदन पर हाथ फेर कर देखता है कि मारने का कोई दाग है या नहीं! सारी देह एकदम छिन्न गयी है। 'चमार चांडाल का दल।' गुस्से में ढोड़ाय की आँखों से आग निकलने लगती है। उसी के लिए बाबा को इतना जुल्म सहना पड़ा है। सनीचरा रतिया छड़ीदार का झोंटा पकड़कर कहता है—'सच्ची बात बोल! नहीं तो तुझे आज यहीं अधजले यूप-काष्ठ पर बलि दूँगा। अब भी नहीं बोला? ठहर, तेरी छड़ीदारी खतम करता हूँ।'

छड़ीदार डरता हुआ सम्पूर्ण घटना बयान करता है। सब सुनकर सनीचरा और बिरसा का खून गर्म हो उठता है। 'ठहर। धनुआ की महतोगिरी और बाबूलाल की चपरासीगिरी निकालता हूँ। चल थाना।'

इतवारी और मुक्रा उन्हें थाने जाने को मना करते हैं। 'जानते नहीं हो,

दरोगा-सिपाही का मामला है। माथा गर्म मत करो। गड्ढा खोदकर केंचुआ निकालते गेहुँअन निकल आयेगा। तब भागने की राह नहीं पाओगे। बूढ़े हाथी की बात सुनो। मेरा बाप मुझे कह गया था कि कभी अँगूठे की छाप न देना। उसकी बात न मानकर उस बार कैसी मुसीबत में पड़ा था। वह अनिरुध मोख्तार वाला मामला याद है न सुक्रा भाई ?'

बिरसा कहता—'बूढ़ों की कोई बात नहीं चलेगी। वह सब सुनूँगा अपने टोले में। चल रे सनीचरा।'

'बात जब रखोगे नहीं, तो जो अच्छा जान पड़े, वही करो। बूढ़े की बात और गुणी की बात नहीं रखोगे, तो फल अच्छा नहीं होगा। ठोकर खाओगे।'

सुक्रा हाँ में हाँ मिलता है—'सारी अक्ल घर की दीवाल के भीतर। पुल पार होते ही सब बुद्धि निकल जायगी। घर बैठे बुद्धू पैंतीस, राह चलते बुद्धू पाँच, कचहरी गये तो एको न सूझे, जे हाकिम कहे, सो साँच।'

सभी हँस उठते हैं।

सचमुच हुआ वैसा ही।

बिरसा और सनीचरा जब तीन मील की दूरी के सदर थाने में पहुँचे, तब काफी रात हो गई थी। दोनों दरोगा साहब सो गये थे। काफी हाँक-डाक के बाद छोटे दरोगा साहब की नींद टूटती है। आँख मलते हुए वे पहरा वाले सिपाही से पूछते हैं—कौन ससुर फिर इतनी रात को जलाने आया है ? क्या है, कुलदीप सिंह ? अभी इतनी रात में फिर इतलाय लिखना होगा ? कुलदीप सिंह ! अच्छी तरह ससुरा को जरा पीटो तो ! साला, जरूर झूठ बोलने आया है।

सनीचरा दौड़कर जान बचाता है। बिरसा थाने के अहाते में घुसा ही नहीं था। थाना तक आने के साथ ही दरोगा के नाम से उसे डर-सा लगता है। सनीचरा के हजारों खींचा-तानी के बावजूद उसे साहस नहीं हुआ था। वह अहाते के बाहर बैठा था। अचानक सनीचरा को भागते देख वह भी जान लेकर दौड़ता है—न मालूम क्या हुआ ! शहर का कंकड़-भरा रास्ता जहाँ समाप्त हुआ है, प्रायः वहाँ जाकर वे रुकते हैं। खड़े होकर हाँफते हुए वे सारी घटना का हिसाब-किताब करते हैं। फिर वे गाँव लौटते हैं।

सुक्रा और इतवारी सारा वृतान्त सुनकर विशेष कुछ नहीं कहते हैं। ऐसा ही कुछ होगा—सो उन्होंने आशा ही की थी। धांङरनियां कहती हैं—जाने दो, दरोगा के हाथ से बचकर आया है, यही काफी है।

□

पुलिस की कृपा और ढोड़ाय का पाप-मोचन

दूसरे दिन, इतवारी हर रोज की तरह जैसवालों के 'सोडा लेमोनेड' के कारखाने में काम करने जाता है। वहाँ के मैनेजर साधु बाबू को वह सारी बातें कहता है। पुलिस साहब की गाड़ी के, सोडा और उसके आनुषंगिक पानीय बोतल के लिए, जैसवाल कम्पनी की दूकान पर साधु बाबू अंग्रेजी मिली हुई हिन्दी में गत रात्रि की ततमा टोली की कहानी उन्हें सुनाते हैं। साहब का मस्तिष्क उस वक्त ठीक था—दिन को किसी-किसी दिन ठीक रहता है।

'ऐसी बात है! मेरी आँखों के सामने यह मामला! चैप्रेसी! कोठी पर बड़ा दारोगा को सलाम देओ। शुरु से आखिर तक सड़ने लगे हैं सर्विस के नीचे के अंग! सब ठीक करना पड़ेगा।'

साहब का गुस्सा देख कारखाने के कमरे के अन्दर इतवारी पसीना-पसीना होता है।

साधु बाबू आकर कहते हैं—'अब खिलाओ इतवारी! तुम्हारा काम कर दिया है।'

'मेरा नाम नहीं न कहा है बाबू जी?'

'अरे नहीं, नहीं, सो मुझे कहना नहीं होगा! यह क्या? बिना ब्रश लिए यों ही क्यों बोतल साफ कर रहे हो? बूढ़ा होकर इतवारी तूने काम में फांकी देना शुरु किया है?'

इतवारी अप्रस्तुत हो जाता है।

उसी रात दरोगा साहब दो कॉनस्टेबलों को लेकर गोसाईं थान में पहुँचते हैं। प्रकाश देखकर बावा घबड़ाकर दौड़े आते हैं। वे चटाई बिछा देते हैं। इतने बड़े हाकिम की वे कैसे खातिर कर सकते हैं? चटाई पर थपकी मारकर धूल झाड़ने के सुयोग में वे दरोगा साहब को बैठने की जगह दिखा देते हैं।

कॉनस्टेबल ढोड़ाय को कहता है—'क्या रे, दरोगा साहब के लिए एक खटिया भी जुटा नहीं सकता है?'

'हाँ, कपिल राजा के दामाद के पास से एक ला सकता हूँ।'

दरोगा साहब मना करते हैं—नहीं नहीं। उतनी खातिरदारी की जरूरत नहीं है।

गाँव का चौकीदार लम्बा सलाम ठोककर आ खड़ा होता है। पुलिस साहब की गाली-गलौज की बात दरोगा साहब को तब भी साफ-साफ याद है—सर्विस-बुक

में काला दाग पड़ने के डर से। यह सब हुआ, क्योंकि बदमाश चौकीदार ने खबर नहीं दी है! खबर न देने के कारण चौकीदार को दो तमाचे मारकर दरोगा बाबू काम शुरू करते हैं। प्रारम्भ को देखकर सभी समझ जाते हैं कि आज किसी की खैर नहीं है। चौकीदार जैसे 'अफसर' की ही अगर ऐसी हालत हो, तो साधारण लोगों की किस्मत में आज क्या है, सो 'गोसाईं' ही जानते हैं।

चौकीदार जाता है धांङर टोली से लोगों को बुलाने, और कॉनस्टेवल लोग जाते हैं ततमा टोली से अपराधियों को पकड़ लाने। ढोड़ाय ने इतने नजदीक से दरोगा-पुलिस को कभी देखा नहीं है। इसलिए उसे डर-सा लगता है! इसीलिए वह चौकीदार के साथ धांङर टोली की राह पकड़ता है।

धांङर टोली में हलचल मच जाती है। आज किसी का निस्तार नहीं। कल रात के छोटे दरोगा की धमकी सनीचरा और विरसा को याद है। छोटे दरोगा से ही इतना कांड हुआ, और ये तो हैं बड़े दरोगा! बाप रे बाप! भागो! भागो! चलो, सभी गाँव छोड़कर भागें। गाँव के बूढ़े-बच्चे अंधकार में भागना शुरू करते हैं—बेर के जंगल में, पुल के नीचे, बाँस की झाड़ में। सिर्फ इतवारी रह जाता है। एक भी आदमी के वहाँ नहीं जाने से दरोगा साहब बिगड़ेंगे। सुक्रा सबों के अन्त में भागता है। 'सन बेटा' को छोड़कर—सुक्रा को भागने का मन नहीं करता है! ढोड़ाय को भी धांङरों के साथ भागने की इच्छा होती है। फिर सोचता है—नहीं, न मालूम बड़े दरोगा साहब, बाबा को क्या-क्या करेंगे? ऐसे विपद् के समय बाबा को दरोगा के हाथ में अकेला रख जाना ठीक नहीं होगा! और, फिर उसी के लिए तो ये सारी बातें हुई हैं। इसमें बाबा का क्या कसूर था?

जाते वक्त सुक्रा चौकीदार के हाथ में चार आने पैसे खोंस देता है, इतवारी और चौकीदार के साथ ढोड़ाय लौट आता है। रास्ते में इतवारी और चौकीदार में यह तय होता है कि वह दरोगा साहब को कहे कि धांङर लोग आज भोज खाने के लिए नीलगंज गये हैं। केवल इतवारी रह गया था मुहल्ला में पहरा देने के लिए। चवन्नी को गाँठ में खोसते हुए चौकीदार, ढोड़ाय से कहता है—तू फिर और कुछ बोल मत देना छोकरा, समझे।

धांङरों पर चौकीदार की इस करुणा से ढोड़ाय का मन उसके प्रति कृतज्ञता से भर उठता है।

तमता लोगों का दल एक स्वर में कहता है—वे कोई कुछ नहीं जानते हैं। बाबू लाल पेट्रोल लाया था। तेतर नायब और धनुआ महतो ने मिलकर घर में आग लगाई है।

कॉनस्टेबल लोग बाबू लाल, तेतर और धनुआ को गालियाँ देते हुए सामने खींच-कर लाते हैं! कहाँ गया तेतर नायब का कल रात का प्रताप? कहाँ गया धनुआ महतो का जियल पेड़ से पीठ अड़ाये बैठकर न्यायाधीश का-सा गाम्भीर्य। कहाँ गया चपरासी

साहब का पद-गौरव ! दरोगा-पुलिस के हाथ बेइज्जत होने का सवाल ही नहीं है। सवाल है अपनी-अपनी जान बचाने का, जेल से बचने का, हाकिम के हाथ से बचने का। बाबू लाल करुण-दृष्टि से ढोढ़ाय की तरफ देखता है, महतो देखते हैं बाबा की ओर—त्रस्त नजरों से, मिनती और कृपा की भिक्षा माँगी जा रही है। बेतर उद्गत कफ निगलकर दरोगा साहब के सामने खाँसी रोकने को प्राणपण से चेष्टा करता है। आसन्न विपद् की आशंका से, और खाँसी चाँपने की उत्कट चेष्टा से उसकी आँखों में आँसू आ गये हैं।

ढोढ़ाय के मन के भीतर आग जल रही है—अब मजा चखो ! देख जा बुधिया की माँ ! जिस चपरासी साहब के लिए तू अपने को बाबू भइया लोगों के घर की 'माई जी' समझती है, देख जा उसकी दशा ! दिखा जा ताड़ की बरफी दरोगा साहब को। पेट्रौल की शीशी की मालकिन !

अचानक ढोढ़ाय की नजरें बाबा से मिलती हैं, बाबा के मन का भीतरी हिस्सा वह साफ देख पाता है। वे ढोढ़ाय से अनुरोध कर रहे हैं—अपराधियों के विरुद्ध कुछ मत बोलो ! जो होना था सो हो गया है, गाँव के लोगों के साथ झगड़ा रखना ठीक नहीं है।····

दरोगा साहब की जिरह और गालियों का अन्त नहीं है। सब को जेल भेजूँगा, सब के ऊपर 'चार सौ छत्तीस दफा' चलाऊँगा। सारे गाँव को पीसकर एकदम सत्तू बना दूँगा, दरोगा को पहचानते नहीं हो, इसीलिए ! हिन्दू होकर थान की इज्जत नहीं रखते हो। मुसलमान होने से कोई बात भी थी, वे तो सब कुछ कर सकते हैं····

सभी अपराधी कहते हैं कि वे हुजूर के सामने झूठ नहीं बोलेंगे। रामचन्द्रजी का राज चल रहा है। हाथ की पाँचों ऊँगलियाँ बराबर नहीं होती हैं। उनमें से कोई खराब आदमी नहीं है, ऐसा वे नहीं कहते हैं, पर सरकार का नमक खाकर सरकार से झूठ बोलने से उनकी देह में कोढ़ हो। उन्होंने आग लगाई थी ठीक ही।····

क्यों ? शैतान के बच्चे ?

बाबू लाल सम्हाल लेता है। हुजूर, बाबा के उस छप्पड़ पर एक गिद्ध बैठा था। गिद्ध बैठा हुआ घर नहीं रखना चाहिए। उससे मुहल्ले का अमंगल होता है। थान का अमंगल होता है और जो उस घर में रहेगा उसकी तो बात ही नहीं है। यहाँ एक चमड़े का गुदाम है हुजूर ! उसी ने मुहल्ले में गिद्ध लाकर हमें तबाह किया है।····

सभी अवाक् हो जाते हैं। अपराधी और अन्य ततमा लोगों के शरीर में प्राण आता है। अब सभी निर्भर कर रहे हैं बाबा और ढोढ़ाय पर, शायद अभी वे पर्दाफाश करें।···

दरोगा साहब बाबा से पूछते हैं कि ये जो बोल रहे हैं, सब सच हैं या नहीं ?

बाबा उत्तर नहीं देते हैं। वे पहले से ही दरोगा साहब के सामने ऐसे ही बैठे हुए हैं, किसी बात में उन्होंने अब तक राय नहीं दी है।

दारोगा साहब सोचते हैं, यह आदमी केवल गूँगा ही नहीं, बहरा भी है। और अक्सर ऐसा ही होता है। एक बार लगा था जैसे वह सुन रहा है। इसीलिए न दारोगा साहब के मन को खटका था!

तू बोल छोकरा!

ढोड़ाय का सब गोलमाल हो जाता है। मुंह से बात नहीं निकलती है। जीभ जैसे अकड़ी जा रही हो। आखिर इतनी विपद में भी आदमी पड़ता है! सम्पूर्ण शक्ति से वह बोलने का प्रयास करता है।

'जोर से बोल! डरो मत। तू यहीं रहता है क्या? बाप का नाम?'—एक ही साँस में दरोगा साहब कह जाते हैं।

ढोड़ाय सर हिलाकर कहता है—हाँ, वह यहीं रहता है।

'ये लोग जो कुछ बोल रहे हैं, सो क्या सच है?'

इतने लोगों का भविष्य अब उसके हाथों में है। एक बार सर हिलाने से ही वह अभी अपनी जाति के कई श्रेष्ठ लोगों की पंचगिरी खत्म कर दे सकता है, उन्हें जेल की हवा खिला सकता है, कम-से-कम पुलिस से मार खिलाकर उन्हें बेइज्जत तो अवश्य ही कर सकता है। उसका भी मन वही चाहता है। इस पंचायत के अत्याचारी मस्तकों को नीचा करवाये, ऐसा नीचा करवाये, जिससे वे और किसी दिन सर ऊँचा कर बाबा से बोल ही नहीं सकें—जिससे ढोड़ाय को और हीन दृष्टि से न देख सकें।

परन्तु बाबा की नजरों के आदेश को वह अमान्य नहीं कर सकता है····बाबा ने नीरव भाषा में उससे कहा है कि पकड़कर जेल ले जाने से इन्हें छत्तीस जातियों के छूए हुए अन्न खाना होगा, कहाँ रहेगा ततमा जाति का गौरव, कहाँ रहेगा कनौजी-तंत्रिमा-छत्रियों के सुयश का सौरभ?····

इतवारी उस्खुस् करता है। उम्र की अभिज्ञता से वह जानता है कि बाबा या ढोड़ाय, कोई भी सच्ची बात नहीं बतलायेगा। अब तक वह सोच रहा था—चौड़ी मूँछवाले जेलर बाबू हर इतवार को जैसवाल कम्पनी में आते हैं, सौदा करने के लिए, साधू बाबू से उन्हें कहलाकर बाबू लाल और महतो के हाथ की बुनी हुई एक दरी वह जेलखाने से लायेगा। लाकर एक बार उस पर बाबा को बिठायेगा, उसके लिये जो खर्च हो, सो हो! अनिरुध मोख्तार से अगर कर्ज लेना पड़े, तो सो भी स्वीकार है····लेकिन सब चौपट कर दिया इस ढोड़ाय ने।

वह बोलता है कि हाँ बाबू लाल की बात सच है।

'कब बैठा था गिद्ध?'

'कल सुबह।'

'मादा या नर?'

ढोड़ाय थूक निगलता है।

दो दिनों के बाद मूँछ आयेगी, और अब भी नर-मादा नहीं पहचानता है!

बदमाश छोकरा। बरगद पर न बैठकर वह छप्पड़ पर क्यों बैठा ?—भूठों की भाड़ हैं सब! ढोड़ाय प्रश्न का भी जवाब नहीं दे सका। वह मन-ही-मन सोचता है, अब शायद दरोगा साहब उसे मारने के लिए उठेंगे।

'और कोई कुछ जानते हो इस मामले मे ? ए बुड्ढा।'

इतवारी की सफेद भौंहों के नीचे की अस्पष्ट दोनों आँखें और निर्विकार चेहरा देखकर उसके मन को समझा नही जा सकता। उसने सोचा था कि वह ततमा लोगों के खिलाफ कुछ कहेगा, पर थाना-पुलिस के डर से सब बातें चाँप लेता है। ढोड़ाय की गवाही से ही अगर इन चोट्टों को सजा दी जा सकती, तो मछली भी उठती और बंसी भी नहीं टूटती। परन्तु, ऐसा मौका पाकर भी गंदे, आलसी, चोट्टे पंचों को छोड़ दिया ढोड़ाय ने! इस जाति का विश्वास नहीं किया जा सकता है। उस छोकरे के शरीर में भी तो इन्हीं लोगों का खून है।''' कल साधु बाबू को अपना मुँह दिखाना उसके लिए कठिन होगा।

'नहीं हुजूर! मैं रहता हूँ धांगर टोली में।'

दरोगा बाबू गवाह नहीं पाकर—बक-भक कर, चिल्लाकर उठ खड़े होते हैं। चौकीदार को कहते हैं—'इन सालों पर अच्छी तरह नजर रखना! नहीं, तो तुम्हारी नौकरी नही रहेगी।'

चौकीदार झुककर कोर्निश करता है। दरोगा साहब कपिल राजा के दामाद के साथ मुलाकात कर फिर शहर लौटते हैं।

एक कॉनस्टेबल रह जाता है। वह छड़ीदार को दूर ले जाकर न मालूम क्या बातचीत करता है। छड़ीदार आकर महतो और नायबों को कहता है कि सिपाही जी जानते हैं कि ढोड़ाय बाबू लाल की स्त्री का लड़का है। पुलिस सब खबर रखती है। वह अभी दरोगा साहब को जाकर कह देगा कि इसीलिए ढोड़ाय बाबू लाल के विरुद्ध कुछ बोला नहीं। उसके बाद सभी को जेल में ठूँसेगा!

पंच लोग चंदा द्वारा कुछ न कुछ देकर सिपाही जी के साथ मामला निपटा लेते हैं।

□

ढोड़ाय भगत की मर्यादा-वृद्धि

इस घटना के बाद ढोड़ाय को महतो और नायब लोग कुछ बोल नहीं सकते! मन-ही-मन जरूर पहले ही जैसे वे उस पर विरक्त हैं, पर आँख की लाज नाम की भी तो कोई चीज है! गुस्सा रोकने के सिवा चारा ही क्या है ? मुकदमा फिर भूल जाने में

ही कितनी देर लगेगी ? किसने पुलिस को खबर दी थी, सो ततमा लोग समझ नहीं पाते हैं, उस आदमी को भी खुश रखना होगा।

वावा की कुटिया फिर ततमा लोग ही वना देते हैं। वावा लेकिन उसमें कभी भी नहीं सोते हैं। केवल वर्षा के समय ढोड़ाय, वावा को पकड़कर घर के भीतर ले जाता है।

मुहल्ले के सभी ढोड़ाय की प्रशंसा करते हैं, इतनी वड़ी विपत्ति से, इतनी वड़ी वेइज्जती से उसने जाति को वचाया है। उसे, कुछ हो, कम-से-कम तुच्छ नहीं कहा जा सकता है। मुहल्ले के लड़के ढोड़ाय से वातें कर धन्य होते हैं, स्त्रियाँ उसे वुलाकर वातें करती हैं, उसके समवयस्क अन्य लड़कों को गाँव के वुजुर्ग पुरुष और स्त्रियाँ 'अरे छौंड़ा' कहकर वुलाते हैं, पर उसे अव 'ढोड़ाय' के अतिरिक्त और कुछ कहने में हिचकते हैं—यहाँ तक कि दुखिया की माँ भी ! इतना सम्मान वावा और ढोड़ाय ने अपने मुहल्ले में कभी नहीं पाया है।

लेकिन, जैसे ढोड़ाय के मिट्टी काटने वाली वात इस सूत्र में दव जाती है, वैसे ही, फिर चार सालों की एक पुरानी वात अचानक निकल आती है—वही चमड़ा गुदाम-वाली कपिल राजा के जमाई की वात। वात दव गई थी उस वार—गान्ही वावा के सुराज के तमाशे के हल्ले में।

वावू लाल ने जो उस दिन दरोगा साहव के पास चमड़ा गुदाम की वात उठायी थी, उसमें अपनी जान वचाने के अतिरिक्त और कुछ भी था। यों तो सभी उस चमड़ा वाले मुसलमान पर विगड़े हुए हैं। कुछ दिनों से उसने जिरानिया से एक मेहतरानी को लाकर अपने यहाँ रखा है। फिर अभी सुनने में आ रहा है कि वह उसे मुसलमान वनाकर उससे शादी करेगा।

कैसी पसंद है उसकी, पता नहीं। एक वहू रहते हुए भी मेहतरानी से शादी करने की इच्छा होती है। वलिहारी है। उसकी देह में भक्-भक् कर दुर्गन्ध निकलती है। लाकर रखा था, सो समझा, पर उसे मुसलमान वनाकर शादी करना ? कव—भी...नहीं ! दम्मे का रोगी तेतर तक ताल ठोंककर कहता है।

उस दिन दरोगा साहव ने उसके यहाँ जाकर क्या कहा, क्या किया, सो मालूम नहीं हो सका है। निश्चय ही डाँट-फटकार सुनाई होगी।

मेहतरानी की वात को लेकर गाँव में काफी शोर-गुल मच जाता है। ऐसे तो थाना-पुलिस से भय था ही, उस पर ढोड़ाय को लेकर गोसाइँ-थान में ऐसा कांड हो गया, अतः कोई और कुछ करने का साहस नहीं जुटा पाते हैं।

मेहतरानी को मुसलमान वनाकर शादी करना—इसे धाङर लोग भी पसन्द नहीं करते हैं। वे खुद हिन्दू हैं या नहीं, इसे लेकर माथापच्ची करना उन्होंने कभी आवश्यक नहीं समझा, पर वे मुसलमान नहीं हैं, यह सभी जानते थे। इस मेहतरानी की शादी के मामले में न मालूम क्यों उन्हें लगता है कि उनकी हिन्दू-जाति पर जुल्म

किया जा रहा है। मेहतरानी को वे नहीं छूते हैं, यह सत्य है, फिर भी वह उन्हीं लोगों की लड़की है। उस लड़की को भला ले जायगा गायखोर ? लड़का होता, तो कोई बात थी, पर यह तो लड़की का मामला है, बिल्कुल बेइज्जती की बात है। और, जब साह का व्यापार था, सेमल के पेड़ काटने का काम था, तब कपिल राजा के साथ रोजगार का सम्पर्क था। लेकिन यह दामाद परदेशी सुग्गा है—आज वह यहाँ के नीम के पेड़ पर नीम के फल खाने को बैठा है, कल वह नहीं रहेगा ! करता है चमड़े का व्यापार, जिसमें धाउरो का कोई भी नाता नहीं है। इसके साथ मुरौव्वत किस चीज की ?

लेकिन न ततमा लोगों के ही और न धांडर टोली के बुजुर्ग लोग थाना-पुलिस के डर से इस विषय में आगे बढ़ने को राजी होते हैं। ढोड़ाय अब लड़कों के बीच अगुआ हो गया है। धांडर टोली और ततमा टोली दोनों जगहों के ही लड़के उसका कहना सुनते हैं। पंच लोग ढोड़ाय को ही चुपके से सिखाते हैं—रात को रह-रहकर चमड़ा-गुदाम में ढेले फेंकना ! खूब सावधानी से ! यह लड़कों-बच्चों का ही काम है, तुम लोगों की उम्र में हम लोगों ने भी ऐसा खूब किया है।

पंच लोगों ने मन में सोच रखा है—यदि इसके लिए कोई झंझट-मुसीबत हो, तो वह ढोड़ाय पर ही बीतेगा।

ढोड़ाय और उसके साथी उस मुसलमान को बेइज्जत करें, यह बाबा भी चाहते हैं। सुनने में आता है मिलिट्री-ठाकुरवाड़ी के महन्तजी का भी इसमें समर्थन है। टोले के महतो और नायबों से इतना बड़ा दायित्व और विश्वास का पद पाकर ढोड़ाय धन्य हो जाता। लेकिन, यह स्थिति अधिक दिन तक नहीं रहती है। सहसा खबर आती है कि गान्ही बावा जिरानिया आ रहे हैं 'सामा' करने। उन्हें थोड़े ही कोई जेल में भर्ती कर रख सकता है ! एक ही मन्तर से वे ताला और दीवाल तोड़कर बाहर चले आते हैं। गान्ही बावा मेहतर-मेहतरानियों से खूब स्नेह करते हैं। उनके आने पर उन्हें ही कहा जायेगा कि इस जुल्म और बेइज्जती का एक विहित विचार करें। बन्द कर दे अभी ढेले फेंकने का काम ढोड़ाय ! कुछ दिन देख ही ले !

झिकटीहाट के मैदान में गान्ही बावा की 'सामा' में पहुँचकर वे देखते हैं कि काफी भीड़ है। बकरहट्टा के मैदान में जितनी घास है, उतने ही वहाँ आदमी हैं, इ-इ-इ-इहाँ से मरनाधार से भी अधिक दूर तक आदमी होंगे। गान्ही बावा के 'रस्सी भर' में ही वे नहीं जा सके थे, फिर उनसे बातें करना तो अकल्पनीय है। गान्ही बावा के पास थे मास्टर साहब, बुधनगर के राजा साहब, और भी कितने बड़े-बड़े लोग ! कपिल राजा के दामाद की बात उनसे न कह सकने के कारण ततमा लोगों को बहुत अफसोस होता है। एक बार कहने से ही काम बन जाता ! लेकिन इन बेशुमार लोगों में हरेक को शायद अपना-अपना कुछ कहना है। जिसका धर्म है, वे ही अगर रक्षा नहीं करते हैं, तो हम लोग क्या कर सकते हैं ? खैर गान्ही बावा का दर्शन तो हुआ ! ढोड़ाय देखता है। गान्ही बावा कद में शायद उससे भी नाटे हैं, पर कैसा 'नरम' और 'टनहा'

चेहरा है—ठीक मिसिरजी की तरह। ढोड़ाय ने सुना है कि घी खाने से वैसा चेहरा होता है। लेकिन यह कैसे संत आदमी हैं—दाढ़ी नहीं ? ढोड़ाय को सबसे खराब यही लगता है कि शौकीन बाबू भइया लोगों की तरह इस संत आदमी को भी चश्मे पहनने का शौक है। गान्ही बाबा के चेले लोग सबों को बैठने को कहते हैं। दर्शन हो गया है—अब वे उठते हैं। सिर्फ बौका बाबा बैठे रहते हैं—दूर से वे कम देखते हैं, इसलिए सभा खत्म होने पर एक बार अच्छी तरह दर्शन कर लेंगे।

लेकिन अजीब बात हो गई। ढोड़ाय का काम हासिल हो गया इसी के कुछ दिनों के अन्दर। चमड़े का वह गुदाम चला गया स्टेशन के पास। असल में स्टेशन के पास न रहने की वजह से चमड़े का चलान देने में असुविधा होती थी। लेकिन ततमा टोली और धांङर टोली में इसकी व्याख्या कुछ और ही हुई। ढोड़ाय की पार्टी के ढेले की ताकत, गान्ही बाबा का अदृश्य प्रभाव और उस दिन की दरोगा साहब की धमकी—इन तीनों ने मिलकर ही तो कपिल राजा के जमाई को यहाँ से भगाया है—इसमें किसी को सन्देह नहीं है।

इस घटना के बाद गाँव में ढोड़ाय की प्रतिष्ठा जितनी बढ़ती है, ढोड़ाय का अपना आत्म-विश्वास उससे कई गुना अधिक बढ़ता है। वह मन-ही-मन अनुभव करता है कि रामजी और गोसाईं उसकी तरफ हैं,—यों समझ में नहीं आता है, लगता है कि वे सो रहे हैं, पर वे सब कुछ देख रहे हैं ऊपर से! जिन्होंने अन्याय किया है; उन्हें चोट खानी ही पड़ेगी।

रामजी ढोड़ाय के पक्ष में हैं, अब वह दुनिया में किसी की परवाह करता है ?

□

तत्मा-छत्रियों का यज्ञोपवीत-ग्रहण

भागलपुर जिले के सोनवर्षा से मरगामा आये थे महगूदास। इसका अर्थ यह नहीं कि वे मरगामा के मुंगेरिया ततमा लोगों के यहाँ आये थे। मुंगेरिया ततमा लोग राज-मिस्त्री का काम करते हैं, उन लोगों की 'झोटाहा लोग' सीढ़ी पर चढ़ती हैं। उन लोगों के यहाँ कनौजी ततमा भी जल-स्पर्श नहीं करता है। फिर महगूदास जैसे आदमी उनके यहाँ ठहर सकते हैं ? उनके अधिकार में कितने बैल, जमीन, तीन-तीन शादी, ईंट की दीवाल से घिरा हुआ आँगन है। 'जनानी लोग' घर के बाहर नहीं निकलती हैं। बेटे-बच्चे, नाती-पोती और वर्धनशील परिवार है।

सिरिदार बाबा के कुर्मी चेलों ने मरगामा में एक 'साभा' की थी। उसी कुर्मी गुरुभाई लोगों के न्योता पर महगूदास आये थे। साथ-ही-साथ गुरुदेव के दर्शन हो जायेंगे,

यह भी उनकी इच्छा थी।

उसी समय महगूदास कुछ देर के लिए ततमा टोली में आये थे। उतने बड़े आदमी की वे कैसे खातिरदारी करेंगे? इसलिए इन लोगों ने उन्हें रहने के लिए भी नहीं कहा था। सिर्फ डिस्टिबोर्ड के ऑफिस में बुलवा लिया था बाबू लाल को। गाँव में भले आदमी के साथ बातें करने को बाबू लाल के अतिरिक्त और कौन है! उसी समय, महगूदास ने ही बात उठाई जाति के सम्बन्ध में, कि ततमा लोग जो-सो जाति के नहीं हैं। रामचरित मानस में तुलसीदास जी ने कहा है कि वे लोग तंत्रिमा-छत्री हैं, एकदम ब्राह्मण न होने पर भी, ब्राह्मणों के ठीक बाद ही हैं वे। पच्छिम से सभी जगह कनौजी ततमा लोगों ने यह नाम ग्रहण किया है और जनेऊ लिया है। यह देखो!''' यह कहकर महगूदास मिरजेई का फीता खोलकर अपने गले का जनेऊ निकालकर दिखाता है—उंगली जैसी मोटाई, सोने-सा रंग।

महगूदास तो चले गये, पर गये ततमा टोली में आग लगाकर!

ढोढ़ाय, रतिया तथा और लोग उसी वक्त जनेऊ लेना चाहते हैं, पर महतो और नायब लोग सहमत नहीं हैं। ये सब झटपट कर डालना कुछ अच्छी बात नहीं है। बूढ़े लोग डरते हैं—धरम से खिलवार करना ठीक नहीं है। पच्छिम में हो रहा है! अरे, पच्छिम के लोग तुम्हें हाथ की उँगली काटकर देने के लिए कहें, तो दे दोगे? पच्छिम में एक सेर आटे की रोटी पचती है, यहाँ पचती है? खबरदार, गोसाईं को मत छेड़ो, वे जैसे हैं वैसे ही रहने दो, खुश न हों, तो कम-से-कम तुम पर वे बिगड़ेंगे तो नहीं।

ततमा लोगों के पुरोहित मिसिरजी गत दो सालों से हर इतवार को गोसाईं थान में रामायण पढ़कर सुना जाते हैं, और इसके लिए वे एक आना दक्षिणा पाते हैं पंचायत की तरफ से! उन्हीं से पंच लोग पूछते हैं जनेऊ की बात! वे कहते हैं कि महगूदास ने झूठ कहा है—रामायण में तंत्रिमा-छत्री का उल्लेख नहीं है। कोई भी उनकी बात का विश्वास नहीं करते हैं। ढोढ़ाय उनके मुँह पर साफ कह देता है कि वे दूसरी जाति का जनेऊ ग्रहण करना नापसन्द करते हैं, इसी वजह से असली बात छुपा रहे हैं। तुम खामखा डर रहे हो मिसिरजी। तुम्हारे आने पर देह की कम्बल को चार पाट कर गद्दीदार आसन बना दूँगा बैठने के लिए—जैसा अभी पाये हो। चिर—म—का—आल'''

बाबा ढोढ़ाय को चुप करा देते हैं।

'सुभ आचरन कतहुँ नहीं होई।

देव विप्र गुरु मान न कोई॥'

यह कहकर मिसिरजी बिगड़कर शालूक के टुकड़े में रामायण को बाँधने लगते हैं।

उसके बाद ढोढ़ाय और उसके साथी लोग अनेकों बार मरगामा में तिरिदास बाबा के कुर्मी चेलों के साथ जनेऊ लेने के सम्बन्ध में मिले हैं। वे लोग भी ततमा लोगों को जनेऊ लेने से मना करते हैं। ढोढ़ाय गुस्से से आगबबूला हो जाता है। कुर्मी कुर्म-

छत्री हो सकता है, पर हम ही लोगों के जनेऊ लेने से पृथ्वी फटकर पानी निकल आयेगा ?

हम लोगों की बात पसन्द न हो, तो फिर पूछने क्यों आये थे ?

ततमा टोली जब इस मामले को लेकर काफी चंचल हो उठी है, उसी समय धनुआँ महतो के घर में आया उसका साला मुंगीलाल 'कुटमैती' करने। ततमा टोली के ततमा लोगों में सिर्फ महतो ने ही शादी की थी अपने गाँव से बाहर—डगराहा में, जिरानिया से नौ मील दूर। आजकल 'कुटमैती' करने के लिए कोई भी आता है, तो घर वाले विरक्त होते हैं। कुटुम आते ही कहेगा 'भेंट-मुलाकात' करने आया। लेकिन घर के सभी लोग जानते हैं कि भेंट-मुलाकात की जरूरत तब पड़ती है जब अपने घर में खाना जुटाना कठिन हो जाता है। कुटुम आते ही उसे देना होगा पैर धोने के लिए जल, खराऊँ रहे, तो खराऊँ। बैठने के लिए कहना होगा बाहर के मचान पर। और, खुद न खाओ तो भी उसे दोनों शाम भात खिलाना ही होगा। अँचाने के लिए उसके हाथ पर पानी ढाल ही देना होगा। लेकिन इस बार मुंगीलाल की खातिर अधिक है—उसने जनेऊ लिया है। डगराहा के सभी ततमा लोगों ने भी लिया है। जनेऊ कान में लपेटकर ही वह अपनी दीदी के दरवाजे पर हाजिर हुआ था। पैर धोने के बाद ही वह जनेऊ की बात छेड़ते हैं। महतो का बेटा गुदर, ढोड़ाय को बुलाकर ले आता है। मुहल्ले भर के लोग टूट पड़ते हैं कुटुम की मचान पर। खासा लग रहा है कान में जनेऊ लपेटकर ! अरे लगेगा नहीं ? यह तो हम लोगों की ही अपनी जाति की चीज है ! पुराने जमाने में जब हमारे बाप-दादे कपड़े बिनते थे, उस वक्त माड़ से सूत मांजते समय भी कानों में एक-एक गुच्छ सूत लपेट कर रखते थे, मांजते वक्त सूत टूटते ही कान से एक गाछी सूत लेकर टूटे हुए धागे को जोड़ दो ! जनेऊ हम लोगों के लिए नई चीज थोड़े ही है !

में 'टुरमन'[1] का तमाशा हुआ था। उन्हें देने के लिए सबों से चन्दा लिया गया था। अनिरुध मोख्तार से कुछ कर्ज भी लेना पड़ा था। उनके लिए 'गद्दीवाले किलास की टिकस' कटाने। ग्यारह रुपये साढ़े तीन आने भाड़ा है। नहीं, नहीं, महतो को शायद गल्ती हो रही है—नौ रुपये साढ़े तीन आने !...वह क्या आज की बात है ?...साढ़े तीन आने ठीक याद है; पर रुपये ग्यारह हैं या नौ....बाबू लाल तुम्हीं बोलो न ? अफसर आदमी हो तुम....हिसाब-किताब जानते हो....

बाबू लाल कहता है, दस रुपये साढ़े तीन आने। सभी जानते थे कि बाबू लाल दस ही बोलेगा, परिणाम, माप, संख्या आदि लेकर झगड़ा उठने पर मध्यम तौर का एक निर्णय देना ही अच्छे पंचों का नियम है।....

हाँ, तो कह रहा था—महतो खाँसकर गला साफ कर लेता है—गुरु गोसाईं को एक 'पोसकाठ' लिखा जाय।

गाँव में हल्ला हो जाता है—अजोधियाजी 'पोसकाठ' लिखा जायेगा। गाँव में इसके पहले कभी चिट्ठी नहीं लिखी गई है, लेकिन महतो, नायब लोग खबर रखते हैं कि डाकघर के मुन्शीजी चिट्ठी लिखने में एक पैसा लेते हैं। मिसिरजी अच्छा लिखते हैं। लेकिन वे क्या दो पैसे से कम में काम करेंगे ? जैसी जगह पूजा देने जाओगे खर्च भी वैसा ही होगा। थान मे एक पैसे के गुड़ से पूजा हो सकती है, पर अजोधिया जी मे पूजा देनी तो दूर की बात, पहुँचने ही में दस रुपये खर्च हो जायेंगे।

महतो 'पोसकाठ' का दाम देना नहीं चाहते हैं, कहते हैं कि पंचायत के 'तहबील' में 'खड़महड़ा' तक नहीं है।

ढोड़ाय का दल जरा उठता है—क्या किया जुर्माने के सभी पैसे का ?

छड़ीदार पंचों को बचा देता है—पंच लोग क्या उसका ब्योरा तुम लोगों के पास देने जायेंगे ?

—'हाँ देना होगा ब्योरा ! क्यों नहीं दोगे ?'

एक बड़ा झगड़ा प्रारम्भ होने को होता है।

ढोड़ाय अपने बटुये से एक पैसा निकाल कर देता है—'यह मैंने दिया 'पोसकाठ' का दाम।' सभी अवाक् होते हैं—ढोड़ाय पागल हो गया क्या ! दस का काम है, एक आदमी से होता ही क्या है ? और, थोड़ी-सी प्रतीक्षा करने पर महतो खुद ही दे देते। बेवकूफ कहीं का !

बाबू लाल ढोड़ाय को कहता है—'और एक पैसा लगेगा 'पोसकाठ' मे।' डिस्टिबोर्ड का अफसर है वह—दुनिया भर की खबर उसके 'नखदर्पण' पर है। ढोड़ाय सब के बीच और एक पैसा फेंक देता है।

महतो कहता है—बाबू लाल ! तुम ही तब 'पोसकाठ' खरीदना देख-सुनकर।

---

१. डिस्ट्रिक्ट टूर्नामेण्ट, १६१७, युद्ध मे सहायता करने के लिए।

ढोड़ाय ! तू मिसिरजी को इतवार को दावात-कलम लाने के लिए कहना !

रविवार को मिसिरजी रामायन पढ़ने के बदले चिट्ठी लिखते हैं। आज स्त्रि तक रामायण सुनने आई हैं। कैसा जोर दे-देकर लिखते हैं वह। यहाँ तक खस्-ख की आवाज आ रही है। देखते ही देखते, कलम की रोशनाई घटी जा रही है जनेऊ लेना मिसिरजी को जँचा नहीं है—कौन जाने, ये कहीं गल्ती-सल्ती न लि दें 'पोसकाठ' में····

तय होता है—बाबू लाल चिट्ठी डाक में देगा। सभी उसके साथ डाक-घर त जाते हैं।

उसके बाद चलती हैं कितनी ही कपोल-कल्पनायें, डाक-पिउन के लि इन्तजार····। कैसी चिट्ठी मिसिरजी ने लिखी थी, एक महीना इन्तजार करते रहने भी गुरु-गोसाईं के यहाँ से चिट्ठी का जवाब नहीं आता है।

ढोड़ाय को और धैर्य नहीं रहता है। फिर गाँव में इसे लेकर हल्ला-गु मच जाता है।

ढोड़ाय कहता है—'और कोई नहीं ले, पर मैं अकेला ही जनेऊ लूँगा। ही जाऊँगा सोनबरसा।'

हृदय से सभी यही चाह रहे थे। केवल मन-ही-मन थोड़ा-सा भय हो था—न जाने क्या हो जाय। डगराहा के ततमा लोगों के जनेऊ लेने के बाद ही बहुत-सी गाय-भैंस दो-तीन दिन की बीमारी में मर गयी हैं। गायें खाती भी न पीती भी नहीं, दो-तीन दिन तक गोबर के साथ खून आता और वे मर जाती हैं।

खैर, ततमा टोली के लोगों को खेती-बारी, गाय-भैंस नहीं हैं। गुरु-गोसा नाम से जनेऊ पहनाने के लिए वे लोग सोनबरसा से ब्राह्मण बुला भेजते हैं।

फिर एक दिन गाँव भर के बूढ़े-बच्चे एक साथ सर मुड़वाकर, आग के बैठकर गले में काछी के जैसा जनेऊ पहनते हैं। दो दिनों तक गाँव के स्त्री-पुरुष अ रहते हैं, फिर एक साथ भात का भोज खाकर वे अपने-अपने घर लौटते हैं। उसी से ततमा लोग हो जाते हैं—'दास'। ढोड़ाय भगत हो जाता है—ढोड़ाय दास।

महतो और नायबों के विरुद्ध जनेऊ लेने के दल का नेतृत्व कब, और ढोड़ाय पर आ गया था, वह ढोड़ाय खुद ही नहीं समझ सका था। लोग शायद समझते थे कि मिट्टी काटने के सिलसिले में दिया गया उसका आघात समाज र गया है। हिम्मत है छोकरे में ! और जनेऊ लेने के मामले में वह सब के मन की कहता है ! उसकी एक चीज पर सब ने गौर किया है, वह यह कि चाहे ढोड़ाय के विरुद्ध कुछ भी बोले, पर महतो उस पर पहले जैसे कठोर नहीं हो सकते हैं क्यों, यह केवल समझते हैं महतो-पत्नी और महतो, तथा थोड़ा-बहुत अन्दाजा ल है ढोड़ाय।

ढोड़ाय 'पक्की' पर काम करता है।

गाते समय गले का स्वर भारी-सा लगता है। रास्ता मरम्मत करने वाले काम के सभी रहस्य वह अब जान गया है। वर्षा के पहले डिरेसिंग में कैसे फाँकी दिया जाता है, कैसे केवल ऊपर की घास छीलकर रास्ते के गड्ढों पर बोझना पड़ता है, सड़क के किनारे चौकने मिट्टी के कटे हुए गड्ढों की मिट्टी ऊपर ही ऊपर काट कर कैसे अफसरों को ठगना होता है, टूटे पत्थरों के स्तूपों को नापते वक्त कैसे लाठी पकड़ने से वे आयतन में बढ़ते हैं—ये सभी उसे ज्ञात हो चुके हैं। शेष वाले काम में ही सबसे अधिक लाभ है। इन सब कामों के लिए ओरसियर बाबू और टेकेदार साहब उन लोगों को बखशीश देते हैं—केवल शर्त यह है कि अचानक एनजिनियर साहब अथवा चैरमेन साहब के आकर जिरह शुरू कर देने से उन लोगों को सम्हाल कर जवाब देना होगा। जिरह में पकड़ाये कि गये। सब जिला-खारिज हो जायगा। और, जिरह में जीत जाने पर पेट भरकर दही-चूड़ा का भोज, चूड़ा-दही का भोज नहीं, दही-चूड़ा का भोज। दही बेसी, चूड़ा कम। नून से खाओ तो कच्चा मिर्च पाओगे, मीठा से खाना चाहो, तो गुड़ मिलेगा—एकदम दानेदार गुड़, एकदम लस्-लस्, लस्-लस्!

सड़क के पक्के भाग से बैलगाड़ी आने से सनीचरा और उसके साथी गाड़ीवानों को भय दिखाकर पैसा वसूलते हैं। ढोड़ाय यह काम नहीं कर सकता—उसे डर-सा लगता है—गोसाईं और रामजी सब ऊपर से देख रहे हैं। बल्कि अकेला रहने पर वह गाड़ीवान को सावधान कर देता है। ढोड़ाय जानता है कि गाड़ीवान से पैसे लेना पाप है। ठगना हो तो सरकार को ठगो, चैरमेन साहब को ठगकर पैसा कमाओ!

उसी दिन तो दो लड़के गाड़ी में रेस लगा रहे थे। एक की थी 'शम्पनी' दूसरे की थी चुनी 'लदनी-गाड़ी'। उत्साह के साथ दोनो पल्ला दे रहे थे, शम्पनी का गाड़ीवान हँसता हुआ कह रहा है—'हे-ओ! जिस गाड़ी में स्प्रींग नहीं है, उसे भूईयाँ पर चलाओ!—पक्की सड़क से उसे जल्दी उतारो।'

'अरे, मेरे हवागाड़ी वाला रे।'

'जल्दी नीचे भागो—कच्ची में।'

'—दो ही चक्के में फूलकर कुप्पा है, चार चक्के रहते तो न जाने क्या करता! एक हवागाड़ी पीछे से आवे तो बस सटकदम हो जायगा। सर्र से उतर आना होगा इस नालायक के कपड़ा में।'

ढोड़ाय उन दोनों को ही सड़क के कच्चे अंश में उतर आने को कहता है। '—तू कौन डिस्टिबोर्ड का नाती है, जो हम लोगों को मना करने आया है?' साल.

दर साल हम लोग जिरानिया के बाजार में अनाज लाते हैं—बेचने के लिए। अभी-अभी तेरे सरदार को पैसे देकर आ रहे हैं—यहाँ से कोस भर भी नहीं होगा। और तू किस खेत की मूली है कि लाल आँखें दिखाने आया है ?'

ढोड़ाय उन्हें कहता है—'अरे सुनो भी, कुछ ही आगे रोड-सरकार हैं, तब महलदार का नाम सुना ही है ! रोड-सरकार और सरकार में 'साट' है। एक तो पैसा लेकर पक्की से जाने देता है, और दूसरा फिर पकड़ता है और पैसे लेने के लिये।'

'ऐसी बात है ?'

दो जोड़े सशंक नयन और विस्फारित हो उठते हैं—'सच' ?

'तुम्हारा नाम क्या है भाई ?'

'घूसर।'

'घर कहाँ है ?'

'सोनैली।'

वहाँ राज-दरभंगा की तहसील-कचहरी है, विशाल गाँव है....गुरू जी का स्कूल है।

इन लोगों की गाड़ी चली जाती है। फिर दूसरी गाड़ी आ पहुँचती है—कँचर-पँचर की आवाज करती हुई। बैल के गले की घंटी बजाती। उड़ती धूल से प्रतियोगिता करती।

ढोड़ाय गाना बन्द कर फिर उन लोगों से बातें करने लगता है। कितने गाँवों की कितनी ही अजीब-अजीब खबरें वह सुनता है। कहाँ से कहाँ तक चली गई है सड़क ! इस सड़क का आरम्भ कहाँ से हुआ है और शेष कहाँ हुई है, वह नहीं जानता है। शायद कोई नहीं जानता है। कोई गाड़ी आ रही है गन्ने लेकर, कोई गाड़ी आ रही है कचहरी में मुकदमें करने, तो कोई आ रही है रोगी को दिखाने ! देश की विशालता की एक अस्पष्ट छाया उसके मन पर पड़ती है। उसके रास्ता बनाने के साथ इतने लोगों के, इतनी गाड़ियों के आने-जाने का सम्पर्क है—यह वह मोटे तौर पर समझता है। पक्की में काम न करने से यह समझा नहीं जा सकता है।

किन्तु वे सब बातें मन में आ सकती हैं महीने-छः महीने पर एक-आध पल के लिए। इनके लिए समय ही कहाँ है ? उसके गैंग के कोई-कोई तब तक शायद गाड़ी में औरत देखकर राजकन्या सुरंगा और राजपुत्र सदावृज के प्रेम का गीत शुरू कर देता है, तो कोई हँसकर एक दूसरे की देह पर ढल पड़ता, मिट्टी का टुकड़ा फेंककर मारने का अभिनय करता। ढोड़ाय सब समझता है और देखता हुआ मुस्कुराता है। रहस्य के एक कुहासे से आवृत होती है औरत जात—उसे जानने की इच्छा होती है, समझने की इच्छा होती है, मुख पर एक निर्लिप्त भाव दिखाकर वह अपना कौतूहल छुपाना चाहता है। और, औरतों के बारे में सोचते ही न मालूम कहाँ से आ जाती है बदमाशियों की जड़ वाली दुखिया की माँ की याद। दुखिया की माँ ने उसका कोई

भी अनिष्ट नहीं किया है, यह सही है, लेकिन उस पर कहीं अन्याय जरूर किया गया है—यह समझने की बुद्धि उसे है। और, महतो-पत्नी कुछ दिनों से ढोड़ाय के साथ दोस्ती जमाने की चेष्टा कर रही है। उन्होंने कई दिन ढोड़ाय को उसके बचपन की कथाएँ बड़े रंग-रस के साथ सुनाई हैं। पितृ-हीन लड़के को गोसाईं-थान में पटक कर उसकी माँ शान के साथ चली गई थी 'सगाई' करने। इसीलिए इतने दिनों के बाद महतो-पत्नी का मातृ-हृदय ढोड़ाय के लिए रो उठा है। पक्के कटहल के भीतर के 'मूसड़' की तरकारी बनाकर वे ढोड़ाय को प्यार से खिलाती हैं, और पुरानी कथाएँ सुनाती हैं। उनकी पंगु बेटी फुलझरिया दूर बैठकर सब सुनती है।

माना, दुखिया की माँ बदमाश है; माना, उसने ढोढाय को दूर फेंक दिया था; पर महतो, नायब लोग उस समय क्या कर रहे थे? ततमा जाति क्या कर रही थी? बाबा के अतिरिक्त और किसी ने क्यों नहीं उसकी बात सोची थी? सब के खिलाफ उसे बहुत कुछ कहने को है। और रामजी, बजरंगबली, महावीरजी—क्या उस वक्त सो रहे थे? उनके लिए भी उसके मन में अभिमान उभर आता है।

□

सामुअर-सन्दर्शन

रास्ते का काम करते समय ढोड़ाय को दुनिया भर की बातें याद आती हैं। रतीचरा और उसके साथी लोग बीच-बीच में कहते हैं— क्या रे ढोड़ाय। सपना देख रहा है क्या? तेरी मूँछ की रेखा दीख पड़ रही है, अब शादी कर ले।

'धत्त।'

'धत्त क्या? लेकिन, लड़की के बाप को देने के लिए रुपये जुटाना ही बड़ा कठिन है। किरिस्तान होता तो सामुअर की तरह साहब के रुपये पाता।'

पादरी साहब ने सामुअर को मौली साहब के बागीचे में माली के काम पर बहाल करवा दिया था। पुराने नीलकर-परिवार के सभी साहब लोग एक-एक कर जिरानिया से चले जा रहे हैं। मौली साहब भी कई सालों से जाने के लिए तैयार हो रहे हैं। जमीन-जगह उन्होंने बहुत दिनों से ही बेचनी शुरू की है। लोगों का कहना है कि जमीन का दाम शीघ्र ही घट सकता है, इसलिए इस साल साहबों में सम्पत्ति बेचने की धूम मच गयी है। मौली साहब अपने नौकर-चाकर, डाक्टर-वकील, रिश्तेमन्द और बेरिश्तेमन्द—बहुतों को, जाने से पहले कुछ-कुछ रुपये दे जायेंगे— यह बात इस अंचल के सभी जानते हैं। ऐसा भी सुनने में आता है कि बहुतों ने अपने रुपये पादरी साहब के पास जमा कर रखे हैं। बिसरिया की कोठी की सम्पत्ति उचित दाम पर बिक्री

कर देने के बाद ही मौर्ली साहब जिरानिया छोड़कर जा सकते हैं। सनीचरा इसी मौर्ली साहब की बात कह रहा था।

सामुअर भी अब जवान हो गया है। उसका चेहरा नक-चपटा है। फिर भी वह साहबों के जैसा गोरा और लाल हो गया है। कोठी की साईकिल पर चढ़कर ढोड़ाय के सामने से वह रोज डाकघर से साहब की डाक लेकर गुजरता है और सीटियाँ देता रोज शाम के वक्त ताड़ी पीने जाता है।

'वह देखो सामुअर आ रहा है। देखते हो, उसकी मूँछें आ रही हैं; गन्ने के रेशे की तरह।'

ढोड़ाय हँस पड़ता है। सचमुच सामुअर साईकिल पर आ रहा है। माथे पर एक रूमाल बँधा है।

'रूमाल बाँधा है, देखो न। ठीक छुरी-ताला बेचने वाली ईरानी लड़की की तरह। वह जरूर डाकघर से आ रहा है।'

'मूँछ की रेखा मुड़वा लो, सामुअर'—सभी हँस उठते हैं। सामुअर साईकिल से उतर जाता है। इन लोगों ने एक ही पुकार में सामुअर को आसमान से जमीन पर ला दिया है, कितनी ही बातें वह साईकिल पर चढ़कर सोचता हुआ आ रहा था।....

नई आया देखने-सुनने में अच्छी है। अलिजान बावर्ची के साथ उसकी आशनाई है, और फिर सामुअर के साथ भी। गत वर्ष, साल खत्म होने की रात, गिर्जाघर के हॉल के बगलवाले छोटे कमरे में—जिस कमरे में मोती के मार्बेल पर मेम साहब लोग अपनी-अपनी तकदीर देख रही थी—उसी कमरे में—आधी रात होगी उस वक्त—बाहर पूस का शीत—वर्फ जैसी ठंड—लेकिन कमरे के अन्दर कैसा गर्म!—आया के गाउन में कैसी सुगन्ध—मेम साहब की शीशी से चुराई गई खुशबू, ऑटो दिलबहार से भी बढ़िया गन्ध, उसके साथ मिली है सिगरेट और प्याज की बू से भरी हुई आया की साँस—उस दिन नशे के आवेग में सभी कुछ मधुर लगा था। बावर्ची एक नम्बर का शैतान है—घर में उसकी दो-दो बीवियाँ हैं।....

इन लोगों की पुकार से सामुअर विरक्त होकर ही साईकिल से उतरा। अच्छा नहीं लगता है इन लोगों से बातें करने में। उसने सद्यः सिगरेट सुलगाई है। खैर था कि वह किरिस्तान है, नहीं तो ये लोग उसके मुँह से सिगरेट छीनकर खींचने लगते! राजा की जाति होने का लाभ! इसीलिए न अलिजान बावर्ची मांस खिलाता है—साहब उसे रुपये दे जायेंगे इसलिए, इससे आया के साथ दोस्ती जमाने में सुविधा होती है।

ढोड़ाय मजाक से कहता है—'सामुअर! सुनता हूँ तेरा साहब नहीं जायेगा?'

सामुअर कहता है—'नहीं जाने से भी मेरे लिए अच्छा है, और जाने से भी! नहीं जाने से यह आराम की नौकरी तो रहेगी। और, जाने से तो बात ही और—रुपये मिलेंगे।' बात में सामुअर को कोई भी हरा नहीं सकेगा। दो-एक शिथिल बातें

कर वह चिट्ठी और कागजों का बंडल लेकर फिर साईकिल पर चढ़ता है।

'देर होने से साहब बिगड़ेंगे। कुछ दिनों से देखता हूँ साहब का मिजाज भादो के कुत्ते जैसा बना हुआ है।'

'तेरे ही तो मालिक हैं। और किस तरह का होगा?'

सामुअर साईकिल की हैंडिल पर झुककर जोर-जोर से पाँव चलाता है—इन गँवारों को आश्चर्य में डाल देने के लिए।

'और जोर से चलाओ! आगे की बैलगाड़ी मे लाल साड़ी देखी है उसने, फिर क्या वह धीरे से चला सकता है?'

बिरसा कहता है—बिलकुल 'साहेरा' हो गया है। मैंने यह देखा है कि किरिस्तान होने से आदमी ऐसा ही हो जाता है। सब बुद्धि बचपन में ही चुक जाती है।

□

शाप-मुक्ति प्रार्थना

ढोड़ाय को न्योता देकर खिला रही है महतो-पत्नी। उसकी आजकल कितनी खातिर है!

ऐसा सुनने में आता है कि बाबू लाल ने महतो-पत्नी से कहा है कि चेरमैन साहब ने हवागाड़ी पर सफर करते समय गाड़ी रोककर ढोड़ाय से जिरह की है। जिरह में ढोड़ाय ने खूब अच्छा जवाब दिया है। बाबू लाल चेरमैन साहब के साथ हवागाड़ी में ही था।

यही कथा तो महतो-पत्नी ढोड़ाय को सुना रही थी, ढोड़ाय का भी इस प्रसंग में कम उत्साह नहीं है। महतो-पत्नी के सामने वह सकुचाता था, पर कुछ देर के लिए ढोड़ाय वह सकोच भूल जाता है। थोड़ेर थोड़े है कि साहब जिरह मे हरा देगा। इतने दिन क्या उसने अपनी जाति के बुजुर्गों से सिर्फ ढेला फोड़ना सीखा है? दल में उसकी उम्र सबसे कम देखकर साहब उसी को पूछने आया था, पर ऐसा 'मुँहतोड़ जवाब' उसने दिया है कि बच्चू को हमेशा याद रहेगा।"'खुशी में गुदर की माँ के कतला मछली जैसे मुँह से काले दाँत प्रायः बाहर निकल आते हैं। अचानक उन्हें ढोड़ाय को नमक देने की बात याद पड़ती है। ढोड़ाय के पत्तल की बगल में ही मिट्टी के चुक्के में नमक रखा गया है।

'अगे फुलमरिया!"' ढोड़ाय को जरा नमक दे जा।' फुलमरिया उनकी लड़की है। उसके पैर सूखे हुए हैं। हाथ मे खड़ाऊँ पहने वह प्रायः रेंगकर ही चलती फिरती है।

'रहने दो, मैं खुद ही ले लेता हूँ'—कहकर ढोड़ाय चुक्के से नमक ले लेता है।

'खुद ही क्यों लोगे ? फुलझरिया क्या अभी वैसी ही छोटी है।' यह कहक महतो-पत्नी अपनी लड़की की उम्र के सम्बन्ध में अपनी लड़की के सामने ही एक निर्लज्ज इंगित करती है कि फुलझरिया और ढोड़ाय दोनों ही शर्मा जाते हैं। खट्-खट् क आँगन में आवाज होती है ! दूर चली जा रही है वह आवाज—फुलझरिया शाय बाहर गई। उसके शरीर का ऊपरी हिस्सा अस्वाभाविक किस्म से पुष्ट है !

'अगे फुलझरिया ! फिर कहाँ गई ? लजा गई है क्या ? कहाँ से परमात्मा क्य कर देते हैं, कैसी लगन पैदा करते हैं, समझना कठिन है। कौआ छप्पड़ का खपड़ा उल देता है और उससे घरामी का रोजगार चलता है। लेकिन सब चीज का एक समय है उससे खिलाफ जाने का उपाय नहीं है। जियल की डाल बरसात में लगाओ, स जायेगी, और चैत-वैसाख में लगाओ, तो सूखी जमीन में भी वह लग जायेगी।' 'य एक मार्के की बात कही है गुदरीमाई ने'। अचानक महतो का कंठस्वर पाकर ढोड़ा चौंक उठता है—वे तब आँगन में ही हैं। अब तक आवाज नहीं दी थी। तब जर महतो ही गुदरीमाई से यह सब करा रहे हैं। गुदरीमाई चालाक औरत है ठीक, प इतना खिलाना-पिलाना, यह सब महतो जैसे बुद्धिमान आदमी अगर पीछे नहीं रह तो अकेली गुदरीमाई से सम्भव नहीं होता। बाबू लाल भी शायद इसके पीछे है। शाय क्या, जरूर है। इसीलिए न चेरमैन साहब के जिरह करने की बात उसने गुदरीमाई की है। दुखिया की माँ भी रह सकती है। वह भी सब घर में जाती है। इस शिवजी माथे पर थोड़ा पानी ढालना, उस शिवजी के माथे पर थोड़ा पानी ढालना, दुनिया के शिवजी के माथे पर पानी ढालना—यह वह करेगी ही।

ढोड़ाय ने बहुत दिन पहले से ही महतो-पत्नी के इतने प्यार-दुलार का उद्दे समझा है। वह भी पकड़ में आना नहीं चाहता है।

'और थोड़ा-सा भात नहीं लोगे ? यह भी क्या खाना हुआ। इस जवान उ में उस थोड़े-से भात से क्या होगा ? ऐ फूलझरिया, अमले का अचार दे जा ! बिटि को शर्म हुई है क्या ? सरसों देकर अपने हाथ से अचार बनाया है मेरी बेटी ने। क जाकर बैठ गई वह ? खुद अचार बनाकर खुद ही देना भूल गई ? मेरे भाग्य में जाने क्या लिखा है भगवान ने ? गुदर का बाप उस दिन कह रहा था कि सरकार नया कानून बनाया है कि लड़की की उम्र जब तक तीन बेटों की माँ होने के लायक हो, तब तक उसकी शादी सरकार नहीं होने देगी। अगर शादी की गई उसके पह तो कालापानी की सजा मिलेगी ! घोर कलयुग है। यह भी देखना पड़ा और सुन पड़ा। रतिया, रबिया, बसुआ—सबने तो गोद की लड़की तक की शादी ठीक कर है। डगराहा से मेरा भाई उस दिन आया था। उसने कहा, वहाँ एक मुसलमान यहाँ एक शादी हुई है, जिसके वर-वधू अभी पेट में ही हैं।'

महतो आँगन में से ही मजाक करते हैं—'तुम्हारे भाई की ही तो है।'

'मेरे भाई ने झूठ कहा है क्या ? सब को अपने जैसा नहीं समझो ।'

'अच्छा ! अच्छा ! तुम्हारा भाई इतना सत्यवादी है कि उसके मुँह से जो बात निकलती है, वह फल जाता है । अब अगर पेट के दोनों ही लड़कियाँ हों, अथवा दोनों ही लड़के हों तब ? तुम लोगों के गाँव में ऐसी शादी भी चलती है क्या ?'

महतो-पत्नी ने भाई की बात पर सरल मन से विश्वास कर लिया था। वह अप्रस्तुत होकर कहती है—'अच्छा वह बात जाने दो, अब बोलो रबिया और बसुआ ने अपनी गोद की लड़की की शादी ठीक कर ली है या नहीं। अब मेरे भाग्य में क्या है, कौन जाने । हम लोग तो पांडर नहीं हैं कि जवान लड़की को घर में रखेंगे। और, जिन गरीबों को पैसों के अभाव से बहू नहीं जुटती है, वे उस पर बुरी नज़र डालेंगे ।....'

ढोड़ाय उठता है । महतो स्वयं उसके हाथ पर पानी ढाल देते हैं ।

'फुलझरिया ! अगे फुलझरिया ! 'सखड़ी' उठानी नहीं है ?'

फुलझरिया उस वक्त घर के पिछवाड़े की केले की झाड़ में बैठकर आकाश-पाताल की सोच रही थी ।....जाने कितना पाप उसने पहले जन्म में किया था । उसी पर गोसाईं का क्रोध है । कौन-सा पाप उसने किया था, यह वह नहीं जानती है । तब क्यों वह हाथ में खड़ाऊँ पहनकर रहती है ? क्यों और लोगों की तरह वह चल-फिर नहीं सकती ? ततमा टोली की अन्य लड़कियाँ कहती हैं, कि उसने अपने रूप के घमंड में विगत जन्म में शिवजी को लात मारी थी । उसका बाप कहता है कि उसने जरूर अपने पहले जन्म में अपने मर्द से पैर दबवाया था । छिः ! छिः !! छिः !!! क्यों उसकी ऐसी दुर्मति हुई ? मर्द दावेगा 'मोटाहा' का पैर । शिवजी के माथे में वह लात मारने गई थी ! उपयुक्त सजा ही उसे मिली है । रेवन गुनी लेकिन और कुछ कहता है । उसका कहना है कि ठीक जिस जगह पर वह पैदा हुई है, उस जगह की जमीन के नीचे जरूर काली बिल्ली की हड्डी गाड़ी हुई है । पैदाइश के छः दिनों के अन्दर ही अगर काले बिच्छू से पकाये गये सरसों तेल का मालिश किया जाता तब बिल्ली की हड्डी का दोष कट सकता था । लेकिन उस समय तो माँ-बाप ने रेवन गुनी को दिखाया नहीं था । दिखाया था छः महीने के बाद, तब दिखाकर क्या होगा ? उसके बाप को माग परवाहा के वैदजी ने कहा था कि अगर सद्यः मरे हुए सियार का पेट चीरकर उसकी गरमा-गरम अंतड़ियों में पाँव घुसा कर बैठा जाय, तो बहुत-कुछ फायदा हो सकता है । लेकिन फुलझरिया का बाप आज तक एक भी सियार पकड़ने का बन्दोबस्त नहीं कर सका । अब तक फुलझरिया के मन में आशा थी कि पंगु होने पर भी उसकी शादी हो ही जायेगी । क्योंकि कौन नहीं जानता है कि ततमा लोगों की शादी में लड़की का बाप रुपये पाता है । और, इसी रुपये के कारण कितने गरीब ततमा बहुत दिन तक शादी नहीं कर सकते हैं । उसका बाप अगर रुपया नहीं लेना चाहे, तो केवल दो मुट्ठी पके हुए भात के लोभ से ही कितने मर्द उससे शादी करने को राजी हो

जायेंगे। परन्तु यह क्या 'सराध' के कानून की वात सुनने में आ रही है कई दिनों से ? लड़की का वाप होकर लड़के तथा उसके वाप की खुशामद करनी होगी ?

छोटी-छोटी लड़कियों के वाप, वर के वापों के यहाँ धरना दे रहे हैं। घृणा की वात है। रुपये तक देने के लिए राजी हैं लड़की के वाप। वुचकुनिया के वाप ने तो तीन साल की वुचकुनिया की शादी के लिए अनिरुद्ध मोख्तार से कर्ज लिया। उसे दोष भी कैसे दिया जाय ? उस वेचारे ने कालापानी से जान वचाने के लिए लड़के के वाप को रुपये दिये हैं। अव ऐसी 'हवा' में कौन शादी करने जाता है फुलझरिया से। यह 'सराव' का कानून सचमुच उसके सराध (श्राद्ध) के लिए ही वना है। आज जो दुवला है, कल मोटा हो सकता है, आज का छोटा, कल वड़ा हो सकता है, लेकिन हाथ में खड़ाऊँ पहनी हुई लड़की, किसी भी दिन चल नहीं सकेगी—चाहे कितने ही सियार के पेट में पैर डुवो कर वैठी रहे। अभी भी क्या उसके पाप का प्रायश्चित्त नहीं हुआ है ? नहीं तो फिर उसे सजा देने के लिए सरकार क्यों यह 'सराध' का कानून वना रही है। सरकार, तुम भी तो भगवान् ही हो ! तुम्हारी ही कृपा से रेलगाड़ी, हवागाड़ी चलती है ! महावीरजी जैसी तुम्हारी ताकत है, चेरमैन साहव तुम्हारे खवास हैं। इतनी क्षमता जिसकी, उसे फुलझरिया जैसे साधारण आदमी पर क्रोध क्यों ?

उसकी आँखों में पानी भर आता है·······

'अगे फुलझरिया। चिल्लाते-चिल्लाते तो मेरा गला फट गया, मुदा वात क्या कानों में जाती ही नहीं ? शादी के नाम से ही क्या पैर मचान पर उठ गये ?'

काश ! पैर उठाने की क्षमता भी रहती।—फुलझरिया की दोनों आँखों में आँसू भर आये हैं ? माँ को देखकर वह आँसू पोंछ लेती है। माँ ने देख लिया क्या ?

'मकड़े के कितने जाले हैं केले के पेड़ों की तरफ ? दीख नहीं पड़ते हैं, पर मुँह-आँख पर सट जाते हैं। मकड़े का जाल नाक पर लगने से नाक वहुत खुजलाती है न, माँ ?'

□

रमिया काण्ड

धान-कटनी-यात्रा

कार्तिक-अगहन महीने में ततमा पुरुषों के रोजगार कुछ अनिश्चित हो जाते हैं। घरामी के काम कम आते हैं और कुएँ साफ करने के काम उस वक्त शुरू नहीं होते हैं। शायद इसीलिए ततमा-स्त्रियाँ अगहन में जाती हैं धान काटने। वे लौटती हैं पूस के शेष होते-होते। ये 'पूरब' को ही अधिक जाती हैं—भैंसी, जमौर, हस्वा याने। उधर रोजगार अधिक मिलता है—बंगाल मुल्क के नजदीक है न, इसलिए। लेकिन रोजगार अधिक होने से क्या होता है—वहाँ का पानी 'एकदम लरम' और 'धुलधुल बुखार'। फिर उधर 'मीयाँ' ज्यादा हैं। उस पाट (जूट) और पानी के देश में जात-पात बचाकर चलना कठिन है। इसलिए अधिकांश ततमा-स्त्रियाँ पसन्द करती हैं पच्छिम जाना—कलमदाहा, बड़हड़ी, धोकड़धारा। इन सब जगहों का पानी अच्छा है, आधा सेर सत्तू पचाने में आधा घंटा। बहुत भूख लगती है—केवल यही बड़ी मुश्किल है। लेकिन लोग भले हैं। जो मजदूरिन कम खाती है, उसे वे काम में नहीं लेना चाहते हैं। कहते हैं, जितने पूरब के बीमार-सीमार लोग हैं, वे खाना ही पचा नहीं सकते, तो काम क्या करेंगे? इसलिए मजदूर की माँग पच्छिम में कम होती है। गंगाजी-कोशीजी पार होकर मुंगेर और भागलपुर जिले से हजारों की संख्या में मजदूर-मजदूरिन धान-कटनी के समय इस तरफ आते हैं। उन लोगों की तरह ततमानी मिहनत नहीं कर सकती हैं।

इस धान-कटनी के वक्त महतो के परिवार की स्त्रियों और दुखिया की माँ के अलावा ततमा टोली में और कोई भी ततमा-स्त्री नहीं रहती है। इसीलिए अगहन-पूस महीने में घर के सारे काम ततमा पुरुष ही अपने हाथों से करते हैं। इस समय मुहल्ले में नशा-भांग की मात्रा बढ़ जाती है। धान-कटनी-दल के, डेढ़ महीने के बाद, लौट आते ही हर बार उस समय पुरुषों द्वारा किये गये कार्यों की कहानी, महतो-पत्नी मुहल्ले की स्त्रियों को सुना देती हैं। झोटाहा लोग उस वक्त नये लाये धान की मालिक हैं। प्रत्येक परिवार में झगड़ा-विवाद मजे में जग उठता है। घर का मालिक विनीत होकर इन दो महीने झोटाहा लोगों की खुशामद करता है। इसीलिए ततमा टोली की स्त्रियाँ कहती हैं—'कभी नाव पर गाड़ी, तो कभी गाड़ी पर नाव। दस महीना पुरुष राजा, तो दो महीने स्त्रियाँ भी राज कर लें।'

ततमा लोगों के कई वर्षों से बड़े खराब दिन जा रहे हैं। काम मिलना कठिन हो गया है। चार आने तो मजदूरी ही है, लेकिन उसे ही देने में बाबू-भईया लोगों की हालत पतली! चावल मात्र सुनने को ही चार पैसे सेर है, लेकिन सस्ती चीज का भी तो दाम देना होता है। ये चार ही पैसे आते कहाँ से हैं, सो खबर क्या बाबू-भईया लोग रखते हैं? खाने जाओ, तो पहनने के कपड़े नहीं, फिर कपड़े खरीदो तो उपवास

करना होता है। पक्की में काम करते वक्त ढोड़ाय और उसके सहकर्मी प्रत्येक दिन देखते हैं कि जूट से लदी बैलगाड़ियों की श्रेणी लौटी जा रही है, जिरानिया बाजार के गोलादार खरीदना नहीं चाहते हैं। ततमा टोली में साँझ के बाद बाबू-भईया और बाजार के लोगों का आना-जाना बढ़ जाता है। धाङ्गर लोग अपने में चर्चा करते—अब देखते हैं, गोसाईं-थान में बेली के फूल की माला बिकेगी! देखते नहीं, झोटाहा लोगों के 'झोटा' में तेल पड़ रहा है?

पच्छिम के भर्सर लोअर प्राइमरी स्कूल के गुरुजी रहते हैं बाबुओं के घर। वे बाबू लोगों के लड़कों को पढ़ाते हैं, खाते-पीते हैं, मुसाहबी करते हैं, फरमाईश पर खटते हैं, मुकदमे में पैरवी करते हैं, चिट्ठी लिख देते हैं। वे आये थे जिरानिया के चेरमैन साहब के पास, भर्सर के बाबू को साथ लेकर—बदली का हुक्म रद्द कराने। बाबू चेरमैन साहब के पुराने मुवक्किल हैं। चेरमैन साहब जिरानिया में नहीं थे। बाबू लाल उन्हें लेकर जाता है किरानी बाबू के घर। घी का चुक्का और केले का घौर आँगन में रखकर वह किरानी साहब को बुलाता है। एक मिनट के अन्दर गुरुजी का काम हो जाता है। इसी के लिए रायबहादुर से भेंट करने आये थे ये दो देहाती। बाबू लाल मन-ही-मन खूब हँसता है। भर्सर के बाबू ने बाबू लाल के हाथ में भी एक रुपया दिया। बाबू लाल कहता है—मात्र एक ही रुपया?

घर में धान आने दो, बेचकर तब रुपये दूँगा। अभी रुपया कहाँ गृहस्थ के पास?

बाबू लाल ये सब सुनने का अभ्यस्त है, काम हो जाने पर भला कोई रुपये देता है?

'अच्छा, धान-कटनी के आदमी तुम लोग कहाँ से लेते हो?'

'इस बार फिर आदमी का अभाव है। कब से लोग चक्कर लगा रहे हैं।"

'मेरे टोले के आदमी लो न?'

गुरूजी चेरमैन साहब के चपरासी को क्रोधित करने को राजी नहीं हैं, भविष्य में फिर इस शैतान की जरूरत हो सकती है।

'अच्छा तो देना चालीस आदमी के करीब।'

ततमा टोली का गौरव-गुमान है बाबू लाल! भगवान की कृपा से वर्दी-पगड़ी पहनने का अधिकार पाया है। अपनी जाति के लिए वह इतना भी नहीं करेगा? आज के इस अभाव के दिन में यह एक तरह से रामजी का छप्पर फाड़कर दे देना ही कहना होगा! कातिक महीना आने को है, पर अभी भी ततमा लोगों के पास कहीं से धान-कटनी के लिए कोई माँग नहीं आयी है। इस बार गृहस्थ लोग खेत का धान खेत में ही रखेंगे क्या? इस हताशा के समय भर्सर की खबर से मुहल्ले में शोर मच जाता है। बाबू लाल को सभी धन्य-धन्य बोलते—घमंड से दुखिया की माँ का पैर जमीन नहीं छूता। उसका घमंड और भी बढ़ जाता है, जब वह देखती है कि गाँव की स्त्रियों के

साथ इस बार महतो की स्त्री और उसकी लँगड़ी लड़की भी धान-कटनी में जा रही है।

यात्रा के समय महतो-पत्नी के माथे पर रखे समाठ से दुखिया की माँ कंदे के पत्ते में तम्बाकू रखकर छुआती हुई कहती है—'हे गुदर की माय। सबको लेकर सकुशल लौटना।'

भीतर-भीतर महतो-पत्नी पीड़ा भोगती है, फिर भी कहती है—'हाँ, इसीलिए तो जा रही हूँ इन लोगों के साथ।'

दूर से रतिया धड़ीदार चिल्लाता है—'आओ न भई,'''औरतों की इतनी क्या बातचीत है कि समझ में नहीं आता'''''

गोसाईं-थान में प्रणाम करते हुए लोग यात्रा प्रारम्भ करते हैं।

धान-कटनी के समय एकदम मेला लग गया है मर्सर के चाप के किनारे। गिरिपुर, मर्सर, सोनदीप और केमी—इन चारों गाँवों के दरम्यान नीची जमीन में धान के खेत हैं। धान भी हुआ है वैसा ही—शीष के भार से पौधे लोट रहे हैं, कहीं भी पुआल दिखाई नहीं पड़ता है। ऊँची जगहों पर काटे हुए धानों का सुनहला पहाड़। उसी के आसपास जिनमें आदमी प्रवेश कर सके, ऐसे ढंग के छोटे-छोटे खड़ के झोपड़े खड़े किये गये हैं। रात को ऐसी ठंड पड़ती है कि पुआल के पहाड़ का घूर जलाने पर भी किसी तरह कान गरम नहीं होता है।

मर्सर के बाबू लोगों के धान काटने आये हैं इस बार दो दल, एक दल मुँगेर के तारापुर से और एक दल ततमा टोली से। कुल मिलाकर प्रायः सत्तर आदमी हैं—पुरुष मात्र दस।

मर्सर में आने के साथ ही गीत गाता, गले में दुकान लटका कर पान वाला पहुँचता है—'टिकिया, तम्बाकू, पान।' धान-कटनी के समय गाँवों में ये घूमते रहते हैं—बीड़ी, सैनी, *तम्बाकू, पान, सुपारी, साबुन*—और भी कितनी ही तरह की चीजें बेचने के लिए। इसके अलावा इन लोगों का दूसरा पेशा भी है, धान-कटनी के स्त्रियों बीच।

पानवाला गीत गाकर पहले आदमी इकट्ठा करता है, फिर सौदा बेचता है। लेकिन ततमा लोग अभी तुरत आये हैं, धान काटना वे शुरू करेंगे तब न कहीं उससे चीजें खरीदेंगे। अभी वह आया है केवल लोगों से परिचय करने के लिए।

अबकी समैया धीरज धरहिं गे बेटी
नहीं उपजल छै पटुआ धान,
की रंग के करबो बीहा दान
अबकी समैया धीरज धरहिं गे बेटी॥

ततमा स्त्रियाँ सभी उस पान वाले को घेर कर बैठ जाती हैं। जो ऐसा गीत गा सके, भला उससे दोस्ती जमाने में देर थोड़े ही लगती है। कुछ ही क्षण में वह पान वाला इस धान की दुनिया की सभी खबरें उन्हें सुना देता है।

—भर्सर के वाशिन्दे धान-कटनी के समय इस वार चले गये हैं सिरिपुर काम करने। दो-एक मात्र डगरे के वैगन हैं भर्सर में—वे कभी इधर से ढुलककर उधर जाते, तो कभी उधर से ढुलककर इधर आते हैं। इस वार धान रोपने के समय सिरिपुर के वावूजी हर मजदूर और मजदूरिन को जलपान के साथ या तो मिर्चा, नहीं तो प्याज देते थे। इसी पर भर्सर, केमैय और सोनपुर के वड़े-वड़े गृहस्थ लोगों ने मिटिंग की। उन लोगों ने कितना समझाया सिरिपुर के वावूजी को कि वे प्याज-मिर्च देना वन्द करें—वाद वाले पुर्खे उन्हें दोष देंगे। गृहस्थ लोग इससे मर जायेंगे। जैसा चला आ रहा है, उसके खिलाफ मत जाइये, उन्हें तो आप पहचानते ही हैं—प्याज-मिर्चा देने का रिवाज वन जायगा। जिस गाछ पर वगुला वैठे उस गाछ का समझो अंत हो हो गया। लेकिन सिरिपुर के वावूजी हिम्मतवाले आदमी हैं—मर्द की वात और हाथी का दाँत—दस् से मस् नहीं होने को है। उस सिरिपुर के वावूजी की प्याज-मिर्च की उदारता की वात स्मरण रखकर आस-पास की अनेकों औरतें गई हैं वहाँ काम करने। और भी कितनी ही तरह की खवरें विरजू पानवाला सुनाता है।

गुदर की माँ कहती है—'वही कहती। भर्सर के वावूजी ने वावू लाल चपरासी की वात रखी है। सुना न? और इसी पर घमंड से दुखिया की माँ के पैर जमीन नहीं छूते हैं।'

सभी ततमानियों का इसमें नीरव समर्थन है। विरजू पानवाला आदमी पहचानता है, महतो-पत्नी से ही उसका काम वनेगा।



रमिया का दर्शन-लाभ

अद्‌भुत है यह धन-कटनी-राज्य! नये पुआल और सड़े पांक की गंध से भरा हुआ चांप रोज रात को कुहासे से ढँक जाता है। घूर के क्षीण प्रकाश में किसी का चेहरा पहचाना नहीं जाता, कटे धान के पहाड़ पर उनकी छाया हिलती-डुलती है। सोने के वे पहाड़ वड़े-वड़े काले हाथियों जैसे देखने में लगते हैं। धानखोर वत्तखों की डाक को सहसा छोटे वच्चे की रुलाई समझने का भ्रम होता है। पुआल के ढेर में सारी देह प्रविष्ट कर रात को सोना पड़ता है। जल के अन्दर पनडुव्वी भूत आधी रात को छप्‌छप् करता चलता-फिरता है—उसी आवाज से नींद टूट जाती है। चांप के ऊपर 'राकस' वत्ती जलाकर हाथ से वुलाने का इशारा करता है—अभी यहाँ, तो फिर दूसरे ही क्षण 'हुइ-इ-इ' संथाल टोली के पास चला गया है। घूर के किनारे किस्सा जम उठता है। सभी ततमा की अभिज्ञता प्रायः एक-सी ही है। रात को जव वह मैदान

में गया था, तो उस वक्त उसे एक लड़की ने इशारे से अपने साथ चलने को कहा। देखते ही पता लग गया था कि वह लड़की चुड़ैल है। उसकी पुकार न सुनने पर वह पूरब के सेमल के पेड़ पर चढ़ गई। सबको रोमांच होता है।

एक तो, यह जगह पूरे नये परिवेश में है, जिसकी विचित्रता नई है, फिर यह महतो-नायबों के अधिकार से बाहर है। धन-कटनी का दल इसलिए यहाँ आकर निश्चिन्त होता है।

और, और दफे दल का प्रतिनिधित्व करती थी रतिया छड़ीदार की स्त्री, इस बार महतो-पत्नी के आ जाने पर पद-मर्यादा के दावे से वे ही सर्वेसर्वा हो जाती हैं। बाहर लोगों के साथ दल के पक्ष से बातचीत चलाता है रतिया छड़ीदार।

इस एक महीने के शिविर में रीति-रिवाज सब ततमा-टोली से भिन्न हैं। सामाजिक बाधा-निषेध यहाँ शिथिल हैं, जात-पात का विचार कम है। जो धान अधिक काट सकता है, उससे सभी ईर्ष्या करते हैं, जिस लड़की को यौवन है, उसको रोजी की कमी नहीं है, जिस पुरुष की उम्र है, लड़कियों के पास उसके लिए कदर है, यहाँ उसका सात खून माफ है।

किसी संस्कार का झंझट रहने से क्या इतने लोगों के रहते गुदर की माँ की दोस्ती होती मुँगेर-तारापुर दल की रमिया के साथ? बड़ा खूबसूरत चेहरा है रमिया का। अच्छा नाम है— रामप्यारी। उसके दल के लोगों से पहले ततमा टोली का दल कानोंकान खबर पाता है रमिया की माँ के बारे में। वह थी बाबू जी के घर की 'दाई'। दाई शब्द पर अस्वाभाविक किस्म से जोर देकर, होठों पर हँसी लाकर वे कहते हैं— कहो नहीं तो, ततमानी दाई का काम थोड़े ही करती है? उसका पति था लकवे से पंगु। कुछ ही साल पहले वह मर गया है। गत वर्ष बाबू जी भी मर गये हैं। धन-कटनी के परिवेश में ऐसी रसदार खबर भी महतो-पत्नी के मन में उल्लास नहीं जगाती है। उस पर रमिया-माई भी ऐसी भोली है! हर वक्त कुंठित रहती है, दोषी-सा भाव है। कोई बात छिपाने की उसकी किसी तरह की चेष्टा नहीं है। महतो-पत्नी को उस पर ममता होती है। दूसरे समाज की औरत है वह, उसके चाल-चलन की आलोचना खबर से ततमा टोली के लोगों का क्या प्रयोजन है? तारापुर-दल रहता है यहाँ से रस्सी भर दूर। रमिया-माई की कचन रहती है यहाँ—ततमा लोगों के दल में। रोज रात को कचन में धान कूटते समय रमिया-माई और महतो-पत्नी में गुप-चुप की कितनी ही बातें होती हैं। दोनों को ही अविवाहित लड़की की समस्या है।

'मेरी रमिया का पैर लंगड़ा न होने से क्या होता है, उसकी भी शादी लेकर बड़ी मुसीबत में पड़ गई हूँ। तुम तो बहन अपने कपाल को खुद दोष देकर रुलाई पा रही हो, पर मेरा तो सो भी उपाय नहीं है। अपना कपाल तो मैंने खुद ही जलाया है।'

कहते ही रमिया-माई समझ जाती है कि फुलमतिया के लंगड़े पैर की बात करना उचित न हुआ है, दोनों ही थोड़ा अप्रस्तुत हो जाती हैं। फिर गप्प जमने में

कुछ देर लगती है।

उस मुँहजले पानवाले ने आकर रमिया की बात छेड़ी थी। भर्रर के बाबूजी ने शायद उसे भेजा था।

वह दाँत निकालकर कहता है कि सभी किस्सा मालूम है, बेदी की बारी में इतना सतीपन क्यों? हरामजादा! तरोई के बीये जैसे उसके दाँतों को, मन करता है, एक ही थप्पड़ में तोड़ दूँ।

महतो-पत्नी से बिरजू पानवाले का स्वभाव अज्ञात नहीं है। उस दलाल से ाब दो रुपयों की चीजें मँगनी पायी हैं। दूसरे साल यह रोजगार करती थी छड़ीदार वह। रबिया की बहू और हरिया की बहू चली है चांप की ओर इतनी रात में। नया की माँ समझ गई क्या? जरूर वह सब कुछ समझती है।

पुआल के ढेर से रमिया और फुलझरिया की हँसी का स्वर दोनों माताओं के नों में आता है—एकदम हँसकर टूक-टूक हो रही हैं दोनों सखियाँ। खैर, फुलझरिया तब हँसना जानती है।

सुन तो न ली है उन्होंने हम लोगों की बात?

नहीं, झखली-समाठ की आवाज में अब तक हमलोग अपनी बात अपने ही नहीं र सक रही थीं, तो फिर वे क्या सुन सकती हैं?

फुलझरिया को भी बड़ी अच्छी लगती है रमिया। कैसी साफ-सुथरा रहती है मिया। उसके कपड़े-लत्ते दुखिया की माँ से भी साफ-सुथरे हैं। हर सप्ताह वे लोग रजू पानवाले से आधा पैला धान से कपड़ा फींचने का साबुन खरीदती हैं। इसकी खा-देखी फुलझरिया के भी साबुन खरीदने की बात उठाने पर उसकी माँ भर्त्सना कर ठती है—'रमिया से ये सब किरिस्तानी सीखना हो रहा है? तू क्या नाचवाली है, ो हफ्ते-हफ्ते तुझे कपड़े साफ करने हैं? कितने धान रोज खेत से चुनती है, सो पहले हसाब कर देखना, फिर साबुन खरीदने की बात सोचना! लगातार बैठकर धान कूटने ी तो क्षमता ही नहीं है। काटते समय सिपाही की नजर बचाकर दो-चार धान के गुच्छे तुम्हारे लिए हमलोग छोड़ देती हैं, वे ही उठाकर तो तेरा पेट चलता है, फिर कपड़े में साबुन देने का शौक होता है। कोई घूमकर भी तेरी ओर नहीं देखेगा, चाहे कपड़ों में कितना ही साबुन लगा····

फुलझरिया प्रत्येक बात में अपनी अंगहीनता के प्रति इंगित का आभास पाती है। उसकी माँ तक उसे ऐसा कहना नहीं छोड़ती है। उसकी पलकें भींग जाती हैं। किन्तु इस पानी-कांदो, शीत-कुहासे के देश में किसी की पलकें भीगीं या नहीं—सो देखने का ततमा लोगों को अवसर नहीं है।

फिर भी उसे बड़ी अच्छी लगती है रमिया। रमिया के चेहरे में जैसे हरदम कोई बात छिपी हो! बात बोलते समय वह हँसकर टूक-टूक होने लगती है। गाना, फँकड़े, सरस कहानी उसके जिह्वाग्र पर हैं। दुनिया में किसी की वह परवाह नहीं करती

है। उसके मन में जरा भी डर-भय नहीं है। सब अच्छा है, फिर भी फुलझरिया को लगता है—रमिया में जरा देह-घिस्सू स्वभाव है, जो धन-कटनी के गांव में तो चल सकता है, किन्तु अपने गांव में यह चलने को नहीं है। शायद पच्छिम के गांव की शिक्षा-दीक्षा ही ऐसी हो। कितनी दूर, तारापुर, मुंगेर जिले में उसका घर है। इतनी दूर के किसी आदमी के साथ अब तक फुलझरिया को बोलने का मौका नहीं मिला था। उन लोगों की भाषा में (उच्चारण में), स्वर का ऐसा 'टान' है कि सुनते ही हँसी आती है। कैसे रस के साथ वह दूसरे की नकल कर सकती है। मालिक के सिपाही रामनेवरा सिंह लम्बी जुलफी खुजलाता हुआ कैसी कनखी मारता है, उसकी अभी नकल कर रही थी रमिया—हँसते-हँसते एकदम नाकोदम होना पड़ता है।

हँसी का स्वर पहुँचता है दोनों माताओं के कानों में।

'अरी ओ रमिया! आज क्या घर जाना नहीं है?'

'घर ही तो है'—कहकर रमिया व्यंग करती है।

'आज चाची के यहां रह न?'

'नहीं नहीं फुलझरिया! ऐसा भी कहीं होता है?' रमिया की मां किसी पर भरोसा नहीं कर पाती है।

'कल रात को फिर आना'—जाते समय महतो-पत्नी कह देती हैं।

पुआल के ढेर में देह प्रविष्ट कर सोमी फुलझरिया आकाश-पाताल की बात सोचती है। इतने लोगों के बीच भी बड़ा अकेलापन महसूस होता है उसे! डोड़ाय ने भी क्या मिट्टी काटने का काम अपनाया है? धन-कटनी में आने से बाबूसाहब की इज्जत पर चोट लगती! अपने गुमान में ही नहीं आये। खैर, अच्छा ही हुआ न आकर! ऐसा जिद्दी है! शायद चुड़ैल के बुलाने से भी उसके साथ 'सेमल के पेड़ की तरफ चला जाता।' यह किस चीज की आवाज है? कुत्ता-वुत्ता पुआल का ढेर खींच रहा है क्या? फुलझरिया चौंक उठी है। नहीं, हरिया की बहू है, दबाते-पैर वह पुआल के ढेर में आकर घुसी है। सो ही कहो!

□

रमिया की माता का देहान्त

उस रात महतो-पत्नी को घेर कर बैठा ततमा टोली का दल। कई दिन हुए, रमिया की मां यहां से चली गई है डेढ़ कोस की दूरी पर 'केमैय' गांव। जाते समय रमिया की मां महतो-पत्नी का हाथ पकड़कर रोती हुई कह गई थी—इन थोड़े-से दिनों के लिए तुम्हें छोड़ नहीं जाती बहन, पर रामनेवरा सिंह और बिरजू पानवाले ने जिन्दगी

काटनी मुश्किल कर दी है। यहाँ रहने से लड़की को बचा न सकूँगी। केमैय के राजपूत और जो भी हों, इस बात में बड़े भले हैं।

इसके बाद फिर महतो-पत्नी ने रमिया की माँ को मना करने का मौका नहीं पाया था। धन-कटनी खत्म होने पर दो दिनों के बाद जुदाई तो आखिर होती ही है।

'हाट के दिन मुलाकात करना बहन।'

फिर रमिया के होठों पर हाथ देकर वे कहती हैं—'मन खराब होगा मेरी फुलझरिया का।'

उसके दूसरे ही दिन से महतो-पत्नी रोज रात को, ततमा टोली के लोगों को लेकर आसन जमा बैठती हैं।

कथा जम उठी है। लोग कहते हैं कि 'केमैय' की तरफ हैजे की बीमारी शुरू हो गई है।

कैसा तो देश है यह ! लोगों को शायद रात को डर-भय लगा था। नहीं डरने से भी क्या कभी हैजा होता है ?

यह तय होता कि रात को कोई भी डरने नहीं पायगा। डर-सा लगते ही—सबको जगाकर धूर के किनारे बैठना होगा।

महतो-पत्नी रमिया की माँ के लिए चिन्तित हो उठती है—बेचारी को कहीं चैन नहीं है—केमैय गई तो वहाँ भी बीमारी शुरू हो गई।

एक नया झगड़ा शुरू हो जाने की वजह से यह प्रसंग उस समय के लिए स्थगित हो जाता है !····केवल एक ही ढिबरी जलाते हैं ततमा टोली के दल के लोग। सभी उस ढिबरी को लेकर खींचा-तानी करते हैं, पर महतो-पत्नी ही उसे अधिक देर दखल कर रखती हैं। एक-एक दिन एक-एक आदमी की तेल खरीदने की बारी है। आज बिरजू पान वाले ने तेल का दाम नहीं पाया है। आज है रबिया की बहू की बारी ! उसने साफ कह दिया है कि—ढिबरी रहेगी महतो-पत्नी के पास और तेल की कीमत देगी वह ? यह सब फुटानी महतो-पत्नी ततमा टोली जाकर छाटें।

'बड़ा बढ़ गई है रबिया बहू ! किससे कैसे बोलना चाहिए जानती नहीं है ?' महतो-पत्नी समझती हैं कि सबकी सहानुभूति है रबिया बहू की ओर ! अतः वे और बात बढ़ने नहीं देती हैं····अच्छा लौटकर जाने दो ततमा टोली। फिर मजा चखाऊँगी। यहाँ कुछ बोलती नहीं हूँ। इसीलिए,····

'अच्छा तेल का दाम मैं दे दूँगी बिरजू।'

बिरजू पानवाला हँसता चला जाता है।

दूसरे दिन, दोपहर को अचानक रमिया अकेली आकर हाजिर होती है। उसकी आँखें फूली हुई हैं। आज वह आकर हँसती हुई दो टूक नहीं होती है।

'क्या री रमिया, अकेली क्यों ? तेरी माँ की क्या खबर है ?'

रमिया फूट-फूटकर रो पड़ती है। उसकी माँ को हैजा हुआ था, रात को मर

गई है। केमैय के धान के खेत में वह पड़ी हुई है। वहाँ के दल के सभी हैजे के डर से भाग गये हैं। कटे हुए धान तक किसी ने नहीं लिये हैं। मरने के पहले वह कैसी प्यासी थी। सारी रात बिलकुल अकेली रही। अब तक गिद्ध-कौवे निश्चय ही नोच रहे होंगे। माँ कह गई थी, फुलझरिया की माँ के पास आने को।''' रुलाई में उसकी सभी बातें समझ में भी नहीं आती हैं'''

ततमा लोग इस खबर से खास हलचल नहीं मचाते हैं। मृत्यु को वे मनुष्य की एक अत्यन्त ही साधारण वृत्ति समझते हैं। जानवरों की मृत्यु और मनुष्य की मृत्यु में र्क क्या है? कुत्ता मरने से उसे डोम फेंकेगा, गाय मरने पर मुहल्ले के अन्दर उसकी ाल उतार नहीं सकोगे, और मनुष्य के मरने पर भोज देना होगा—यही फर्क है।

ततमा का दल विरक्त हो उठता है उस लड़की पर। मृत को छूते हुए करते-ते वे वह सारी चीजें छूकर एकाकार करेगी। जाय न वह मुँगेरिया दल के पास। ो नहीं, सिर्फ गुदर की माँ ही हुई 'अपना आदमी'!

मर्सर के बाबूजी का लड़का, बिरञ्ज पानवाला, रामनेवरा सिंह—सभी सहसा स लड़की पर खड्ग-हस्त हो उठते हैं। इस लड़की के दिये हुए रोग के समाचार से न-कटनी का दल डर से कहीं भाग न जाय। तब आधे खेत का धन खेत में ही पड़ा हेगा। यों तो केमैय के राजपूतों ने अब तक डिस्टिबोर्ड में इसकी खबर दे दी होगी! डस्टिबोर्ड के हैजे के डाक्टर आकर सूई देना चाहें, तभी तो धन-कटनी का दल ागेगा'''

मर्सर के गुरुजी को घोड़े पर चढ़ाकर डिस्टिबोर्ड भेजा जाता है। वे वहाँ लिखवा आते हैं कि केमैय में जितने लोग मरे हैं, उन्हें मलेरिया हुआ था। मर्सर के ाबूजी केमैय के चौकीदार को बख्शीश देते हैं—ताकि वह थाने में यह रिपोर्ट दे कि ोग ज्वर से मरे हैं।''' अब बचा हुआ धान घर में आये तो मंगल है!

तारापुर के दल के लोग रमिया को अपने साथ रखने को राजी नहीं हैं। सो, मिया की माँ पर किसी की सहानुभूति नहीं थी। जब तक झा जी जीते थे, तब तक उसने दुनिया को स्वर्ग समझा। रुग्ण पति के मुँह में किसी दिन एक बूँद पानी भी नहीं दिया है उसने।'' अब वैसे ही खुद पानी-पानी कर मरी है।''' दल के साथ यहाँ आई ो मन नहीं लगा, चली बीबी अपनी बेटी को साथ लेकर केमैय'''

अन्त में रमिया ततमा टोली के दल के लोगों के साथ ही रह जाती है।

'माँ-बाप-विहीन, दुबर, जवान देह। अपने लोगों ने भी दुत्कार दिया है'''।'

महतो-पत्नी के समर्थन से छड़ीदार रतिया मन में साहस पाता है। उसने इस लड़की के बारे में बहुत कुछ विचार रखा है। वे रतिया-बहू को कहते हैं—तुम ही रखो स लड़की को अपने साथ। रतिया की बहू भी कुछ बुद्धू-सी है। वह अपने मन की सारी बात कह देती है।

'रखने में मुझे कोई इतराज नहीं है, पर लड़की की माँ के किरिया-करम में

भी तो सौदा-सुलुफ खरीदना होगा। ब्राह्मण को पैसा देना होगा। वह मैं अकेली कैसे दे सकती हूँ ? माना, लड़की होने की वजह से माथा मुड़वाने का पैसा नहीं लगेगा।'

सभी के एक-एक मुट्ठी धान देने से काम हो जाता, पर कोई राजी नहीं होता है।

अचानक रमिया चिल्ला उठती है—

'अगर किरिया-करम के अभाव में मेरी माँ चुड़ैल बने, तो ऐसा हो कि इन सती-लक्ष्मियों के साथ रात को वह भेंट करे। एक दाना धान मैं किसी से नहीं चाहती। पूरब का भूत हो तुम लोग ! मुच्चर का दल कहीं का ! इन लोगों के फन्दे में उसकी माँ उसे छोड़ गई है। लरम पानी के आदमी हैं ये लोग। इन लोगों में कलेजा आया कहाँ से ? इतना छोटा दिल है इन लोगों का—सुपारी रहती तो काट कर दिखा देती सड़े, पिल्लू पड़े भर्सर के बाबू लोगों की तरह। फिर भी, उन लोगों के पास पैसे हैं, कुर्त्ते की बटन लगाकर वे अपना दिल ढँककर रखते हैं, और इन लरम पानी के जानवरों को बटन खरीदने का पैसा नहीं है, मिहनत करने की ताकत नहीं है, ताकत को काम में लगाने की बुद्धि नहीं है। मैंने यहाँ रहते समय रामदाने के शीप चाँप के किनारे से काटकर उन्हें जमीन में गाड़ रखे थे। उसी से मैं माँ के किरिया-करम का खर्च निभाऊँगी।'

अकथ्य गालियाँ देती हुई वह छटककर निकल जाती है चाँप की ओर।....

ततमा लोगों की भाषा में श्लील-अश्लील का कोई विचार नहीं है। रसिकता और क्रोध के समय वीभत्स और अश्लील बातें न कहने से उन्हें फीकी-सी लगती है अपनी भाषा। जिस दवा में कड़ुवापन न हो, वह भी क्या दवा है ? तारापुर की उस लड़की ने आज इन ततमानियों को भी चुप करा दिया है, जो अपने मुहल्ले में लड़ने के लिए विख्यात हैं।

कोई जैसे बोल उठा है—'हुँह ! चली गई फट्-फट् कर।'

महतो-पत्नी कहती हैं—'चलो सभी ! उस लड़की को स्नान वगैरह भी तो करवाना होगा ! फुलझरिया ! अंचार की हांड़ी में लपेटा हुआ चिथरा लाना तो ! जाड़े में वह भींगा कपड़ा पहन कर रहेगी।'

□

पश्चिम-दिग्विजय

धांङर लोगों का 'गैंग' रास्ता मरम्मत कर रहा है, मरगामा के 'पत्थर' के पास। पटने से एक बड़े हाकिम आये हैं 'सर्कस बँगले' में। प्रायः लाट साहब की तरह बड़े हाकिम हैं, टोपी के नीचे लाल मुख, उस मुख से धूर की तरह धुंआ छोड़ते हैं, फन

फन ! बात बोलते हैं बाघ की तरह । कलस्टर साहब तो उनको देखकर थर-थर-थर-थर । वही साहब जायेंगे शिकार खेलने—राज-दरभंगा के कोशी के किनारे वाले भौआ जंगल—मे बन-भैंसा मारने । चेरमैन साहब तो सुनते ही सटकदम । इसलिए उनके गैंग के सभी लोगों को आना पड़ा है । ऐसे तो कोई पूछ नहीं है उन लोगों की, काम रुकने से ही इन्जीनियर साहब को उन-लोगों की बात याद आती है । वैसे रोज 'ओरसियर साहब' पूरे गैंग से अपने बागीचे में काम करवाते हैं, सो, इन्जीनियर साहब की नजर में नहीं पड़ती है । तब, आँखों में सोने की ऐनक पहनने से क्या लाभ ?

समय हो या असमय, जुआ में जुतना ही है ।

ढोड़ाय शह देकर कहता है—हाँ, समधी का बैल पाया है, सारी रात जोत लो ! उसका मन खराब हुआ है, जब से 'ओरसियर साहब' मुहर्रम के दिन भी उन-लोगों को पक्की में काम करने को कहा है । वे लोग फुदी सिंह के मुहर्रम के दल के लोग हैं ।

अभी भी मुहर्रम के ढाक की आवाज कानों में आ रही है । ओरसियर बाबू पर गुस्से से शरीर तिलमिला रहा है । आज फुदी सिंह से भेंट होते ही वह कहेगा कि ततमा लोग सभी दिन एक से ही रह गये । लाठी-गदका तुम लोग कभी खेलते नहीं हो और उसके लिए तुम लोगों को बुलाता भी नहीं हूँ । केवल जरा साथ-साथ रह कर सारा शहर तुम लोग घूमोगे—बाबू-भईया लोगों से बख्शीश वसूल करने के लिए । दिन को ही जितना शेष कर लिया जाय उतना ही अच्छा, नहीं तो, उस बख्शीश के पैसों में से ही रात को मशाल के तेल का खर्च देना होगा ! एक धन्धा कलाली भी तो आखिर जाओगे सब, कलाली रात को नौ बजे बन्द हो जाती है···

लेकिन संध्या के पहले क्या इस रास्ते के काम से छुट्टी होगी ?

खाली धान लदी हुई बैलगाड़ियों का खात्मा नहीं, फिर मरम्मत किस लिए ? जिरानिया में एक हाट का दिन गुजारने से ही तो फिर जैसा का तैसा । यह जो कुदाल चला-चला कर मिट्टी लाकर गिरा रहा हूँ, इस जाड़े के दिन में भी पसीना झर रहा है देह से, और, नवाब के पूत गाड़ीवान, बैल की पूँछ ऐंठते और किलकारी मारते एक दिन में ही साफ कर जायेंगे । चेरमैन साहब में ताकत है—तो वे क्या इन बैलगाड़ियों का सड़क से जाना बन्द नहीं कर सकते ?

इन बेवकूफों की बात पर ढोड़ाय मन-ही-मन हँसता है—अरे ! इतना भी नहीं समझते हो कि सड़क खराब न होने से तुम लोगों को काम कहाँ से मिलेगा ? फिर इसी गाड़ी पर तो धान आता है जिरानिया ! धान न आये तो फिर खाओगे क्या ? सचमुच धाङर लोग बेवकूफ हैं । लेकिन यह बात जरूर है कि चेरमैन साहब और कलस्टर साहब अगर चाहे तो ततमा-धांङरों की अनेक भलाई कर सकते हैं ।

इसी के साथ यदि वे बाबू-भइया लोगों को हुक्म कर देते—ततमा लोगों को रोज घरामी का काम देना पड़ेगा, तो बड़ा ही अच्छा होता । लेकिन रामजी की मर्जी

बिना तो कुछ होना सम्भव नहीं है। कभी-न-कभी गरीबों की बात उन्हें याद आयेगी ही !

गई बहोर गरीब नेवाजू,
सरल सबल साहिब रघुराजू ।।

उनके सिवा गरीबों की देख-भाल करने को और है ही कौन ?....

'ए बहलमान ! पक्की के ऊपर से हांक रहा है ? दिन को सो रहा है ? छुछुन्दर कहीं का ।'

गँग के लोगों के हल्ला-गुल्ला से ढोड़ाय की निगाह पड़ती है उस गाड़ी पर ! भर-गाड़ी धान के बोझ पर जो लड़की बैठी हुई है, वह उन बोझों पर आगे सरकती हुई गाड़ीवान को धक्का देती है—'ए, उठो न ! सिसिया से सोये हुए हो ।'

'सोया हूँ तो किसकी छाती पर मूंग दल रहा हूँ । तुम्हारे उतरने की जगह आ गई हो, तो उतर न जाओ ?'

'नहीं, और एक रस्सी आगे जाकर उतरूँगी, यहाँ नहीं ।'

कौन है यह लड़की ? सभी ताककर देखते हैं । महतो की बेटी फुलझरिया जरा अप्रस्तुत हो जाने की हँसी हँसती है—सभी उसकी लँगड़ी टाँग की बात तो नहीं सोच रहे हैं ?

ढोड़ाय कहता है—'क्या धन-कटनी से लौट रही हो ? कितना धान हुआ ? और सभी कहाँ हैं ?'

'वे अब तक चेथरिया पीर आ गये होंगे । गोसाईं डूबने के पहले ही आ जायेंगे ।'

फुलझरिया धान के बोरे की आड़ में अपने पैर को छिपा लेती है, देह के कपड़ों को सम्हालती है ओर दूसरी ओर ताकने की चेष्टा करती है । ढोड़ाय के सामने आते ही न मालूम क्यों सब कुछ उलट-पुलट जाता है ।

ढोड़ाय को भी ममता होती है ।—'खैर, खूब पहुँच गई हो मुहर्रम के मेले के पहले । कल ही दुलदुल घोड़ा निकलेगा !'

फुलझरिया कृतार्थ हो जाती है ।

ढोड़ाय की गिराई हुई मिट्टियों पर गम्भीर रेखा आँकता हुआ गाड़ी का चक्का बढ़ जाता है ततमा टोली की ओर । गाड़ीवान अपने ही मन बकता हुआ जाता है—'और कुछ दिनों के बाद सचमुच गृहस्थ लोग हाट में धान नहीं लायेंगे ! खरीदने को आदमी नहीं हैं, पिछले हाट के दिन भी यही धान लौटा ले गया था । ऐसे होने से तो जमीन नीलाम हो जायेगी ।....

'नहीं । रामजी हैं ।'—फुलझरिया गाड़ीवान को सान्त्वना देती है....

फिर मिट्टी गिराने का काम शुरू होता है । गोसाईं डूबने के पहले ढोड़ाय और उसके सहकर्मियों को छुट्टी नहीं है ! नहीं तो, फिर कल दुलदुल घोड़े के मेले के दिन भी काम करना होगा ।

'फुर्ती से भईया। गोसाईं डूबने में और ज्यादा देर नहीं है।'

दूर पर दिखाई पड़ता है, एक दल आदमी इसी ओर आ रहे हैं। उनके कोला-का स्वर सुनाई पड़ रहा है। मुहर्रम का दल है क्या? नहीं, झण्डा कहाँ है? माथे : कन्धे पर बोझ हैं। सो ही कहो। ढोड़ाय! तेरे टोले का धान-कटनी-दल लौट ' है। पच्छिम फतह कर! रतिया छड़ीदार माथे पर पगड़ी बाँधे है!

धाङरों का दल उपेक्षित मन से काम करने का ऐसा भाव दिखलाता है, जैसे ोंने धान-कटनी के दल को देखा ही नहीं। ढोड़ाय हँसकर उन्हें दिखाता है। महतो-ी मुँह भर हँसी लेकर उसकी तरफ बढ़ आती है।

'फुलझरिया के साथ भेंट नहीं हुई है कुछ पहले? मुहल्ले का समाचार अच्छा है? और, हमारे बूढ़े की खबर? घर आना, नये धान का चूरा खिलाऊँगी।'

जाते समय महतो-पत्नी ढोड़ाय को कह गई कि वह निश्चय ही आये। बहुत ों की जुगाई हुई बातें हैं बचवा के लिए। सभी ततमा-स्त्रियाँ ढोड़ाय के साथ एक-क मजाक की बात करने की कोशिश करती हैं। इतने दिनों के बाद मुहल्ले के लड़के यह पहली भेंट है, धन-कटनी की हवा की व्यञ्जना अभी भी रह गई है उनके मन। ढोड़ाय हँसकर कहता है—अभी घर जाकर किसी को नहीं पाओगी, सब लोग कुदो ह के मुहर्रम के दल में गये हैं। रबिया बहू की बगल वाली, साफ कपड़ा पहनी हुई, : लड़की भी खिलखिलाकर हँस पड़ती है ततमानियों की रसिकता पर। यही है वह ड़ाय, जिसकी चर्चा रमिया ने फुलझरिया से सुनी है?

वह लड़की अनजानी-सी लगती है ढोड़ाय को। मुहल्ले की तो वह है ही नहीं, र भी कहीं उसे ढोड़ाय ने देखा हो, ऐसा स्मरण नहीं होता। छरहरे कद की, काफी फ-सुथरी—दुखिया की माँ से भी अधिक! मरगामा की लड़की है क्या? शायद ानिया बाजार को जा रही हो। नहीं, वह तो इन लोगों के साथ ही ततमा टोली ी ओर चली! 'इनरासन की परी'-सी देखने में है वह! 'काँची-करची' की तरह चक है उस लड़की की देह में।··· सहसा ढोड़ाय को याद आती है—सामुअर के साहब ी हवागाड़ी के सामने लगी चाँदी की मूरत की बात। ठीक उसी लड़की की तरह खने में है यह नई लड़की। जैसे एकदम उड़ जाना चाहती हो। दो धनेश पक्षी सामने ले पीपल के पेड़ के कोटर में आकर प्रवेश करते हैं—पर फड़फड़ाते हुए दो बादुर इस साहब के अमरूद और कलमी बेर के बगीचे की ओर उड़ जाते हैं। ततमा टोली ौर धाङर टोली का आकाश और दूर की ओर, जिरानिया शहर के पेड़-पौधे सब रंगीन ो गये हैं—गोसाईं डूब रहा है।

भों, भों! जिरानिया कुर्सेला लाइन की साँझ की लौरी चली। रास्ता खराब रने में यम हैं ये लौरियाँ। ओरसियर साहब की नानी मरे फिर कभी जो इसके बाद म लोगों के काम का तदारुक करने आये। एक, दो, तीन! काम खतम, पैसा हजम! लो, घर चलो।····

ढुलढुल घोड़े का उत्सव और रमिया का योगदान

उस नई लड़की के ततमा टोली में आने के साथ मुहल्ले के लड़कों में हल्ला हो जाता है। अजीब-अजीब पच्छिम की खबरें सुनाती है वह। पूरब के लरम पानी वाले आदमियों के बारे में वह घृणा के साथ चर्चा करती है। लड़के अपने में कहते हैं—रहो ना और कुछ दिन, तब 'लरम' है या 'सक्कत' सो समझ जाओगी।

ततमा टोली के लड़के मुहर्रम के दल में लाठी खेलते हैं—यह सुनकर रमिया अत्यन्त चकित होकर कहती है—अभी भी पूरब के हिन्दु लोग गायखोर लोगों के परब में लाठी खेलते हैं? हम लोगों के पच्छिम में, यह सब चार सालों से बन्द हो गया है।

क्या बन्द हो गया है? लाठी खेलना?

हाँ, हिन्दू का लाठी खेलना। मुहर्रम में।

सचमुच, ततमा लोगों ने यह खबर इसके पहले नहीं सुनी थी। फुदी सिंह का दल लाठी खेलना बन्द करेगा—यह तो वे सोच भी नहीं सकते हैं। अद्‌भुत हैं पच्छिम के लोग। वे क्या करते हैं? क्या सोचते हैं? कुछ भी समझ में नहीं आता है। लेकिन कपिल राजा के दामाद जैसे बदमाश आदमी को ठंडा करने के लिए उस तरह का कुछ करना ही चाहिए। रबिया की वह थोड़े भय के साथ ही उससे पूछती है—तुम लोगों के देश में दुलदुल घोड़े के मेले में भी जाना मना है क्या?

खैर है कि तुम लोगों के देश में मुहर्रम के बाद वाले दिन दुलदुल घोड़े का मेला नहीं होता है। दुलदुल घोड़ा क्या है, सो ही नहीं जानती हो और पच्छिम की इतनी बड़ाई करती हो!—अन्ततः इसी एक विषय में ततमानियों ने रमिया को हराया है। लेकिन, आज उन लोगों को वक्त बर्बाद करना नहीं है। आज मेले में जाने का दिन है। आज ततमानी लोगों को नहाना होगा। कपड़े सुखाने होंगे। इस वित्तेभर की छौंरी के साथ बकने से उन लोगों का काम नहीं चलेगा····

नरकटिया बाग में नवाब और साहबों के परिवार का 'कबरगाह' है। इमामबारा से निकल कर दुलदुल घोड़े का जुलुस आता है उस कब्रगाह तक। इस कब्रगाह के बाहर रास्ते पर मेला लगता है, और कब्रगाह के अन्दर साहब और हाकिमों के लिए बैठने की जगह बनाई जाती है।

भों भों! धूल उड़ाती हुई लाल रंग की एक हवागाड़ी कब्रगाह के बगल में आकर खड़ी होती है। ढोड़ाय और उसके साथी उसी ओर देखते हैं। सामुअर के साहब सिगरेट पीते हुए कब्रगाह के बाड़े के अन्दर प्रवेश करते हैं। साहब के अरदली की पोशाक पहनकर सामुअर भी आया है हवागाड़ी में। धूल और धुएँ के बीच भी हवागाड़ी

के सामने टेढ़ी चोटी की लड़की नजर आती है। साथ ही ढोंड़ाय की निगाह पड़ती है ततमा टोली की लड़कियों पर। उस नई पच्छिमी लड़की को लंगड़ी फुलमतिया हवागाड़ी की ओर उँगली दिखाकर जैसे कुछ समझा रही हो—शायद सामुअर की बात। एक ही दृष्टि में समझ में आ जाता है कि वह लड़की सभी ततमा लड़कियों से भिन्न किस्म की है। एकमात्र उसी के ऊपर हरसिंगार के फूल से छपः रंगे हुए हैं, मेले के इतने आदमियों में भी निगाह जाकर पड़ती है उसी के ऊपर! हवागाड़ी के अन्दर बैठे हैं साहब के हिरासवर, साहब का कुत्ता, और सामुअर। है न!

इतनी देर के बाद सामुअर निश्चिन्त बैठकर सिगरेट सुलगाने और आदमियों को अच्छी तरह देखने का अवकाश पाता है। रास्ते के पूरब रेल-लाइन की ओर, खड़ा हुआ है ततमा टोली का दल, और पच्छिम में, इमली के पेड़ के नीचे खड़े हुए हैं धांगड़-टोली के लोग। मेले में भी वे दो दल एक जगह नहीं खड़े होंगे। अपने मुहल्ले के सभी दल बनाकर रहते हैं। कितने ही प्रकार के लोग आते हैं इस मेले में। इस भीड़ में औरत किधर क्या कारड हो जाय, कहा नहीं जा सकता। ऐसी गड़बड़ी बहुत बार हुई है, इतनी सावधानी के बावजूद भी। उधर लौटने में भी रात हो जाती है। हर बार एक-आध लड़की दल से बाहर छिटक पड़ती है, और थोड़ी रात बीतने पर घर लौटती है। कहती है, दुलदुल घोड़े के आने के समय भीड़ के धक्के से अलग हो गई थी। बुद्धिमान लोग समझ जाते हैं, पर वे लोग कभी-कभी मार-पीट तक करने लगते हैं।

ढोंड़ाय धांगड़ टोली के दल में ही बैठा है। सनीचरा की बहू ने पैरों में चौतगच्छा सिलवर की पैंजी पहना है। फिर इधर ताकना हो रहा है। बुद्धि तो खोपड़ी में खूब है! झमर-झमर की आवाज होगी चलते समय! खैर, उससे सामुअर को कोई अफसोस नहीं है। आज उसे साहब की गाड़ी से ही लौटना पड़ेगा, कोई उपाय नहीं है। ढोंड़ाय फिर उधर मुँह बाकर क्या देख रहा है? ऊँचे दोअखामी महतो-पत्नी, देखता हूँ, यहाँ जम कर बैठी है। आज मेले में जम पड़ा है। उसकी लंगड़ी लड़की भी भालू की तरह बैठी है। इसके ठीक बगल में चोखा कपड़ा पहने कौन है वह? हँसकर लोट-पोट हो रही है? बड़ी अच्छी लग रही है वह? बात क्या कहता हूँ, बड़ा नमकीन देखने में है वह। सिन्दूर है क्या माँग पर? इतनी दूर से नजर भी नहीं आता है।—सामुअर का मन चंचल हो उठता है। एक ही कश में सिगरेट को अन्त तक जलाकर उसे फेंक देता है। फिर कौतूहल दबा न पाने के कारण वह ढोंड़ाय के पास बढ़ जाता है।

क्या रे ढोंड़ाय! तू कहाँ इस तरफ बैठा है?

क्यों, यह तरफ क्या किसी के बाप का खरीदा हुआ है?

दूसरा समय होता, तो इस बात पर झगड़ा मच जाता—ततमा का बच्चा। बात का ढंग कैसा? किन्तु अभी सामुअर के मन का भाव वैसा नहीं है। वह चाहता है, ढोंड़ाय के साथ मेल बनाना। ढोंड़ाय को सिगरेट निकालकर देता हुआ वह कहता है कि इस बार मेला वैसा जमा नहीं है। लोगों के हाथ में पैसे नहीं हैं तो फिर मेला

जमेगा कैसे ? ढोड़ाय भी अन्यमनस्क होकर सामुअर की बात में सम्मति देता है। रास्ते के उस किनारे दो छोकरे बौका बावा को दहीबड़े का ठोंगा दिखाकर उनसे मजाक कर रहे हैं। और थोड़ा-सा बढ़ाने से ही ढोड़ाय को उठना पड़ेगा—उन दो मजाकिये छोकरों को ठंडा करने के लिए।

'वह कौन है रे ढोड़ाय ? वह, जो पीले रंग की साड़ी पहने हुए है। जो उस लँगड़ी पर ढल पड़ रही है।'

'उसे रविया की बहू लायी है धन-कटनी के समय।'

'बड़ा फट्-फट् कर रही है रे ! रविया की बहू की कौन लगती है ? यहाँ अभी कुछ दिन रहेगी क्या यह पतली कमरवाली छोकरी ?'

ढोड़ाय इन सब प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं देता है। इस किरिस्तान के साथ उस नई लड़की की चर्चा करने को उसका मन नहीं चाहता है। इस प्रसंग को दबा देने के लिए वह कहता है—अब आ गया दुलदुल घोड़ा। ढाक की आवाज नहीं सुनते हो ? पीली साड़ी पहने हुई उस लड़की के बगल से सीटियाँ बजाता हुआ सामुअर शान से ततमा लोगों के दल की भीड़ में प्रवेश करता है। रमिया की हँसी रुक जाती है। फुलझरिया फिर-फिर हँसती हुई साहबों-सा रंगवाले उस सामुअर का परिचय देती है—साहब लोगों के घर में काम करता है, ढेर आमदनी की नौकरी, साहब बहुत रुपये देकर जा रहा है उसे, यहाँ से जाते समय···

दुलदुल घोड़े का जुलूस आ पहुँचा है। मेले की छितराई हुई भीड़ क्षणभर में जमकर ठोस हो जाती है। बूढ़े नवाब साहब खुद छाती पीटते हुए दुलदुल घोड़े की लगाम पकड़कर ले आ रहे हैं। सफेद रंग का है वह घोड़ा। दोनों आँखें झूल से ढँकी हुई हैं। सोने की झालरवाला जीन है उसकी पीठ पर, मेंहदी के पत्ते से रंगी हुई है नवाब साहब की दाढ़ी। मखमल से ढँके अस्तबल में उस दुलदुल घोड़े को बन्द कर रखा जाता है सालोंभर। 'हस्सन हुस्सेन ! हस्सन हुस्सेन।' लाठी और छाती पीटने की आवाज से दम घुटने लगता है। धूल से चारों तरफ अन्धकार हो जाता है। 'हाय रे हाय !' जुलूस घुस रही है कबरगाह के मैदान में 'करबला' करने। तमाम आदमी टूट पड़ते हैं कबरगाह की दीवाल की चारों तरफ। फुलझरिया अपनी जगह से हिल नहीं सकी थी। रमिया को एक बात बार-बार याद आती है—फुलझरिया कह रही थी, वह दुलदुल घोड़ा सालों भर मखमल से ढँका रहता है। मखमल गन्दा नहीं होता है ?····भीड़ के धक्के से, और कौतूहल की अतिशयता से वह कब फुलझरिया को छोड़कर बढ़ आई है, जान भी नहीं पाती है। जान पाती है तब, जब दहीबड़े वाला गाली देता है—उसकी टोकरी धांङकर चली गई है रमिया···

दहीबड़ावाला उन लोगों का कुछ भी बाकी नहीं रखेगा। पूरब के आदमी से भी रमिया भय खाती है।····हाय रे हाय !'····सहसा देखती है, साहब के जैसा रंग-वाला वह अरदली कब से देह से सटकर आ खड़ा हुआ है। वह रमिया के पक्ष में दही

बड़ावाले से झगड़ता है। उसका चेहरा और पोशाक देखते ही दहीबड़ावाला भागने की राह नहीं पाता है! हाय रे हाय!''''

□

ढोड़ाय का नाग-पाश

ढोड़ाय को बड़ी अच्छी लगती है रमिया। औरतों पर इसके पहले वह कुछ निस्पृह-सा था, निस्पृह क्यों, थोड़ा विरक्त ही था।—किसी बात का ठीक नहीं है इन गन्दी झोटाहा लोगों की—मर्द देखते ही हँसकर लोट पड़ती हैं। लेकिन यह लड़की जैसे और किस्म की है। बात यूँ बोलती है, जैसे कितने दिन का परिचय हो। उसकी देह में ताकत भी खूब है, मर्दों को भी वह हार मनवाती है जैसे। ततमा टोली की झोटाहा लोगों की तरह वह कमजोर नहीं है। उस दिन इनारे से पानी लेकर आ रही थी रमिया। तीन बड़ी-बड़ी कलसी एक साथ लेकर। दो माथे पर, एक कांख में। एक बून्द भी पानी नहीं गिरा था। ढोड़ाय पीछे से देख रहा था—अलबत्, पच्छिम के पानी का गुण है। बंगाली लड़कियों जैसे केश, पानी की सुराही की तरह गर्दन, कमर का निचला अंश जाँते की तरह देखने में है। बड़ी इच्छा होती है उस लड़की के साथ बैठकर बहुत देर तक बातें करने की। फिर जरा डर भी लगता है बातें करते। कितना भी हो, आखिर यह पच्छिम की लड़की है। उन लोगों के रस्म-रिवाज अलग हैं। संस्कार अच्छा है। पूरब के लोगों में हर कोई इसे मुख से स्वीकार न करने पर भी, मन-ही-मन बिना माने नहीं रह सकते हैं। रहन-सहन किरिया-करम का जो कुछ भी अच्छा है, सभी तो पच्छिम मुल्क की चीजें हैं। पूरब में तो केवल मिर्मा लोगों की किचिर-मिचिर बोली है। और बंगालियों के आचार-व्यवहार की बात छोड़ ही दो—उन लोगों को तो इन सब की परवाह ही नहीं है।

रमिया नाम भी बड़ा अच्छा है। होगा नहीं? पच्छिम का आदमी—मुँगेर जिले का, गंगा किनार-काठगोला से पच्छिम! हम लोगों की लड़कियों के नामों को भी क्या 'श्री' है। बुधनी, जिवछी, और उन लोगों की देखो—रमिया—रामप्यारी! पच्छिम मुल्क में लड़कियों का जितना अच्छा नाम है, हम लोगों के जिरानिया के मर्दों तक का उतना अच्छा नाम नहीं होता है, उन लोगों के मर्दों के नामों की तो कोई बात ही नहीं है।

पच्छिम का अच्छेवट सिंह डिस्टिवोर्ड में कल-मरम्मत का काम करता है—ढोड़ाय उसके नाम के साथ अपने नाम की तुलना सुनकर मन ही मन लज्जित होता है। रमिया जरूर उसका नाम सुनकर हँसी होगी। लड़की की गढ़न देखना हो तो पच्छिम

दूसरे दिन, सांझ को, जब रमिया थान में दीया देने आई तो ढोड़ाय ने अँचरा-भर कर गलकट्टे साहब के घर के बेर खाने को दिये। ऐसे बेर पच्छिम में हैं? बड़ा पच्छिम की बड़ाई करती हो? रमिया ने एक ही बेर खाकर कहा था—बेटा मरे, ऐसा बेर जिन्दगी भर में नहीं खाया है, गुड़ की तरह मुंह में रखते ही खत्म हो जाता है।

'अरे बेटा कहां है तुम्हें, जो लड़के की किरिया दे रही हो?'

'बेटा किसी दिन तो होगा ही।'

बेवकूफ की तरह दोनों हँस पड़ते हैं, कौन क्या सोचता है, कौन जाने।

कच्चे आम की फांक जैसी रमिया की आंखों को ताकते ही ढोड़ाय समझ जाता है कि रमिया उससे विरक्त नहीं है।

उसी रात ढोड़ाय रेवन गुनी के पास जाता है। गुनी को रात को पकड़ना कठिन है। लोग कहते हैं कि वह रात में नशा कर श्मशान चला जाता है, वहां सारी रात वह भूत नचाता है, आदमी की खोपड़ी लेकर भूतों के साथ खेलता है। लेकिन ढोड़ाय का भाग्य अच्छा है। घर में ही वह रेवन गुनी को पा जाता है। नशा उसने किया था, ठीक ही, पर उस वक्त तक श्मशान नहीं गया था। थर-थर कांपता हुआ ढोड़ाय उसके पैर के पास आठ आने पैसे रखता है—गांजे की भेंट के लिये। सभी जानते हैं कि यह नहीं देने पर गुनी के होंठ ही नहीं खुलते हैं। ढिबरी तक नहीं है, गुनी का मुंह कैसे नजर आयेगा?

'कौन है?'

शराब की गन्ध और गले के स्वर से, गुनी का मुंह कहां है, यह अन्दाज किया जा सकता है। उसके बाद शुरू होती है काम की बात। गुनी को लोग जितना बिगड़ैल समझते हैं, उतना बिगड़ैल वह नहीं है—काम के मामले में उसके पास आकर ढोड़ाय यह समझ सकता है। नई परदेशी मैना (रमिया) के सम्बन्ध में, रेवन गुनी काफी उत्सुकता दिखाता है, ढोड़ाय को लगता है, जैसे जरूरत से ज्यादा ही रेवन गुनी ने उस लड़की की चर्चा सुनी है। पर अभी तक उसने उसे देखा नहीं है। उसे सनीचर की रात में श्मशान में भेज सकते हो? नहीं, मेरी ही गलती हो रही है, अगर श्मशान में ही भेज सकते, तो फिर मेरे पास आते क्यों? उसकी मां के किरिया-करम की बात कहकर भेज नहीं सकते हो? तू मर्द है क्या है?....

ढोड़ाय कहता है—'गलत मत समझो गुनी! मैं उससे शादी करना चाहता हूं।'

साथ-ही-साथ गुनी के गले का स्वर बदल जाता है। 'सो ही कहो। अच्छा, तब उसके श्मशान में न जाने से भी काम चलेगा। तू चल अभी मेरे साथ चेथरिया-पीर।'

चेथरियापीर के पाकड़ के नीचे वाली वेदी के पास आकर ढोड़ाय जब खड़ा होता है, तो हड्डी कँपाने वाले उस शीत में भी वह पसीना-पसीना होने लगता है।

हाथ-पाँव जैसे स्थिर नहीं रह रहे हों। इच्छा होती है; वेदी को पकड़ कर वह बैठ जाय। अंधकार, निःशब्द रात। सूखे पत्तों के ऊपर से चलने के समय थोड़ा शब्द हो रहा है, लगता है, उसी से सारे गाँव के लोग जाग उठेंगे। शीत की हवा से उस विशाल पेड़ की डाल-डाल में लटकाई असंख्य चिथरे की लत्तियाँ डोल रही हैं। डिव्विन-प्रेतिनियों की साड़ी तो नहीं डोल रही है? वे लोग हाथ के इशारे से बुला रही हैं क्या? या वे कहीं कपड़े डुलाकर जुगनू तो नहीं भगा रही हैं? भूत की आँखें हैं क्या ये जुगनू?....

रैवन गुनी उसे रेंगने जैसी भंगिमा में बैठा देता है। फिर कुछ मिट्टी वेदी से तोड़कर कहता है—'जैसे ही मैं मन्तर पढ़कर गोसाईं जगाऊँगा, वैसे ही देखना, तू तो रेंगना शुरू कर देगा। एकदम पेड़ की जड़ से जाकर सट जायगा, तब रुकेगा। किसी के बाप की हिम्मत नहीं है कि उसके पहले तुझे रोके।'

गुनी मन्त्र पढ़ना शुरू करता है। ठेहुने के नीचे मिट्टी काँप उठती है, जैसे कोई वस्तु उसे ठेलकर ले जा रही हो, उसमें चेतना नहीं है, सोचने की क्षमता नहीं है, केवल उसे बढ़ते जाना होगा। उसका सर पेड़ से जाकर टकराता है—ठीक जहाँ सिंदूर लगा हुआ है। चेतना आते ही ढोड़ाय देखता है कि वह वेदी पर पड़ा हुआ है।

'उठ।'

ढोड़ाय उठकर खड़ा हो जाता है। कैसी तो कमजोरी-सी लगती है, ज्वर छूटने के बाद वाली कमजोरी की तरह। लग रहा है दोनों ठेहुने टूट रहे हैं!

'यह मिट्टी थोड़ी-सी रखो। किसी भी तरह उसके केश से इसे छुवाना होगा!'

ततमा टोली के मोड़ पर आकर रमिया के घर की तरफ मुँह किये गुनी रास्ते के बालू पर न मालूम क्या सब आँकता है। कहता है—चक्कर मार दिया, काम होगा। मेरा बाकी दे देना दूसरे सप्ताह।

गुनी की बातों के विरुद्ध कोई नहीं जा सकता है—यह ढोड़ाय जानता है।

शेष रात्रि के करीब ढोड़ाय मिट्टी लेकर थान लौट आता है। रात्रि का शेष अंश जनरव चिन्ताओं में जागते ही बीत जाता है। कैसे उसके माथे से छुआई जा सकती है मिट्टी? देते वक्त अगर वह चेत जाय? पच्छिम की वह लड़की न मालूम कैसे ग्रहण करेगी इसे? उस लड़की ने ही मुझ पर जादू किया है या नहीं, यह कौन जानता है। नहीं तो ऐसा तो कभी नहीं हुआ था। बीड़ी न पीने से भी मन इतना बेचैन नहीं होता है। वह चुड़ैल तो नहीं है? धत्, क्या अटर-पटर सोचता हूँ?

ढोड़ाय यह निश्चय नहीं कर पाता है कि वह बावा से शादी करने की बात कहेगा या नहीं। बावा ने चाहा था, उसे गोसाईं थान का भार देना। उसी कारण उन्होंने ढोड़ाय को 'भगत' बनाया था। उसके मिट्टी काटने का काम करने के बाद बावा ने शायद आशा छोड़ दी है—अन्ततः उसके बाद किसी दिन उसने बातें नहीं की हैं। फिर भी शर्म-सी लगती है बावा से यह कहने में। बावा अगर पूछे कि रुपये कहाँ

से पाओगे ? लेकिन लगता है, आजकल कुछ दिनों से शादी का खर्च कुछ घट गया है। रोजगार घट गया है, पर 'सराध के कानून' की वजह से झट शादी देनी ही होगी। लोग आखिर खर्च करेंगे कहाँ से ? अनिरुद्ध मोख्तार से रुपये में रोज एक पैसा सूद की दर से रुपये पाये जा सकते हैं। सुक्रा और इतवारी धांङर भी कुछ-कुछ दे सकता है। दुखिया की माँ ? मर भी जाय तो उसका एक पैसा भी नहीं लेगा, इसके लिए शादी न हो सो भी अच्छा है। जिन्दा रहे अनिरुद्ध मोख्तार ! व्याह-श्राद्ध में उधार नहीं लेगा, तो लेगा कब ? लेकिन शादी के बाद वह रहेगी कहाँ ? गोसाईं थान में तो औरत की जगह नहीं होती। मिट्टी काटने का काम रहने से पैसे का अभाव नहीं होगा, और रमिया खुद भी खूब कमायेगी। ऐसी ताकत है उसकी देह में कि जरूरत पड़ने पर वह कुदाली का काम भी कर सकती है; यहाँ की झोटाहा लोगों की तरह केवल खुरपी से मिट्टी में गुदगुदी लगाना नहीं। वह मर्द की तरह मजदूरी कमायेगी।

साँझ को फिर ढोड़ाय गलकट्टे साहब के हाते से बेर तोड़ कर लाता है। एकदम पेड़ झाड़कर मुहल्ले के छोकरे बेर ले गये हैं। आजकल के लड़कों का कैसा साहस बढ़ा है ? ढोड़ाय और उसके साथी तो बचपन में गलकट्टे साहब के हाते में घुसने में ही डरते थे। वह इस बात पर सोचता, पर निस्तार नहीं पाता कि कैसे रमिया के केश में थोड़ी-सी मिट्टी छुलायेगा। थोड़ा-सा माथे में लगाने को सरसों का तेल रमिया को देने से अच्छा होता—उसमें यह मिट्टी मिला देता। माथे में लगाने वाला तेल देने पर न लेगी। ऐसी झोटाहा जिन्दगी में कभी नहीं देखी है। यह पच्छिम की पंछी, क्या मालूम, अगर न ले। थान के दीये के लिए देने के नाम से थोड़ा-सा तेल उस लड़की को अवश्य ही दिया जा सकता है, इसमें संकोच की कोई बात नहीं है। वैसी ढेर पच्छिम वाली ढोड़ाय ने देखा है।

बाबा के तेल की शीशी से थोड़ा-सा तेल वह नारियल की खोली में डाल लेता है। ढोड़ाय अब तक बाबा से परिहास करता आया है कि क्यों बाबा नारियल की खोली देखते ही उठा लेते हैं, और उसे रख देते हैं। अब वह समझता है कि बाबा सचमुच बुद्धिमान हैं। पूजा के लिए तेल है, कहने से वह थोड़ा-सा माथे में लगा ही लेगी—कम से कम तेल वाला हाथ भी तो माथे में पोंछेगी। ढोड़ाय सोच रखता है कि यह तेल वह रमिया को थान में ही रख छोड़ने को कहेगा, और कहेगा कि वह रोज यहीं आकर अपने दीये में तेल डाल लेगी, नहीं तो घर ले जाने पर रबिया की लालची वहू के भालू जैसे केशों में बस एक मिनट में साफ…

दीये को आँचल की आड़ दिये रमिया साँझ को गोसाईं थान में आती है। आते ही वह कहती है—आज बड़ा जल्दी-जल्दी काम से लौटे हो। पर रमिया ने यही आशा की थी। ढोड़ाय अगर अभी न आता, तो वह हताश होती। ढोड़ाय के वक्ष के अन्दर उस वक्त हथौड़ी बज रही है—कहीं पकड़ा तो न गया वह ? जरा थूक को घोंट कर वह रमिया की बात का जवाब देता है—हाँ।

थान में दीया देने के पहले रमिया माथे पर आँचल खींच कर घूँघट लगाती है, फिर गोसाईं को प्रणाम करती है। माथे पर आँचल देते देखते ही ढोड़ाय के दिमाग में एक बुद्धि आ गई। बेरों के साथ एक चुटकी मन्तर की मिट्टी मिला रखने से क्या होता है? पच्छिम की लड़की को कब कैसी मति-गति हो, कहा नहीं जा सकता है, बेरों को वह जरूर आँचल में बाँध लेगी। फिर जब बाद में वही आँचल माथे पर उठा देगी, तब क्या मिट्टी का एक कण भी उसमें लगा नहीं रहेगा? हड़बड़ी के साथ वह कह डालता है—थोड़ा-सा तेल लोगी, थान में देने वाले दीये में जलाने के लिए?

कच्चे आम के फांकों जैसी उन आँखों में आग की झलक दौड़ जाती है।

'तुम्हारे दिए हुए तेल को मैं थान में जलाऊँगी! किस दुःख से? मैं क्या कमाकर खा नहीं सकती हूँ? रामजी ने क्या मुझे हाथ-पाँव नहीं दिये हैं? तुम लोगों की झोटाहा लोगों को नहीं जानती कि वे क्या करतीं, पर हम लोगों के तारापुर में अगर कोई मर्द ऐसा बोलता तो उसकी मूँछ उखाड़ लेती!'

ढोड़ाय एकदम हतप्रभ हो जाता है। कैसी तेज है! कैसा गर्व है इस लड़की का! फनफनाकर घर की ओर चली है। ऐ रमिया! सुन!

वह घूमकर खड़ी होती है।

'पच्छिम का रीति-रिवाज तो मुझे मालूम नहीं है।'

रमिया की दृष्टि फिर पहले जैसी नरम हो गई है।

'गनकट्टे साहब के घर के बेर लेने में तो कोई मनाही नहीं है तारापुर की लड़कियों को?'

हँसकर दो टूक होती है रमिया। अभी बिगड़ती है और अभी हँसती है। अजीब है पच्छिम की चाल-चलन!

'हाथ में नहीं, बहुत हैं! आँचल अच्छी तरह पसारो। छोकरे क्या बेर रहने भी देंगे पेड़ में? दिन-रात डाल झकझोर रहे हैं।'

रमिया के चले जाने पर ढोड़ाय अपनी बुद्धि की तारीफ करता है। और थोड़ा-सा होता तो सब गड़बड़ हो जाता। बड़े वक्त पर याद आई थी बेर के साथ मिट्टी मिला रखने की बात।

रमिया रोज स्नान करती है—यहाँ की झोटाहा लोगों की तरह नहीं। कल सुबह स्नान के पहले इस आँचल की धूल का कण रमिया के केश में लगने से ठीक रहेगा। *रामजी और गोसाईं को प्रणाम करता है, रमिया के माथे में आँचल की थोड़ी-सी धूल लगा देने के लिए वह प्रार्थना करता है!*

कुक्कुट-मेध-यज्ञ

जिरानिया में आज दो दिनों से एक पगले कुत्ते का उपद्रव चल रहा है। अब तक छः आदमियों को उसने काटा है। म्युनिसिपैलिटी की ओर से ढिंढोरा पिटवा दिया गया है कि हर कोई अपने-अपने पाले हुए कुत्ते को घर में बाँध कर रखें। रास्ते में चाहे कोई भी कुत्ता हो, अगर उसके गले में चेन अथवा वकलस नहीं रहे, तो उसे मार डाला जायेगा। इसे लेकर काफी आतंक की सृष्टि हुई है शहर में। म्युनिसिपैलिटी के मेहतर मोटे-मोटे बाँस लेकर हर रास्ते पर घूम रहे हैं। हर कुत्ते के पीछे वे एक रुपया की दर से पायेंगे, नहीं, इस वात में गलती रह गई—एक जोड़े कुत्ते के कान पीछे एक रुपया की दर से पायेंगे। सद्यः मृत कुत्ते के दोनों कानों को काटकर चेरमैन साहब को दिखाना होगा। यही नियम है, पर जिन्दा कुत्ते के दोनों कानों को काट कर भी अगर दिखा सको, तो कौन पकड़ता है? रुपया मंजूर, और ताड़ी की दुकान पर लूट मजा।

विजय वावू के मकान के सामने वाले अमले के पेड़ के नीचे उनकी आधी दर्जन वेटियाँ रोज के अभ्यास के मुताबिक इक्का-दुक्का खेल रही हैं। वे सभी एक ही किस्म की छींट की तंग फ्रॉकें पहनी हुई हैं, एक के हँसने पर सभी हँसतीं लोट-पोट होती, एक के लाजेन्स चबाकर खाने पर और कोई भी अपना लाजेन्स चूसकर नहीं खाती। नये-नये आदमी को देखने पर सभी एक साथ खम्भे की आड़ में जाकर खिक्-खिक्कर हँसतीं; एक के फ्रॉक में धूल लगने से सभी अपनी-अपनी फ्रॉकें एक वार झाड़ लेती हैं। इनमें सबसे जो छोटी है, उसे मुहल्ले के लड़के अलमति कहकर पुकारते हैं।

अलमति सहसा चीख उठती है—उसने कुत्ता देखा है, पगला कुत्ता! अलमति की चीख सुनकर श्रीमति चीखती है, सुमति हाय-तोबा कर उठती है और शेष तीन मति के व्याकुल कंठ सबके स्वर को पार कर जाते हैं।

विजय वावू तीव्रगति से सीढ़ियाँ तोड़ते हुए दो-मंजिले पर चढ़ते हैं और अलमारी से पिताजी के जमाने की पुरानी बन्दूक निकालते हैं। लाइसेंस रिनुअल के दिन के अतिरिक्त वे साल भर में केवल एक ही वार उस बन्दूक पर हाथ देते हैं। हर साल की खरीदी हुई एक दर्जन कारतूसों को वे साल के अन्त में किसी सांझ को दो-मंजिले की छत पर उड़ते हुए वादुरों पर निशाना साधते छोड़ते हैं। उसी एक दिन उनकी लड़कियां सांझ को 'वादुर पित्ती' का कोरस करती हैं। उसी एक दिन सुक्रा धांङर मरे हुई वादुरों के लोभ से वैठे रहकर अन्त में निराश होकर घर लौटता है। आज तक किसी साल एक भी वादुर विजय वावू की बन्दूक की गोली से नहीं मरा है।

उड़ते हुए वादुरों को मारने में अभ्यस्त वे हाथ इसीलिए उस पगले कुत्ते को मारते वक्त जरा भी नहीं कांपे थे। साथ ही, रास्ते की दूसरी तरफ वाकस का जंगल

जहां आन्दोलित हो रहा था, वहां से किसी गूंगे के गोंगाने की आवाज आती है। विजन बाबू-वकील और मुहल्ले के अन्य कई लोग मिलकर कुछ देर बाद वहां से बौका बाबा को उठा लाते हैं। उनके दाहिने पैर की जांघ में गोली लगी है। वहां से खून की धारा बह रही है। मैले कोपीन में भी कुछ-कुछ रक्त जमकर काला होने लगा है। विजन बाबू के मकान के दो-मंजिले पर बौका बाबा को ले जाया जाता है। चुपचाप विमल डाक्टर को खबर देकर बुलाया जाता है—बन्दूक की गोली निकाल देने के लिए। इस विपद से बचने के लिए विजन बाबू की पत्नी चेयरियापीर में सिरनी साधती हैं। बौका बाबा उस रात विजन बाबू के दो-मंजिले पर ही रहते हैं। दूसरे दिन पट्टी बांधे हुए पैर लेकर लौटते समय विजन बाबू की पत्नी ने उन्हे कह दिया कि रोज वे उनके घर पर आकर एक लोटा दूध पी जायेंगे। बात इतनी सरलता से निपट जायगी, सो विजन बाबू ने भी नहीं सोचा था।

आदमी सोचता है कुछ, और होता है कुछ। गोसाईं थान लौटकर बाबा ढोड़ाय से सलाह-परामर्श करते हैं। क्या बातें हुईं, कौन जाने! दोनों एक साथ अनिरुध मोख्तार के पास आते हैं। क्या समझते हैं विजन बाबू वकील? ततमा लोगों को चिड़िया समझते हैं। एक बादुर मारने की क्षमता नहीं है और बाबा पर बन्दूक दाग दी!

फौजदारी कचहरी मे बौका बाबा को अनिरुध मोख्तार के साथ घूमते देखकर विजन बाबू का मुंह सूख जाता है। मुकदमे मे कुछ हो या नहीं, पर बन्दूक की लायसेन्स लेकर कलक्टर साहब जरूर खींचा-तानी करेंगे। बाघ छूने पर अठारह घाव! जरूरत क्या हंगामा बढ़ाकर? अनिरुध मोख्तार को बुलाकर विजन बाबू एकान्त में उनसे बात-चीत करते हैं। मामला जिससे और काफी बढ़ नहीं सके, इसके लिए अभी विजन बाबू को रुपये खर्च करने मे कोई दुविधा नहीं है। बौका बाबा को साढ़े तीन सौ रुपये देने को वे राजी हो जाते हैं।

बाबा उतने रुपये की बात सुनकर डर के मारे कांपने लगते हैं। 'सत्तरह-बीस' रुपये? यह तो बहुत रुपये हैं। एक बीस से भी ज्यादा। चांदी का पहाड़। उससे जो मन चाहे किया जा सकता है—चांदी का मंदिर बनाया जा सकता है गोसाईं थान में। पेट भरकर ढोड़ाय जलेबियां खा सकता है। ढोड़ाय की शादी और घर बनाने का खर्च उस रुपये से हो सकता है, अयोध्या जी जाने के रेल किराया से भी बहुत अधिक हैं वे रुपये।

रुपये देते समय विजन बाबू कहते हैं—जरा दूध-घूध इससे खरीदकर खाइयेगा बाबा। बौका बाबा सोचते हैं—आज सुबह भी विजन बाबू की पत्नी ने आंगन लीपकर कम्बल का आसन बिछाकर उन्हे फल-दूध आदि खिलाया था, पर आज से इस घर की भिक्षा बन्द हो गई। रामजी ने उनका भला किया या बुरा किया सो वे समझ नहीं सकते हैं। इस उत्तेजना के बीच रुपये देखकर बाबा का मन उत्साहित हो जाता है—चांदी नहीं, 'लोट'! अनिरुध मोख्तार रुपये गिनकर उसके हाथ मे देते हैं—यह कितना लोट।

कुक्कुट-मेध-यज्ञ

जिरानिया में आज दो दिनों से एक पगले कुत्ते का उपद्रव चल रहा है। अब तक छः आदमियों को उसने काटा है। म्युनिसिपैलिटी की ओर से ढिंडोरा पिटवा दिया गया है कि हर कोई अपने-अपने पाले हुए कुत्ते को घर में बाँध कर रखें। रास्ते में चाहे कोई भी कुत्ता हो, अगर उसके गले में चेन अथवा बकलस नहीं रहे, तो उसे मार डाला जायेगा। इसे लेकर काफी आतंक की सृष्टि हुई है शहर में। म्युनिसिपैलिटी के मेहतर मोटे-मोटे बाँस लेकर हर रास्ते पर घूम रहे हैं। हर कुत्ते के पीछे वे एक रुपया की दर से पायेंगे, नहीं, इस बात में गलती रह गई—एक जोड़े कुत्ते के कान पीछे एक रुपया की दर से पायेंगे। सद्यः मृत कुत्ते के दोनों कानों को काटकर चेरमैन साहब को दिखाना होगा। यही नियम है, पर जिन्दा कुत्ते के दोनों कानों को काट कर भी अगर दिखा सको, तो कौन पकड़ता है? रुपया मंजूर, और ताड़ी की दुकान पर लूट मजा।

विजय बाबू के मकान के सामने वाले अमले के पेड़ के नीचे उनकी आधी दर्जन बेटियाँ रोज के अभ्यास के मुताबिक इक्का-दुक्का खेल रही हैं। वे सभी एक ही किस्म की छींट की तंग फ्रॉकें पहनी हुई हैं, एक के हँसने पर सभी हँसतीं लोट-पोट होती, एक के लाजेन्स चबाकर खाने पर और कोई भी अपना लाजेन्स चूसकर नहीं खाती। नये-नये आदमी को देखने पर सभी एक साथ खम्भे की आड़ में जाकर खिक्-खिक्कर हँसतीं; एक के फ्रॉक में धूल लगने से सभी अपनी-अपनी फ्रॉकें एक बार झाड़ लेती हैं। इनमें सबसे जो छोटी है, उसे मुहल्ले के लड़के अलमति कहकर पुकारते हैं।

अलमति सहसा चीख उठती है—उसने कुत्ता देखा है, पगला कुत्ता! अलमति की चीख सुनकर श्रीमति चीखती है, सुमति हाय-तोबा कर उठती है और शेष तीन मति के व्याकुल कंठ सबके स्वर को पार कर जाते हैं।

विजय बाबू तीव्रगति से सीढ़ियाँ तोड़ते हुए दो-मंजिले पर चढ़ते हैं और अल-मारी से पिताजी के जमाने की पुरानी बन्दूक निकालते हैं। लाइसेंस रिनुअल के दिन के अतिरिक्त वे साल भर में केवल एक ही बार उस बन्दूक पर हाथ देते हैं। हर साल की खरीदी हुई एक दर्जन कारतूसों को वे साल के अन्त में किसी सांझ को दो-मंजिले की छत पर उड़ते हुए बादुरों पर निशाना साधते छोड़ते हैं। उसी एक दिन उनकी लड़कियाँ सांझ को 'बादुर पित्ती' का कोरस करती हैं। उसी एक दिन सुक्रा धांङर मरे हुई बादुरों के लोभ से बैठे रहकर अन्त में निराश होकर घर लौटता है। आज तक किसी साल एक भी बादुर विजय बाबू की बन्दूक की गोली से नहीं मरा है।

उड़ते हुए बादुरों को मारने में अभ्यस्त वे हाथ इसीलिए उस पगले कुत्ते को मारते वक्त जरा भी नहीं काँपे थे। साथ ही, रास्ते की दूसरी तरफ बाकस का जंगल

जहाँ आन्दोलित हो रहा था, वहाँ से किसी गूँगे के गोंगाने की आवाज आती है। विजन बाबू-वकील और मुहल्ले के अन्य कई लोग मिलकर कुछ देर बाद वहाँ से बौका बाबा को उठा लाते हैं। उनके दाहिने पैर की जाँघ में गोली लगी है। वहाँ से खून की धारा बह रही है। मैले कोपीन में भी कुछ-कुछ रक्त जमकर काला होने लगा है। विजन बाबू के मकान के दो-मंजिले पर बौका बाबा को ले जाया जाता है। चुपचाप विमल डाक्टर को खबर देकर बुलाया जाता है—बन्दूक की गोली निकाल देने के लिए। इस विपद से बचने के लिए विजन बाबू की पत्नी चेथरियापीर में सिरनी साधती है। बौका बाबा उस रात विजन बाबू के दो-मंजिले पर ही रहते हैं। दूसरे दिन पट्टी बाँधे हुए पैर लेकर लौटते समय विजन बाबू की पत्नी ने उन्हें कह दिया कि रोज वे उनके घर पर आकर एक लोटा दूध पी जायेंगे। बात इतनी सरलता से निपट जायगी, सो विजन बाबू ने भी नहीं सोचा था।

आदमी सोचता है कुछ, और होता है कुछ। गोसाईं थान लौटकर बाबा ढोड़ाय से सलाह-परामर्श करते हैं। क्या बातें हुईं, कौन जाने! दोनों एक साथ अनिरुध मोख्तार के पास आते हैं। क्या समझते हैं विजन बाबू वकील? ततमा लोगों को चिड़िया समझते हैं। एक बादुर मारने की क्षमता नहीं है और बाबा पर बन्दूक दाग दी!

फौजदारी कचहरी में बौका बाबा को अनिरुध मोख्तार के साथ घूमते देखकर विजन बाबू का मुँह सूख जाता है। मुकदमें में कुछ हो या नहीं, पर बन्दूक की लायसेन्स लेकर कलक्टर साहब जरूर खींचा-तानी करेंगे। बाघ छूने पर अठारह घाव! जरूरत क्या हंगामा बढ़ाकर? अनिरुध मोख्तार को बुलाकर विजन बाबू एकान्त में उनसे बात-चीत करते हैं। मामला जिससे और काफी बढ़ नहीं सके, इसके लिए अभी विजन बाबू को रुपये खर्च करने में कोई दुविधा नहीं है। बौका बाबा को साढ़े तीन सौ रुपये देने को वे राजी हो जाते हैं।

बाबा उतने रुपये की बात सुनकर डर के मारे काँपने लगते हैं। 'सत्तरह-बीस' रुपये? वह तो बहुत रुपये हैं। एक बीस से भी ज्यादा। चाँदी का पहाड़। उससे जो मन चाहे किया जा सकता है—चाँदी का मंदिर बनाया जा सकता है गोसाईं थान में। पेट भरकर ढोड़ाय जलेबियाँ खा सकता है। ढोड़ाय की शादी और घर बनाने का खर्च उस रुपये से हो सकता है, अयोध्या जी जाने के रेल किराया से भी बहुत अधिक हैं वे रुपये।

रुपये देते समय विजन बाबू कहते हैं—जरा दूध-वूध इससे खरीदकर खाइयेगा बाबा। बौका बाबा सोचते हैं—आज सुबह भी विजन बाबू की पत्नी ने आँगन लीपकर कम्बल का आसन बिछाकर उन्हें फल-दूध आदि खिलाया था, पर आज से इस घर की भिक्षा बन्द हो गई। रामजी ने उनका भला किया या बुरा किया सो वे समझ नहीं सकते हैं। इस उत्तेजना के बीच रुपये देखकर बाबा का मन उत्साहित हो जाता है—चाँदी नहीं, 'लोट'! अनिरुध मोख्तार रुपये गिनकर उनके हाथ में देते हैं—यह कितना लोट।

खर्च होता है। ततमा टोली में कुल मिलाकर हैं ही कितने लड़के! बचारी लड़की, मुहल्ले में, समाज की आँखों के सामने अजीब-गरीब काण्ड करेगी, यह तो महतो खूब अच्छी तरह जानते हैं। उसकी ओर रमिया बहू की सहानुभूति सहसा क्यों इस लड़की पर छलक पड़ी है, सो वे अन्दाज कर सकते हैं। यह क्या नटिनों का गाँव है? यहाँ यह—सब नहीं चलेगा—साम का हिस्सा देने पर भी नहीं। किन्तु शुरू में कई दिन हुक्के में जोर-जोर से कश लेने के सिवा और कोई उपाय नहीं था, क्योंकि गुदर की माँ उस लड़की का पक्ष लेकर बातें करती थी। धन-कटनी से लौटने के बाद झोटाहा लोगों का जरा सम्मान दिखाकर चलना पड़ता है। इसलिए महतो ने अपनी स्त्री के कथन का प्रतिवाद नहीं किया था। रमिया का पारिवारिक इतिहास कटनी-दल वालों से बातों-ही-बातों में मुहल्ले के बाहर तक प्रचारित हो गया है।

अचानक एक दिन महतो ने देखा कि हवा बदल गई है। सबेरे महतो बैठकर 'कचर-कचर' करते हुए कच्चा पपीता खा रहे हैं कि महतो-पत्नी आकर कहती हैं—'ठहरो, जरा नमक ला दूँ।'

महतो अवाक् हो जाते हैं। आखिर बात क्या है? धन-कटनी के बाद कुछ दिन तक झोटाहा लोगों से ऐसे बर्ताव की उम्मीद नहीं की जाती है।

गुदर की माँ कहती है—'वह लड़की बहुत ढँगीली है।'

'कौन लड़की?'

'तारापुर वाली।'

'हर वक्त एक ही मुँह से बात बोलती हो क्या? तारापुरवाली की तारीफ से जी नहीं भरता क्या?'

महतो-पत्नी यह अभियोग सर झुकाकर सह लेती है।

'छिलका देखकर क्या सभी समय जाना जा सकता है कि बैगन के अन्दर पिल्लू है या नहीं।'

'औरतों की बुद्धि!'

'सो तो है ही।'

इसके बाद असल बात व्यक्त होती है। सुनने में आया है कि उस लड़की ने ढोड़ाय के साथ गोसाईं थान में 'ढलन' शुरू किया है।

यह खबर सुनकर महतो की आँखों में अँधेरा उतर आता है। उनको पंगु लड़की की सुगति होगी, यह महतो बहुत दिनों से सोचता आ रहा है। और भला, उसी में बाधा डाल रही है वह? बे-जात लड़की? गुस्से में महतो की देह लहरने लगती है।

सोग साग खाने के लिए तेल नहीं पाते हैं, छठ-परब के दिन भी स्नान के पहले माथे में एक चुल्लू तेल नहीं पाते हैं और ये रोज गोसाईं-थान में दया बारती हैं! ढाई पैसे में एक छटांक तेल, रमिया को इतने पैसे आते हैं कहाँ से? इधर तो उसका घर-द्वार जमीन्दार नीलाम पर चढ़ा रहे हैं—हर्जाने की डिग्री से।

मुश्किल हो गया है रतिया छड़ीदार को। रमिया को ततमाटोली लाते समय उसने जैसा सोचा था कि विना झंझट वह कुछ पैसा कमा लेगा, वह अभी देखता है कि वैसा होने को नहीं है। एक जगह उसके हिसाव में गलती हुई है। उसने सोचा था लाभ का हिस्सा देकर महतो को कब्जे में कर लेगा। महतो के साथ मिलकर उसने इस प्रकार के कारवार वहुत किये हैं। पंचायत के नायव लोगों के मत-अमत की वह कोई पर्वाह नहीं करता। वे सव सूरदास हैं, दिन और रात का फर्क नहीं समझते हैं। महतो की आँखों से वे सव चीज देखते हैं, उनके साथ 'हाँ-में-हाँ' मिलाते हैं। रुपये के लोभ से महतो विगलित नहीं होते हैं, छड़ीदार ने अपनी जिन्दगी में पहली वार देखा। महतो-पत्नी के समर्थन पर भी कुछ निर्भर करता था। कई दिनों के अन्दर ही उन्हें भी रमिया पर अनुरक्त देखकर वह माथे पर हाथ देकर वैठ जाता है। वह चालाक आदमी है, सभी चीजें उसके पास दिन की तरह साफ हो उठीं। इतने दिनों पर वह समझता है कि महतो और महतो-पत्नी की निगाह टिकी हुई है ढोड़ाय पर। कैसी मुसीवत में पड़ गया था वह ?

झंझटों के एक वार आरम्भ होने पर उसका खात्मा नहीं होता। हुआ भी वैसा ही। दूसरे दिन, सुवह-सुवह वात वहुत दूर तक वढ़ गई।

दूसरे दिन महतो-पत्नी जा रही थी जंगल की ओर ! सहसा उन्होंने देखा कि वेर के जंगल की ओर जा रही है, पीली साड़ी पहनी हुई एक लड़की। कौन है वह लड़की ? धत् ! आँखों से अच्छी तरह देख भी नहीं सकती हूँ, तारापुर की राजकुमारी को छोड़, पीली साड़ी यहाँ और पहनेगी ही कौन ? हाथ में एक लोटा देखती हूँ। वात क्या है ? शायद गोसाईं-थान में सधी-वधी होगी, इसलिए मरगामा से भैंस का दूध लाने जा रही है। पर जंगल की ओर क्यों जायगी।

'अरी ओ रमिया ! कहाँ चली ?' मुंह भरी हँसी लेकर रमिया जवाव देती है—'मैदान।'

कहती है क्या छोकरो ! मैदान जा रही है लोटा लेकर ?'

'क्यों, उससे क्या होता है ?'

'फिर पूछती क्यों है ? तू क्या मर्द है जो लोटा लेकर मैदान जायेगी ?'

'किसी मर्द के वाप का लोटा तो नहीं लिया मैंने !'

देखो, किस वात का कैसा जवाव ! सिर से पैर तक जल उठता है महतो-पत्नी का।

'कहती हूँ, क्या लाज-शर्म उतार कर रख दिया है ? लोटा लेकर मैदान जा रही हो, मर्द लोग देखेंगे ? लोटा हाथ में लिए झोटाहा देखते ही तो मर्द लोग समझ जायेंगे कि तू कहाँ जा रही है ? यह सीधी वात भी क्या लोटे में घोलकर पिला देना होगा तारापुर की राजकन्या को ? यह सव किरिस्तानी चाल-चलन हमारे मुहल्ले में चलाने आई है ? यह क्या नट्टिन लोगों का गांव है ?'

रमिया के माथे पर खून सवार हो जाता है।

'पानी नहीं लेकर मैदान जाने का रिवाज हमारे पच्छिम के मुलुक में नहीं है। सो किसी दिन सीखा भी नहीं है, कर भी नहीं सकूँगी। जंगली मुलुक के सरम पानी का आदमी! तरीका सिखाने आई है तारापुर के आदमी को।'

हाथ का लोटा धम से जमीन पर रखती है। फिर हाथ की मुट्ठी की एक ठोस मुद्रा दिखला कर कहती है—'ऐसे ठूँस-ठूँसकर तुम्हारे अन्दर तौर-तरीका सीख दे सकती हूँ दस साल तक। यही अगर तुम लोगों के जंगली-भुच्चरों के टोले का नियम हो, तो मैं यह एक लात, दो लात, तीन लात मारती हूँ इस नियम पर।' पानी का लोटा उलट जाता है। गाली का विरामहीन प्रवाह बहता रहता है। रमिया या महतो-पत्नी—कौन गाली-शास्त्र में अधिक पारंगत है, कहा नहीं जा सकता। वहाँ आदमी इकट्ठे हो जाते हैं। मुहल्ले की स्त्रियाँ महतो-पत्नी को ठेल-ठालकर घर की तरफ ले जाती हैं। महतो उस वक्त धूप खाने को बैठे थे।

'तुम इस गाँव के महतो हो न? तुम्हारे रहते तुम्हारी स्त्री को, तुम्हारी जाति को, तुम्हारे टोले की बेइज्जती करती है यह रत्ती भर की परदेसी छोकरी। किससे, क्या बोलना चाहिए, सो नहीं जानती है! 'अंधेर नगरी, चौपट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।' उम्र के गुमान पर आज जैसा अपमान किया है उस लड़की ने, उसे अगर पानी पिलाकर नहीं छोड़ा, तो मैं उमराहा की लड़की नहीं। हम लोगों को भी एक दिन वैसी उम्र थी। लेकिन उस समय भी किसी दिन समाज को तुच्छ बना, लोटा लेकर मैदान जाने का बेहयापन नहीं किया। किस अशुभ क्षण में इस लड़की को लायी थी? यह तो पूछो सोचकर मैंने घाव बना डाला। उस छोकरी ने लात तो मुझे नहीं मारी है, लात मारी है उसने जात के महतो और नायब लोगों को। रहो तुम अपनी महतो-गिरी, मूँछ और तुम लोगों की तन्त्रिमा-छत्री न क्या जाति कहते हैं, उसका गर्व लेकर'...

'क्या? इतनी स्पर्धा है उस चुटकी भर की लड़की की!' जानकर महतो घर के बाहर चले आते हैं। 'कहाँ है रतिया छड़ीदार! बुलाओ नायब लोगों को।' दो नायब उस दिन अनुपस्थित थे। वे गये थे दूसरे गाँव कुटमैती करने। अच्छा, आगामी रविवार को उस लड़की के बेहयापन पर पंचायत में विचार होगा। लोटा लेकर औरत मैदान जायेगी तत्मा टोलो में? हम लोगों के जिन्दा रहते? कब्ब···ब···भी नहीं।' अकथ्य भाषा में रमिया को लक्ष्य कर गालियाँ देते हुए महतो घर लौटते हैं।

रमिया उस वक्त रबिया के आँगन में अपने मन की बकती है, छाती पीटती है, माथा जमीन पर कूटती है, मरी हुई माँ का नाम लेकर क्या-क्या तो बोलकर रोती है। मुहल्ले के लड़के-बच्चे रबिया के आँगन में ताक-झाँक करते हैं। फौजी इनारे के चारों ओर मोटाहा लोग जमा होते हैं।

◘

ढोंड़ाय की वधू-प्रार्थना

ततमा टोली में शोर-गुल मच जाता है। बावा ने रुपये पाये हैं। बहुत रुपये! इतने! रुपयों का पहाड़ है, जमीन में गाड़ रखने जाओ तो घड़े में ही वे नहीं अँटेंगे, तो लोटे की बात क्या करना। कितनी बुद्धि होगी औरत की। हँड़िया उतार कर महतो-पत्नी दौड़ती हैं, खुरपी हाथ में लेकर रबिया की बहू आती है, फौजी इनारे के चारों तरफ सिर्फ भरे, उल्टे हुए मिट्टी के घैलों की कतार ज्यों-की-त्यों पड़ी रहती है। हरिया के दल के सात आदमी शहर में घर छा रहे हैं। वहीं से वे हाँफते हुए गोसाईं थान में आते हैं। झोंटाहा लोगों का दल टोले की अली-गली में, मचान के बगल में, पेड़ के नीचे जमा होता है। मर्द लोगों के थान में पहुँचने के बाद वे लोग जायेंगे थान में। वहाँ वे पीछे से जायेंगी। मर्द लोगों के साथ सभा में सटकर बैठना—माईगे! वह करने दो उन रंगीली धाङरिनों को, यहाँ यह होना सम्भव नहीं है।

गोसाईं थान में काफी आदमी इकट्ठे हुए हैं। धाङर टोली से भी लोग आये हैं। बावा बैठे हैं बीच में। उन्हें घेर कर बैठे हैं महतो, छड़ीदार और नायब लोग। एक ही पल में बावा का स्थान टोले में काफी ऊँचा हो गया है, साथ ही साथ ढोंड़ाय का भी। बाबू लाल चपरासी से भी ऊँचा या नहीं सो अभी निश्चित नहीं हुआ है। वक्त लगेगा इस पर विचार करने में।

महतो कहते हैं—'ढोंड़ाय को नहीं देखता, वह कहाँ गया?'

सनीचरा ढोंड़ाय को केहुनी से धक्का देता है। रतिया छड़ीदार कहता है—'यहाँ आकर पास क्यों नहीं बैठते?'

'कहीं बैठने से ही हो जाता है।'

ततमा लोग मन-ही-मन जरा खिन्न होते हैं। आज भी क्या उन धाङरों के बीच न बैठने से नहीं चलेगा? वह भी एक ही किस्म का लड़का है।

दुलारे लड़के की भूल और त्रुटियों को क्षमा करने की उदारता आज सब के मन में जाग उठी है।

महतो काम की बात छेड़ते हैं। 'तो बावा, परसादी तो चढ़ाना ही होगा थान में, पेड़े की परसादी। थान की दया से ही तुम्हें सब कुछ है।'

बावा गर्दन हिलाकर सम्मति प्रकट करते हैं।

'और एक भोज।'

'एक भेड़ की बलि।'

'थान के बगल में एक इनारा बनवा कर उसकी शादी दे दो, नहीं तो बड़ी असुविधा होती है हम लोगों के 'दशविध' में।'

'थान के लिए एक सीताजी-रामजी की रंगीन तस्वीरों वाला रामचरितमानस खरीद दो।'

'टोले के भजन वाले दोनों करताल टूट गये हैं, वही एक जोड़ा खरीद दो।'

कितनी ही तरह की फरमाइशें आती हैं। बाबा किसी की बात का जवाब नहीं देते हैं। इंगित से समझा देते हैं कि सलाह-परामर्श के बाद जो करना होगा सो वे करेंगे। अभी केवल पेड़े का प्रसाद सब को मिलेगा।

महतो और नायब लोग दुःखित होते हैं। सलाह-परामर्श के बाद कहने का अर्थ सभी जानते हैं, वह तो बात दबा देने का कौशल है। इस थान की मिट्टी बीस साल देह में लगाकर, तभी तो बाबा ने यश का धन पाया है। वहाँ एक मंदिर बनवा देंगे, तो इसमें फिर परामर्श किस बात का? मंदिर बनवा देने से तुम्हारा नाम होगा कि हम लोगों का? भीख माँगकर जिसकी जिन्दगी बीती है, वह क्या इज्जत की बात समझेगा? 'नभ दुहि दूध चहत ए प्राणी।' इनके पास थान और मुहल्ले की किसी चीज की आशा करना आकाश दुहकर दूध चाहने की ही तरह अवास्तव है। लेकिन रुपये वालों को सम्मान दिखाकर चलना होता है, उनसे बोलने के पहले सोच-समझ कर बोला जाता है और सब के मन में एक क्षीण आशा है कि आजकल की तरह दुर्दिन में रुपये उधार लेने के लिए शायद अब अनिरुध मोख्तार की खुशामद न करनी पड़ेगी।

ढोड़ाय को बाबा पेड़े खरीदने के लिए शहर की तरफ भेजते हैं। बाबू लाल ढोड़ाय से बोलने के उद्देश्य से ही कहता है—'ढोड़ाय, लखमन हलवाई की दूकान से ले आना।'

महतो भी सम्मति प्रकट करते हैं—'हाँ! लखमन हलवाई पेड़े में चीनी कम देकर ठगता नहीं है।' कहने की आवाज से मालूम होता है, जैसे वह रोज लखमन तथा अन्य हलवाइयों की दूकानों से मिठाई खरीद कर खाता हो।

अभी देश में पैसे का अकाल पड़ा है। सभी को रुपये की जरूरत है। ऐसी हालत में रुपये की हुंडी मिली बाबा को! बाल-बच्चे नहीं, घर-संसार नहीं, शादी-ब्याह की कोई फिकर नहीं, केवल खाओ-पीओ, डमरू बजाओ—'न आगे नाथ, न पीछे पगहा।' बाबा की तकदीर खुली है।

वे जो धाङर लोग बैठे हुए हैं, वे अच्छी तरह समझते हैं कि ढोड़ाय के साथ मिट्टी काटने पर भी वे लोग ढोड़ाय की बराबरी नहीं कर सकते।

काफी रात को भजन समाप्त होने के बाद सब के चले जाने पर बाबा ढोड़ाय को ले जाकर अपनी चटाई पर सुलाते हैं—ठीक उसके बचपन की तरह। आज कई सालों से वे एक चटाई पर नहीं सोते हैं। जाड़े में धूरे के एक बगल ढोड़ाय सोता है और दूसरी तरफ बाबा सोते हैं। बहुत दिनों के बाद आज फिर बाबा उसकी पीठ सहलाते हैं। बाबा की जटाओं की गंध से ढोड़ाय को बचपन की कितनी ही बातें याद आती हैं।

'बहुत रुपये हैं, बाबा ?'

बावा गर्दन हिलाकर कहते हैं, 'हाँ।'

'बहुत बीस, न ?'

'हाँ।'

उसके बाद ढोड़ाय एकदम चुप हो जाता है। बावा सोचते हैं—इतने ही में वह सो गया है क्या ?

सहसा ढोड़ाय कहता है—'बावा। मैं रमिया से शादी करूँगा।' साँस रोककर ढोड़ाय बावा के उत्तर की प्रतीक्षा करता है। बावा ने उसके बचपन से ही उसके प्यार के अनेकानेक अत्याचारों को सहन किया है। कितनी बार कितने ही अन्याय उसने किये हैं, पर बावा ने अपने आचरण से उसे यह दिखा दिया है कि ढोड़ाय को बावा पर अविचार करने का, जुल्म करने का अधिकार है। यह अधिकार ही ढोड़ाय की असली पूंजी है। फिर भी, आज उसके मन में काँटा-सा रह-रहकर यह चुभता है कि शादी के प्रसंग में न मालूम कहीं कुछ अन्याय छिपा हुआ है। बाबा ने चाहा था उसे भगत बनाना, शादी के बाद बाबा से अलग हो जाना पड़ेगा, फिर बावा के रुपये न देने से रमिया से शादी होना भी मुश्किल है। एक के बाद एक, ये ही चिन्ताएँ ढोड़ाय के मन में आती हैं। उसे लगता है, जैसे बावा का करस्पर्श पल भर में जरा शिथिल हो आया है। रमिया, रमिया तो उसे चाहिए ही ! कोई बाधा वह नहीं मानेगा।

ढोड़ाय जान जाता है कि बावा सिसक-सिसककर रो रहे हैं। उँगली से वह बावा की आँखों के आँसुओं को पोंछ देता है। बावा उसे अपनी छाती से चिपका लेते हैं। इसी दिन की प्रतीक्षा बावा बहुत दिनों से कर रहे थे—और इस विच्छेद को रोका नहीं जा सकता है। रुपयों का प्रश्न इसमें सिर्फ गौण ही नहीं, प्रायः अवान्तर भी है। ढोड़ाय शादी करेगा—यह कई वर्ष पहले ही बावा ने सोच लिया है, और शादी के बाद ततमा लड़के और लड़कियों में माँ-बाप, सास-ससुर के साथ रहने का कोई रिवाज नहीं है।

ढोड़ाय जानता है कि बावा रुपये देने में आपत्ति नहीं करेंगे। और, बावा मन-ही-मन सोचते हैं—ढोड़ाय अभी भी नादान है, मूँछ आने से क्या होता है ? नहीं तो, आज जब कुछ ही पहले लोग रुपये खर्च करने की तरह-तरह की राहें दिखला रहे थे, उस वक्त उसने क्यों किसी की बात का जवाब नहीं दिया। अरे मूर्ख ! इतनी सीधी बात तक नहीं समझ सका ? थान में मन्दिर बनवाने से भी ज्यादा आनन्द तुझे सुखी देखने से है ? यह भी क्या स्पष्ट कर कहना होगा ? बचपन में तुझे गोद उठाया है, तभी मुझे लगा था कि बूढ़े राजा दशरथ ने भी अयोध्या जी में एक दिन इसी तरह अपने रामचन्द्रजी को गोद में उठाया होगा—

धूसर धूरि भरे तनु आये।
भूपति विहँसि गोद बैठाये॥

मेरे ढोढ़ाय ने वह बात ऐसे छेड़ी, जैसे वह मुझसे रुपयों की भीख माँग रहा हो। आश्चर्य है! उसने पहचाना कहाँ मुझे? अरे, तेरे ही तो सब हैं!

ढोढ़ाय का घर बना देना होगा। अच्छे रोजगार की व्यवस्था कर देनी होगी। *उसके बाद बेटे-बच्चे, वर्धनशील परिवार, साफ किया हुआ आँगन*····कच्ची मिट्टी के बने हुए बड़े-बड़े पानी के नाद बरामदे पर·· ढोढ़ाय की बहू रंगीन कपड़े पहनी हुई कच्ची हल्दी उबाल रही है—सुखाकर उन्हें बेचने के लिये, इमली चुनकर पाँच रुपये जमा किए हैं उसने, आरी मिलाकर बड़ी डाल रही है, आँगन में अमला और बरगद की टहनी का बँवार सूखने डाल दिया गया है—समृद्धि की रामायण के छवि भरे पन्ने—एक पर एक बाबा के बन्द नयनों के सामने खुलते जा रहे हैं। उनका ढोढ़ाय, नन्हा-सा ढोढ़ाय, भिक्षा का साथी ढोढ़ाय, बाबा बोल नहीं सकते हैं। कैसे वे समझायें ढोढ़ाय को, उनके मन की इतनी अव्यक्त बातें, भीख के चावल की तरह एक-एक कर जमाई हुई, उनके मन की कितनी ही अश्रु-भरी वेदना को कथाएँ? ढोढ़ाय को कभी भी वे दोनों शाम भात नहीं खिला सके हैं। उनके मन में कितनी साध है। ढोढ़ाय को किसी दिन पेट भर कर आलू की तरकारी खिलायेंगे। उसे एक विलायती लालटेन खरीद देंगे। उसी लालटेन के प्रकाश में मिसिरजी रामायण पढ़कर सुना रहे हैं। कितने आदमी हैं। इतनी देशी चीनी, पके खीरे, छिलके सहित गोल-गोल कर काटे हुए, इतने पीले-पीले बागनर केले, प्रसाद की ढेरी मानो समृद्धि का पहाड़ फूट उठा है! अश्रु की धारा उनके इतने दिनों के संचित दुःख की मलिनता को धोकर बहा ले जाती है। रामजी! रामजी! अद्भुत तुम्हारी लीला है! रामायण पढ़े हुए लोग ही इसे समझने जाकर हैरान हो जाते हैं, तो फिर बाबा का क्या कहना! ढोढ़ाय की ममता से वे क्या भरत-राज की तरह हो जायेंगे? रामजी ने उनके सामने स्वर्ग का द्वार खोल दिया है, दुनिया का स्वर्ग अयोध्याजी का द्वार, बाबा के जीवन भर का स्वप्न, मनुष्य के सर्व-श्रेष्ठ तीर्थ का द्वार! वे अगर नालायक हों, तभी वे रामजी के इस अदृश्य इंगित को नहीं मानेंगे। ढोढ़ाय अभी भी उकस-पुकस कर रहा है, चटाई के नीचे से शायद ठंढ ऊपर आ रही हो····ढोढ़ाय को जीवन भर में एक कम्बल भी वे नहीं खरीद कर दे सके हैं।····ढोढ़ाय सुखी तो होगा रमिया से शादी कर? सुनता हूँ, वह लड़की लोटा लेकर मैदान जाती है!·······

बाबा के हाथ के स्पर्श से ढोढ़ाय उनके मन की सारी बातें समझ जाता है। जीवन में पहली बार ढोढ़ाय की आँखों में आँसू आते हैं।····

◻

'वहुत रुपये हैं, वावा ?'

वावा गर्दन हिलाकर कहते हैं, 'हां।'

'वहुत वीस, न ?'

'हां।'

उसके वाद ढोड़ाय एकदम चुप हो जाता है। वावा सोचते हैं—इतने ही में वह सो गया है क्या ?

सहसा ढोड़ाय कहता है—'वावा। मैं रमिया से शादी करूंगा।' सांस रोककर ढोड़ाय वावा के उत्तर की प्रतीक्षा करता है। वावा ने उसके वचपन से ही उसके प्यार के अनेकानेक अत्याचारों को सहन किया है। कितनी वार कितने ही अन्याय उसने किये हैं, पर वावा ने अपने आचरण से उसे यह दिखा दिया है कि ढोड़ाय को वावा पर अविचार करने का, जुल्म करने का अधिकार है। यह अधिकार ही ढोड़ाय की असली पूंजी है। फिर भी, आज उसके मन में कांटा-सा रह-रहकर यह चुभता है कि शादी के प्रसंग में न मालूम कहीं कुछ अन्याय छिपा हुआ है। वावा ने चाहा था उसे भगत वनाना, शादी के वाद वावा से अलग हो जाना पड़ेगा, फिर वावा के रुपये न देने से रमिया से शादी होना भी मुश्किल है। एक के वाद एक, ये ही चिन्ताएँ ढोड़ाय के मन में आती हैं। उसे लगता है, जैसे वावा का करस्पर्श पल भर में जरा शिथिल हो आया है। रमिया, रमिया तो उसे चाहिए ही ! कोई वाधा वह नहीं मानेगा।

ढोड़ाय जान जाता है कि वावा सिसक-सिसककर रो रहे हैं। उँगली से वह वावा की आँखों के आंसुओं को पोंछ देता है। वावा उसे अपनी छाती से चिपका लेते हैं। इसी दिन की प्रतीक्षा वावा वहुत दिनों से कर रहे थे—और इस विच्छेद को रोका नहीं जा सकता है। रुपयों का प्रश्न इसमें सिर्फ गौण ही नहीं, प्रायः अवान्तर भी है। ढोड़ाय शादी करेगा—यह कई वर्ष पहले ही वावा ने सोच लिया है, और शादी के वाद ततमा लड़के और लड़कियों में मां-वाप, सास-ससुर के साथ रहने का कोई रिवाज नहीं है।

ढोड़ाय जानता है कि वावा रुपये देने में आपत्ति नहीं करेंगे। और, वावा मन-ही-मन सोचते हैं—ढोड़ाय अभी भी नादान है, मूंछ आने से क्या होता है ? नहीं तो, आज जव कुछ ही पहले लोग रुपये खर्च करने की तरह-तरह की राहें दिखला रहे थे, उस वक्त उसने क्यों किसी की वात का जवाव नहीं दिया। अरे मूर्ख ! इतनी सीधी वात तक नहीं समझ सका ? थान में मन्दिर वनवाने से भी ज्यादा आनन्द तुझे सुखी देखने से है ? यह भी क्या स्पष्ट कर कहना होगा ? वचपन में तुझे गोद उठाया है, तभी मुझे लगा था कि वूढ़े राजा दशरथ ने भी अयोध्या जी में एक दिन इसी तरह अपने रामचन्द्रजी को गोद में उठाया होगा—

धूसर धूरि भरे तनु आये।
भूपति विहँसि गोद वैठाये॥

मेरे ढोड़ाय ने यह बात ऐसे छेड़ी, जैसे वह मुझसे रुपयों की भीख माँग रहा हो। आश्चर्य है! उसने पहचाना कहाँ मुझे? अरे, तेरे ही तो सब हैं!

ढोड़ाय का घर बना देना होगा। अच्छे रोजगार की व्यवस्था कर देनी होगी। उसके बाद बेटे-बच्चे, वर्धनशील परिवार, साफ किया हुआ आँगन····कच्ची मिट्टी के बने हुए बड़े-बड़े पानी के नाद बरामदे पर·· ढोड़ाय की बहू रंगीन कपड़े पहनी हुई कच्ची हल्दी उबाल रही है—सुखाकर उन्हें बेचने के लिये, इमली चुनकर पाँच रुपये जमा किए हैं उसने, आदी मिलाकर बड़ी डाल रही है, आँगन में अमला और बरगद की टूसा का बँवार सूखने डाल दिया गया है—समृद्धि की रामायण के छवि भरे पन्ने—एक पर एक बाबा के बन्द नयनों के सामने खुलते जा रहे हैं। उनका ढोड़ाय, नन्हा-सा ढोड़ाय, भिक्षा का साथी ढोड़ाय, बाबा बोल नहीं सकते हैं। कैसे वे समझावें ढोड़ाय को, उनके मन की इतनी अव्यक्त बातें, भीख के चावल की तरह एक-एक कर जमाई हुई, उनके मन की कितनी ही अश्रु-भरी वेदना की कथाएँ? ढोड़ाय को कभी भी वे दोनों शाम भात नहीं खिला सके हैं। उनके मन में कितनी साध है। ढोड़ाय को किसी दिन पेट भर कर आलू की तरकारी खिलायेंगे। उसे एक विलायती लालटेन खरीद देंगे। उसी लालटेन के प्रकाश में मिसिरजी रामायण पढ़कर सुना रहे हैं। कितने आदमी हैं। इतनी देशी चीनी, पके खीरे, छिलके सहित गोल-गोल कर काटे हुए, इतने पीले-पीले बागनर केले, प्रसाद की ढेरी मानो समृद्धि का पहाड़ फूट उठा है! अश्रु की धारा उनके इतने दिनों के संचित दुःख की मलिनता को धोकर बहा ले जाती है। रामजी! रामजी! अद्भुत तुम्हारी लीला है! रामायण पढ़े हुए लोग ही इसे समझने जाकर हैरान हो जाते हैं, तो फिर बाबा का क्या कहना! ढोड़ाय की ममता से वे क्या भरत-राज की तरह हो जायेंगे? रामजी ने उनके सामने स्वर्ग का द्वार खोल दिया है, दुनिया का स्वर्ग अयोध्याजी का द्वार, बाबा के जीवन भर का स्वप्न, मनुष्य के सर्व-श्रेष्ठ तीर्थ का द्वार! वे अगर नालायक हों, तभी वे रामजी के इस अदृश्य इंगित को नहीं मानेंगे।· ढोड़ाय अभी भी उकस-पुकस कर रहा है, चटाई के नीचे से शायद ठंड ऊपर आ रही हो····ढोड़ाय को जीवन भर में एक कम्बल भी वे नहीं खरीद कर दे सके हैं।···ढोड़ाय सुखी तो होगा रमिया से शादी कर? सुनता हूँ, वह लड़की लोटा लेकर मैदान जाती है!······

बाबा के हाथ के स्पर्श से ढोड़ाय उनके मन की सारी बातें समझ जाता है। जीवन में पहली बार ढोड़ाय की आँखों में आँसू आते हैं।····

⊡

ढोड़ाय के विवाह का आयोजन

ततमा लोगों के रोजगार की हालत दिनों-दिन खराव हो रही है। धन-कटनी का धान और चलेगा ही कितने दिन ? नये खपड़े के मकान वाबू-भइया लोग नहीं वनवा रहे हैं। वह जो एक किस्म का लहरदार टीन निकला है, उसी से लोगों ने गोहाल तक वनाना शुरू किया है ! फिर काम मिलेगा कैसे ? हालांकि अभी भी खपड़े-वाले पुराने मकान हैं, सो भी वदल कर कुछ लोगों ने टीन लगवाना शुरू किया है। हर साल खपड़ा वदलवाने के झंझट और खर्च से वचने के लिए। सूदखोर अनिरुध मोख्तार और सावजी को तो रुपये की कमी नहीं है। वे लोग किराये पर लगाने के लिए लहरदार टीनों से नये मकान वनवा रहे थे। उनमें दो किरायेदारों के माथे पर गोसाइँ सवार हुए थे जेठ महीने की दोपहर में—हम लोगों की रोजी मारने की वजह से उन पर गुस्से होकर। जले हुए कच्चे आमों को खाकर किसी तरह तो वे चंगे हो गये, पर उसके वाद कोई टीन के घर में रहने को राजी नहीं होता ! इसी लिए सभी लोगों ने मकानों के टीन पर अव फिर खपड़ा लगवाया है। लेकिन टीन के ऊपर वाले खपड़े तो हर साल वदलने नहीं पड़ेंगे ! वुराई में भी अच्छा ही हुआ। इस दुनिया को हुआ क्या है ? दिनों-दिन सव वदलता जा रहा है। पहले देखता था, कद्दू-कोहड़े की लत्ती से वावू-भइया लोगों के घर का छप्पड़ भरा रहता था, और वावू-भइया लोगों के लड़के चौवीस घण्टे खपड़े पैरों से तोड़कर, चूर-चूरकर कद्दू-कोंहड़े तोड़ते थे। आज वे पेड़ भी नहीं रोपते और वे लड़के भी वदल गये हैं। लड़का तो लड़का ही है, सारी दुनिया ही वदलती जा रही है। वैसी वर्षा भी अव कहाँ होती है, जैसे पहले होती थी ? जव तक ततमा लोग जाकर छप्पड़ मरम्मत नहीं कर देते थे, तव तक वावू-भइया लोग खाट के नीचे वैठे रहते थे। वैसे वड़े-वड़े 'पत्थल' अव नहीं गिरते हैं, खपड़ा चूर करनेवाले पत्थल। पहले वारहों मास मरनाधार में पानी रहता था, अभी साल में छः महीना भी नहीं रहता है।

कुएँ खनाना और कुएँ साफ करवाने के रोजगार की भी वही हालत है। घर-घर आजकल 'वमूमा' लगे हैं। वावू-भइया लोगों से पूछने पर वे कहते हैं कि वमूमा लगवाने का खर्च कुएँ वनवाने के खर्च से कम है। वावू-भइया लोग अपने वाप-दादों से भी ज्यादा वुद्धिमान हो गये हैं। वैसे तुम लोग जो समझाओगे, समझ जाऊँगा। लेकिन समझने से ही क्या पेट भरता है ?

रतिया छड़ीदार को रुपयों की जरूरत है। उधर तो रोजगार की वैसी हालत है, फिर पंचायत में भी मुकदमे कम आ रहे हैं। भोज में खर्च करने को पैसे हों तव न लोग पंचायत में मुकदमे पेश करेंगे !

इसीलिए छड़ीदार आता है, रविया के साथ दो-चार काम की वातें करता है।

ढोड़ाय का रमिया से शादी दिलवा सकने से दोनों को ही कुछ लाभ हो सकता है।

'चले आओ—आठ आने—आठ आने।'

रविया कहता है, 'सो कैसे होगा? यह क्या अन्धे को लालटेन दिखा रहे हो? भला मैं उस लड़की को इतने दिनों से खिला रहा हूँ! दस आने—छे आने होने से ही होगा।'

'धन-कटनी में तेरी बहू के साथ उस लड़की को लगा दिया था किसने? इस शादी के पक्ष में पंचों को सम्मत करा सकोगे? उस समय जरूरत होगी छड़ीदार की। फिर महतो बिगड़े हुए हैं उस लड़की पर। रविवार को पंचैती है, याद है न?'

रविया जानता है कि बात में छड़ीदार से जीतना कठिन है। वह छड़ीदार की शर्त पर राजी हो जाता है।

रुपयेवाले आदमी के विरुद्ध पंचलोग नहीं जा सकते हैं—यह सभी जानते हैं। इतवार को पंचायत में महतो तक विवाह के प्रस्ताव के विरुद्ध कुछ कहने का साहस नहीं कर पाते हैं। केवल भोज के सम्बन्ध में बातें होती हैं। महतो की इज्जत रखने के लिए नायब लोग तय कर देते हैं कि रमिया अभी तुरत जाकर महतो पत्नी का 'गोर लगेगी।' लोटा लेकर मैदान जानेवाला प्रसंग कोई छेड़ता ही नहीं है। भावी पतोहू की निर्लज्जता की बात छेड़ कर आज वे बाबा जैसे एक बड़े आदमी का सर नीचा करवा सकते हैं क्या?

बाबा ने सोचा था कि और दो-चार महीने तक रहने दिया जाय, किन्तु रबिया को अभी तुरत रुपये की जरूरत है। वह कहता—क्या भादों में शादी देंगे? पूरब मुल्क के बेंगा की शादी? बाबा लज्जित होकर गर्दन हिलाते हैं—नहीं, सो नहीं कहता। फिर रहने के लिए मकान तो बनवाना होगा।

'उसमें क्या रखा है, सात दिनों के अन्दर ही सब हो जायगा।' सचमुच सात दिनों के अन्दर सब बना देते हैं—ततमा टोली और धांगर टोली के दोस्त मिलकर। बाबा की इच्छा है, आँगन के बीच में एक कुँआ हो—रमिया को रोज स्नान करने का अभ्यास है, छड़ीदार बिगड़ उठता है—'उससे अच्छा यह क्यों नहीं कहते हो कि घर में पैखाना बनवाओगे चैरमेन साहब के मकान की तरह?'

बाबा लेकिन अपनी जिद् नहीं छोड़ते हैं—'कुआँ अभी नहीं बनाया गया, तो फिर बरसात में नहीं बनाया जा सकेगा।'

'अच्छा, अच्छा, कुआँ भी बन जायेगा'—बूढ़ा इतवारी मामले को खत्म कर देता है।

धांगर लोग ढोड़ाय को घर बनाने में सहायता करते हैं। रबिया ढोड़ाय से कहता है—उन लोगों को फिर क्यों बुलाते हो ढोड़ाय! दो ही दिनों के अन्दर र' उसका स्थानीय श्वसुर हो उठा है। रबिया अब बाबा का समधी हो जायेगा—ढो. को हँसी आती है। बूढ़ा इतवारी सोडा-कम्पनी से छुट्टी लेकर ढोड़ाय का घर ,

वैठता है, और वावा को वीच में रखकर दूसरे ततमा लोगों के साथ गप्प जमाता है।—यह गप्प, वह गप्प !—चौकीदारी टैक्स फिर वढ़ाया है तहसीलदार ने। ततमा टोली और धांङर टोली दोनों जगह ही वेईमानी कर रहा है। रविया को भी लगाया है वारह आने, फिर वावू लाल चपरासी के भी वारह आने। रविया को अगर वारह आने हों तो वावू लाल को तीन रुपये होने चाहिए। जरूर रुपये खाये हैं तहसीलदार ने। सनीचरा का क्या किया है उसने, जानते हो ? लिख दिया है कि साल के अन्त में सारे खर्च के वाद उसके पास पचास रुपये वचते हैं, झुट्ठा कहीं का ! इसका कोई प्रतिकार होना आवश्यक है।

रविया कहता है—'इतवारी तुमने ठीक कहा है। तहसीलदार मेरे पीछे क्यों पड़ा है, समझता नहीं हूँ। मेरे खिलाफ एक वार टैक्स की डिक्री भी करवाई है उसने।' 'उतना वड़ा टाट कसकर वांधो।' वातचीत के दरम्यान भी इतवारी की सभी ओर नजर है।...केले के पेड़ रोपने के लिए पीछे थोड़ी जगह रहेगी—सव को याद आती है, घर के साथ ही साथ थोड़ी-सी पर्दा की जरूरत होगी रमिया को, ढोड़ाय खुद ही कुएँ का पाट वैठाता है, मिट्टी लाने को दौड़ता है। वहुत धीरे-धीरे काम हो रहा है, उससे अव विलम्ब नहीं सहा जाता है। वह सोचता है—घर वनवाते समय एक वार रमिया को लाकर दिखाने से वड़ा अच्छा होता। पच्छिम की लड़की के पसन्द-नापसन्द, आवश्यकता आदि की वात किसी को ज्ञात नहीं है। केले के पेड़ की आवरूवाली वात किसी को याद न थी—भाग्य अच्छा था कि इतवारी था। वावा इन सभी विषयों में पंचों के मत-अमत पूछते हैं और ढोड़ाय को भी वही करने को कहते हैं। 'अव तुझे परिवार हुआ, अव पंचों को तुच्छ समझने से नहीं चलेगा। जिस समाज में रहोगे, उस समाज के साथ ही चलना होगा।'

ढोड़ाय गम्भीर होकर सुनता है। चेहरे से लगता है जैसे इस विषय में उसका अपना भी मत वही है।

वावा का मन करता है कि ढोड़ाय को पूछें—'अच्छा ढोड़ाय, तुझे क्या जरा-सा भी कष्ट नहीं हो रहा है, मुझे छोड़कर रहना होगा न ?' धत् ! यह भी कभी पूछा जा सकता है ? हाव-भाव से ही वह झलक रहा है !

सुत मानहिं मातु-पिता तव लों
अवला नहिं डीठ परी जव लों ॥

अभी क्या ढोड़ाय को वावा की वात सोचने की फुरसत है ? भूल जाय वह वावा को, पर रामचन्द्रजी ! वह खुद सुखी हो। रविया की वहू दौड़ती हुई आती है—रमिया की इच्छा है—आँगन में एक तुलसी की वेदी वनवाने की। सभी लज्जित हो जाते हैं, देखो तो कितनी वड़ी गलती अभी होने जा रही थी। मर्दों को क्या इतना भी याद नहीं रहता है ?

बाबा का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठता है…पच्छिम की लड़की है, संस्कार अच्छा है। ढोड़ाय सुखी होगा, उनका ढोड़ाय !



ढोड़ाय-रमिया का विवाह

ततमा टोली में जो वर-पक्ष हैं, वे ही कन्या-पक्ष भी हैं। वह जो महतो पत्नी, छड़ीदार की बहू, दुखिया की माँ, हरिया की बहू—वे ही पनकट्टी के लिए जाती हैं फौजी इनारे पर। वे ही गोसाईं जगानेवाला गीत गाती हैं ब्याह के पहले दिन, उन्हीं के घर के मर्द बारात बनकर आने पर तुरत वे दुआर लगने के अश्लील गीत शुरू करती हैं। इस विवाह में धाँगड़ लोग भी बारात बनकर आये हैं। बाबा को देखकर आज रबिया बहू हुक्का उतार रखती है, और माथे पर कपड़ा तानकर कहती है—हाय के उस चिमटे से इस लड़के को तुम कहाँ से खींच कर लाये थे समधी ! आँगन भर के लोग इस रसिकता पर हँस उठते हैं।

आज दुखिया की माँ की कितनी खातिर है ! अकस्मात् दुखिया की माँ ढोड़ाय की माँ बन गई है। उसके कोई काम करने को अग्रसर होते ही सभी हाँ-हाँ कर उठती हैं, चेला—काठ बिछाकर कहती हैं—बैठो समधिन ! लड़की के घर तुम खटोगी, ऐसा नहीं होगा। यह लो, तम्बाकू पीओ। देखो न आज तुम्हें कितनी गालियाँ देनी हैं।

पाँच सधवाएँ मिलकर तेल-सिंदूर घोरकर जमीन पर पाँच टीका लगाती हैं। नाऊ ढोड़ाय की उँगली चीरकर खून निकालता है और दो खिल्ली पानों में वह लगा देता है, अब नाऊ ने कसकर रमिया का हाथ पकड़ा है, नहरनी से चीर ही तो दिया। टप्-टप् कर खून गिर रहा है पान की खिल्लियों के भीतर ! खूब दृढ़ लड़की है यह ! अब तक बचपन से ढोड़ाय ने जितनी लड़कियों की शादी देखी है, सभी इस समय भय से आँखें मूँद लेती हैं। पर रमिया ने एक बार भौंह तक नहीं सिकोड़ी। वाकई ! अलबत्त हिम्मत है ! खून दिये गये पान की खिल्लियों को ढोड़ाय रमिया को खिलाता है। रमिया मजे में चबाती है। रबिया-बहू इशारा करती है, वैसे लालची की तरह मत चबा, लोग बेशर्म कहेंगे। ढोड़ाय के मुँह में पान दे देती है रमिया। ढोड़ाय भगत को खून की बात सोचकर घृणा आती है। नमकीन-सा लगता है खाने में मामुअर ने रमिया को कहा था 'नमकीन लड़की'। बड़ी अच्छी लग रही है रमिया उस लाल साड़ी में। उस साड़ी को बाबा ने स्वयं पसन्द किया है—लाल के ऊपर पीले फूल। खिस्मल की दूकान के कपड़े टिकाऊ होते हैं, दाम भी वह पूरा लेता है, तीन रुपये बारह आने हैं उसने।

वर-वधू दोनों मिलकर उखली में धान कूटते हैं। अगल-बगल खड़े होकर दोनों ने ही अपने दोनों हाथों से समाठ को पकड़ा है। महतो-पत्नी मजाक करती हैं—'सब देखती जा रही हूँ, वर वधू को मिहनत नहीं करने दे रहा है।' दुखिया की माँ कहती है—'तुम अभी शांत रहो दीदी।' सहसा दुखिया की माँ चीखकर रो उठती है'''आज ढोड़ाय का बाप जिन्दा नहीं है रे।....आकर देखो तुम्हारा बेटा आज कितना बड़ा आदमी है।' बाबू लाल चपरासी तक आज इससे विरक्त नहीं होता है।

मिसिरजी कुछ चावल उखली से उठाकर मन-ही-मन गणना करने लगते हैं। औरत-मर्द, दोनों की दृष्टि जा पड़ी है मिसिरजी के हाथों की ओर। चावल की संख्या में बेजोड़ होने पर विवाह शुभ नहीं होगा। लेकिन सभी जानते हैं कि बेजोड़ संख्या के चावल मिसिरजी के हाथ में कभी उठता नहीं है। और पंचायत में विवाह-विच्छेद का मामला आते ही महतो और नायब लोग कहते हैं कि फौजी इनारे के पानी से पनकट्टी की गई थी, इसीलिए विवाह का फल ऐसा हुआ। उस इनारे की शादी नहीं हुई है न, इसीलिए!

पुरोहित जी के चावल गिनते समय रमिया और ढोड़ाय दोनों के ही दिल धड़कने लगते हैं। ढोड़ाय भी साथ-साथ गिनता जाता—एक, दो, तीन, चार पाँच, छः; सात, आठ, नौ। भय से ढोड़ाय का प्राण सूख जाता है, मरवे की चटाई जैसे पाँव के तले से खिसक जा रही हो'''मिसिरजी सब को कहते हैं कि चावल उठे हैं दस। जोड़ संख्या है, यह शादी बहुत सुख की होगी! ढोड़ाय शांति की साँस छोड़ता है। खैर! उसे शायद गिनने में गलती हुई थी, रामायण पढ़े हुए मिसिरजी की तरह भला वह कैसे उतनी जल्दी-जल्दी गिन सकेगा? इसीलिए उसने एक कम गिना था।

अब महतो की रामायण से दोहा सुनाने की बारी है। कहाँ है महतो? उनका बोलना खतम न होने से, मिसिरजी अपना दोहा नहीं सुना सकते हैं। यह चिर-दिन का नियम है। महतो बैठकर ऊँघ रहे थे। वे अभी नशे में हैं। सहसा चौंककर वे हड़बड़ाकर कह डालते हैं—

सब लच्छन सम्पन्न कुमारी।
होइहि सन्तत पियहि पियारी॥

सभी सुलक्षण हैं इस लड़की के! यह चिरकाल पति की प्यारी रहेगी।

अब मिसिरजी कहते हैं—

सदा अचल एहि कर अहिवाता।
एहि तें जसु पइहहिं पितु-माता॥

इसकी विवाहित अवस्था अचल रहेगी, इसके लिए इसके माँ-बाप का यश बढ़ेगा।

बाबा का हृदय दर्द से कनकना उठता है। बहुत दिनों के बाद आज ढोड़ाय दुखिया की माँ को बहुत अच्छा लगता है। उसने आज ढोड़ाय के पिता के नाम से

आँसू बहाया है, जिस पिता के बारे में ढोड़ाय ने जीवन में एक दिन भी नहीं सोचा है। बावा भी दुखिया की माँ की अपने लड़के पर यह नई ममता देखकर मन-ही-मन खुश होते हैं, कितना भी हो, माँ ही है, और अच्छा ही हुआ! ढोड़ाय की देखभाल करने के लिए एक आदमी तो हुआ।

नाऊ चिल्लाता है—कहाँ गये दोनों समधी!

उखली से एक मुट्ठी धान बावा रमिया को देते हैं, और रमिया एक मुट्ठी धान बावा के हाथ में देता है।

साथ ही साथ स्त्रियों का विरामहीन गीत शुरू हो जाता है, दुखिया की माँ को लक्ष्य बनाकर।

बोल, लड़के का बाप कौन?
वर्दी वाला चपरासी या लंगोट वाला संन्यासी?
या दूसरा कोई शहरवासी।
बोल ही दो अब?
खुसुर-फुसुर खुसुर-फुसुर क्यों?
क्या कोई दूसरा शहरी
भाँट-वन में छुपा हुआ है?

इस गाने से दुखिया की माँ, बावा, बाबू लाल, औरों की तरह हँसते हैं। ढोड़ाय को लज्जा-सी लगती है। रमिया के जन्म का इतिहास भी वह सुन चुका है। फिर भी लगता है जैसे रमिया के समक्ष मर्यादा में कुछ छोटा हो गया। रमिया के गले का ऊपरी हिस्सा हिल रहा है, निश्चय ही वह खुशी के मारे पान का रस निगल रही है।....

स्त्रियों के गाने का ध्यान केन्द्रित होता है बारात के रूप में आये हुए धांगरों पर।....

करमा-धरमा की चाँदनी रात में
फूट का खेत क्यों है बोलता?
इतवारी के सफेद सर पर
चाँद की रोशनी गिरती है क्यों?....
जैसे बहुत जोरों से बोल रहा है....
महतो कहते हैं—'इतवारी सुन रहे हो न?'

तत्मा-धांगर सभी एक साथ हँस पड़ते हैं। इस विवाह के सुयोग में धांगर और तत्मा दोनों शायद पहली बार एक दूसरे के थोड़ा निकट आये हैं। सुदिन में रोजगार की असुविधा, लक्ष्मीप्रसाद साहब की बेईमानी शायद और भी अनेक बातें इसमें हैं, पर ढोड़ाय के विवाह को हेतु बनाकर ही यह सम्भव हो पाया है।

धांङर-टोली का अभिसम्पात

हँसी-खुशी से भरी हुई धांङर-टोली में सहसा अमंगल और आशंका की छाया घनीभूत होने लगती है। सनीचरा के बाँसों में फूल लगे हैं।

शुरू में किसी ने ध्यान नहीं दिया था। बूढ़ी अकलू की माँ ने कैसे अपनी धुंधली दृष्टि से इसका सन्धान किया, सो कोई समझ नहीं पाता है। यों ही, थोड़े ही लोग उसके पास जाते हैं सलाह-परामर्श लेने ! उस बार बिरसा को जब बाई की बीमारी हुई, और रेबन गुनी रोगी के बगल में इक्कीस पानों को कतारों में सजा, आँखें मूंदकर, जब मंत्र पढ़ रहा था, यह बूढ़ी फिस्-फिस्कर हँस रही थी। उसके बाद उसने केले के पत्ते पर तेल-सिन्दूर घोलकर गुनी के सामने रख दिया। जो गुनी को सिन्दूर की याद दिला सकती है, वह क्या बाँस के फूल की खबर भी नहीं पायेगी ?

इतने बड़े अमंगल की सूचना धांङर-टोली में और कभी नहीं आई है। बांगाबांगी का यह निर्देश है कि बाँस में फूल खिलने से ही समझ लेना या तो अकाल, नहीं तो दुःसमय आ रहा है। उन फूलों को छोड़ना नहीं, उनसे रोटी बनाकर खाना। उसके बाद बारह वर्ष से अधिक वहाँ नहीं रहना। बारह बार पेड़ में इमली पकने दो। फिर बोरिया-बिस्तर समेटकर नई जगह जाकर बसने की बात सोचनी होगी।

धांङर-टोली में पंचायत बैठती है। इतवारी मुखिया है। स्त्रियों के चेहरे पर शंका की छाया घिर आई है, पुरुषों के चेहरे विषाद से भरे हैं। पेड़, बाँस, कुंए—इन्हें छोड़कर जाना होगा क्या ? आज और पचई की उत्तेजना नहीं है, पिडिग-पिडिग मृदंग नहीं बजता है, बाँसुरी और गाने में किसी का उत्साह नहीं है। किसी भी घर में चूल्हे नहीं जले हैं। इतवारी और सुक्रा अपने में आलोचना करते हैं। शेष लोग निर्वाक् हैं।

अन्त में इतवारी इस सम्बन्ध में अन्तिम राय देता है। मड़र का कार्य बड़ा कठिन है। कितने ही अप्रिय कार्य मड़र से बांगाबांगी करवाते हैं। लेकिन देखना, यह बात अभी खराब लगने पर भी, बाद में इसका फल अच्छा ही होगा। बाँस की झाड़ी जिसकी है, उसे धांङर-टोली छोड़कर जाना होगा।

सनीचरा की बहू चीखकर रो उठती है।

और, जिनके-जिनके घर से वह बाँस की झाड़ दिखलाई पड़ती है, उनमें किसी को भी बारह साल के बाद इस गाँव में दाना-पानी नहीं जुटेगा। रो मत सनीचरा-बहू, अभी तो तुम लोग जाओ। हम लोग भी बाद में जायेंगे।

इन ततमा लोगों से जितनी दूर जाया जाय, उतना ही अच्छा है। समझता तो सब हूँ, पर नाड़ी जो यहाँ बँधी हुई है। कहाँ सम्भव होता है ? ततमा लोग ठीक ही कहते हैं—बाँस की झाड़ी लगाना मुहल्ले से दूर, जिस मकान से भोर को पूरब की ओर

बाँस की झाड़ी दिखलाई पड़े, उस मकान पर यम की दृष्टि लगी रहती है।

पंचायत में यह तय होता है कि धांडर लोग नये कलम के पेड़ रोपना बन्द करेंगे। कुटियों की खूंट में घुप लगने से भी उसे बदलने की कोशिश न करना। जिनको जो कुछ बचता हो, नगद रखने की चेष्टा करना, गाय, भैंस खरीदने में खर्च करना, मुरगी और बकरियों की संख्या बढ़ाना शुरू कर दो, सनीचरा पच्छिम के किसी देश में बसा जाय, पटेदारी के काम में—कोशी की ओर। वहाँ जमीन बहुत अच्छी है। अरहर के खेत में दाँतवाला हाथी डूब जाता है, धनिया, सौंफ के पेड़ आदमी के बराबर होते हैं। भुट्टा, तम्बाकू की तो बात ही अलग। वहाँ परती जमीन बहुत है। खबरदार, नदी का पानी न पीना, पेचा हो जायगा। सनीचरा के चले जाने पर करमा-धरमा का गाना क्या फिर वैसा जमेगा?

'जहाँ खेले बोंचा-बोंचो चलु देखे जाई।'—मृदंग के साथ क्या साजवाब सुर देता है सनीचरा।

सनीचरा एक शब्द भी नहीं बोलता है। नखों से जमीन पर उल्टी-सीधी लकीर बनाता है। उसकी छल-छलाई आँखों की तरफ किसी से देखा नहीं जा सकता है।

उस रात इतवारी को नींद नहीं आती है। सारी रात 'सनाठी' से बनी चटाई पर करवटें बदलता रहता है। महर के अप्रिय दायित्व का बोझ वह और ढो नहीं सक रहा है। धांडर-टोली में सबसे अधिक फुर्तीला आदमी है सनीचरा, हँसी, नाच, गाना, गप्प से वह चौबीसों घंटे धांडर-टोली को जानदार बनाये रखता है, आखिर वह क्यों पड़ गया बांगावांगी की कोप-दृष्टि में? तहसीलदार का भी क्रोध, देखता हूँ, उसी पर अधिक है। उसकी बहू का दोष है सचमुच, बड़ी 'छतकी' औरत है वह। बगुला जिस तरह मछली पर निशाना साधकर बैठा रहता है, उसी तरह सामुअर भी पड़ गया था सनीचरा-बहू के पीछे। सिर्फ सामुअर पर ही दोषारोपण करने से कैसे चलेगा, सनीचरा-बहू भी रँगीली है। कुछ दिन पहले सामुअर पकड़ा गया। वह उस बाँस की झाड़ी में रात को घुसकर बाँस पर लाठी मार कर एक आवाज करता था, और उसी से सनीचरा की बहू उठकर चली जाती थी बाँस की झाड़ी में। खूब 'ठोकान' खाया था उस दिन सामुअर। उसके बाद से ही वह शान्त हो गया है। बांगावांगी क्या सनीचरा बहू को ही मुहल्ले से हटाना चाहते हैं? कौन जानता है! इसीलिए क्या उसके व स पर उनका इतना क्रोध है?····इतवारी सोचते-सोचते हैरान हो जाता है। दोष किया सनीचरा बहू ने और सजा पायेगा सनीचरा?···

ठक्! ठक्! कुछ ही देर से यह शब्द कानों में आ रहा है। हथौड़ी पीटने वाले उल्लू की आवाज तो नहीं है? ···नहीं, वैसा तो नहीं मालूम हो रहा है। सनीचरा के घर की तरफ से ही वह आवाज आ रही है····

घबड़ाकर इतवारी उठता है। एक लाठी लेना अच्छा है। ठीक ही, सनीचरा

के बाँस की झाड़ी से ही वह आवाज आ रही है।

शेष रात्रि को चाँदनी उतरी है। मैदान का रास्ता साफ दिखलाई पड़ रहा है।····इतवारी धीरे-धीरे बाँस की झाड़ी की तरफ बढ़ जाता है। एक औरत भी जाकर घुसती है उस बाँस की झाड़ी में। दूर से इतवारी देखता है—औरत जैसा ही तो प्रतीत हुआ। आज सामुअर की रक्षा नहीं। दबे पांव इतवारी बाँस की झाड़ी में घुस रहा है—हाथ की लाठी को सीधा कसकर पकड़ा है उसने। लेकिन यह शब्द रुक नहीं रहा है—बाँस काटने का शब्द-सा प्रतीत हो रहा है। घर-घर की आवाज के साथ इतवारी के नजदीक ही एक बाँस गिरता न मालूम किस चीज से फँस जाता है। शब्द फिर दूसरे बाँस से शुरू होता है!

'सब को काटो! सब को। एक भी मत छोड़ो।' सनीचरा बहू के गले की आवाज है। बाँस की समूची झाड़ी को एकदम जड़ से काटकर फेंक देगा सनीचरा। और किस पर वह अपना क्रोध और अभिमान दिखायेगा? 'अगाछे' की तरह अपने गाँव से उखाड़ कर लोग उसे फेंके दे रहे हैं।····इसलिए रात्रि के अँधेरे में पति-पत्नी यहाँ आये हैं।····

बूढ़े इतवारी की आँखों के कोरों में आँसू आ जाता है। वह फिर दबे पाँव लौट आता है अपने घर। किसी तरह की आहट नहीं हो पाती है।



महतो का आवेदन

ढोड़ाय की इच्छा है कि वह रमिया को बाहर कामकाज नहीं करने दे। दुखिया की माँ की तरह। अन्य ततमानियों की तरह रमिया बाबू-भईया लोगों के घर ताड़, बेर, और साग बेचने जायेगी—सो ढोड़ाय पसन्द नहीं करता है। वह सब समझता है। सामुअर-टामुअर की तरह बदमाशों की आँखों पर एक नजर डालते ही यह समझ जाता है! अपनी रमिया को वह घर से बाहर नहीं जाने देगा। पर मिट्टी काटने के रोजगार से बहू को घेरे के अन्दर भी नहीं रखा जा सकता है। बाबा भी वह बात जानते हैं।

क्या करेगा ढोड़ाय?

बाबा की इच्छा है, ढोड़ाय एक मोदीखाने की दूकान खोले। क्यों, जवाब क्यों नहीं देते?

ढोड़ाय ने भी यह बात सोची है। रमिया के साथ इसके बारे में कितनी ही बातें भी हुई हैं। रमिया ने उस दिन पैसे और आने जोड़कर सरसों का तेल, रिट्ठा और

खैनी का हिसाब कर दिया। दूकान चलाने में रमिया उसकी मदद कर सकेगी जरूर, पर औरत की मदद लेकर रोजगार? वैसा मर्द ढोड़ाय नहीं है। उस पर दस-बीस आदमी चौबीसों घंटे उसकी दूकान में ठट्ठ मारेंगे, यहां तक कि सामुअर भी, नहीं वह सब नहीं चलेगा।

पान-बीड़ी की दूकान? तब तो जिरानिया में दूकान खोलनी पड़ेगी। बावा को सहसा स्मरण होता है कि उस दिन जब अनिरुद्ध मोख्तार के साथ कचहरी के मुन्शीखाने में गये थे, कौन तो महात्माजी की चर्चा कर रहा था—फिर उस बार की तरह एक हल्ला हो सकता है। उनकी सब बातें बावा नहीं समझ पाये थे, लेकिन इतना समझा था कि इस बार तमाशा और भी अधिक जमेगा।""""जरूरत क्या है, ऐसे समय में पान-बीड़ी की दूकान खोलने की।

तब भाड़े की बैलगाड़ी चलाये ढोड़ाय। भाड़े का माल लादकर जब मन चाहे जाओ, जब मन चाहे लौटो। घर के द्वार पर—बैलों की जोड़ी बँधी रहेगी—ताजे, तगड़े, सींगों पर तेल लगाये हुए बैल! बटोही रास्ते से ताककर देखेगा। मुहल्ले के लोग हिंसा से जलने लगेंगे। लोग सम्मान करेंगे। रास्ते के बीच बैलगाड़ी खाड़ी रख छोड़ो, मर्द लोग तक गाड़ी के नीचे होकर गुजरेंगे। भला रखे तो कोई गाड़ी को एक बगल हटाकर, किसी की हिम्मत नहीं पड़ेगी। मकान के सामने गोईंठे का पहाड़ देखकर लोगों की आँखें दुखने लगेंगी।

अन्त में ढोड़ाय का बैल और गाड़ी खरीदना ही तय होता है—भिखनाहापट्टी के मेले से।

मुहल्ला फिर गर्म हो उठता है। देखते-ही-देखते ततमा टोली हो कैसी गई? कोई बड़ा जब होता है, तो वह ऐसे ही होता है। दिन दूना रात चौगुना बढ़ता है। एकदम बाबू लाल के बराबर हो गया ढोड़ाय! दुखिया की माँ नित्य आकर 'कनिया' के घर-संसार की देखभाल कर जाती है। दुखिया तक भाभी की फरमाइशें पूरी करता है। रमिया के पास केवल नहीं आती है एक फुलझरिया। रमिया बुलाने गई थी, फिर भी वह नहीं आई। दोनों हाथो से मुँह ढांककर उसने रो दिया था।

बिना कार्य के महतो का किसी के यहां जाना नियम नहीं है—पद-मर्यादा की रक्षा के लिए। वे केवल एक दिन ढोड़ाय के यहां आये—नये बैलों की जोड़ी को देखने के बहाने। महतो उसके द्वार पर हैं, ढोड़ाय क्या करे, सोच नहीं पाता है। रमिया उसे आँगन मे ले जाकर बैठाती है। मुहल्ले के लोग घर के बाहर जमा होते हैं—जरूर ढोड़ाय ने फिर कहीं कोई काण्ड किया है, नहीं तो आँगन में महतो भला आते क्यों? पच्छिमकी उस लड़की ने तो फिर कहीं कुछ नहीं किया?

रमिया, महतो को पैर धोने को पानी देती है! मसाला पीसने के लिए दुखिया की माँ ने जो दो पत्थर के टुकड़े उसे दिये थे, उन्हीं से वह सुपारी तोड़कर देती है। महतो जितना खुश होते हैं, उससे कहीं ज्यादा चकित होते हैं। ततमा टोली के लोग,

पच्छिम के इन सब तरीकों के अभ्यस्त नहीं हैं। फिर भी, महतो वह व्यक्त नहीं करना चाहते हैं। झट पैर धोने का जल पीकर, सुपारी के टुकड़ों को मुँह में डाल लेते हैं।

रमिया के हँस देने पर महतो कहते हैं—ऐसी हँसी ही तो चाहिए, लेकिन आँगने के बाहर जाकर नहीं। यह क्या मुंगेरिया ततमा लोगों सी सीढ़ी पर चढ़ने वाली लड़की का गाँव है ? हम कनौजी ततमा लोगों की झोटाहा लोग शराब-ताड़ी तक आँगन में बैठकर पीती हैं, कलाली में नहीं। मेरे गुदर की बहू को ही देखो न। ताड़ी पीने के बाद किसी ने कभी उसकी आँखों में लाली भी देखी है ? घर वालों तक ने नहीं देखी है। लेकिन बेचारी अब बड़ी मुसीबत में पड़ गई है। आजकल के रोजगार का बाजार तो तुम जानती ही हो। मैं और गुदर की माँ तो तुम्हें अपना बेटा जैसा ही समझते हैं। तुम गेंगवाली नौकरी गुदर को दिला दो ? तुमने तो उसे छोड़ ही दिया।

इतनी देर में ढोड़ाय समझ पाता है कि क्यों महतो उसके यहाँ आये हैं। अच्छा, मैं इतवारी से कहकर देखूंगा। वही तो सब है, दल नाम को ही सनीचरा का है।

इतवारी के सामने यह प्रसंग छेड़ते ही वह कहता है—सो कैसे होगा ? वे लोग धांङर-टोली की बात पहले सोचेंगे। हालाँकि और भी एक जगह खाली होगी। सनीचरा वाली। लेकिन कितने लोगों को काम में घुसना है ? जानते हो ? छोटे-बिरसा की नौकरी चली गई है—उसका साहब अपना मकान बेचकर चला गया है। सामुअर का चचेरा भाई नानुअर, जो गिरजे में घंटा बजाता है, उसकी नौकरी डगमगा रही है। पादरी साहब लोग जिरानिया छोड़कर चले जा रहे हैं, दुमका। बच्चों को पाव भर के हिसाब से जो दूध मिलता है, गिरजे से, वह भी साथ ही साथ बन्द हो जायेगा। और भी कई नौकरियाँ चले जाने का ब्यौरा देता है इतवारी। इसके अलावा सामुअर का साहब तो अभी तुरत कह गया है—उसके माली को भी एक जगह दिलानी होगी।

इस पर और बात नहीं चलती है। ढोड़ाय समझता है कि महतो बिगड़ेंगे, पर उपाय ही क्या है ?

बौका बाबा अन्तर्धान हुए

बाबा ढोड़ाय के विवाह के बाद से ही कुछ अनमने हो गये हैं। अब तक तो हाथ में काम थे। शादी का इन्तजाम, घर बनाने के बाँस और खर का बन्दोबस्त, गाड़ी-बैल खरीदना, आदि। इन सब कामों में उत्साह-सा उन्हें आ गया था। अपने ढोड़ाय का संसार उन्होंने अपने हाथों बना दिया है। रामजी ने जिन कर्त्तव्यों का बोझ उनके माथे पर लाद दिया था, उन्हें ढोने में उन्होंने कभी द्विविधा नहीं की है। उन्होंने

शुद किया है। जिनका कार्य है वे ही शुद करवाते हैं। ढोड़ाय तो एक अवलम्बन था। अभी बड़ा अकेलापन महसूस होता है, भिक्षा माँगने की इच्छा नहीं होती है। रामजी की बात तक मन में नहीं आती है। वे सब ऊपर से देख रहे हैं। आत्मग्लानि के मारे वे बार-बार मिलिट्री ठाकुरबाड़ी में जाना-आना शुरू करते हैं, अधिक देर तक बैठकर रामायण सुनते। बार-बार वे वहाँ की राम-सीता, लक्ष्मण जी और महावीर जी की मूरतों को प्रणाम करते हैं। महन्तजी प्रसाद बनाकर चीलम उनके हाथ में देते, पर वे अन्यमनस्क हो कश लेते हैं; किसी तरह स्वस्ति नहीं पाते हैं। ढोड़ाय और रमिया ने उन्हें पकड़कर बैठाया था अपने यहाँ खाने के लिए। वे राजी न हुए थे। रमिया ने आँसू टपकाये थे, पर बाबा का मन इधर-उधर नहीं हुआ। बाबा तो चिरदिन से स्वयंपाकी थे। ढोड़ाय के छुए हुए अन्न को खाने में उन्हें किसी दिन द्विविधा नहीं हुई थी। रामजी ने जिसे बेटा कहकर गोद में बैठा दिया है, भला उसके साथ क्या छुआ-छून की बात चल सकती है? लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि ढोड़ाय और उसकी स्त्री एक है। ढोड़ाय मन ही मन बड़ा दुःखित हुआ था। उसने कह ही डाला—तुम्हें लड़की छूने नहीं दिया, इसलिए गुस्सा हुए बाबा! सुन लो, अबोध लड़के की बात—समझाने पर भी नहीं समझना चाहता है। अरे नहीं, नहीं, ऐसा भी कभी होता है? 'तब क्यों नहीं खाओगे बाबा?' ढोड़ाय के सन्देह का निवारण नहीं होता। बाबा हँसकर उस प्रश्न की उपेक्षा कर जाते हैं। अनुताप नहीं, फिर भी अगर बाबा की तरह संन्यासी बनकर रहता तो बाबा के साथ गोसाईं थान में रह सकता। लेकिन रमिया? तब तो उसके जीवन में रमिया नहीं आती। तब आज उसे रहता ही क्या? इधर कई दिनों से वह रमिया को छोड़कर अपने जीवन की बात सोच भी नहीं सकता। जीवन में एक दिन भी रमिया को छोड़कर वह रहेगा नहीं। अगर किसी दिन रमिया मर जाय? सेताराम! सेताराम! केवल खराब बातें याद आती हैं।

बाबा का मन चंचल-सा हो जाता है। वे पागल हो जायेंगे क्या? सभी तो वैसे ही हैं, वैसा ही थान, वैसा ही रामायण-पाठ, पर उनका ढोड़ाय नहीं रहा। एक अन्य व्यक्ति उसे एकदम अपना बना ले रहा है। इसमें दुःख की बात क्या है? यह तो खुशी की बात है। उनका ढोड़ाय सुख से रहे—यही तो बाबा ने चाहा था।....

चैती गाने का सुर सुनाई पड़ रहा है। हरखू का मस्ताया हुआ दामाद शायद खुशी से तान छेड़ रहा है—

···चैत सुभा दिनवां, हो रामा····

आजी गैले पिया के गमनवां, हो रामा ···

चैत महीने का शुभ दिन आ गया राम, पिया के गौना का समय आ गया।····

मुहल्ले के सभी गये हैं मरनाधार के पुल के पास, वह, जहाँ अंजोर और आग दिखलाई पड़ रही है। कल रात भी इसी समय धांङर टोली और ततमा टोली के सभी

लोग वहाँ गये थे। महात्मा जी के चेलों ने उस जगह को चुना है नमक तैयार करने के लिए।

रंगरेज का नमक खाने से रंगरेज के खिलाफ नहीं जा सकोगे। रंगरेज दरोगा-कलस्टर के मालिक हैं। गरीबों की हालत सुधारने के लिए नमक तैयार करना होगा। नमक तैयार करते समय अगर दरोगा आ जाय तो कैसे सभी लोग मिलकर नमक की कड़ाही को बचाएँगे उसी की शिक्षा देने आये हैं मास्टर साहब के चेले। रमिया, महतो-पत्नी, रबिया-बहू तथा और अन्य भोटाहा लोगों ने साँझ को मरनाधार के पुल के पास दीये जलाये हैं। कल एक दल आया था और आज फिर नया दल आया है। ये ही लोग फिर गाँव-गाँव में चले जायेंगे। इसके बाद, किन्तु मरनाधार के पास रह जायेगा एक थान—महात्माजी का थान—ठीक वहीं, जहाँ आज भोटाहा लोग दिये जलाकर आई हैं। बाबा सोचते, सचमुच अगर उस स्थान पर और एक थान बन जाय तो ततमा टोली के गोसाईं थान के गुरुत्व में भी खिचाव पड़ सकता है। कल उन्होंने मास्टर साहब को मरनाधार के पास देखा है। बाबा चिमटा-कमंडल लेकर भी ढोड़ाय की बात क्षणमात्र के लिए भी भूल नहीं सकते, और ये महात्माजी के चेले अपने बच्चों को छोड़कर कैसे जेल में रहते हैं? उन लोगों का मन क्या खराब नहीं होता है? बजरंगबली की शक्ति है महात्माजी और उनके चेलों के साथ, रामजी का उन पर आशीर्वाद है। किन्तु एक चीज बाबा के दिमाग में किसी तरह नहीं घुसती—कई साल पहले के उस गान्हीं बाबा के तमाशा और हल्ले के समय अफीमखोर वकील साहब तथा और भी कितने मुसलमान प्याज त्यागकर गान्हीं बाबा के चेले बने थे। उन मियाँ लोगों पर भी क्या विश्वास करना है? मिसिरजी से बाबा ने सुना है कि अयोध्याजी के रामचन्द्रजी के मन्दिर को मियाँ लोगों ने मसजिद बना लिया है। देखो तो भला स्पर्धा, उन मियाँ लोगों के साथ महात्माजी के चेले लोगों ने इतनी घनिष्ठता की थी। पर फिर रामचन्द्रजी महात्माजी के चेले लोगों पर इतने सदय क्यों हैं? महात्माजी को सरकार रखे भला जेल में? रामचन्द्र जी का आशीर्वाद उनके माथे पर है, भला उन्हें क्या दरोगा-कलस्टर जेल में ठूँसकर रख सकते हैं? तुलसीदास जी को एक बार एक नवाब ने जेल में रखा था, लाखों बन्दर जाकर उन्हें जेल से बाहर निकाल लाये थे। फिर भला महात्माजी को ताला लगाकर जेल में रखे? माँ ने मरते समय कह दिया था कि अयोध्याजी में जाकर रहना—वहाँ भीख खूब मिलती है। सहसा यह बात क्यों स्मरण हुई? रामजी शायद याद दिला रहे हैं मेरे पथ की वाणी। उन्होंने मेरे माथे पर से सब बोझ हटा लिया है, अयोध्याजी जाने का रेल-भाड़ा जुटा दिया है, कह रहे हैं कि तुम भरत राजा की तरह हो गये हो?

शुभ दिन आ गया है।

··········आवऽ हो बभनमा, बैठऽ हो अँगनवा,
गनी देहो पिया के गमनवाँ·······
हो रामा······

नही, नही, और पंजी-पत्रा देखने की जरूरत नहीं है। वाबा फाड़कर फेंक देना चाहते हैं मन की परत-परत पर जमी हुई ढोड़ाय की स्मृतियाँ। चैती गाना के इंगित, मृत माँ के आदेश, रामजी के अंगुलि-संकेत को वे भुठला नही सकते हैं। उन्हें सब कुछ छिपकर निकलना होगा—नहीं तो उनकी दशा भरत राजा की तरह होगी। इसीलिए शायद उनका मन इतना चंचल-सा हो रहा था। ढोड़ाय वगैरह सभी लोग अभी गये हैं मरनाधार के पास महात्माजी के चेलों का तमाशा देखने। यही अच्छा अवसर है—और कमंडल लेकर वे उठते हैं। वे देर नहीं करेंगे। थान की वेदी को प्रणाम करते हैं। चिमटे की कुंडी में ढोड़ाय ने बचपन में एक अधेला में छेद बनाकर पहनाया था। सहसा उस पर दृष्टि पड़ जाने से उसे खोल डालने की खींचा-तानी करते हैं। नहीं, इतनी जल्द उसे खोलना सम्भव नहीं है।

समय नही है। सेत्ताराम ! सेत्ताराम !

'चैत सुमा दिनवां, हो रामा''ऑ'''

आवो गैले पिया के गमनवां''''''

हो रामा''' ऑ 'ऑ'''

शुभ दिन आ गया है। और एक क्षण भी समय नष्ट करने को नहीं है'''

चिमटे की कुंडी से अधेले के टकराने से जो शब्द हो रहा था, वह क्रमशः क्षीण हो जाता है। तेल घट जाने के कारण थान के दीये का वक्ष जल रहा था, वह फक्-फक् कर बुझ जाता है।

□

गान्हीं बावा का पुनः आविर्भाव

सर्वे खाता-खतिमाना के अनुसार मरनाधार समेत बकरहट्टा का मैदान, ततमा टोली, जमीन्दार वाबू की अपनी सम्पत्ति है। असल में, ततमा और धाङरों के यहाँ आने से बहुत दिन पहले से ही बकरहट्टा का मैदान था मरगामा के लोगों की गायों का चारागाह। यह भी जन-कल्याण की जमीन। ढोड़ाय के जनमने के छः साल पहले यहाँ जब सर्वे हुआ, तो जमीन्दार वाबू ने रुपये-पैसे खर्च कर इसे अपनी परती जमीन कहकर सर्वे के कागज-पत्रों में लिखवा लिया था। उसके बाद वे ही लाह के लिए बेर के पेड़ नीलाम करते थे, वे ही कपिल राजा के पास सेमल के पेड़ बेचते थे। किसी ने इस के लिए माथा-पच्ची नहीं की। अभी जमीन्दार वाबू के दिमाग में इस बकरहट्टा के मैदान को लेकर अनेक बातें आ रही हैं। इसी बीच अगर महात्माजी का थान बन जाय बकरहट्टा के मैदा में, अथवा इस पर थाना-पुलिस, मामले-मुकदमे होने लगें तब शायद फिर से

अब तक की गुम हुई जमीन के अधिकार वाली बात उठेगी। वहाँ दीये जलाना शुरू हो गया है—यह खबर भी वे साथ-ही-साथ पा गये हैं। रतिया छड़ीदार, परसादी नायब, रबिया—सभी के नाम से बाकी हर्जाना डिक्री की हुई है। वे सभी अब उनकी मुट्ठी के अन्दर हैं। सांझ को ही वे उन्हें बुला भेजते हैं।

दूसरे दिन भोर होते-न-होते ततमा टोली में हलचल मच जाती है। मोटर पर 'लाइन' से पुलिस आकर उपस्थित है, साथ में रंगरेजी टोपी पहने हुए हाकिम भी। वे मरनाधार की ओर से लौट रहे हैं। मरनाधार के पास अभी कोई आदमी नहीं है। लेकिन रात को वहाँ आग जलाई गई थी, सूखी घासों पर उसका चिह्न है। चौकीदार और दफादार की खबर है कि रात ततमा टोली और धाङर टोली के बूढ़े-बच्चे सभी मरनाधार के पास टूट पड़े थे। इसीलिए हाकिम आये हैं ततमा टोली। देखा गया कि पुलिस सभी खबरें जानती है। हाकिम ने कहा—सभी खबर हम लोग रखते हैं। आज कुछ नहीं कहा! जो किया है, सो किया है, पर भविष्य में और ऐसा न होना चाहिए। बाहर के किसी आदमी के तुम लोगों के टोले में आकर सरकार के खिलाफ काम करने से भी तुम्हीं लोगों को पकड़ेंगे! तब ततमा टोली का एक भी घर खड़ा नहीं रहेगा, यह कह देता हूँ। रोजगार करो, खाओ, पीओ, रहो। नहीं तो फल भोगोगे। तुम लोगों को अगर कहने को कुछ हो, तो जब चाहो मुझ से कह सकते हो, पर कांग्रेस के आदमियों के पल्ले पड़े कि तुम सबों को पकड़कर जेल में भेज दूँगा।

सब का मन भय से कांप उठता है। महात्माजी के चेले मास्टर साहब के चेले कांग्रेस के आदमी हैं! कुछ दिन से मिसिरजी भी रामायण का पाठ करते समय कांग्रिस-कांग्रिस क्या तो बकते हैं। अभी एस० डी० ओ० साहब भी वही बात कह रहे हैं। वही बोलो, बाबू-भईया लोगों का कांग्रिस और दरोगा हाकिम की सरकार इनमें लगा है टक्कर। हाकिम शायद गलत समझा रहे हैं—महात्माजी का नाम तो एक बार भी वे नहीं ले रहे हैं।

ढोंड़ाय हाकिम को सलाम कर कहता है—हुजूर माँ-बाप हैं। आप से हम लोगों की एक 'अरजी' है। हम लोगों के चौकीदारी टैक्स बढ़ाने में तहसीलदार साहब ने बेईमानी की है, रबिया के भी बारह आने और बाबू लाल चपरासी के भी बारह आने। वह कैसे होता है? सभी ढोंड़ाय के साहस पर अवाक् हो जाते हैं। हाकिम से बोल रहा है वह, दरोगा के सामने, और तहसीलदार साहब के विरुद्ध नालिश कर रहा है। अभी शायद हाकिम उसे ताड़ना देंगे। हाकिम पूछते हैं—'तहसीलदार कौन है?'

'फुदनलाल। माहीटोले का, हुजूर।'

बाबू लाल का कण्ठ-स्वर सुनाई पड़ता है—'इस छोकरे ने तो मात्र कुछ दिन हुए घर बनाया है। यह क्या जानता है चौकीदारी के बारे में।'

हाकिम बाबू लाल की ताड़ना करते हैं—'तुम से किसने पूछा है?'

फिर ये ढोड़ाय को कहते हैं—लिखकर दरख्वास्त देना मेरे पास। सब ठीक हो जायगा। लेकिन खबरदार, सरकार के खिलाफ कुछ देखा गया, तो ततमा टोली का एक भी आदमी जेल के बाहर नहीं रहेगा।

एस० डी० ओ० साहब हाथ की घड़ी देखते हैं। एक झुंड लड़के इतनी देर में साहस कर पुलिस-भान के सम्मुख आकर खड़े हुए हैं। टप्-टप् कर मोटर की इंजन से पानी गिर रहा है जमीन पर—लड़के कह रहे हैं, पिट्रोल गिर रहा है। दर्द की दवा!

गाड़ी चली जाती है। चक्के की उड़ाई हुई धूल मरनाधार की ओर दौड़ जाती है ...शायद रात के कलंक को ढँकने के लिए।

लू की हवा में दिन को किसी के यहाँ खाना नहीं पकेगा—खर के मकान में आग लग जा सकती है। ततमा टोली का कोई उस दिन काम पर नहीं जाता है। दिन भर सभी मिलकर सम्भव-असम्भव अनेक तरह की आलोचनाएँ करते हैं। गान्ही महाराज, पुराने गान्हीं बाबा सहसा कब से महात्माजी हो गये हैं।···मास्टर साहब का बेटा कल आकर मरनाधार के पास कह गया है कि रंगरेज सरकार की वजह से ही ततमा लोगों को अभी कोई रोजगार नहीं है। बहुत दिन पहले सरकार ने ततमा लोगों के अँगूठे काट लिये थे। देखो तो भला काण्ड! लेकिन एक सुविधा है अँगूठा न रहने पर, कोई जोर-जबरदस्ती सादे कागज पर अँगूठे की छाप नहीं ले सकेगा। न अनिरुध मोख्तार, न साहबो, न जमीन्दार बाबू।···उसके बाद से ही तो वे लोग कपड़े बिनने का काम भूल गये।···कलयुग में···

सूर पाप परायण धर्म नहीं।
करि दंड विडम्ब प्रजा नितहीं॥

महात्माओं ने क्या ऐसे ही रंगरेजों का नमक खाने को मना किया है। वे सब देख पाते हैं। वह रंगरेज का नमक था, इसीलिए न कपिल राजा का दामाद ततमा टोली की छाती पर बैठकर गाय के चमड़े का कारबार कर सका था।···

अच्छा, अच्छा, अभी छोड़ो इन सब बातों को, देखते हो न, गाँव की खबर दरोगा के पास चली जाती है। अच्छा, परसों की रात वाली खबर पुलिस को किसने दी है, कह सकते हो? धाङर टोली का कोई तो नहीं? रतिया छड़ीदार, और बसुआ नायब को हरिया ने देखा है जिरानिया में दफादार के साथ। दफादार के साथ उनका क्या काम हो सकता है? वे दोनों आखिर गये कहाँ? सचमुच, वे तो सुबह से नजर नहीं आ रहे हैं?

हरिया कहता है—मैंने कल पूछा था उनसे। वे कहते हैं कि वे चौकीदारी के हर्जाने की बात कर रहे थे।

यह क्या हो रहा है गाँव के अन्दर! पंचायत को बिना खबर दिये ही चौकी-दार-दफादार से मिलना-जुलना! ढोड़ाय का खून खौल उठता है।

गाँव के लोगों के खिलाफ दफादार को खबर देना! वह नायब है, तो क्या

हुआ ! यह मामला अपने हाथ में लोगे या नहीं, बोलो महतो ! साफ-साफ बोलो, यह मामला पंचायत में रखोगे या नहीं—घुसुर-फुसुर बात नहीं। सिर्फ लोटा लेकर मैदान जाने की पंचायत करते हो ?

सभी ढोड़ाय के कथन का समर्थन करते हैं। गांव के सब लोगों के चेहरे का भाव और बात चीत करने का ढंग देखकर भय से महतो का मुँह सूख जाता है। उस दिन का भूंई-फोड़ छोकरा ढोड़ाय—वह भला गांव के लोगों का मुखिया बनकर बढ़ आता है ? पैसे की गर्मी से फूलकर भांथी बना है छोकरा, कहा गुदर को एक मिट्टी काटने की नौकरी दिलवा देना, सो तो नहीं बन सका उससे। मेरे गुदर को भेजना पड़ा मुंगेरिया ततमा लोगों के साथ राजमिस्त्री की मजदूरी के लिए। मेरी पतोहू उन सीढ़ी पर चढ़ने वाली मुंगेरिया ततमा स्त्रियों के साथ एक हो गई। कनौजी तंत्रिमा-छत्रियों के घर की वधुओं ने शहर में सीढ़ी चढ़ना शुरू कर दिया है—ऐसा दुर्दिन आया है। यह थाना-पुलिस करने की जरूरत क्या है ?····उस बार की तरह निश्चय ही महात्माजी के चेले लोग फिर ताड़ी की दूकान में गोलमाल करेंगे। इस सूखे दिन में फिर यह एक फसाद है।···जाने दो। लोगों के हाथ में पैसे रहें, तभी तो वे ताड़ी की दूकान में जायेंगे।····

ढोड़ाय को सबसे ज्यादा खुशी इस बात की है कि उसने आज हाकिम के साथ बातें की है। बोलते समय वह जरा भी नहीं घबड़ाया था। जो-जो उसने सोचा था, सभी ठिकाने से कह सका। हाकिम ने उसकी बातें सुनी हैं, और बाबू लाल एक बार बोलने चला था, तो उन्होंने उसे डांट दिया था।····अब ढोड़ाय, चाहे जो भी हाकिम आवें, उनसे बोल सकेगा। आज वह लोगों की नजरों में बाबू लाल चपरासी से भी ऊँचा हो गया है। रामजी की कृपा से उसके जीवन की एक आकांक्षा आज पूरी हुई है। रतिया छड़ीदार और बसुआ नायब के बर्ताव से उसका मन खराब ही हो गया था। वे ही बातें सोचता वह घर की ओर जाता है। रमिया से बहुत देर से बातें न हुई थीं !

रमिया बैल के नाद में पानी डाल रही है बाहर निकलकर। इन सब कामों को उसके मना करने पर भी रमिया नहीं छोड़ती है।

'वह कौन है ? सामुअर है न ?'

'बैल के मालिक आ गये। जा रहा था घर। अचानक रास्ते से बैलों की जोड़ी पर निगाह पड़ी।'

फिर तरह-तरह की बातें होने लगती हैं।···तुम्हारे मुहल्ले में तो देखता हूँ भयानक काण्ड है ! पहले जानता तो मैं आज साहब की कोठी पर ही रह जाता। मेरे साहब भी चले जा रहे हैं अगले सप्ताह, महात्माजी के हल्ले के कारण या क्यों, कौन जाने !···

तब बहुत रुपये पा रहे हो ?

सामुअर कहता है, सुना है तो सात सौ रुपये देंगे ! बहुत खूबसूरत हैं तुम्हारे दोनों बैल।····

तुम भी खरीदो इसी तरह गाड़ी, बैल।....

पतली कमरवा का गीत गाता हुआ सामुअर धांहर टोली का रास्ता पकड़ता है।

अकारण विरक्ति से ढोड़ाय का मन तिक्त हो जाता है।

रमिया ही पहले बोलती है। आज बाबा को थान में नहीं देखा मैंने ? रमिया जानती है कि बाबा के प्रसंग से ढोड़ाय का मन सदा आवाज देता है। सचमुच, दिन-भर की हलचल में बाबा की बात एक बार भी ढोड़ाय को याद नहीं आई है। वे गये कहाँ ? पुलिस की गाड़ी देखकर मोर को ही कहीं भाग गये होंगे। किन्तु अब तक तो लौट आना चाहिए था।

अभी लौट आयेंगे।

बाबा को खोज में ढोड़ाय कई बार थान जाता है।

रमिया से आज बातचीत अच्छी तरह नहीं जमती है। संध्या के बाद पछिया हवा के रुकने पर थान में लकड़ी जलाकर आग बना आता है। मरुआ सानकर लिट्टी की लोई बनाकर रखता है। अब बाबा आ चलें ! पैरों की आहट सुनाई पड़ रही है।

रमिया आकर पुकारती है—'बाबा तो अभी भी नहीं आये। तुम खा लो, घर चलकर।'

'काफी भूख लगी है क्या ?

रमिया लज्जित हो जाती है।

कहीं गंगा-स्नान करने तो नहीं गये हैं ? मिलिट्री ठाकुरबाड़ी में प्रसाद पाने की प्रतीक्षा में तो नहीं रह गये हैं वे ?

रमिया को ही पहले नजर आती है—बाबा की कम्बल तो नहीं है। कम्बल लेकर वे कहाँ जायेंगे। इस गर्मी में ? जरूर कहीं बाहर गये हैं कुछ दिनों के लिए। तो, जाते वक्त वे कह क्यों नहीं गये ?



ढोड़ाय का आत्म-दर्शन

बहुत दिन प्रतीक्षा करते रहने पर भी बाबा नहीं लौटते हैं। न मालूम क्यों ढोड़ाय अपने को इसके लिए उत्तरदायी मानता है। किन्तु, सचमुच क्या वह दोषी है ? बाबा पर उसका प्यार जरा भी शिथिल नहीं हुआ है, एक रत्ती भी नहीं। बाबा के प्रति अपने कर्तव्यों में उसने त्रुटि नहीं की है। उसके विवाह में भी बाबा को आपत्ति नहीं थी। फिर भी, वह समझता है कि उसके विवाह के साथ बाबा के चले जाने का

प्रत्यक्ष सम्पर्क है। लेकिन ऐसा दोष उसने क्या किया है कि जाने के पहले बाबा उससे कोई बात तक नहीं कर गये ?

रमिया कहती है—मेरे ही कारण शायद बाबा चले गये। ढोड़ाय उस बात को झट दबा लेता है। सचमुच रमिया को बाबा पसन्द नहीं कर सके थे। नहीं तो, उसके हाथ का छुआ हुआ अन्न उन्होंने क्यों नहीं खाया ? क्यों उसकी शादी के बाद से ही बाबा अन्य प्रकृति के हो गये ? इस धूल और धूप में न मालूम वे कहाँ घूमते फिर रहे हैं ? बचपन से ऐसा एक दिन भी नहीं हुआ था कि ढोड़ाय ने बाबा को नहीं देखा हो। इसके अलावे अगर यहाँ बाबा रहते तो वह एक बात थी, भेंट न होने पर भी मन में संतोष रहता कि सब मन से भेंट कर सकूंगा। बाबा के कुछ न करने पर भी ढोड़ाय के मन में यह भरोसा था कि उसके माथे पर एक आदमी है। संसार की आपत्ति के समय वे जरूर उसके बगल में आकर खड़े होते।...यह सब सोचते ही ढोड़ाय का मन खराब हो जाता है।...चले जाने का दिन आया है ढोड़ाय के लिए दुनिया में। सनीचरा भी चला गया धांङर टोली छोड़ कर—वह भी जाते समय भेंट कर नहीं गया। इतवारी वगैरह जिस दिन मिसिरजी के पास चौकीदारी टैक्स वाली दरख्वास्त पर अँगूठे की छाप देने आये थे, उसी दिन ढोड़ाय ने इतवारी से ही यह खबर सुनी है। जाने के पहले सनीचरा और उसकी स्त्री खूब रोयी। घर-द्वार देखते और पुक्का फाड़ कर रोते....।...सनीचरा के चले जाने के संवाद से भी उस दिन ढोड़ाय के अन्तर में मरोड़ उठी थी।...सनीचरा था इसीलिए ऐसा कर सका। ढोड़ाय तो ततमाटोली छोड़कर उस तरह चले जाने की कल्पना ही नहीं कर सकता है। बहुत अच्छा आदमी था वह। बहुत दिनों तक एक साथ दोनों ने पक्की पर काम किया है। काम के दरम्यान ही वे दोनों अपने हो गये थे। वह सम्पर्क किसी दिन छुटने को नहीं है।...इतवारी ने ही उस दिन यह खबर दी थी कि सामुअर ने कहा है कि साहब के निकट से पाये हुए रुपयों से वह भाड़े पर चलने वाली टमटम खरीदेगा—बैलगाड़ी नहीं। ढोड़ाय की बैलगाड़ी से भी वह बड़ी होनी चाहिए। तेरे साथ उसकी क्या ईर्ष्या, समझ में नहीं आता ! अब घोड़ा और टमटम खरीदे तो समझूं, उसके पहले कहीं नेपाल में जुआ खेलकर पैसे न उड़ा आवे, सभी तो सुलच्छन ही हैं सामुअर में।... ढोड़ाय सोचता है, सभी उसे ठुकरा रहे हैं, मुहल्ले के प्रमुख आदमी तक। उस दिन चौकीदारी टैक्स वाली बात हाकिम से कहने के बाद से ही बाबू लाल और दुखिया की माँ उसके यहाँ नहीं आते हैं। महतो की तो बात ही नहीं। रतिया छड़ीदार और बसुआ नायब भी पुलिस आने वाले दिन से ही उससे बोलते नहीं।...रहने को हैं सिर्फ उसकी रमिया,—रामप्यारी। रमिया के अन्दर उसने अपने को एकदम डुबा दिया है। दुनिया का सभी कुछ, आईने पर प्रकाश पड़ने जैसा बीच-बीच में झलक डालता है; और तत्काल ही न जाने कहाँ अदृश्य हो जाता है। रमिया का सब अच्छा है। हुक्का पकड़ने में, तम्बाकू का धुंआं छोड़ने में भी अन्य ततमानियों की अपेक्षा उसका अपना महत्त्व है। बड़ा अच्छा लगता है ढोड़ाय को।

और व्यंग ऐसा कर सकती है कि हँसते-हँसते नाकोदम हो जाना पड़ता है। ढोड़ाय के सामने गामुअर को वह 'मर्कट' कहती है। ऐसी मजाक की बातें करेगी वह। मर्कट के साथ वह कहती है, थोड़ी गलती कर गये भगवान्। अन्यमनस्क होकर गाते हुए भूल से लाल रंग उसके मुँह पर ही गिरा दिया।''' दोनों हँसते-हँसते लोटपोट हो जाते हैं। किन्तु इतनी हँसी—ढोड़ाय को न मालूम कैसी तो लगती है। वह रमिया को घर के अन्दर रहने कहता, पर कौन किसकी बात सुनता है! चौबीसों घंटे छूट-छूटकर उसे टहलते रहने की इच्छा होती है। हँसी-मजाक फौजी इशारे पर, मर्द को देख कर भी शर्म नहीं। ढोड़ाय दूसरी जगहों पर अपना जोर दिखा सकता है, पर रमिया के पास वह थोड़ा नरम है। पच्छिमवाली लड़की है वह, बुद्धि में उससे भी बड़ी है।—भला जोर दिखाया जा सकता है उस पर। मन रमिया में डूबा रहने पर भी उसकी दृष्टि का प्रसार हो रहा है, उसकी दुनिया बड़ी हो गई है—गाड़ी और बैल खरीदने के बाद से। पक्की पर काम करते समय उसकी भेंट होती थी दूर के बटोही के साथ। अभी वह स्वयं ही गाड़ी पर बोझ लादकर दूर-दूर चला जाता है—पाँच कोस, सात कोस, पूरब, पच्छिम, कढ़हागोला के गंगा-स्नान में, मधेली, कुरसा घाट के मेले में। जात-पाँत अलग होने से क्या होता है, हर जगह के लोगों की हालत एक-सी है। लेकिन यही है कि पच्छिम के गाँवों में महात्माजी का हल्ला और पुलिस का हल्ला दूसरी जगहों की अपेक्षा अधिक है। मुखिया को छोड़, टोले के अन्य सभी लोग दूर-दूरान्तर की खबर सुनने उसके पास आते हैं।' जब भी वह गाड़ी लेकर लौटता है।'''



महतो का विलाप

कुछ दिन से दुनिया ने जरूरत से ज्यादा तेज रफ्तार से चलना शुरू किया है। एक पर एक आघात लग रहा है ततमा टोली के समाज को। यह बात सहसा कब से शुरू हुई है, सो महतो को ठीक याद नहीं है—यही एक साल डेढ़ साल होगा, और क्या! लोगों के मन में किस चीज की आग लगी है, चारों तरफ किस चीज का प्रवाह आया है—महतो समझते ही नहीं, फिर उसके साथ ताल कैसे मिलायेंगे?

रोज शहर से नई खबर सुनकर आ रहे हैं ततमा लोग।''' अलोची घुड़सवार शहर के रास्ते पर फेरी लगा रहा है। पादरी साहब लोग चले जा रहे हैं। अब सिर्फ देशी पादरी रह जायेंगे जिरानिया में। किरिस्तान धांगरों का बिना पैसे का दूध बन्द हो जायगा रे, पादरी साहब लोग थे उनकी गाय, दूध देते थे वे। फूटकर रो ले, तेरी गायें चली जा रही हैं।....काले भवोंवाली पादरी मेमसाहब के अस्पताल में आज एकदम

सन्नाटा है। धांङर टोले के छः घर किरिस्तान फिर हिन्दू वन गये हैं। उन्होंने कहा है कि वे और गिरजों में नहीं जायेंगे—पादरी साहव लोग नौकरी नहीं जुटा देंगे, दूध नहीं देंगे तो फिर किरिस्तान किस लिए रहें।...सामुअर भी हिन्दू वना है, मिसिरजी ने उसका प्रायश्चित्त करवाया है,—भागलपुर से एक टोपीवाले साधु वावा आये हैं, यह काम करने के लिए। प्रायः सभी साहव चले गये। अव धांङर और किरिस्तान लोग मजा चखेंगे,—वाँध लो घर वैठ-वैठकर रंग-विरंगे खुशवूदार फूलों के तोड़े। सामुअर की उस कम्पनी का रंग भक्-भक् लगता है। तहसीलदार साहव कहने आये थे कि इस वार फिर घर-घर में 'लंवर' लिखना होगा—आदमी की गिनती के लिए। उस वार तो गिनती के वाद गाँव का आधा उजड़ गया था बीमारी से, फिर भी वुरे में अच्छा हुआ कि अधिकांश मुसलमान ही मरे थे। अवकी देखो क्या होता है। गिनती के समय कोई कुछ नहीं कहना तहसीलदार को। करने दो साला जो कर सके, एस० डी० ओ० साहव के पास तो उसके विरुद्ध चौकीदारी का दरख्वास्त दिया ही हुआ है। क्या हुआ उस दरख्वास्त का, नहीं समझता! ढोड़ाय अभी क्यों न जाय प्यारे हाकिम के पास, यह वात कहते ही अनिरुद्ध मोख्तार कहता है कि महात्माजी के हल्ले में हाकिम साहव को वक्त नहीं है यह देखने का, जैसी सरकार वैसा ही उसका हाकिम—महात्माजी के चेलों ने ठीक ही कहा है। ...समाज में कोई वात ही नहीं माने, किसी का कहना कोई न सुने, तो समाज कैसे चल सकता है? ढोड़ाय का दल कहता है—किसकी वात सुनेंगे हम? उस रतिया छड़ीदार और वसुआ नायव की? दोनों ही तो दफादार के खुफिया

टोली आये थे। उन्हें फिर न्योता देकर ले जाने आये थे। मैंने कितना समझाया — बाबू-भईया लोग सभी कह रहे हैं। कभी तो 'भगवती थान' में चढ़ नहीं सकते थे, तो अब चढ़ सके हो। किसी माईजी ने पान चीरकर दो टुकड़े किये कि उपद्रव मचा दिया। अरे ढोढ़ाय, तेरे राजी होते ही तो तेरे ये हाँ में हाँ मिलाने वाले शागिर्द लोग सभी राजी हो जायेंगे। इस बात पर सभी पुकार उठे। अच्छा बाबा, जो अच्छा समझो, वही करो! बाबू-भईया लोगों के पास अपने टोले की इज्जत लेकिन तुम लोगों ने खूब रखी। फिर मुझे सुनाया भी गया कि रतिया छड़ीदार महात्माजी के चेलों के खिलाफ जो गवाही देंगे, उससे टोले की इज्जत बढ़ेगी? उसे बन्द करने के महतो तुम नहीं हो। बाबू-भईया लोगों के पैर चटवाने भर के महतो तुम हो।

""नहीं, नहीं, इस महतोगिरी में न तो पहले जैसा पैसा है, न सम्मान ही और न एक क्षण के लिए कभी शांति।""नायब लोगों तक का कोई ठीक-ठिकाना नहीं है। उनमें कौन कब किस पक्ष में है, समझना कठिन है। रमिया के उस लोटा लेकर मैदान जाने के मामले में सभी महतो के विरुद्ध चले गये थे, इसीलिए महतो ने बात ही पंचायत में नहीं उठायी। चौकीदारी टैक्स के मामले में सभी नायब बाबू लाल के विरुद्ध हैं।""अब किसे हाथ में रखूँ? किसे साथ लेकर चलूँ? ""और, समस्या क्या सिर्फ एक ही है? ततमा टोली से लोग चले जा रहे हैं। बसुआ की बहन मुसलमान के साथ भाग गई। हरिया अपनी बेटी का ब्याह दे आया है मालदह जिले में—रुपयों की लालच में। और कह रहा है कि वह वहीं चला जायगा खेतीबारी करने। मेरे अपने गुदर ने शुरू किया है मुंगेरिया ततमा राज-मिस्त्रियों को ईंट-मसाले पहुँचाने का काम। शायद वह चला जायेगा मुंगेरिया ततमा लोगों के गाँव मरगामा।"" 'मुट्ठी के अन्दर से सब फिसल कर निकले जा रहे हैं। किसे-किसे वे रोकेंगे? ""' यही देखो न, ढोढ़ाय के दल ने फिर एक नया काण्ड खड़ा किया है। यह जो हरखू का बाप है—जो तराई के फूल से भरे हुए छप्पर के बगल में, तेल लगाकर नंग-धड़ंग दिन भर पड़ा रहता था, उसे कई दिन हुए गोसाईं ने उठा लिया। बड़ा अच्छा हुआ है। ततमा टोली के बूढ़े-बूढ़ी तो मरना नहीं जानते हैं। डाइन का जोर छोटे बच्चों पर ही चलता है न। जनेऊ लेने के बाद से ही ढोढ़ाय का दल हल्ला कर रहा है कि वे 'तेरहा' करेंगे, 'तिरसा' नहीं। बूढ़े आदमी न मरने से गाँव भर के आदमी सर मुड़वाने का मौका नहीं पाते हैं। इतने दिनों के अन्दर केवल एक मरा था बूढ़ा महवीरा, सो भी साँप को काट से। इसीलिए उसके किरिया-करम की जरूरत नहीं हुई थी। अब यह ढोढ़ाय का दौनान दल तेरहवें दिन गोलमाल करेंगे। सो होने नहीं दूँगा। *किससे क्या होता है, सो खबर रखते हो* तुम लोग? इधर तो खूब फर-फर, फर-फर, करते हैं। पितर-पुरुषों को पानी चढ़ाने में जहाँ कुछ भी इधर-उधर हुआ कि सभी 'उद्वास्तु' हो जाओगे, घर में बिना आग की आग लग जायेगी, कान्ही टिकिया की तरह पहले छप्पर पर दाग होगा, फिर देखोगे वहीं से धुआँ निकल रहा है—उन्हें छेड़ो नहीं, छेड़ो नहीं, ""महतो याद नहीं पाते हैं, ए—

साल के अन्दर ही क्या वे इतने बूढ़े हो गये हैं ?···जाने दो, मरने दो, जो होनी है सो होगी ही। 'तुम्हसन मिटहिं कि विधि के अंका।' तुम्हारे लिए क्या विधि का लिखा हुआ बदल जायेगा ?······पंचायत के जुर्माने के रुपयों का हिसाब माँगते हैं वे लोग ! आश्चर्य ! रातों-रात बदलती जा रही है ततमा टोली। मरनाधार के बालू के अन्दर जैसे उनके पाँव धँसते जा रहे हैं।····

अचानक रतिया छड़ीदार की बहू चिल्लाकर टोले को जाग्रत करती हैं। महतो उठ खड़े होते हैं। महतो को दो क्षण भी निश्चिन्त होकर बैठने का उपाय नहीं है आज-कल। जरूर छड़ीदार अपनी बहू को मार रहा है, आग-बाग लगती, तो वह दिखाई ही पड़ती।

सभी रतिया छड़ीदार के घर पर दौड़ जाते हैं। उसकी बहू ढिबरी लेकर सबों को दिखाती है कि छड़ीदार की भौंहों पर तनिक कट गया है। अभी भी थोड़ा-थोड़ा खून गिर रहा है। एक बांस में पीठ लगाकर वह बैठा हुआ है। वह शहर से लौट रहा था। जरा ज्यादा रात को ही वह आजकल लौटता है। जैसे ही वह कपिलदेव बाबू के आम के बगीचे में पहुँचा कि असंख्य ढेले उस पर आकर गिरने लगे।······छड़ीदार ने किसी आदमी को वहाँ नहीं देखा, तो फिर पहचानेगा कैसे ? लेकिन पैर की आहट उसने सुनी है।

····महात्माजी के चेले लोग मास-मछली, प्याज-लहसुन नहीं खाते हैं। वे क्या कभी किसी के देह पर हाथ उठा सकते हैं ?····लो फिर एक नया काण्ड हुआ टोले में। देख छड़ीदार, तू फिर ये सब बातें कहीं दफादार से न कह बैठना।····थाना-पुलिस की बात सोचते ही महतो के प्राण डर से सूखने लगते हैं।····ढोड़ाय-वोड़ाय सभी को तो देखता हूँ।····छड़ीदार की बहू तब भी गला फाड़कर चिल्ला रही है—हरामी, पूरे दल के हाथों में हथकड़ी पहनाऊँगी।··· सामुअर टुन-टुन करते घोड़ा-गाड़ी लेकर घर लौट रहा है। ततमा टोली होकर ही वह रोज लौटता है—शराब की दूकान बन्द होने पर। ओः ! तब काफी रात हो गई है। चलो सभी ! छड़ीदार को सोने दो। सोहरा के पेड़ का दूध लगा दिया गया है क्षत-स्थान पर—कल ही घाव सूख जायगा।



डाक-पिउन का दौत्य

हिन्दू होने के बाद से ततमा टोली में सामुअर की इज्जत बढ़ी है, नहीं तो घोड़ा-गाड़ी के मालिक होने पर भी किरिस्तान को कौन पूछता है ? महतो और नायब लोग भी सोचते हैं, एक समय वे लोग तो हिन्दू ही थे। किसी की जाति भी क्या जाने

की चीज है ? 'सोन-आँ नै जरदछै',—सोना जलाने से साफ ही होता है पहले की अपेक्षा। उस आदमी को पहले जितना खराब समझते थे, असल में वह उतना खराब नहीं है। वह जब सुबह गाड़ी लेकर शहर में जाता है, तो महतो, नायब, छड़ीदार—जिनके भी साथ भेंट हो जाती है, उन्हें ही वह गाड़ी पर चढ़ा लेता है। इसके पहले ततमा टोली में कोई कभी जीवन भर में घोड़े की गाड़ी पर चढ़ा था ? किरिस्तान सामुअर आजकल सबों का सामुअर भाई बन गया है। यहाँ तक कि महतो-पत्नी ने भी उसे एक दिन अमले का अँचार खिलाया है। गाड़ी लेकर शहर जाने और लौटने के समय वह ततमा-टोली से होकर ही गुजरता है, और सबों के साथ आजकल वह खूब दोस्ती जमाना चाहता है। पादरी साहब के बारे में वह ऐसी रस-भरी कहानियाँ सुनाता है कि लोग हँसकर लोट-पोट होते हैं।

'नहीं, तू मनगढ़न्त किस्सा सुना रहा है सामुअर।'

'ले फिर दूसरा सुन।' यह कहकर वह काला घघरा पहनी हुई मेम-पादरियों के विषय में एक दूसरा अविश्वसनीय किस्सा सुनाता है।

वह जब भी गाड़ी लेकर इस रास्ते से गुजरता है, एक बार हाँक दे जाता है—'ढोड़ाय, घर में हो क्या ?'

रमिया भीतर से जवाब देती है—'नहीं, वह बैलगाड़ी लेकर निकला है एकदम सवेरे, अभी भी लौटने का नाम नहीं है।'

ढोड़ाय काम में गया है या नहीं, वह तो बाहर गाड़ी-बैल हैं या नहीं, यही देखकर समझा जा सकता है। फिर भी उसका एक बार पूछना होता ही है। यह महतो-पत्नी की आँखों में भी जाने कैसा तो लगता है।

सामुअर के साथ इतना मिलना-जुलना ढोड़ाय को पसन्द नहीं।

मजाक की बातें कहकर सामुअर जैसे रमिया को हँसा सकता है, वैसे ढोड़ाय नहीं। यह ढोड़ाय समझता है और इसके लिए वह मन-ही-मन संकुचित हो जाता है। उसकी बातें सुनकर रमिया कभी हँसी है—ऐसा ढोड़ाय को याद नहीं आता, लेकिन सामुअर ऐसी बातें करता है कि उन्हें सुनकर रमिया हँसती-हँसती लोट-पोट हो जाती है। इतना आना-जाना ढोड़ाय को अच्छा नहीं लगता है। सामुअर ने बचपन से साहब लोगों के यहाँ कितने अंडे-चिड़िया उड़ाये हैं—यह सोचते ही ढोड़ाय को घृणा होने लगती है। लहसुन पचाने के बाद भी डकार में लहसुन की महक रह जाती है, और उस सामुअर ने तो न मालूम कितने अखाद्य-कुखाद्य खाये हैं इसके पहले, कुछ अंश क्या अभी भी उसके शरीर में शेष नहीं है ? और उसे ही लेकर अभी इतना मिलना-जुलना।...

रमिया फिर अकेली है।

छड़ीदार के घर से ढोड़ाय कितनी बातें सोचता हुआ आता है।

घर के दरवाजे पर सामुअर ने गाड़ी रोकी है। इसलिए सहसा घोड़े के गले के घुंघरू की आवाज सुनाई नहीं पड़ रही थी।

रमिया ही पहले वोलती है—'सुन लो इससे, डाक-पिउन तुम्हें खोज रहा था।'

'डाक-पिउन, क्यों ?'

सामुअर कहता है कि डाक-पिउन उससे शहर में ढोड़ाय दास नाम के व्यक्ति का पता पूछ रहा था। तुम्हारे नाम से 'मनियाडर' 'मनियादर'····

'हाँ, हाँ, रुपया !'

डाक-पिउन कहीं रुपया भी देता है ? ढोड़ाय क्या करेगा, सोच नहीं पाता। रुपया कौन भेज सकता है ? कितने रुपये, सो भी सामुअर कह नहीं सकता। सिर्फ डाक-पिउन ने पूछा था—यही कह सकता है।

सामुअर के चले जाने पर रमिया पूछती है—''वावा ने तो नहीं भेजा है ?'

सवों को यही वात मालूम हुई थी—ढोड़ाय को भी, सामुअर को भी। रुपये का प्रसंग छिड़ते ही क्या ढोड़ाय को अन्य किसी की वात याद आ सकती है ? सिर्फ ढोड़ाय क्यों, सभी ततमा जानते हैं कि कमाने से होता है आने, रुपया नहीं। और रुपया लोगों के पास आते हैं दैवात्—रामजी की कृपादृष्टि होने से। वावा ने भेजा है, जरूर वावा ने ही भेजा है। तो वावा ने अभी भी उसे याद रखा है।

ततमा टोली में हल्ला हो जाता है—'मनियादर, मनियादर।' महतो और नायवों के कलेजे के भीतर कुछ 'कर्-कर्' कर उठता है—ढोड़ाय ने अब डाकिया मँगवाया टोले के अन्दर ?

अंगना-भर भोटाहा-दल सम्भ्रम रमिया से कहानी सुनता है। उस रात न रमिया सो सकी और न ढोड़ाय। सारी रात वे रुपयों की ही चर्चा करते, और वावा की वातें करते रहे।

सांझ को डाक-पिउन आता है। उस वक्त मिसिरजी डाक-पिउन की प्रतीक्षा करते हुए ऊबकर घर लौटने की तैयारी कर रहे थे। वावू लाल के घर से कजरौती आती है। पिउन तीन रुपये थैले के अन्दर से निकालकर देता है, और 'मानी-आटर' फाड़कर एक टुकड़ा कागज देता है।

विलायती 'लालटेन' के लिए वावा ने अयोध्याजी से तीन रुपये भेजे हैं। कागज में कुछ नहीं लिखा हुआ है। वावा के हाथ का छुआ हुआ पत्र—ढोड़ाय कितनी तरह से उलट-पलट कर देखता है। कितने छुटपन की याद उसे आती है। रमिया के अलक्ष्य में वह चिट्ठी सूंघकर देखता है—वावा की जटा की गंध उसमें मिलती है या नहीं। फिर यत्न के साथ उसे रमिया के वनाये हुए मूंज की 'पोहती' में रख देता है।

महतो कहते हैं—'वड़े खर्च का रास्ता है,—अर्थात् 'लालटेन' जलाने में वड़ा खर्च है। वावा ने तेरा भला किया था या बुरा, कहना कठिन है।'

छड़ीदार सहमति प्रकट करता है—'जिसे दिवालिया वनाना हो, उसे जमींदार लोग हाथी खरीद देते हैं। फिर सम्हालो उसका खर्च।'

हरिया का लड़का कहता है—यह सब है पंचायत की तरफ से खरीदकर रखने

की चीज ! दस-पाँच लोगों के काम-काज में पंचायत का जरा उपकार होता है। नौ-जवानों का दल कहता है—अरे रखो भी ! पंचायत की 'सतरंजी' खरीदने की बात हम लोग बचपन से सुनते आ रहे हैं, सो आज तक नहीं खरीदी गयी। फिर 'विलायती लालटेन' जलाकर जोगीरा और बलवाही का नाच नचायेंगे पंच लोग ! इतने रुपये जुर्माने में आते हैं, सो सब क्या होवे हैं ?

महतो यह प्रसंग दबा देना चाहते हैं।

'ढोड़ाय अच्छी तरह देखभाल कर लालटेन खरीदना। कांच बजा लेना—ठनन् ! ठनन् !!'

'मैं क्या उतना पहचानता हूँ ? महतो, नायब, तुम-ही-लोग क्यों नहीं चलते कल सुबह विलायती लालटेन का सौदा कर देने ?'

रतिया छड़ीदार आँख मारकर महतो को न मालूम क्या तो इशारा करता है।

'नहीं, नहीं, कल हम लोगों को सुविधा नहीं होगी, एक काम है।'

'अरे। फट्-फट् करते हो, तुम लोग तो मेरे ठेहुने की उम्र के हो। मेरे माथे का केश धूप में नहीं पका है। हम लोगों को हटाना चाह रहे हो कल सुबह हरमू के बाप का तेरहीं करने के मतलब से ! इतना भी क्या मैं नहीं समझता ?'·····

'ढोड़ाय ! तुम ही बल्कि जाना सामुअर की गाड़ी में—कल भोर को जब वह काम पर जायेगा। उसने साहबों के यहाँ अनेकों विलायती लालटेन जलाये हैं। और, गाड़ी पर जाने से पैसे भी देगा मजदूर।'



तेरहीं-तिरसा का द्वन्द्व

महतो के कहने के अनुसार ढोड़ाय सामुअर के साथ लालटेन खरीदने ही जाता है, पर सुबह नहीं, अपराह्न में। सुबह क्या ढोड़ाय जा सकता है ? बूढ़े बनने को चाहे जितना ही चालाक समझें, उनके अंगुली उठाते ही ढोड़ाय का दल उनके सारे मतलबों को समझ जाता है।

खबरदार ढोड़ाय, सुबह कहीं नहीं जाना। वहाँ, दो पांच-पांच रुपये भैंसों का ताल सम्हालना—पांच रुपये, छड़ीदार को भी दिये—छः—वह हमलोगों से नहीं होगा।

दूसरे दिन सुबह, लम्बा और गाड़ियों के बीच माया मुड़वा का पर्व देख होता है। तत्मा लोगों के क्रिया-कलाप में पूरा नाक को महतो और नायब लोगों ने मना कर दिया था—हरमू के बाप के तेरहीं में किसी का भी घर न जूठना। ढोड़ाय पकड़-

कर ले आता है मरगामा से उस नाऊ के लड़के को।

वह छोकरा नाऊ क्या ढोड़ाय न होता, तो और किसी की बात सुनता ?—ढोड़ाय गाड़ी पर माल लेकर गया था कोशी-स्नान के मेले में। मेले में भेंट होती है इस नाऊ के लड़के से। मेले में खरीदी हुई उसकी चक्की को ढोड़ाय ने ही अपनी गाड़ी पर लादकर बिना भाड़ा लिये उसके घर पर पहुँचा दिया था, फिर नाऊ क्या ढोड़ाय की बात न रखता ?

मरगामा के मुंगेरिया ततमा लोगों के पुरोहित को भी ढोड़ाय ने ठीक कर रखा था, पर अन्त में उसकी जरूरत नहीं हुई। मिसिरजी ही राजी हो गये थे। रतिया छड़ीदार ने मिसिरजी को भय दिखाया था कि वह 'थान' में उनका रामायण-पाठ बन्द कर देगा। ढोड़ाय ने उत्तर में कहा था—'दफादार को कहकर रामायण-पाठ बन्द करवाओगे क्या छड़ीदार ?' सबों के हँस पड़ने के कारण छड़ीदार उस बात का अच्छी तरह उत्तर न दे सका था।

भाग्य था कि सामुअर के साथ ढोड़ाय लालटेन खरीदने गया था। नहीं तो वह ठगा ही गया था। सामुअर था इसलिए बतला दिया कि बत्ती में दूकानदार लोग बड़ा ठगते हैं,—नीले कोर वाली बत्ती लेना। उसी रात सामुअर ढोड़ाय के घर पर बिलायती लालटेन जला देता है। भीड़ अधिक नहीं हुई थी। महतो-नायबों के दल बिगड़े हुए हैं! वे ढोड़ाय के यहाँ आ ही नहीं सकते हैं। और ढोड़ाय का दल था हरखू के घर पर तेरहीं के भोज के आयोजन में व्यस्त।

रमिया कहती है—'एकदम दिन की तरह प्रकाश हुआ है न ?' सामुअर ढोड़ाय को कहता है—ऐसी बत्ती खरीदी तूने, एकदम दूकान की बत्ती है यह ! अब खोल दे एक दूकान। तेरी बहू होगी मोदियाइन, सौदा तौलेगी—'रामे राम, राम, रामे राम दो, दुये दू-तीन।'

रमिया हँसकर लोट पड़ती है।

सामुअर की यह रसिकता ढोड़ाय को जरा भी पसन्द नहीं। कुछ बोल भी नहीं सकता है—इतनी तकलीफ स्वीकार कर उसने लालटेन पसन्द कर दिया है। बाबा की बात ढोड़ाय को याद आ रही है। उन्हीं के दिये हुए बिलायती लालटेन से उसका आँगन आलोकित हो गया है। उन्हीं के तो सब दिये हुए हैं—घर-द्वार, गाड़ी, बैल, रमिया—ढोड़ाय को अपना कहने को इस दुनियाँ में जो कुछ है। रामजी के राज्य में जाकर भी बाबा ढोढ़ाय को नहीं भूल सके हैं। और उसने बाबा की बात सोची ही कितने दिन ? सामुअर की बातों पर खिल-खिलाकर हँसने वाली इस लड़की के लिए गत एक महीने के अन्दर गोसाईं थान जाने की बात एक बार भी याद नहीं आई है।

पहले इस लड़की का थान में दिये जलाने का कैसा चाव था ! अभी उसे याद भी नहीं पड़ता है। नहीं, नहीं, वह बेकार ही रमिया पर दोष लाद रहा है, आँगन के

तुलसी पिंडा पर तो वह रोज दीया जलाती है। घर के बाहर जाने को वही तो मना करता है।

सामुभर न मालूम मजाक की कौन-सी बात कह रहा है। और, रमिया उन बातों को मुँह बाकर निगल रही है। ढोड़ाय अगर भी वैसी बातें कर सकता।

सहसा वह बत्ती लेकर उठ पड़ता है।

'चलो, बाबा के थान में एक दफा बत्ती दिखाकर फिर इसे ले जाना होगा हररू के भोज में। बाबा को दी हुई चीज दूसरों के काम में भी लगे।'

टोले के लोगों को अपना विलायती लालटेन दिखाने की इच्छावाली बात वह मन में ही रखता है।

काफी लोग आये हैं हररू के भोज में। बहुत-से लोग खाने को बैठे हैं। और कुछ लोग दूसरे दल में खायेंगे। महतो, नायबों की ऐसी पराजय की बात की ढोड़ाय और अन्य लोग कल्पना भी नहीं कर सके थे। ढोड़ाय की ही जय-जयकार है। उसी का नाम सबके मुँह में है। उसी का लाया हुआ नाऊ, उसी का विलायती लालटेन, वही तो सब है, बाकी लोग पहाड़ की आड़ में हैं।…सबों के मुख से अपनी प्रशंसा सुनते-सुनते अपने को वह महतो के समान बड़ा समझने लगता है। आँखों के सामने स्वप्न-राज्य के चित्र इकट्ठे हो रहे हैं—महतो के मर जाने पर मुहल्ले के लोगों ने उसे ही महतो बनाया है, .. उसने जुर्माने के पैसों से ततमा टोली के लिए सतरंजी खरीदी है। भजन के दल के लिए ढोलक खरीदा है, भोज के लिए कड़ाही खरीदी है, रतिया छड़ीदार को बरखास्त कर हररू को छड़ीदार बनाया है, बाबा आकर देखेंगे कि उनका ढोड़ाय गाँव का महतो बन गया है। रमिया को सब हाँक देंगे महतो-पत्नी कहकर, सचमुच आज-कल वह गृहिणी हो उठी है...सहसा याद आती है, वह बेचारी घर में अकेली है उसका मन झुसुर-फुसुर करता है।

अँचाने के बाद ढोड़ाय कहता है—'बत्ती अभी यहीं रहे, दूसरे दल के खाने के समय काम आयेगी।'

'ढोड़ाय को और धीरज नहीं धरा जा रहा है'—सभी हँस पड़ते हैं।



तेरहाँ-यज्ञ के कुलपति का स्त्री-निग्रह

ढोड़ाय दनदनाता हुआ घर की ओर आ रहा है। भोज वाले मकान का हल्ला कुछ-कुछ सुनाई पड़ रहा है। चारों तरफ काफी कुहासा हो गया है। कातिक महीना खत्म हो गया है, परसों शायद छठ है। रमिया शायद अब तक सो गई होगी—अकेली-

और कितनी देर तक जगकर बैठी रहती। पैरों के नीचे बालू काफी ठंडी है। ओस गिरने से रास्ते की घास भींग गई है। ठंड से देह में कँपकँपी-सी हो रही है। उसके हाथ में भोजखाने की 'मुखसुध' है! सोई हुई रमिया के मुंह में वह एक टुकड़ा डालकर तब उसे जगायेगा। सामने वह क्या है? हाथी-सा विशाल! वही कहीं गाड़ी है, सामुअर की! घोड़े को खोल दिया है, रास्ते के किनारे, वह चर रहा है। तब सामुअर गया नहीं है, इतनी रात को भी यहाँ है। उसका खून खौल उठता है। साँझ को आया है, वह अभी भी बातें कर रहा है? थोड़ी-सी भी शर्म रहनी चाहिए। भला इतनी बुद्धि और ज्ञान रमिया को नहीं है? मुहल्ले-टोले के लोग क्या कहेंगे—सामुअर जैसे लाखैरे के साथ अकेली इतनी रात तक बातें करना! दरवाजे पर से देखता है आँगन में कोई नहीं है। उन लोगों की बातचीत सुनाई पड़ रही है। एक जर्रा भी समझ में नहीं आता है। रमिया के हँसने की आवाज आ रही है—वह खिलखिला कर हँसी। ढोड़ाय को लेकर ही शायद वे हँस रहे हैं।

घर में प्रवेश कर ढोड़ाय देखता है कि वे दालान पर बैठकर बात-चीत कर रहे हैं। तुलसी-तल के दीप के धीमे प्रकाश में उन्हें साफ दीख नहीं पड़ता है। ढोड़ाय के प्रवेश करते ही सामुअर उठ खड़ा होता है। 'तेरे बहू का पहरा दे रहा था। यह आये तो यह आये। तेरे लिए बहुत देर से इन्तजार कर रहा हूँ; विलायती लानटेन रख आया है, देखता हूँ?'

ढोड़ाय उसकी बातों का जवाब नहीं देता है। गंभीर-भाव से वह मिट्टी के कलस से पानी लेकर पैर धोने बैठता है।

'अच्छा तो मैं अब चला। काफी रात हो गई?'—ढोड़ाय अथवा रमिया, किसी ने उत्तर नहीं दिया।

सामुअर से बात-चीत करने से ढोड़ाय बिगड़ता है—यह रमिया अच्छी तरह जानती है! कितने दिन ढोड़ाय ने इस सम्बन्ध में उसे कहा भी है। पर रमिया उन सब बातों को महत्त्व नहीं देती। किन्तु, आज ढोड़ाय का भाव जैसे कुछ अधिक गम्भीर-सा लगता है। रमिया मन-ही-मन हँसती है। सोने के बाद जरा अच्छी तरह बातें करने से ही क्रोध उतर जायगा, बाबू का!

सामुअर के चले जाते ही ढोड़ाय घर में घुसता है।

'रमिया'

गले की आवाज से ही रमिया समझती है कि उसके अन्दाज से भी अधिक गुस्सा आज ढोड़ाय को है, तेरहाँ की लड़ाई जीतकर आया है न, इसीलिए।

'फिर अगर किसी दिन सामुअर के साथ बातचीत करते देखा तो खाल खींच लूंगा।'

'क्यों?'

'फिर क्यों!' ढोड़ाय के सभी अंगों में जैसे आग जल उठती है। रमिया की झोंटी

पकड़कर उसके मुँह और माथे पर कई थप्पड़-तमाचे मारता है। 'पच्छिमी मिसिर जी की तरह बातें, और ततमा टोली के भोटाहा की तरह चाल! मुँह पर जवाब! चाबुक मारकर ठंडा कर दूँगा। आँगन में नहीं हुआ, तो दालान पर उठकर हँसी-दिल्लगी कर रहे थे अबतक!'

रमिया पहले हतबुद्धि-सी हो गई। ढोड़ाय उस पर हाथ उठाने का साहस कर सकता है, यह उसने स्वप्न में भी नहीं सोचा था। उसके माथे पर खून चढ़ जाता है। वह उठ खड़ी होती है। 'मुझको यहाँ की सुन्दर ततमानी जैसी खुरपी पकड़नेवाली कमजोर भोटाहा न समझना। बाबा के पैसे से फूलकर भाथी हुआ है। मिसमंगे को पैसा हुआ है, और बाबू-भइया लोगों की तरह बहू को घर में बन्दकर रखने का साध हुआ है। वह करना हो तो बाबू-भइया लोगों की तरह बर्ताव सीख।'....गालियाँ देती रमिया घर से बाहर निकल जाती है। 'ऐसे मर्द के साथ घर करना, माँ-बाप ने नहीं सिखाया है।'...

'तेरे माँ-बाप की बात खूब जानी हुई है। रह न जाकर सामुअर के साथ। कुछ ही देर बाद तो कुत्ती की तरह फिर लौट आयगी, यह जानता हूँ।'....

धीरे-धीरे टोले के लोग जमने लगते हैं। ततमा टोली के सभी घरों में ऐसा होता है। खास कर धान-कटनी के पहले भोटाहा लोगों पर मारपीट कुछ अधिक बढ़ जाता है। मुहल्ले के लोग आकर दोनों को शान्त कर देते हैं। कुछ देर बाद दोनों मजे में खा-पीकर सो जाते हैं, जैसे कुछ हुआ ही नहीं। किन्तु ढोड़ाय के घर पर मारना-पीटना प्रथम बार हुआ है, इसलिए पड़ोसियों में कौतूहल जरा ज्यादा है। किसी के प्रश्न का जवाब न देकर ढोड़ाय सो जाता है। मुहल्ले के लोगों की आलोचना से वह समझता है कि रमिया; रबिया के घर पर जाकर खूब हल्ला कर रही है। कुछ देर के बाद ही ढोड़ाय का आँगन खाली हो जाता है।

कुहासा और भी अधिक घना होकर ततमा टोली को दबोच लेता है।



अग्नि-परीक्षा

दूसरे दिन सुबह भी रमिया को न आते देख अन्त में ढोड़ाय रबिया के घर पर आता है। अनुताप से उस वक्त उसका मन भर गया है। भोंक के वश में वह क्या काण्ड कर बैठा है रात को! कल छठ-पर्व है। रमिया का आज उपवास है। रात रमिया ने खाया था तो? खाया कहाँ, साँझ से ही तो सामुअर घर में बैठा था।

रबिया-बहू कहती है कि रमिया को लेकर रबिया गया है महतो के पास एक-

दम भोरे, रमिया पंचायत करावेगी। रविया-वहू को बात करने का अवसर नहीं है, छठ परव के आयोजन के तमाम काम पड़े हुए हैं, साँस छोड़ने का समय वह नहीं पा रही है।

ढोड़ाय की आत्म-मर्यादा पर आघात लगता है—केवल आत्म-मर्यादा पर ही नहीं, आत्म-विश्वास पर भी।

कैसी अक्ल है रमिया की! अपनी घरेलू बातें लेकर वह गई है महतो-नायबों के पास। साधारण चीज को इतना आगे बढ़ाने की क्या जरूरत थी? कल छठ-परब है, सो क्या रमिया भूल गई है? उन लोगों के नये संसार का यह पहला छठ-परब है। क्या-क्या लाना होगा, सो क्या ढोड़ाय जानता भी है? सोहागिन गई छठ-परव के समय घर के बाहर ढोड़ाय के विरुद्ध नालिश करने। उसकी रंगीन दुनियाँ अस्पष्ट अंधकार में डूबती जा रही है।

ढोड़ाय उस दिन गाड़ी लेकर काम पर नहीं निकलता है,—रमिया घर लौटकर अगर उसे देख न पाय! रमिया के घर लौटते ही वह रमिया से माफी माँगेगा। ओठ के कोने में हँसी लाकर रमिया बैठेगी चूल्हे में आग झोंकने,—ढोड़ाय के लिए भात पकाने। नहीं, नहीं, आज भात पकाना क्यों? स्नान कर रमिया बैठेगी गेहूँ धोने—छठ-परब के 'ठकुआ' के लिए, ढोड़ाय डांगर टोली से ले आयेगा डाभनीबू, ऊख, सावजी की दूकान से लायेगा गुड़ और ठकुआ छानने के लिए तेल...

आँगन में बैठकर ढोड़ाय आसमान-जमीन की बात सोचता है। समय बीतना नहीं चाहता। बहुत अकेलापन महसूस होता है। रमिया, रमिया, रमिया। घास का काठ, गोबर-मिट्टी से लिपा तुलसी-चौरा, साफ पोते हुए चूल्हे,—घर की प्रत्येक वस्तु में रमिया मिली हुई है!

बाहर बैलों की डकार आती है। वही तो, आज बैलों को पानी और सानी-भुसी नहीं दिया गया है। एकदम भूल गया था वह।

ढोड़ाय घबड़ाकर उठता है।

बैलों को खिलाते समय रतिया छड़ीदार खबर दे जाता है कि रात को महतो के घर पर रमिया की नालिश से पंचायत होगी—उसे उपस्थित होने को कहा जाता है।

तेरहाँ की तरह दस आदमी का अगर मामला होता, तो ढोड़ाय महतो-नायबों की इच्छा के विरुद्ध जा सकता था, पर यह नालिश तो रमिया की है। ढोड़ाय ने दोष किया है—पंचायत के सम्मुख वह सब दोष कबूल कर लेगा। खाली मकान के अन्दर वह हाँफ गया है। कल रात को जब रमिया मरनाधार में छठ का दीया भसाने जायेगी, तब उसके साथ जाने के लिए वह डोली बुला लायेगा मरगामा से—जैसा कि बाबू भइया लोगों के छठ के दीये के साथ जाता है, उसके लिए चाहे आठ आने, दस आने जो भी खर्च हों। पच्छिम की लड़की के छठ की छटा देखें ततमा टोली की झोटाहा। रमिया पंचायत से लौटकर कब कौन काम करेगी?

सानी मिट्टी पड़ी हुई है—उससे कपड़ों को फींचेगी, गोबर से घर और आँगन लीपेगी, गेहूँ पीसेगी,—कितने काम हैं छठ-परब के ! रमिया का काम हल्का करने के लिए वह स्वयं ही गोबर-मिट्टी से आँगन पोतने बैठ जाता है। रमिया घर लौटकर अवाक् हो जायेगी। दलान पोतते समय उसे याद आ जाती है कि रात उसी जगह रमिया बैठी थी। यहाँ सामुअर बैठा था, उस जगह पर कुछ अधिक मात्रा में वह गोबर लगा देता है—वही साला तो अनिष्टों की जड़ है। उसकी बात ढोड़ाय भूलना चाहता है।

साँझ के आलोक में रंगीन हो उठता है ढोड़ाय के अपने हाथों का लिपा हुआ साफ चमकदार आँगन। तुलसी-चौरा पर वह अनभ्यस्त हाथों से दीया बार देता है, उसमें भरकर तेल देता है, ताकि रमिया के लौटने तक वह जलता रहे। थोड़ा-सा तेल वह शीशी में रख भी देता है, बिना तेल के रमिया एक दिन भी स्नान नहीं कर सकती है।....

उसके बाद रामजी का नाम लेकर वह घर से निकल पड़ता है। महतो के घर पर पहुँच कर देखता है महतो और नायब लोग सभी आ गये हैं। उसने सोचा था कि वह रमिया को भी वहाँ देखेगा, पर रमिया वहाँ नहीं है। शायद महतो के घर के भीतर फुलभरिया के साथ वह बात-चीत कर रही है। ढोड़ाय को सबसे अधिक आश्चर्य होता है वहाँ सामुअर को देखकर। वह किरिस्तान बदमाश महतो-नायबों के बगल में चुपचाप बगुला भगत की तरह क्यों बैठा है ? रमिया ने कल सामुअर को साक्षी माना है ? तब तो सामुअर को लेकर ही कल रात वाला झगड़ा हुआ है—यह बात निश्चय ही सभी जान गये हैं। शर्म के मारे ढोड़ाय की गर्दन झुक जाती है।

'बैठो ढोड़ाय !' छड़ीदार जगह दिखा देता है। 'झटपट पंचायत का काम समाप्त करना होगा, समझे ढोड़ाय ! कल छठ है। रमिया कहाँ है ?'

बाहर से रबिया की बहू जवाब देती है—'दिन भर छठ का उपवास कर उसकी तबीयत खराब हुई है। साँझ को भी नहीं खाया है। उस पर पाँव भारी है। हम लोगों ने कहा कि तुम्हें और वहाँ जाने की जरूरत नहीं है, हम लोग तो रहेंगी ही। महतो और नायब लोगों को तो सभी बातें सुबह ही कह आई हो। घर में बैठ कर परब के आँटा-गुड़, फल-मूल पर पहरा दो।'''सुरुज महाराज की चीजें हैं, उन्हें तो घर के अन्दर ले जाकर नहीं रख सकती हैं हम।'

'अच्छा, अच्छा ! ठीक है।'

उसके बाद ढोड़ाय का विचार शुरू होता है। पाँव भारी। ढोड़ाय को आश्चर्य लगता है। ढोड़ाय स्वीकार करता है कि उसने गुस्से में आकर रमिया को मारा है।

'चौबीसों घंटे मेरी लड़की की गंजना करता है। घर के बाहर जाने नहीं देता है। किसी मर्द से बातचीत करने पर मारता है—पाँव भारी पर भी ! तुम लोग पंच

हो, जाति के मालिक हो। उसके दैवात् पाये हुए पैसों की गर्मी शान्त कर दो।'···रोना शुरू कर देती है रविया की वहू।

महतो और नायव लोग सभी उसके खिलाफ हैं—यह ढोड़ाय की अपेक्षा कोई भी अच्छी तरह नहीं जानता है। क्रोध के असली कारणों को ढोड़ाय जानता है। फिर भी पंचलोग जो सजा देंगे वह नतशिर होकर ग्रहण करने को राजी है। अब से वह रमिया पर शक न करने की चेष्टा करेगा। उसे सभी जगह वह जाने देगा। उसका पांव भारी है, यह तो पहले उसके दिमाग में आया ही नहीं था।

वावू लाल इस प्रसंग का गतिमुख दूसरी ओर फेरने के लिए कहता है—पांव भारी है, फिर भी पच्छिमी लड़की का फर-फराना छूटता नहीं। दम्मा का रोगी तेतर खाँसता हुआ कहता है—'कहने को ही पच्छिम की लड़की है, पर हम लोगों की झोटाहा लोगों से भी अधम है।'

वाहर झोटाहा लोगों की चिल्लाहट अचानक वन्द हो जाती है। महतो अब वोलना शुरू करेंगे। चुप ! चुप हो सव।

'हम लोग तुम्हारी भलाई ही चाहते हैं ढोड़ाय।' सभी महतो की इस बात का समर्थन करते हैं—अरे ढोड़ाय तो हम ही लोगों का लड़का है।

ढोड़ाय अवाक् होकर सवके मुंह की ओर देखता है। महतो और नायब लोगों की वात का यह सुर उसने जीवन भर में नहीं सुना है और उसके अपने क्षेत्र में उसने उनसे किसी प्रकार की सहानुभूति की आशा नहीं की थी। वह कुछ भी नहीं समझ सकता। वावू लाल के मुंह पर ताकते ही वह आँखें नीची कर लेता है। हिसाब में गड़-वड़ हो जा रहा है ढोड़ाय को।

'पश्चिम की लड़की पचाना हम लोगों का काम नहीं है।'

वाहर से महतो-गृहिणी का कण्ठ-स्वर सुनाई पड़ता है। उस वार लोटा लेकर मैदान जाने वाली वात को तो नायव लोग एकदम पचा गये थे। माना, जवान लड़की देखकर ढोड़ाय उस वक्त उन्मत्त था, पर तुम लोग कैसे उस वक्त जाति की बेइज्जती घोर-घोरकर पी रहे थे ?

'तुमको किसने पंचायत में वोलने को कहा है ? छड़ीदार, हटा दो सवों को यहाँ से।' रविया-वहू चिल्लाती है—हम लोगों की लड़की को लेकर मामला हो और हम ही लोग नहीं सुनें ?

अच्छा, अच्छा ! रहने दो।

हाँ, देखना न ढोड़ाय ! शादी के पहले ही हम लोगों ने मना किया था। हाथी की तरह जवान लड़की है, पच्छिम के पानी की। 'का न करई अवला प्रवल·····' महतो के मुंह से वात छीनकर वावू लाल पाद-पूरण कर देता है—'केहि जग कालु न खाई।' वावू लाल सवको समझा देना चाहता है कि वह भी रामायण का सव कुछ जानता है।

दम्मा का रोगी तेतर भी रामायण के ज्ञान में किसी से पिछवाया हुआ नहीं

है। वह भी दुहराता है—

निज प्रतिबिम्बु बरुक गहि जाई।
जानि न जाइ नारी गति भाई॥

ढोड़ाय कुछ भी अन्दाज नहीं कर सकता है। महतो और नायब लोग आखिर कहना क्या चाहते हैं? कोई उसके विरुद्ध एक बात भी क्यों नहीं बोल रहे हैं? सभी रमिया के ही खिलाफ बोल रहे हैं। पंचायत के लोग इतने शान्त क्यों हैं? कोई उसे गालियाँ क्यों नहीं दे रहे हैं? ···'रमिया स्वयं आकर हम लोगों से कह गई है कि वह और किसी तरह तुम्हारे साथ नहीं रहेगी।' पंचायत के लोगों के चेहरे ढोड़ाय की आँखों के सामने से मिट जाते हैं। वह ठेहुनों के अन्दर मुँह छिपाकर बैठता है। भारी माथे को लेकर वह सीधा बैठ नहीं सक रहा है। एक गेहूँ पीसने वाली चक्की घूम रही है और उसी पर जैसे वह बैठा हो। जाँते की आवाज के बीच भी कानों में पहुँच रही है रबिया-बहू की क्रन्दन-मिश्रित बातों का स्रोत।

'ऐसा जुलम करता है ढोड़ाय मेरी बेटी पर। एक मिनट भी दम नहीं लेने देता है। बाहर आने नहीं देता है—फौजी इनारे तक नहीं, हँसने भी नहीं देता है। मेरी लड़की क्या सुग्गा है कि उसे पिंजरे में बन्द कर रखेगा? रोज मेरी लड़की मेरे पास रोती-पीटती थी। अनेक लात-झाड़ उसने सहा है, इस भिखारी के बेटे बड़े आदमी का। बाबू-भइया लोगों की माइजी लोग महात्माजी का नमक बेचती हैं जिरानिया के रास्ते में, और भला यह मेरी लड़की को घर में बन्द कर रखेगा? सातों युग भीख माँग कर बीते और आज हम लोगों को बड़ा विलायती लालटेन दिखाने आया है। चुप क्यों होऊँगी? मेरी पाँव भारी लड़की की हड्डी चूर किया है उसने मारकर, और मैं चुप होऊँगी? तुम लोग पंच हो, हम लोगों के देवता हो। उस पाखंडी के घर फिर मेरी लड़की को लौट जाने के लिए नहीं कहो। ले ले वह लौटाकर, शादी में उसने लड़की को जितने रुपये दिये थे।' रुलाई की आवाज में रबिया-बहू की बाकी बातें समझ में नहीं आती हैं।

रुपये की बात पर ढोड़ाय चौंक उठता है। कान के भीतर जाँते की आवाज अचानक बन्द हो जाती है, और साथ ही साथ उसका घूमना भी। कहती क्या है? रबिया-बहू रुपये देगी! जमीन्दार की डिग्री लटक रही है उसके माथे पर। शादी के समय मिसिरजी ने जो चावल गिने थे, वे संख्या में बेजोड़ थे, उस समय ढोड़ाय ने ठीक ही देखा था। और किसी प्रकार का सन्देह नहीं है इसमें।

बाबू लाल इतनी देर पर बोलता है—'*कहती हो कि वह लड़की ढोड़ाय के साथ* नहीं रहेगी। लेकिन जवान लड़की रहेगी किसके साथ? माना अभी धनकटनी आ रही है, लेकिन उसके बाद?'

रबिया-बहू घूँघट के अन्दर से रोती हुई जवाब देती है—'वह लड़की हरगिज ढोड़ाय के साथ नहीं रहेगी, मर भी जाय तो भी नहीं। अब तुम लोग दूसरे किसी के

साथ उसकी सगाई ठीक कर दो।'

अब तो महतो खाँसकर गला साफ कर लेते हैं—

'बात जब छिड़ी है, तब साफ बात ही कहता हूँ। ततमा-टोली में उस लड़की की सगाई-वगाई और हम नहीं करवायेंगे। एक बार कमजोरी दिखाकर ठगाये हैं।'

ढोड़ाय के माथे के अन्दर जैसे एक पत्थर घुसा हो—कोई बात घुसने की उसमें और जगह नहीं है। अपने को कमजोर-सा महसूस कर रहा है। शादी के समय फौजी इनारे के पानी से काम चलाया गया था—उस इनारे की शादी नहीं दी गयी है। क्यों नहीं उसने उसी वक्त आपत्ति की थी ?

'फिर यह पाँव-भारी लड़की है। दूसरी जगह इसकी सगाई होना भी कठिन है। माना हमलोगों की जाति में ऐसी सगाई चलती है। पर बाहर के लोगों के पास तो ततमा-टोली के पंचों की बात नहीं चलेगी···'

ढोड़ाय को पसीना आ गया है। माथे के अन्दर ठण्डा··· भिन्न-भिन्न कर रहा है।···सगाई····रमिया···इन शब्दों का अर्थ जैसे ठीक नहीं समझ पा रहा है।···

'उस पर ढोड़ाय ने शादी में जो रुपये खर्च किये हैं, उन्हें ही लौटा नहीं पाने से कैसे चलेगा ? उसे भी तो फिर शादी करने की जरूरत होगी।'

'हाँ, यह एक इनसाफ की बात बोल रहे हो महतो।'

इन सब बातों के बीच सामुअर ने अब तक एक भी बात नहीं की थी। एक कोने में बैठकर वह एक घास से दाँत खोद रहा था, और बीच-बीच में थूक फेंक रहा था। वह थूक का घूंट पीकर कहता है—'तुम लोगों का अगर मत हो तो मैं ढोड़ाय का रुपया दे देने को राजी हूँ'—ढोड़ाय के कान खड़े हो जाते हैं। 'रमिया से शादी करने को राजी हूँ'—यह साफ-साफ न कहने पर भी सामुअर की बात का अर्थ सुस्पष्ट है।····

फक् कर ढोड़ाय जल उठता है! 'क्या कहा ? जीभ नोच लूँगा। देह की सभी नसों को पीट कर ढीला कर दूँगा।' ढोड़ाय उठ खड़ा हुआ है। आग निकल रही है उसकी आँखों से।

महतो जरा डर गये हैं ? 'बैठो ढोड़ाय शान्त होकर। सामुअर, तेरे राजी होने से ही तो नहीं होता है, फिर रमिया राजी है या नहीं—वह भी तो जानना होगा।'

सामुअर के बदले रबिया जबाब देता है—'आज साँझ को ही तो छड़ीदार के सामने रमिया ने कहा है कि वह राजी है।'

ढोड़ाय के कन्धे और बाँहों की पेशियाँ कड़ी होकर फूल उठी हैं। जैसे अभी वह बाघ की तरह पंचों पर कूद पड़ेगा।····

'रुपया खाकर साजिश कर रहा है चोट्टों का दल।' गला फाड़ कर ढोड़ाय चिल्ला उठता है।

उसकी हिंस्र आँखों से असंख्य वज्रों की चिनगारियाँ निकल रही हैं। बजरंगबली

महावीरजी की असीम शक्ति आ गई है उसकी बाँहों में। बहुत बड़ा दिखाई पड़ रहा है वह। सामने की उन हफरंगी चीटियों को फूंक से पल भर में छितरा दे सकता है—उठाकर फेंक दे सकता है दूर, जहाँ मन चाहे; तूफान के झोंके में चकरहट्टा के मैदान के सेमल की रुई की तरह वह एक साँस में उड़ा दे सकता है, फड़-फड़कर फाड़कर—टुकड़े-टुकड़े कर सकता है वह उस कुत्ते सामुअर को। जहाँ भी हरियाली देखता है वहीं चरने पहुँच जाता है, यह पंचायत की बकरियों का दल; लेकिन इन सब ठीलों को मारनेका उसे समय कहाँ है? ... रमिया ... पहले रमिया, वह पच्छिम की बाजारू औरत, रमिया!—सामुअर से शादी करना चाहती है रमिया। इतने दिनों से वह उसे ठगती आ रही है।''''उसने कहा था कि मर्कट की तरह देखने में है सामुअर''''पंचायत-घर के सभी डर के मारे उसके लिए पथ छोड़ देते हैं। कैसे और कब वह महतो के घर से निकल आता है, वह खुद ही नहीं जान पाता है। सारी दुनिया उसकी आँखों के सामने से लुप्त हो गई है। जिस पच्छिमी साँप को उसने पाला था, उसने इतने दिन के बाद डंक मारा है। उसके पास रमिया सामुअर को लेकर व्यंग्य करती है—भूरी आँखों वाला बिलाड़ कहकर।''' इतने दिन वह कुछ भी जान नहीं पाया था।'''पृथ्वी में आग लग गई है—वह काँप रही है, चक्कर काट रही है, धँसी जा रही है पैर के नीचे की धरती।''''जाने दो, पर किसी की शक्ति नहीं है कि उस साँप के पास जाने के पथ में उसे बाधा दे, 'महावीर जी भी नहीं, गोसाईं भी नहीं, खुद रामजी आने पर भी नहीं!' विश्व-ब्रह्माण्ड की हवा शान्त हो गई है उसके स्नायुओं के उद्दण्ड आलोड़न को देखकर। उसकी मुट्ठी बन्द हो रही है, प्रचंड शक्ति से वह अभी पृथ्वी को चूर-चूर कर सकता है—इसके प्रत्येक अणु-परमाणु ने जीवन-भर उसके विरुद्ध आचरण किया है।' मीठे को तिक्त और बेस्वाद कर दिया है।'''

रबिया के घर का कुत्ता भौंककर डर से भागता है।

दालान में दीया जल रहा है। रमिया बाँस में पीठ लगाकर ऊँघ रही है। पूरे दिन के उपवास के बाद छठ-परब की चीजों का पहरा देती-देती ऊँघन आ गई है।''''

'मुट्ठी।'''बाजारू औरत!'''पच्छिम की कुत्ती!''''अपने मन के प्रचंड क्षोभ को व्यक्त करने की ढोड़ाय को भाषा नहीं है। ... जरूरत भी क्या है उसकी? ... लात''' घूँसे '''थप्पड़''''यह ले! वहाँ'''यहाँ।''''यहाँ ... सर पर, मुँह पर ... पीठ पर''' सर्वांग में''''

छठ-पर्व का ऊँख पट्-सा टूट जाता है।

कुचल कर, कूटकर, पीसकर, मसलकर, फेंक देने की इच्छा होती है हरामजादी के देह को—पैर से हटाने पर भी नहीं हटती'''

रबिया के घर से निकल पड़ा है ढोड़ाय अन्धकार में। जो दुनिया उसके खिमाफ गई है, हो, सम्पर्क ही अब क्या है, उस दुनिया के साथ! रबिया के घर का कुत्ता पीठ पीछे भौंक रहा है, थान की तरफ प्रकाश दिख रहा है! उसी का विलायती लालटेन लेकर

शायद लोग उसे खोजने निकले हैं। रमिया के ललाट का कुछ अंश कट गया था···· पक्की के ऊपर से अन्धकार की ओर ढोड़ाय बढ़ता जा रहा है। टिमटिमाती हुई बत्ती जल रही है, दूर रेवन गुनी के घर पर। उस····उस रात को रेवन गुनी ने कहा था, उसका प्राप्य जल्द दे देने को। सहसा वह बात याद आई। और किसी की वह परवाह नहीं करता है। कमर में खोसा हुआ वह एक आना पैसा वह रेवन गुनी के नाम से अंधकार में वह फेंक देता है। पक्की के पत्थर पर केवल एक खट्-सी आवाज होती है। पास का झींगुर तक उस आवाज को सुनकर अपने विरामहीन स्वर को एक क्षण के लिए भी नहीं रोकता है।

द्वितीय खंड

सगिया काण्ड

ढोड़ाय का नई जाति के बीच गमन

किधर जा रहा है वह, किधर जायेगा—ढोड़ाय यह सोचकर नहीं आया है। दुनिया की जगहें अभी उसके निकट समान हैं। लेकिन वह 'पक्की' पकड़ कर चला था—अजाने ही। गुस्सा घट जाने पर भी मन का ज्वार जाने को नहीं है। ततमा टोली से साथ लायी, आँखों को अन्धी बनानेवाली आँधी की प्रचंडता घट आयी है, पर आकाश का अन्धकार शायद किसी भी दिन नहीं मिटेगा। दुनिया में और किसी का वह विश्वास नहीं करेगा। सब बेईमान। ज्वरग्रस्त जीभ में सब बेस्वाद लगता है। ''एक बार बकरहट्टा के सबसे ऊँचे सेमल के पेड़ के ऊपर आँधी के समय ठनका गिरा था। पेड़ की फुनगी को जैसे एक ही झटके में काट ले गया था। कन्ध-कटा वह पेड़ अभी भी खड़ा है। आकस्मिक क्रोध की आँधी में अब तक अपने अपमान की बात अच्छी तरह सोचने का उसने अवसर ही नहीं पाया था। उसकी रमिया हो गई दूसरे आदमी की! जान-बूझकर! भीतर-घुन्नी, हरामजादी! 'ढोल, गँवार, सूद्र, पसु, नारी'—इन्हें हरदम ठोककर रखने को कहा गया रामायण में। शुरू से ही अगर वह याद रखता। कितनी बड़ी गलती की है उसने रामायण का कहना न मानकर? अपने दोनों बैलों से भी कई गुना अधिक वह रमिया को प्यार करता था। सिर्फ दोनों बैल ही क्यों, बौका बावा से भी अधिक! रमिया के लिए उसने बौका बावा को भी छोड़ा था। भात खाते समय और थोड़ी-सी दाल लेने की इच्छा होने पर भी उसने किसी दिन नहीं माँगा है—यह सोच-कर कि कहीं रमिया को दाल न घट जाय। इतना प्यार करता था वह रमिया को। अपनी गाड़ी के चक्के के लिए रेड़ी का तेल न खरीदकर, एक बार, उन्हीं पैसों से उसने रमिया के लिए नारियल का तेल ला दिया था। क्या इसीलिए? अपने से दूसरे अच्छा? दूसरों से जंगल अच्छा। कुत्ता अपना होता है, लेकिन औरत अपनी नहीं होती है, चाहे जितना भी कपड़ा फींचने का साबुन उसे खरीद दो। दुनिया शुरू से अन्त तक भीतर-घुन्नी है। अच्छा कुछ भी नहीं है। इसीलिए न सब अच्छे आदमी अयोध्याजी चले जाते हैं। उसने हड्डी-हड्डी से पहचाना है इस औरत जात को। दुखिया की माँ, रमिया—जिस किसी औरत के सम्पर्क मे वह आया है, सब एक ही किस्म की हैं। मुँह मे एक, तो मन में और! ततमा-जाति मे बावा ही एक ऐसे हैं जिन्होने शादी नहीं की है। बच गये हैं—अयोध्याजी जा सके हैं! अभी अयोध्याजी में बावा के पास जा सकने से वह मन में जरा शान्ति पाता। बावा फिर बचपन की ही तरह उसे अपने पास खींच लेते। 'सर्बन' के पत्ते की गंध से भी बढ़िया लगती है बावा की जटाओं की गंध—गोइठे की राख से भी बढ़िया गंध, हवागाड़ी के धुयें से भी बढ़िया गंध है यह! कितनी दूर है यहाँ से अयोध्याजी,—शायद मुँगेर जिला के पास! एक भी पैसा उसके पास नहीं

है, नहीं तो वह अयोध्याजी के लिए टिकट कटाता। ततमा-टोली में उसके घर, गाड़ी, बैल, सामान आदि हैं। कितने रुपये पा सकता वह उन्हें बेचकर। नहीं, यह मुँह वह फिर ततमा-टोली में नहीं दिखा सकता है। खा डाले भूत-बैताल उसकी सम्पत्ति लूट-कर। पंच लोग जिसे मन चाहे, उसे दे दें! बैलों के पैसों से सामुअर जुआ खेल आये नेपाल से। उसकी गाड़ी के पैसों से रमिया लगाये चपचपाकर नारियल का तेल—उस मर्कट के सीने पर ढल पड़ने के पहले। ढोड़ाय उससे एक पैसा भी नहीं चाहता है। कैसे अशुभ क्षण में बाबा ने वकील बाबू के निकट से रुपये पाये थे। वही रुपया ढोड़ाय का काल बना। वे थे बाबा के हक के रुपये। इसीलिए न बाबा उन रुपयों से अयोध्या जी जा सके। लेकिन ढोड़ाय का उन रुपयों पर कोई हक नहीं था। इसीलिए न उन रुपयों से खरीदी हुई औरत ने उसके जीवन को जलाकर राख बना डाला। ऐसा ही होता है! सभी चीजों का फलाफल क्या सब पर एक-ही-सा होता है? खायें तो जरा ततमा लोग मुसलमान लोगों की तरह मुरगी का अण्डा—देह में कोढ़ फूट जायगा। …वह भला फिर उन पैसों पर लोभ करेगा? लात मारता है वैसे पैसों पर।—बायें पैर का अँगूठा लहर रहा है। शायद कट गया होगा पत्थर से ठेस लगकर। अब तक उसने ख्याल नहीं किया था।…

नहीं, नहीं, पास में पैसे रहने पर भी वह अयोध्याजी नहीं जाता। बाबा को वह अपना मुँह दिखायेगा कैसे? बाबा ने अपनी इच्छा के विरुद्ध राय दी थी विवाह की—सिर्फ उसकी जिद देखकर। सिर्फ बाबा ही क्यों, किसी भी परिचित आदमी से वह जीवन भर भेंट नहीं करेगा। कैसे वह अपना मुँह उन्हें दिखायेगा? वह ऐसा मर्द है कि एक चींटी जैसी लड़की को सम्हाल नहीं सका! बिल्ली की तरह आँखों वाले एक चुकन्दर से वह हार गया। जो भी यह बात सुनेगा, होंठ दबाकर हँसता रहेगा उसे देखकर। वह रोगी नहीं है, कमजोर नहीं है। ताकत में क्या सामुअर उसकी बराबरी कर सकता है? मर्द का बच्चा होता, तो वह ढोड़ाय से लड़ने आता। पीसकर खत्म कर दे सकता है वह सामुअर को, खटमल की तरह उँगलियों के बीच टीपकर मार दे सकता है। और चढ़ती जवानी में ही उसी सामुअर से वह हार गया! किसी से हार मानने वाला लड़का वह नहीं है। लेकिन रामजी से तो लड़ाई नहीं की जा सकती है! इसीलिए, उसने हार मानी है ततमा टोली के समाज से, पराजय स्वीकार किया है सामुअर से। इसीलिए न वह भाग आया है ततमा टोली से। जिस समाज के मुखियों को उसने एक दिन भी दम लेने की फुर्सत नहीं दी है, वे मौका पाकर उसके विरुद्ध खड़े हुए। दाल में मक्खी गिर जाने से जैसे उँगली से उठाकर लोग फेंक देते हैं, उसी तरह उन लोगों ने दूर फेंक दिया है ढोड़ाय को। सिन्दूर और गांठ के रुपयों से खरीदी हुई बहू क्या पक्की के किनारे वाले पेड़ का आम है कि जो चाहे तोड़ ले? उसके दरवाजे पर से पंच लोग उसकी बैलगाड़ी दे सकते थे सामुअर को? हो जाता ततमा टोली में तब खून का काण्ड! किन्तु यहाँ तो माजरा ही कुछ और था—

आम ही सड़ा, और पिल्लू पड़ा हुआ था !

···केवल अँगूठा ही नहीं, पैर का तलवा भी लहरता है। दवा न रखने से रास्ते के पत्थर तक दाँत दिखाते हैं, तो फिर औरत का कहना ही क्या !····

ताकत दी है रामजी ने उसकी देह में। एक मनचली औरत वह सम्हाल नहीं सका है शरीर में ताकत रहने पर भी। लेकिन एक पेट वह हँस-खेलकर चला लेगा—चाहे जहाँ भी रहे। एकदम अकेला है वह इस दुनिया में। उसके मन ने चाहा था बँध जाना, लेकिन उसका कपाल ही भिन्न है। बचपन से वह देखता आया है। नहीं, तो क्या यों ही उसकी माँ ने उसे गैर बना दिया था। नहीं तो क्या भारी पैर की बहू उसे छोड़कर चली जाती ?····'भारी पैर'····। वह जो आयेगा, उस पर ढोड़ाय का कोई अधिकार नहीं रहा। उसकी आत्मा कह रही है कि वह जरूर लड़का होगा ! वह भी हो जायगा सामुअर का ? पानी चढ़ायेगा, ढोड़ाय के बाप-दादों को नहीं, कुछेक धांगरों को, अथवा शायद गल-कट्टू साहब के 'पिरेत' को। यह जन्म तो गया ही, दूसरा जन्म भी उसका अंधकारपूर्ण है। बिना कसूर उसे नरक में सड़कर मरना होगा, और पानी पा जायेगा जन्म का किरिस्तान सामुअर।

अपनी क्षमता पर उसका जो भी विश्वास था, वह कल रात जड़ से डोल गया है, इसी लिए क्रोध से विषाक्त हो गया है उसका मन—जाति पर, समाज पर, दुनिया पर। क्षमता रहने से वह अभी इन्हें चूर-चूर कर फेंक देता। रामजी क्या जान-बूझकर भी इन्सान पर अविचार करते हैं ? छि:, छि: ! यह क्या सोच रहा है वह। सेत्ताराम ! सेत्ताराम ! ···सारी रात एक बार भी वह बैठा नहीं नहीं है। धूप भी धीरे-धीरे गर्म हो रही है। पाँव और चलना नहीं चाहते हैं। ततमा टोली से बहुत दूर वह जाना चाहता है, जितनी दूर जा सके ! धूप में देह से पसीना भर रहा है। प्यास भी लगी है। अपने मन को वह समझाता है—शायद बहुत दूर चला आया हूँ ततमा टोली से।

दूर, पक्की से कई कोस पच्छिम एक गाँव दिखाई पड़ रहा है। शाल-छँटे शीशम पेड़ की एक कतार सीधी खड़ी है आकाश को भेदकर। भाले-सा प्रतीत हो रहा है। उसी की फाँक से दिखाई पड़ रहा है—मोठे की दीवाल का कीचड़ पड़ा सफेद रंग। पक्का दालान रहने से पास में जरूर इनारा रहेगा। इसीलिए वह उस मकान को लक्ष्य बनाकर पक्की से उतरता है, कम-से-कम कुछ सुस्ता भी तो लिया जायेगा ! उस मकान तक जाना नहीं पड़ा। उसके पहले ही गाँव में एक दूसरा कुँआ देख कर रुक गया।

कुएँ के बगल में एक करची का घेरा है, जो पलाकी की लत्तरों से ढँका हुआ है। बगल वाले मकान का सामने वाला भाग साफ पोता हुआ है। मचान का ऊपरी हिस्सा कद्दू की लत्तियों से ढँक गया है। गेंदे के पेड़ों की एक कतार आँगन को आलोकित कर रही है। आँगन के बीच दो-मंजिले के समान ऊँचे एक मचान पर लिए रखी गयी मकई की बालें लटकायी हुई हैं। ढोड़ाय निहारता है। उसके ह

घुक-घुकी गले से होकर ऊपर उठ आना चाहती है। दम घुटने लगता है। घूंट निगल-कर, ओठ दवाकर दूसरी तरफ मुँह घुमा लेना पड़ता है। उसका दुःख उसकी अपनी चीज है, दूसरे किसी से कहने की नहीं।

वगल के तम्वाकू के खेत से एक पतले मुँहवाला आदमी आकर इनारे पर मुँह-हाथ धो रहा था। ढोड़ाय जाकर खड़ा हुआ पानी पीने के लिए।

'घर कहाँ है ? पूरव ? पक्की से कितनी दूर ? जात क्या है ?'

'तन्त्रिमा छत्री।'

'अरे ततमा वोलो, ततमा !'

पानी पीने के वाद उस आदमी के साथ और भी अनेक वातें होती हैं।

कहाँ जाओगे ? रोजगार के लिए अगर निकले हो, तो इस गाँव में भी रह जा सकते हो। मैं ही नौकरी दे सकता हूँ। अभी ! इस सामने वाले तम्वाकू के खेत में। गाँव का आदमी नहीं रखना चाहता हूँ। अरे, कौन ऐसा भारी काम है ? तम्वाकू के खेत का काम नहीं जानते हो ? पूरव का आदमी हो, जानोगे कहाँ से ! मियाँ के देश के आदमी हो तुम लोग; तुम लोग प्याज की खेती खूव समझते हो। वुद्धि अगर कुछ हो, तो दो ही दिन में तम्वाकू की डाल तोड़ना सीख जाओगे। प्याज की खेती में भी पैसा है।··· ढोड़ाय ने खेती-वारी का काम किसी दिन नहीं किया है। अगर वह न कर सके, अगर मन नहीं लगे ? और भी दूर जाने से अच्छा होता। हाव-भाव में इसका रतिया छड़ीदार के साथ न मालूम कहाँ सादृश्य है। ढोड़ाय की धारणा है कि नुकीले मुँहवाले आदमी बड़े वदमाश होते हैं।

'क्या रे ? गाय मर गई है क्या तेरे घर में ? वोलता क्यों नहीं है ? क्या समझ लिया है कि हमारा ही वड़ा गरज है ?'

ढोड़ाय अप्रस्तुत होकर इतस्ततः करता है।

अन्त में ढोड़ाय वहीं रह जाता है। जव मन चाहे, चला जाएगा। वह तो अपने हाथ में है। गेंदे के फूल से भरे हुए उस मकान की गोशाले की मचान पर ढोड़ाय जगह पा जाता है।

वह आदमी जाते-जाते ढोड़ाय को सुना जाता है कि इस गाँव के वावू साहव की डेढ़ सौ गायें हैं। उनका चरवाहा पाता है महीने में चार आने, और साल में एक जोड़ा कपड़ा, और जाड़े में एक कुर्त्ता।····

अपना प्राप्य लेकर मोल-मोलाई करने के अनुकूल उस वक्त मन की अवस्था नहीं थी ढोड़ाय की। किसी तरह एक सर छिपाने का स्थान और थोड़ा-सा खाने-पीने की व्यवस्था होने से ही उसका दिन कट जाएगा। इसीलिए उस आदमी ने और जो वहुत कुछ कहा था, उसे ढोड़ाय ने अच्छी तरह सुना भी नहीं।

⊡

ढोड़ाय-बिल्टा सम्वाद

गाँव का नाम बिसकन्धा है।पास ही जिस टूटे हुए मकान के ऊपर बरगद का पेड़ उगा है, वहाँ सन्ध्या के बाद ढोलक बजने पर ढोड़ाय भी पहुँचता है। हालांकि लालच है खेनी और तम्बाकू की ही। कल से वह इनके बिना है। सहसा कुछ देर से यही अभाव सबसे बड़ा प्रतीत हो रहा था। इसलिए वह ढोल की आवाज़ के आमन्त्रण की उपेक्षा नहीं कर सका था। उस वक्त आदमी ज्यादा नहीं जुटे थे। ढोड़ाय को सहसा ख्याल आता है कि ये लोग तुरत पूछेंगे उसका घर कहाँ है। महतो-पत्नी की नैहर है मल्हरिया। इसके अतिरिक्त और किसी गाँव का नाम उसे याद नहीं आ रहा है। ततमा-टोली के नाम को वह एकदम छिपा लेगा। लोग कनखी से उसकी ओर देखते हैं। कौन है? कहाँ घर है? इधर तो कोई कुटमैती नहीं है? सब इधर रोजगार के लिए वह आया है? ढोड़ाय को लगता है जैसे दो-एक के चेहरे पर थोड़ी कठिनता की रेखा खिंच जाती है। वे लोग उसके जनेऊ की ओर देख रहे हैं।

जात? तन्त्रिमा छत्री? चलो अच्छा है कि राजपूत छत्री-वत्री नहीं हो। हम लोग हैं कुशवाहा-छत्री!

'यह लो' कहकर वह आदमी हुक्के से चिलम उतारकर ढोड़ाय के हाथ में देता है।

इंगित सुस्पष्ट है—तन्त्रिमा-छत्री की जाति कुशवाहा-छत्री की जाति से बहुत नीची है।

रात से ही उसका मन अपनी जाति पर विषाक्त हो गया है। यदि सम्भव हो, तो वह भूल जाना चाहता है अपनी जाति। पर किसी की जाति क्या देह का मैल है कि मलकर फेंक दे! इसीलिए जाति का अपमान अभी भी उसकी देह में आकर चुभता है। इच्छा होती है कि कह दे, कि कोइरी-कुसवाहा छत्री कब से हुआ?

जिन्दगी बीती लोगों के यहाँ वर्तन माँजकर और बाबू-भइया लोगों के पत्तल का जूठा उठाकर, और आज आए हैं हुक्का से चिलम उतार कर देने। नहीं, पहले ही दिन आकर वह गाँव के लोगों के साथ लड़ाई-झगड़ा नहीं करना चाहता है।

'नहीं, नहीं! तम्बाकू मैं पीता नहीं हूँ।'

तकलीफ की वह परवाह नहीं करता है।

इतनी देर में सभी उसकी ओर घूमकर बैठते हैं। कहता क्या है यह? पैसे के अभाव में तम्बाकू नहीं खरीद सकता है, ऐसा आदमी काफी देखा है, पर मँगनी का तम्बाकू भी एक स्वस्थ आदमी नहीं पीता—ऐसा जीव इसके पहले उनकी नजरों में नहीं पड़ा है।

'खैनी ?'

'नहीं, खैनी भी नहीं।'

इस आत्म-निग्रह के द्वारा ढोड़ाय का मन अपमान का प्रतिवाद ज्ञापन करता है। गिरिदास बावाजी तक खैनी-तम्बाकू पीते हैं, और यह आदमी नहीं पीता है।

'बीबी है ?'

'नहीं।'

इस 'सराध के कानून' के युग में भी ? मूँछें उग गयी हैं तो भी ? ऐसे परदेसी के साथ बिना बातें किए उसकी तुच्छता नहीं दिखलायी जा सकती है। सभी एक दूसरे के साथ प्रतियोगिता कर ढोड़ाय को गाँव की कथाएँ सुनाने लगते हैं। कितनी ही खबरें वे सुनाते हैं।

....जिस आदमी के साथ इनारे पर भेंट हुई थी, क्या नाम उसने कहा था अपना : गिरिधारी मण्डल ? नुकीला मुँह है उसका, सियार की तरह ? उसे हमलोग कहते हैं गिदर-मण्डल ! उसी के यहाँ काम शुरू किया है क्या ? तब क्यों कहते हो—कुएँ के बगल वाले तम्बाकू के खेत की बात ? वह तो मोसम्मात का है। गिदर ने झूठी बात कही है। हम लोगों की जात का मण्डल होने से क्या होता है, वह परिवार ही बदजातों की जड़ है। एक बीस, दो-बीस सालों की बात है—यह जो बूढ़े दादा को देख रहे हो। इसकी कमर में उस वक्त कोपीन भी नहीं चढ़ा था, है न बूढ़ा दादा ? उस वक्त नीलकर साहबों के साथ एक बड़ा भारी हल्ला हुआ था। एकबारगी तूलकलाम ! विलसन साहब का कटा हुआ सर पाया गया, थाने के बरामदे में। उस समय सभी गाँवों में हिन्दुओं ने मन्दिर में जाकर और मुसलमानों ने मसजिद में जाकर प्रतिज्ञा की थी कि उनमें से जो नीलकर साहबों के पक्ष में जाएगा वह गाय-सूअर खाएगा। उस वक्त गिदर मण्डल का दादा गया था नीलकर साहबों के पक्ष में। तभी से गिदर मण्डल के परिवार का नाम पड़ गया है गायखोर परिवार।...है...क् थूः ! थूः !! जय महावीरजी की ! उस समय भी गाँव के बाबूसाहब बच्चन सिंह शायद राज पारभंगा की सिपाहीगिरी करते थे। वह गायखोर परिवार ही उस समय गाँव में सबसे धनी था। शिकार में, अथवा मुकदमे की जाँच-पड़ताल के लिए अगर दारोगा, हाकिम आदि आते, तो उन गायखोरों के दरवाजे पर ही उनके घोड़े बाँधे जाते थे।....

उस तम्बाकू के खेत को तुम्हें दिखा देते समय गिदर ने क्या कहा था कि वह खेत उसका है ? अच्छा, नहीं कहा, तुमने हाव-भाव से समझ लिया था कि वह उसीका है। गिदर अगर कहता भी तो बहुत झूठ नहीं बोलता। मोसम्मात की विधवा लड़की है सगिया। उसी लड़की का देवर है गिदर मण्डल। बगुला जिस तरह मछली पर ताक लगाकर बैठा रहता है उसी तरह वह गायखोर कई वर्षों से लगा हुआ है उस मोसम्मात की लड़की से चुमौना करने के लिए। काफी जमीन है मोसम्मात की—तीस-चालीस बीघा अवश्य होगी। अरे उसी पर तो गिदर मण्डल की नजर है। सीधी जमीन तो नहीं

है—चालीस बीघा ! इधर साढ़े छः हाथ के लग्गे से बीघा का नाप है । और जमीन भी कैसी है ! माघ के अन्त में भी काली बनी रहती है—बैठने से पीछे का कपड़ा भींग उठता है ।....नहीं, नहीं, बूढ़ी को सगिया की माँ कहकर गाँव मे कोई भी नहीं पुकारते हैं। क्यों, सो नही मालूम है । सभी कहते हैं मोसम्मात ।

फिर गले की आवाज नीची कर वह कहता है—इस गाँव के गुणी का सर्दार था कनवा मुसहर । उसका देहान्त हुए बहुत दिन हो गए । परन्तु वह कोई चेला नही छोड़ गया है । तभी तो साँप काटने से, दाँत मे पिल्लू पड़ने से, जाना पड़ता है रहुआ के गुणी के पास । भजहा-रोग से मवेशियों की मौत शुरू होने पर अब जाना....

....हाँ, जो कह रहा था....वह कनवा मुसहर एक समय मोसम्मात की जमीन मे खेतीबारी करता था । नामी गुणी होने के बाद भी पुराने मालिक के यहाँ उसका आना-जाना चलता था । और, मोसम्मात को वह कहता था मायजी । कनवा मुसहर ने डाइन की विद्या कुछ-कुछ सिखला दी है उस बूढ़ी को ।....

जिस आदमी को लोग बूढ़ा दादा कहकर पुकार रहे थे, वह इतनी देर में ढोड़ाय से बातें करने के लिए सीधा होकर बैठता है ।

... तुम फिर जाकर ये सब बातें मुसहर से नही करना !....अच्छा गाँव चुने हो रोजगार के लिए ! हम ही लोगों को आजकल खाना नही जुटता है । ऐसा दिन-काल आया है ! दिनों-दिन खराब ही होता जा रहा है । 'विधि गति बाम सदा सब काहू'—भगवान् हर वक्त सबों पर नाराज हैं । ...देखा जाय, धान पकने से शायद कुछ हालत बदले ।....

जो लड़का ढोलक लेकर बैठा था, वह ढोड़ाय की ही उम्र का है । शरारत से भरा हुआ है उसका चेहरा । वह कहता है—यह शुरू हुआ बूढ़ा दादा का नकिया रुदन । साँझ को जरा हँसी-तमाशे, भजन-कीर्त्तन होता, सो वह भी इस बूढ़े के चलते सम्भव नही है ।

चुप रहो, कहता हूँ, बिल्टा । परदेसी आदमी के सामने लबर-लबर मत करो, सो कहे देता हूँ ।

ढोड़ाय अवाक् हो जाता है । यहाँ पंचायत और बूढ़ों की ताकत इतनी कम देखकर ।....बिल्टा बूढ़ादादा की बात बन्द करने के लिए दमा-दम ढोलक बजाना शुरू कर देता है, फिर गीत की कड़ी आरम्भ करता है । बाकी सभी लोग ध्रुपद को तान पकड़ते हैं ।

जमीन्दार का सिपाही आया है, टैक्स लेवे रे बिदेशिया,
सुबह पकड़ ले गया है भैंसुर को रे बिदेशिया,
बाँध रखा है उसे कोठी के खूँटे में रे बिदेशिया,
थाली कटोरी ले जा सिपाही बाकी टैक्स के दावे में,
सो नहीं सिपाही आता है, रात को जलाने रे बिदेशिया....

महावीरजी की प्रणामी के साथ गीत खत्म होता है। ढोड़ाय की इच्छा होती है बिल्टा से दोस्ती करने की।

वह कहता है—'हम लोगों के उधर महावीर जी की अपेक्षा रामचन्द्रजी का ही नाम अधिक चलता है।'

'तुम लोगों का कलेजा हम लोगों से भी छोटा है। इसलिए शायद महावीर जी के मालिक के बिना चलता नहीं है।'

हँसकर सभी लोट पड़ते हैं। बिल्टा से बात में कोई नहीं जीतेगा। बिल्टा लेकिन ढोड़ाय को अप्रस्तुत होने का अवकाश नहीं देता है। पूछता है—तुम गाना नहीं जानते हो? शरमा क्यों रहे हो? अकेले वाला गाना नहीं कह रहा हूँ। अकेले भी कभी गाना होता है? वह तो जो लोग भैंस चराते हैं, वे लोग शेष रात्रि को जाड़े के मारे गाते हैं, आधी रात को राही अपना भय भगाने के लिए गाता है। वह भी क्या गाना है? मैं कह रहा हूँ मिलकर गाने की बात। गाते समय तुम्हें चुप बैठा देखा न, इसीलिए कह रहा हूँ।

ढोड़ाय स्वीकार करता है कि 'विदेसिया' का गीत वह भी जानता है। लेकिन वह है महात्माजी के नमक बनाने के उपलक्ष्य में रचा गया विदेसिया।

बिल्टा भी वह गाना जानता है। सभी जानते हैं। लेकिन खबरदार! महात्माजी का विदेसिया गाना यहाँ मना है। गाते ही दरोगा साहब हलवैल 'क्रोक' करेंगे। वह साला हाड़ी का बच्चा लचुआ चौकीदार है, वही जाकर दरोगा साहब को सभी खबर दे आता है।....

और भी कितनी ही बातें होती हैं। बिल्टा उसे बड़ा अच्छा लगता है।

रात को जब वह घर लौटा, तो सगिया और उसकी माँ ढोड़ाय के लिए जगी बैठी थीं।

हम लोग माँ-बेटी में चर्चा हो रही थीं कि परदेसी आदमी बिना कहे भाग गया क्या? लड़की ने कहा—नहीं, चेहरे से वह बिना कहे भागनेवाला नहीं मालूम देता है। जरूर भजन की जगह वह गया है।

गोशाला की मचान के ऊपर बिछाने के लिए सगिया एक कम्बल दे जाती है।

'लोटा रहा मचान के नीचे।'

बहुत देर तक आँखें मूँद सोच-सोचकर भी डाइन का कोई भी लक्षण ढोड़ाय मोसम्मात में ढूँढ़ नहीं पाता है। रात को लेटने पर बगल से नारियल के तेल की आती गंध से वह अभ्यस्त हो गया था। गत एक साल के बीच। तम्बाकू की ही तरह उसे नहीं पाने पर मन खुत-खुत करता है। जबतक याद न पड़े, अच्छा है। अभी तो नींद आवे, वही अच्छा है।

□

मोसम्मात की ममता

गाँव की असली जिन्दगी है गुटबन्दी। कुछ ही दिनों में गाँव के लड़ाई-झगड़े का नाड़ी-नक्षत्र ढोढ़ाय जान गया। बड़ा गाँव है, अनेकों क़िस्म के दल हैं, अनेकों क़िस्म के स्वार्थ हैं। बड़े के नीचे मझला, मझले के नीचे सझला। इसलिए यहाँ का मामला, ततमा टोली की अपेक्षा अधिक जटिल है। सभी की नजर है मिट्टी पर, जमीन पर। मिट्टी का रस सूखने से वे ऊपर की ओर देखते हैं, फिर आँखें मूँद कर देखते हैं अठपहरिये महावीर जी की ओर।

ततमा टोली में जमीन की बातें कोई नहीं करता था। कभी-कभी जमीदार की बातें करते थे। लेकिन यहाँ की हवा ही दूसरे क़िस्म की है। यहाँ हँसी और क्रन्दन, गप्प और रसिकता और तमाशे—सभी खेतीवारी और जमीदार को केन्द्र बनाकर होते हैं।

इस टोले का नाम है कोइरी-टोला, यहाँ सभी जाति के कोइरी हैं। इन लोगों के अधिकांश राजपूतों के 'अधियादार' हैं। राजपूत लोग रहते हैं पास के ही राजपूत-टोले में। जमीन के मालिक वे ही हैं। कोइरी लोगों के घर के अनेक स्त्री-पुरुष वंशानुक्रम से उन लोगों के यहाँ दाई-नौकर का काम करते हैं। कोइरी लोगों में सिर्फ़ दो-चार घर के लोगों को अपनी जमीन है।

क़ानूनी तौर से इस अंचल के जमीदार हैं राजपारभगा। सरसौनी में, जहाँ विलसन साहब की नील-कोठी थी, जमीदार की 'सर्कल' कचहरी है। लोग कहते हैं, सर्किल। देह में किसी को तेल लगाते देख बूढ़े लोग व्यंग्य से पूछते हैं—'क्या रे! आज सर्किल जाना है क्या?' आविष्कार का आनन्द लेकर ढोढ़ाय ये सब बातें सुनता है। स्मरण रखने की चेष्टा करता है। स्थानीय बात-चीत तथा रस्म-रिवाज नहीं जानने पर वहाँ के लोग किसी को भी प्रश्रय देना नहीं चाहते हैं।

क़ानून की आँखों में जो भी हो, असल में, गाँव के जमीदार बच्चन सिंह ही हैं—गाँव के 'बाबूसाहब'। जोत की और रैयती की जमीन मिलाकर इनको करीब तीन हजार बीघे जमीन है। लेकिन ये अपने को 'किसान' कहते हैं। आजकल अपने को किसान कहने से लाभ है। बाबूसाहब की जमीन अभी भी बढ़ रही है। उसका बढ़ना ही स्वाभाविक है। जमीन आदमी के परिवार जैसी जो है।—लड़के-बच्चे जनमते हैं, तो क्रमागत बढ़ता ही जाता है, नहीं तो मर कर छोटा हो जाता है। एक ही-सा कभी भी नहीं रहता है। बाबूसाहब ही एक बाँस की लाठी लेकर बलिया जिले से यहाँ आये थे—पूरब में पैसा सस्ता है, इसलिए। सर्किल में अनेक कोशिश-पैरवी कर मजकूरी सिपाही के पद पर बहाल हुए। मजकूरी सिपाही लोग एक पैसा भी दरमाहा नहीं पाते

हैं। पाते हैं केवल पीतल का तकमा जड़ा हुआ एक चपरास, एक पगड़ी, और सर्किल के खर्च से उसकी लाठी का ऊपरी हिस्सा पीतल से और निचला हिस्सा लोहे से मढ़ दिया जाता है। कड़ा हुक्म है—इस्टेट से लाठी हरगिज न दी जाय। शादी की हुई स्त्री और लाठी एक ही तरह की चीज है। जो आदमी दूसरे की लाठी से काम चलाना चाहता है, खबरदार, उस पर विश्वास नहीं करना। आरा, छपरा और बलिया जिले के राजपूतों को छोड़ और सभी की दरख्वास्त रद्दी की टोकरी में फेंको।...

वही मजकूरी सिपाही किस प्रकार धीरे-धीरे यहाँ के 'बाबूसाहब' हो गये, वह यहाँ के हर गाँव का गतानुगतिक इतिहास है। उसमें नवीनता कुछ भी नहीं है।

जिस टूटे हुए मकान पर बरगद का पेड़ उगा है, जिसके सामनेवाले मैदान में साँझ का भजन होता है, वह था 'भक्ता'-लोगों का मठ। मठ की जमीन अच्छी थी। इसके पहले वाले महन्त ने मुसलमान की लड़की को लाकर रखा था मठ में। अन्त में उन्हें गाँव छोड़कर चला जाना पड़ा। आजकल 'भक्ता' के लड़के भी अपना परिचय भक्ता कहकर नहीं देना चाहते हैं। इसीलिए आज मठ की यह हालत है। जिसकी लाठी, उसकी भैंस! स्वाभाविक नियम से ही ये सब जमीनें चली जा रही हैं—बाबूसाहब के पेट में।

इसी तरह जमीन बढ़ती है। पानी ही पानी लाता है। कहाँ से किस तरह बाबूसाहब के हाथों में जमीन चली जाती है वह पहले से लोग जान भी नहीं पाते हैं। गाँव की बूढ़ी डाइन भी उनके हाथों से अपनी जमीन को बचा सकेगी—ऐसा भरोसा नहीं। कितना भी हो, औरत ही है। औरत सिर्फ गर्भ धारण कर सकती है। वह कृपा भी रामजी ने नहीं की है! ऐसा ही मेरा भाग्य है! देने को तो दिया था केवल उस सगिया को। पास रखूँगी, इसलिए गाँव-घर में शादी दी थी। शादी के बाद पाँच साल भी उसके कपाल में सिन्दूर नहीं रहा। अपना भतार-पूत बहुत दिन पहले ही खाकर बैठी थी। उसके बाद खाया दामाद को, उसके बाद सगिया के चुटकी भर लड़के को! सातों मुल्क में मेरे सम्पर्क में कोई भी मर्द नहीं टिकता है रे ढोड़ाय!

यहाँ आने के तीन-चार दिनों के भीतर ही मोसम्मात ने कुहर-कुहर कर ये सब बातें ढोड़ाय से कही थीं। और भी न मालूम क्या-क्या उसने कहा था। कभी कहती है, दामाद पुराना रोगी था। बेटी को पास में पाऊँगी, इसीलिए जान-बूझकर भी उसके साथ शादी दी थी। और सोचा था, दामाद मेरी जमीन वगैरह को देखभाल कर सकेगा। मेरे मन के सभी पापों को रामचन्द्रजी ने देखा था। इसीलिए शायद उन्होंने मुझे इस प्रकार सजा दी। कभी कहती है सरसौनी के वैदजी ने ही मेरे नाती को मार डाला। उसी वक्त अगर उसे जिरानिया के डाक्टर के पास ले गई होती तो क्या मेरा कपाल इस तरह जलता! जिरानिया के डाक्टर की दवा का ताव बहुत ज्यादा है। उतना छोटा बच्चा क्या वह सह सकता? तुम्हीं बोलो न! उस बार जिरानिया से कमर के दर्द की एक दवा मैंने मँगवाई थी। बेनाघास के काँटा में भर कर उस शीशी

को धूप में रखा था। उसकी ठेंपी निकल आई थी और लग गई थी बरामदे की खूंट में। अभी भी वह गंध लगी हुई है 'पोहुती' में।

मोसम्मात ढोड़ाय को ले जाकर वह 'पोहुती'[1] सुंघाती है। कोई गंध न पाने पर भी ढोड़ाय कहता है—वाह रे! बहुत वास है! यह क्या बच्चे सह सकते हैं? सगिया पाट की रस्सी बिन रही थी दूर बैठकर। अचानक उस पर ढोड़ाय की दृष्टि पड़ जाती है। उसके ओठों के कोर में हँसी देखकर ढोड़ाय को लगा कि सगिया ने उसकी झूठी बात पकड़ ली है। लेकिन इसके लिए वह विरक्त नहीं हुई है। उसकी आँखें कह रही हैं—बेचारी बुढ़ी है, उसकी भी बात का कोई ठीक है? जो कह रही है, कहे। तू हाँ-में-हाँ मिलाये जा।... बच्चे की बात न काटने से ही अच्छा होता। सगिया सुन रही है, यह जानने पर वह हरगिज नहीं कहता।... जिरानिया के दवाखाने की दवा की शीशी के साथ न मालूम उसकी भी आत्मीयता का सम्पर्क है। स्टेशन से बैलगाड़ी पर उसने एक बार डाक्टर बाबू का माल ला दिया था।... वैसा की वह पोहुती भी एक दूसरी पोहुती की याद दिला रही है। उसके अन्दर थी एक काठ की कंघी, टीन से मंढ़ा एक छोटा-सा आईना—रंग-बिरंग का तिलक लगाया हुआ।...सगिया ढोड़ाय से पाँच-साल की बड़ी जरूर पड़ेगी।...

फिर बिल्टा से ढोड़ाय सुनता है कि उस कंजूस गिदर मंडल के स्त्री, लड़के-बच्चे सभी हैं, फिर भी वह चुमौना करना चाहता है सगिया से। जमीन की लालच से! मोसम्मात को भी इसमें इनराज नहीं है। गिदर ही अपने भाई के मर जाने के बाद से मोसम्मात की जमीन की देख-भाल करता है न, लेकिन सगिया अपने देवर पर बुरी तरह चिढ़ी है। वह हरामजादा बगलवाले टोले की काली मुसहरनी के यहाँ रोज जाता है। साँझ के बाद एक दिन भी गिदर को टोले के अन्दर ढूंढ़ निकालो तो समझूं।

गाँव का चौकीदार लछुआ हाड़ी ढोड़ाय की खोज-खबर लेने के लिए आकर कोइरी-टोला की लड़कियों की कथा सुना जाता है। न मालूम किसका-किसका नाम वह लेता है। सुनने को ही बाबू लोगों के घर की दाई है। और कुछ दिन रहो न, सब कुछ जान जाओगे। इसीलिए तो इनलोगों को अधियादार रखते हैं राजपूत लोग। नहीं तो, उस संथाल-टोली में जाकर देख आना—उन लोगों की खेती और इन लोगों की खेती!

इसी वातावरण में ढोड़ाय आ पड़ा है।

□

---

१. पोहुती : मूंज की गूँथी डिब्बी।

सगिया से नये शास्त्र की शिक्षा

सगिया और सगिया की माँ दोनों ही अच्छी हैं। वे पर को भी अपना बना लेना जानती हैं। लेकिन वह बूढ़ी बेकार बहुत बकती है। एक मिनट भी उसकी जीभ को आराम नहीं। ढोड़ाय को वह तम्बाकू के खेत का काम सिखला देती है। ऐसे ऊपर वाले पत्ते को ऊपर ही ऊपर हल्के हाथ से तोड़ना। जंगल साफकर यहाँ जमा करना। एक कलँगी पनपने से बगलवाला पत्ता बर्बाद हो जाता है। प्यार का लाल है तम्बाकू का पेड़। पहले मोथा खेत में नहीं था। गत वर्ष जब कोशी-स्नान गई थी, तो डोम के बच्चों ने सूअर चराया था खेत में! और जायें कहाँ? तभी से मोथा से खेत भर गया है। शाम को एक बार देख आना, हम लोगों के अधियादार लोग क्या कर रहे हैं और क्या नहीं कर रहे हैं।······तेरे बाल-बच्चे कितने हैं?

एक झूठ ढांकने के लिए हजारों झूठी बात कहनी पड़ती है। ततमा टोली के बाहर के जीवन में इतनी कठिनाई भी रह सकती है—ढोड़ाय इसके पहले कल्पना भी न कर सका था।

यह जीवन अच्छा न लगने पर भी ढोड़ाय को धीरे-धीरे सह्य हो जाता है। क्रमशः तम्बाकू का खेत अपना-सा लगने लगता है। तम्बाकू के मासूम पत्ते उसकी आँखों के सामने मोटे हो रहे हैं, बढ़ रहे हैं—धीरे-धीरे आच्छन्न कर रहे हैं उसके हाथ की सफाई की हुई जमीन को छूना चाह रहे हैं बगल वाले पेड़ को।

पूस के महीने में एक दिन ओला गिरने के कारण तम्बाकू की आधी पत्तियाँ फटकर कंघी की तरह देखने में हो गई थीं। उस दिन सगिया और सगिया की माँ के साथ ढोड़ाय भी आकर भींगे, ठंडे खेत में माथे पर हाथ देकर बैठा था। उसका मन बदल रहा है, बिसकंधा की चीजों पर ममता जम रही है। कुछ ही दिन पहले वह ततमा टोली में ओला गिरने से खुशी से तालियाँ बजा उठा था।—टूट जा 'मरमराकर' बाबू भइया लोगों के मकान के खपड़े। सगिया के चेहरे पर वह उस दिन संकोच से ताक भी नहीं सका था। सगिया ही सर्वप्रथम बोलती है—'घर में इस्तेमाल करने के लिए तम्बाकू बनाया जायगा उन टूटे पत्तों से'। सगिया ही उल्टे ढोड़ाय को सान्त्वना देना चाहती है। ढोड़ाय को भी यह अस्वाभाविक नहीं लगता है।

फिर भी पुराना जीवन क्या इतनी जल्दी पोंछकर फेंका जा सकता है? वह जुएँ की तरह मन की देह से सटा रहता है। खून चूसकर, फूलकर, कब आप-से-आप झर जाएगा, सो मालूम भी न हो सकेगा।

भूलना चाहने पर भी भुलाया नहीं जाता है—जिस पर गुस्सा है, उसे तक नहीं! यहाँ गाय को सानी-भूसी देते वक्त ततमा टोली के बैलों की जोड़ी की याद आ

जाती है। कौन भला उन्हें खाने दे रहा है? शायद नाद में एक बूँद पानी तक नहीं पड़ रहा है। जिस आदमी ने आजीवन अखाद्य मांस खाया है, आज हिन्दू होने से ही क्या वह गाय का यत्न कर सकेगा?....चारों ओर कोई है या नहीं, यह देखकर ढोड़ाय हल के बैल से गला लिपट लेता है।... देह झाड़ रहा है। बैल भी शायद समझता है कि वह उसका मालिक नहीं है। अधिकार के सम्बन्ध मात्र को ही समझते हो? तुम्हें और क्या दोष दूँ। आदमी तो उतना भी याद नहीं रखता है...

बड़ा शीतल स्वभाव है सगिया का। किसी भी तरह वह विरक्त नहीं होती है। अनाड़ी ढोड़ाय कई काम ठीक से नहीं कर पाता तो वह कहती है—'दो ही दिनों में सीख जाएगा? उसमें है क्या?' केवल आश्वासन का ही स्वर नहीं, उसके साथ जैसे और भी कुछ मिला हुआ है, जो ढोड़ाय को कुंठित होने का अवकाश तक नहीं देता है। ढोड़ाय ने जिस दिन भगत बनकर अपने ही हाथों अपने ललाट पर तिलक लगाया था, उस दिन उसने बाबा के होठों के कोर में ऐसी शांत हँसी की छाप देखी थी। ठीक ऐसी ही।

बाबा के सामने जैसे अप्रस्तुत हो जाने का प्रश्न ही नहीं उठता था, उसी प्रकार यहाँ भी था।

तम्बाकू के अधसूखे पत्तों के विषय में सगिया ढोड़ाय को समझा देती है—किस तरह आँगन की रस्सी में बाँधकर पत्तों को तान-तानकर बड़ा और लम्बा करना पड़ता है! तभी न व्यापारियों के आने पर अधिक दाम मिल सकेगा। देखना ढोड़ाय, शागिर्द के नाम से ही गुरु का नाम होता है। मोहनमल का आदमी परसों ही गाँव आएगा।

पत्तों की इतनी झाँस भी हो सकती है, यह ढोड़ाय को मालूम न था। अपराह्न में उसे उबकाई आने लगी। लेकिन सगिया ने आज इस ढेर को खत्म करने को कहा है। खत्म वह करेगा ही। ताकत में वह किसी से कम नहीं है। सन्ध्या समय चक्कर आता है। शरीर में सिहरन-सी होती है। ज्वर आयेगा क्या? तम्बाकू की गठरी उसके पीछे पड़ गई है, जी-जान से लग गई है उसे हराने के लिए। दूसरे को आँखों में उसे छोटा दिखाने के लिए।...रस्सी के फाँस में तम्बाकू के पत्ते के डण्ठल को वह घुसा नहीं पा रहा है। न मालूम क्यों, हाथ से शिथिल होकर छूटा जा रहा है।... उसके बाद घर, आँगन, तम्बाकू—सभी अस्पष्ट हो जाते हैं उसके सामने।

उस रात सगिया ने उसके लिए काफी मिहनत की थी। सारी रात उसने ढोड़ाय के माथे पर पंखा किया था।—दोषी थी उसी के कसूर से ऐसा हुआ।—उसने पहले ढोड़ाय को सावधान नहीं कर दिया था। उबकाई आने पर तुरन्त तम्बाकू का काम छोड़ देना चाहिए। तुरन्त गुड़ और एक लोटा जल पीकर सो जाना चाहिए। तुम पूरब के आदमी हो, तुम्हें ये सब मालूम नहीं है, यह मुझे ख्याल ही नहीं था। माथे में कद्दू के बीए का तेल लगाकर सगिया ने बहुत देर तक उसकी कनपटी को दबा दिया था!....

किसी-किसी को यह काम करते-करते कभी-कभी ऐसा हो सकता है।...सोएगा क्या यह ?...

इसमें हार जाने का अपमान है या नहीं, यह ढोंड़ाय समझने की चेष्टा करता है। सोएगा क्या वह ? सभी भावनाएँ शिथिल हैं।

कानों में सस्-सस् की आवाज आ रही है। सर दबाते वक्त यह आवाज हो रही है। बड़ी अच्छी लगती है सगिया की यह हमदर्दी। वहाँ मर जाने पर सियार कुत्ते खींचकर नहीं ले जाएँगे। यहाँ दो मीठी बात करने को भी लोग हैं।

स्त्रियों पर क्रोध करना ढोंड़ाय के मन का एक आवरण मात्र है। स्नेह का भूखा मन अपने को फाँकी देने के लिए उस आवरण की आड़ में जाना चाहता है।

मोसम्मात जब रात को तम्बाकू पीने के लिए जगने पर सगिया से उसकी खबर ले जाती है, तब स्नेह के लिए कंगाल बना उसका मन कृतज्ञता से भर उठता है।

☐

भू-स्वामी का यशोकीर्तन

बाबू साहब का मन आज बहुत खराब है। आज उनका एक और दाँत टूटा है। मात्र तीन ही चार तो अवशिष्ट थे। सो भी टूटा पापड़ खाते समय ! उनकी उम्र अधिक हो रही है। मौत की बात सोचने से डर लगता है। कितने लोग तो सौ साल जीते हैं। हाथ की नसें निकलने से क्या होता है, अभी भी यथेष्ट ताकत है उनकी देह में। लोग समझते हैं कि उनकी लाठी की ताकत कम हो गई है। ऐसा समझा उस दिन ललुआ चौकीदार ने। गाँव का चौकीदार हुआ है, इसलिए कोई मुँह ही नहीं लगाना चाहता है। यहाँ बैठे ही बैठे उन्होंने देखा कि गाँव के बीच से वह हाड़ी का बच्चा जा रहा है घोड़े पर चढ़कर—राजपूत बिजा सिंह की तरह। रामजी की कृपा से बाबूसाहब की आँखों का तेज अभी भी घटा नहीं है। इसीलिए न इस दो-मंजिले पर से वे देख सके थे। वह कहता है कि दरोगा साहब ने खूब जल्द जाने को कहा था, इसीलिए गाँव के बीच घोड़े पर सवार हुआ था। सुनकर बाबूसाहब के सिर से पैर तक जल उठा था। वे आजकल ज्यादातर भजन-पूजन में ही लिप्त रहते हैं। परिवार के काम-काज की देखभाल करते हैं, उनके बड़े लड़के अनोखी बाबू। फिर भी उनसे रहा नहीं गया था। गिनकर पचीस जूता मारा था अनोखी बाबू ने ललुआ चौकीदार को। और एक रुपया जुर्माना। खोप पता लिया है ? सड़ा तेली नौ-सौ अधेली, अभी भी ? समझा न ? सरकार के नाराज रहने पर भी, मेरे छोटे लड़के के जेल जाने पर भी। समझा ?...

यद्यपि जुर्माने का रुपया उन्होंने स्वयं नहीं लिया था। वे आजकल रुपये-पैसे के

मामले में लोभ नहीं रखते हैं। उनके अपने कमाये हुए पैसों से उनके लड़के उन्हें थोड़ा-थोड़ा खाने देते हैं, इसी से वे खुश हैं। जुर्माने का रुपया लिया था उनके बेटे नाती ने। उनके अपने दो लड़के तो अपदार्थ हैं। बड़े लड़के अनोखी बाबू भांग खाकर सोये रहते हैं, और छोटे लड़के लाडली बाबू लफंगों के साथ जेल में छत्तीसों जात का जूठा खाते हैं। महात्माजी का काम करता है, न भाड़ झोंकता है? गांव के लोगों से जुर्माने के पैसों का उन्होंने थाला-लोटा, मखमल का गलीचा वगैरह मंगवाया है। आस-पास के गांव में शादी की 'महफिल' के समय उन्हें भाड़े पर लगाते हैं। शरीर भी अच्छा है, राजपूती ठाठ रख सकेगा।

वह भैंस की नाद के पास बैठा हुआ है। भैंस के बच्चों की सींग उगते ही वह रोज एक बार उन्हें हिला देता है, स्नान करने के एक घंटा पहले। तभी वे मरखंडे होंगे, गोवर्द्धमी के रोज सुअरों के पेट फाड़ेंगे। राजपूत के बेटे को तो यही चाहिए। इस पोते ने उनका गुण पाया है—बाप और चाचा की तरह वह नहीं है। इसीलिए इसे वे इतना प्यार करते हैं। इसे वे अपने मन के लायक बनाकर जायेंगे। इसके मन के अन्दर गूंथ दे जायेंगे दुनियादारी का अ, आ, क, ख।...बढ़ाये जाओ हाथ जितनी दूर वह पहुंच सके, लाठी समेत हाथ। हाथ समेटकर बैठे कभी मत रहो। मेड़ की मिट्टी काटकर थोड़ा-थोड़ा बढ़ते जाओ। जियल की डाल हटाकर फिर से गाड़ो। जमीन की सीमा का घेर क्रमशः बढ़ाये जाओ सड़क की ओर, नहीं तो दम लेने की जगह न पाओगे। पहले लेना 'परतिस' की जमीन, धीरे-धीरे बढ़ना, ताकि पहले किसी की नजर में न पड़े। फिर भी अगर चीटियां काटें, तो समझा देना कि तुम राजपूत हो। मठ की जमीन, निकास की जमीन, कोसी के किनारे की जमीन—एक दिन में नहीं, धीरे-धीरे। नदी के किनारे पहले खेसारी फेंकना शुरू करो। प्रथम दो एक साल उस जगह गायें चरेंगी। फिर धीरे-धीरे दूसरी गायों का वहां जाना बन्द कर दो। लाठी लेकर खड़े हो जाओ। जमीन है कद्दू की लत्ती की तरह। लाठी का सहारा पाने से लकलकाकर बढ़ती है। बाकी सब बाद में आयेंगे। आपसे आप आयेंगे। रसीद, अंगूठे की छाप, फौजदारी-अदालत, दरोगा-हाकिम—कोई भी टालने वाली चीज नहीं है। जाने दो, अभी लड़कों का परिवार है। उन लोगों के पूछने पर सलाह-परामर्श दिये बिना वे नहीं रह सकते हैं, इसीलिए एकदम सब कुछ वे त्याग नहीं सके हैं। यद्यपि किसी के रो-पीटकर उनके सामने आकर पड़ जाने से वे कह देते हैं लड़कों के पास जाने के लिए, वे ही मालिक हैं।....

उनकी एकमात्र कामना है, जिसे रामजी पूरी करेंगे या नहीं, यह नहीं जानता। ऐसी इच्छाएँ जब आती हैं तब एक पल भी स्थिर होने नहीं देती हैं। दूसरी सभी अठ-पहरिये इच्छाओं को दबाकर वे सर झाड़ खड़े होते हैं।

मन के अन्दर एक अस्वस्ति लगी ही रहती है—सर रूखा रहने से माथे के भीतर जैसा होता है, वैसा ही। इसके पहले जब भी उन्हें ऐसी ही किसी एक वस्तु की आकांक्षा हुई है, तभी रामजी ने उन पर कृपादृष्टि बरसाई है। जज साहब के बगल में

कुर्सी पर बैठने की उनकी कामना रामजी ने पूरी की थी। रसोईघर को घर के बाहर लाने की आकांक्षा भी रामजी ने पूरी की थी। यह यकीन उनका अपने पर और रामजी पर था। इस बार वे कुछ अधीर हो गये हैं रामजी की देरी देख कर। 'लोचन सहस न सूझ सुमेरु।' हजारों आँखें रहते हुए भी क्या तुम सुमेरु पर्वत को देख नहीं सकते हो? वह जो यहाँ से आँखों के सामने हरी और काली रेखा आकाश के नीचे दिखलाई पड़ रही है। वह पक्की के किनारे वाली बरगद-पीपल की कतार है। कई कोस दूर होंगे। यहाँ से उस सड़क तक—इतना वे एक 'चक' में देख जाना चाहते हैं। अपने दरवाजे से पक्की जाना हो तो दूसरे की जमीन में पाँव न रखना पड़े। अपनी जमीन से उनकी बैल की वह शंपनी चली है, तो चली ही है—रास्ता खत्म होता ही नहीं! किसी की खुशामद करने की, किसी के चेहरे पर ताकने की जरूरत नहीं—दोनों बगल के खेतों से अपने अधियादार लोग हल चलाना बन्द कर बन्दगी कर रहे हैं—यह सोचने में भी आनन्द आता है।

रामजी ने उनकी इच्छा प्रायः पूरी कर दी है। अभी केवल बीच में पड़ रही है दो-चार टुकड़े खुदरा जमीनें। उनके भीतर है मोसम्मात की जमीन। इन लोगों को देखने से बड़ा खराब लगता है। मन तिक्त हो उठता है। उनका वह पुराना युग यदि होता, तो चिन्ता की कोई बात नहीं थी। चारों तरफ का विराट् समुद्र उस दो बूँद जल को खींच ले सकता अपने पेट के भीतर! आजकल जमाना दूसरे किस्म का होता जा रहा है। सच बात अपने स्वीकार करने में तकलीफ नहीं है—लाठी की ताकत भी कम हो गई है। ऐसे उनके लड़के धनी के पुत्र हैं, उनके जैसा लाठी ही जिसका सम्बल हो, ऐसे गरीब के लड़के तो वे नहीं हैं। उस पर नरम पानी में जन्म पाया है, कर सकें भी, तो कहाँ से?....लेकिन इस बुढ़ापे में आँखों में छाली पड़ने के पहले इतना-सा केवल मुझे दिखा दो रामजी!

पर अनोखी बाबू से कोई काम नहीं होगा, यह वे जानते हैं। कल वह कहने आया था कि लाडली बाबू को जो तीन-सौ रुपये जुर्माना हुआ है, उसी पर हाकिम ने हम लोगों की बैलगाड़ी 'क्रोक' करने का हुक्म दिया है। मूर्ख कहीं का! कैसे चलायेगा इतनी बड़ी सम्पत्ति। 'इजमाली' सम्पत्ति को एक आदमी का जुर्माना वसूलने के लिए 'क्रोक' करना क्या खेल बात है? यही तो बुद्धि है खोपड़ी में!

सीढ़ी पर पैर की आहट सुनाई पड़ रही है। अनोखी बाबू शायद आ रहे हैं, फिर कुछ पूछने।....ओ नहीं। घरवाली हैं। गुदने से भरा हुआ हाथ पहले ही दृष्टिगत होता है। फिर किस मतलब से? उम्र होने पर आजकल कुछ दिनों से बाबूसाहब ने घरवाली को थोड़ी-सी श्रद्धा और प्रशंसा की दृष्टि से देखना शुरू किया है। शायद पुत्र-वधुओं से उनकी तुलना करने के पश्चात्। घरवाली अपने प्रतिदिन के अभ्यास के अनुसार रोज स्नान करने के पहले बाबू साहब की पुरानी लाठी में तेल लगा रखती है। वे जानती हैं कि लाठी उनकी सौत है, लेकिन वह सौत से झगड़ती नहीं है। जैसे लाठी

नहीं, लक्ष्मी को रोक रखने का डण्डा हो वह ! उन्होंने एक दिन अपने हाथों सभी काम किये हैं ! और आजकल उनकी पतोहू अपनी थाली तक लगाकर नहीं खाती हैं। रसोई-घर की बात छोड़ ही दो। वह सब तो आजकल घर के बाहर ही चला गया है।

....इलायची-लौंग माँगने को तो नहीं : कल ही तो आठ इलायचियाँ दी हैं। ....घर की औरतों के हाथ में एक पैसा भी जिससे नहीं जाय, इस पर इस अंचल के गृहस्थों की सजग दृष्टि है। इलायची-लौंग तक घर के मालिक बैठक-खाने में ताला बन्द कर रखते हैं।

बाबूसाहब ने ठीक ही समझा है। गृहिणी फिर इलाइची माँगने आई हैं। इच्छा होती है पूछें कि कल की उतनी इलायचियाँ क्या हुईं?....नहीं, उसका अपना भी एक ख्याल होना चाहिए। सो, जब नहीं हुआ है, तो इसे लेकर फिर 'खिच-खिच' करना अच्छा नहीं लगता है। एक प्रशांत उदारता का भाव दिखाकर खड़ाऊँ पहनते हैं। बैठकखाने की दीवाल-आलमारी की चाभी खोलकर इलायची ला देनी होगी। बेशी देने पर भी एक ही दिन चलता है, और कम देने पर भी एक ही दिन चलता है। सदा से तो वे यही देखते आ रहे हैं। तब, बेशी देने की जरूरत क्या? कहेगी, तुरन्त उसे चाहिए! एकदम घोड़े की पीठ पर सवार होकर आती हैं। एक मिनट भी देर होने से नहीं चलेगा।....इसमें से बचा-बचा कर फिर सावजी की दूकान में वह बेच तो नहीं रही है? गत वर्ष पोते ने खूब निकाला था, दादी का तकिया काटकर सत्तरह रुपये। कहाँ से कैसे जो छिपाकर औरतें गोले का धन बेच देती हैं! समझने का उपाय नहीं है!....

गिदर का उपद्रव

इस बूढ़े गिद्ध की नजर से अपनी जमीन को बचाने के लिए मोसम्मात को एक मर्द की जरूरत थी। इसीलिए वह इतने दिनों तक झुकी थी, गिदर मण्डल की ओर। सगिया लेकिन देवर के साथ सगाई करने को राजी नहीं है। राजी होती भी कैसे? सौतवाला घर भला कौन साध से करना चाहता है? फिर उसके घर में दो मुट्ठी खाने भर अनाज तो है ही।

औरत की स्वाभाविक बुद्धि से मोसम्मात समझती है कि *ढोढ़ाय बड़ा नेक है।* उस पर विश्वास किया जा सकता है। पैसे की लालच उसे एकदम नहीं है। हाथ में लेकर कुछ दिया जायगा, तो खायगा, नहीं तो नहीं। भले ही गिदर मण्डल की तरह रामायण वह न पढ़ सके, पर रामायण उसे अच्छा कठस्थ है। अपना बनाकर रखने पर वह टिकेगा। बातचीत से मालूम होता है, तीरथ करने की ओर उसका झुकाव है। फिर कहीं भाग न जाय। उसकी अपनी भी इच्छा है—एक बार अयोध्याजी हो आये।

और, भला कितने दिन बचेगी ? और, इस कपालजली लड़की को भी एक बार गयाजी ले जाना आवश्यक है, मृत दामाद की सद्गति करानी होगी। उसके लिए अगर एक-आध बीघा जमीन भी बेचना पड़े, तो भी कोई क्षति नहीं है। गत बार यह बात गिदर मण्डल के पास छेड़ते ही वह गुस्से से लाल हो उठा था। तमक कर कहा था कि 'लड़की का दिया हुआ पिंड तुम्हीं लेना हाथ पसार कर गयाजी में।' जमीन बेचने वाली बात उसे जँची नहीं थी। शर्म और घृणा से मोसम्मात की मानों गर्दन कट गई थी। लड़की के पास सगाई करने के पहले ही यह हालत है।....

और, थोड़ा-सा सिखाने से ही ढोड़ाय जमीन की अच्छी तरह देख-भाल कर सकेगा। इस बार अधियादारों से भी मोसम्मात ने फसल अच्छी ही मात्रा में पायी है। भला पायेगी नहीं ? इतने दिनों तक गिदर मण्डल ही मालिक था। मोसम्मात जानती है कि गिदर की हथेली में लेई लगाई हुई है। रुपये पैसे, फसल-जो कुछ भी उसके हाथों से जाता-आता है, उसका कुछ अंश उसके हाथों में ही चिपका रहता है। दो-चार गठरी धान भला किस साल उसके घर पर नहीं पहुँचता था—साँझ के अँधेरे के बाद ? बंगाली सौदागरों से पाये हुए तम्बाकू के रुपये भी गिदर के हाथों से होकर ही आते थे।

गुस्से से गिदर मंडल को अपने हाथ को दाँत से काटने की इच्छा होती है। अधिक सावधान 'होने जाकर' उसने गाँव के बाहर वाले एक आदमी को प्रविष्ट कराया था, मोसम्मात के घर की नौकरी में। देखने में उस वक्त भोला-भाला-सा ही लगा था उसे। गिदर सोच भी न सका था कि उसके पेट में इतनी शैतानी है। दो-दो औरतों को मात्र तीन ही महीने के अन्दर उसने एकदम अपने कब्जे में कर लिया। न मालूम कहाँ का एक परदेसी छोकरा ! मोसम्मात पहले की तरह और उसे प्रश्रय ही नहीं देना चाहती है आजकल। जा पहुँचने पर 'आये हो ? अच्छा ! बैठे हो ! सो भी अच्छा'—ऐसा एक भाव दिखाती है।

यह कैसा घड़ियाल बुला लिया उसने नहर काटकर ! इसका एक विहित प्रतिकार करना ही होगा।

उस दिन भोर को मोसम्मात के घर के सामने ढोड़ाय, मोसम्मात, सगिया तथा अन्य दो-एक पड़ोसी आग ताप रहे थे। बगल वाले घर का वह नंगा लड़का आग पर 'झपट पड़ा' है, फिर भी वह ठिठककर काँप रहा है। उसने आग में एक सकरकन्द दिया है पकने। ढोड़ाय उसे चिढ़ा रहा है—'अरे तेरी नानी के सर के केश में सफेदी हुई है।' और सगिया, सगिया की माँ आदि सभी उस लड़के की खीस देखकर हँस रही हैं।

'क्या ? किसकी नानी को सफेदी हुई है ?' गिदर मंडल का कंठस्वर है न ? इतने सवेरे ?

मोसम्मात घर के निकट घास की बनी गेंडुली को थपकियाँ मारकर साफ कर

ती हैं गिदर के बैठने के लिए । 'किधर से ?'

"फिर किधर से ? खेत से ! 'नित्य खेती, दूसरे गाय ।' खेत की देखभाल करनी पड़ती है रोज, और गाय की एक दिन बीच देकर ।"

ये बातें सुनने में कुछ भी नहीं हैं, पर सभी समझते हैं 'रोज' शब्द का जोर ! गिदर मंडल खोंचा देकर कहना चाहता है कि तुम लोगों के खेत की देखभाल भली-भाँति नहीं हो रही है । इसके होने पर भी कोई भी गिदर से पकड़ा जाना नहीं चाहता है ।

मोसम्मात सोचती है—ढोड़ाय शायद यह नहीं समझ सका है । सगिया भी ढोड़ाय के व्यंजनाहीन मुख की ओर ताककर समझा देना चाहती है । 'अरे कहने दो । कहने से ही तो किसी की देह में फोंका नहीं पड़ रहा है ।'

गिदर के खोंचे को किसी ने अंगीकार नहीं किया, यह देखकर वह खिन्न होता है । ढोड़ाय उस वक्त काफी ध्यान लगाकर घूर की राख को एक लकड़ी से हटा रहा है । धुएँ के कारण उसकी दोनों आँखें मुँद आई हैं । उस तरफ देखकर समझने का उपाय नहीं है कि वह क्या सोच रहा है ।

सहसा ढोड़ाय को गिदर मंडल ताड़ना करता है । 'घूर की राख को नीचे से ऊपर की ओर उठा रहे हो दिन को ? बेवकूफ कहीं का ! मूँछें उग गईं, पर इतना भी नहीं जानते कि घूर की राख शाम के बाद नीचे से ऊपर ठेलकर उठाना पड़ता है, और दिन को उसे ऊपर से नीचे उतारा जाता है ?'

—फिर उस छोटे नंगे लड़के को वह पूछता है—'तू जानता नहीं है, यह बात ?'

वह लड़का गर्दन हिलाकर समझाता है कि वह जानता है यह बात ।

'यहाँ के छोटे बच्चे तक जो जानते हैं, पूरब के जानवर लोग सो भी नहीं जानते हैं । हम लोगों ने अपने बाप-दादों की गोद में बैठकर यह सब सीखा था ।'

ढोड़ाय हरगिज नहीं बिगड़ेगा । चाहे जितना भी कहो । सच मे, वह यहाँ का आचार-व्यवहार कुछ भी नहीं जानता है । आग हटाकर सकरकन्द सीझा या नहीं, देखता है । मोसम्मात चिलम को फूँकती हुई कहती है, 'सीख जायेगा सब ! बच्चा है ! नया आया है, इस देश में ।'

देवर के बर्ताव से सगिया अप्रस्तुत हो जाती है । भोर को सीता जी, रामजी, महावीर जी का नाम लेता, सो तो नहीं, यह क्या शुरू हो गया घर मे ? उम्र में बड़ा देवर है । कुछ कहा भी नहीं जा सकता है उसके मुँह पर ! ठीक वे ही बातें उसके मुँह में अनवरत आयेंगी, जिन्हें ढोड़ाय के सामने कहना उचित नहीं है । अभी तो फिर उसने माँ से कहा है—ढोड़ाय का दरमाहा दिया गया है न ? चार आने की दर से उसका दरमाहा मैंने ठीक कर दिया था । मैं, मैं, मैं ! उसने कहा है कि तुमने नहीं बहाल किया है ? ढोड़ाय तो यह नहीं कह रहा है कि वह नौकर नहीं है । क्या जरूरत

है, उसे ये सब बातें याद दिला देने की ?

मोसम्मात को भी दरमाहा वाली बात पर लज्जा-सी लगती है। सभी फसल और रुपये-पैसे ढोड़ाय के हाथों से ही होकर आते हैं। उसके हाथ में क्या चार आने पैसे दरमाहा 'कहकर' दिये जा सकते हैं ? यह बात वह गिदर को भी जानने देना नहीं चाहती है। कहती है, 'सो होगा, कभी।'

'सुना है तुम लोगों के ढोड़ाय ने फसल का बँटवारा किया है, अधियादारों के यहाँ। इसे भी परदेसी बच्चे का काण्ड कहकर टाल दो। गाँव भर के सभी गृहस्थों के विरुद्ध जाना। बच्चा है तो उसके मुँह पर तेल लगाकर बैठे-बैठे उस पर पंखा डुलाओ कि जिससे एक भी मक्खी बैठने नहीं पाये।'

'इस बार अधियादारों के यहाँ से बाँटकर फसल तो दूसरी बार की अपेक्षा कम नहीं पायी है मैंने।'

गिदर मंडल को लगता है कि उसकी सज्जनता को लक्ष्य बनाकर मोसम्मात ने यह बात कही। वह बिगड़ उठता है।

'तुम्हारे अकेले की बात सोचने से ही तो दुनिया नहीं चलेगी। गाँव के अन्य लोगों की बात भी सोचनी होगी।'

बात की फांस से मोसम्मात थोड़ी ठंडी पड़ जाती है। कहती है 'सो तो होगा ही।'

ढोड़ाय से और रहा नहीं जाता है। बहुत देर तक उसने अपने मन से लड़ाई की है।

'गाँव के लोगों को क्षति कहाँ हो रही है, सो भी तो जरा सुनूं। तेरे सिपाही ने वजन किया, कियाली काट लेने के लिए और अधियादारों ने वजन किया है बिना कियाली लिए ही। अपने घर के गुरु-पुरोहित के अंश बँटवारा होने से पहले ही जो तुम काट रखते थे, सो नहीं चलेगा। अपने हिस्से से राजपूत लोग खिलाएँ न अपने पुरोहित को चार ऊँगली गहरी छाली से बना हुआ दही। चार दुहरी कम्बल के आसन पर बैठायें न अपने ब्राह्मण देवता को ! अधियादार लोग अपने हिस्से से क्यों देंगे ? वे ब्राह्मण क्या अधियादारों के यहाँ पूजा करते हैं ?'

मोसम्मात ढोड़ाय को चुप होने को कहती है। प्रायः ताड़ना ही कर बैठती है वह। 'बात हो रही है गिदर की मेरे साथ, और तू क्यों बीच में बोलने आता है, ढोड़ाय ?''

गिदर ढोड़ाय की बातों का उपयुक्त उत्तर ढूँढ़ नहीं पाता है। हाथ की एक मुद्रा दिखाकर वह अंग-भंगी कर कहता है 'तुम अपना बटुआ कहीं न भरने लग जाना मनेजर साहब।'

'क्या ? क्या कहा ?' ढोड़ाय उठ कर खड़ा हो गया। पल भर में उसके चेहरे का भाव बदल गया था।

सगिया और मोसम्मात इन दोनों के बीच में आकर खड़ी हो गई है। इसलोगों के द्वार पर गिदर का अपमान हुआ, शर्म से मुँह नहीं दिखाया जायगा। नहीं, नहीं, तू शांत हो ढोंढाय !

'मैं क्या उसके खेत की मुनहरनी हूँ कि वह मुझे गाली देगा ? और, मैं हँसकर दुलार करूँगा ? मैंने क्या उसके रुपये कर्ज खाये हैं ? गादखोर कहीं का !'

गिदर मंडल और बात नहीं बढ़ाता। ठीक ऐसा होगा, यह उसने आशा नहीं की थी। ढोंढाय ने जो मुनहरनी की बात कही, सो कहीं कानी मुसहरनी का इंगित नहीं तो कर कहा ? अभी तुरन्त शायद वह सगिया और मोसम्मात के सामने उस बात को लेकर और भी हल्ला करना शुरू कर देगा, सगिया की आशा, अर्थात् सगिया की माँ की जमीन की आशा उसने अभी भी नहीं छोड़ी है।

'चलूँ, धूप लग गई' कहकर वह धीरे-धीरे उठकर निकल जाता है। दूर से वह कह जाता है 'देख, छोटे मुँह से बड़ी बात ठीक नहीं।'

ढोंढाय इस बात का जवाब नहीं देता है। गिदर के चले जाने पर वह मोसम्मात या सगिया किसी से कुछ भी नहीं बोलता है ! " मोसम्मात कहती है, हम लोगों की बातचीत के बीच न बोलो। जिनके लिए इतना करता हूँ, भला वे ही यह कहते हैं। इस 'नमकहराम' स्वार्थी औरत के यहाँ और उसका दाना-पानी नहीं है। रामजी की सृष्टि यह पूरी दुनिया उसके सामने पड़ी हुई है। दोनों हाथ हैं, तो दो मुट्ठी अन्न मिल ही जायगा। न तो कोई चीज यहाँ आते वक्त वह यहाँ लाया ही है और न वह कोई चीज यहाँ से जाते समय ले ही जाना चाहता है। दोनों औरतों में किसी की ओर न देखकर वह बाहर की ओर पग बढ़ाता है।

सगिया अपनी माँ की उस बात के बाद से ही ढोंढाय को घूर रही है।

'माँ बूढ़ी है ! उसकी बात का क्या कोई ठीक है ? उसकी बात पर गुस्सा न हो, ढोंढाय !'

जो सोचा जाता है वह किया भी जा सकता है क्या ? और फिर सगिया की आँखों के आँसुओं को देखने के बाद भी !

मोसम्मात 'बेटा' कहकर उसके पास आकर खड़ी होती है।

'बड़ा बुद्धू है तू। इस परदेसी बेटे को लेकर देखती हूँ अच्छी मुश्किल में पड़ गई। बैठो ! दातून करो ! मैं तब तक मकई का लावा भूँज लाती हूँ।'

सगिया माँ को याद दिला देती है।—'देखना फिर लावा कहीं ज्यादा न भुंज जाय।'

बूढ़ी को यह कहना नहीं पड़ेगा।

असल में ढोंढाय को गुस्से की अपेक्षा अभिमान अधिक हुआ था। क्रोध तो सभी लोगों पर आ सकता है। यहाँ इतने ही दिनों के अन्दर ढोंढा को अभिमान करने का

है, उसे ये सब बातें याद दिला देने की ?

मोसम्मात को भी दरमाहा वाली बात पर लज्जा-सी लगती है। सभी फसल और रुपये-पैसे ढोड़ाय के हाथों से ही होकर आते हैं। उसके हाथ में क्या चार आने पैसे दरमाहा 'कहकर' दिये जा सकते हैं? यह बात वह गिदर को भी जानने देना नहीं चाहती है। कहती है, 'सो होगा, कभी।'

'सुना है तुम लोगों के ढोड़ाय ने फसल का बँटवारा किया है, अधियादारों के यहाँ। इसे भी परदेसी बच्चे का काण्ड कहकर टाल दो। गाँव भर के सभी गृहस्थों के विरुद्ध जाना। बच्चा है तो उसके मुँह पर तेल लगाकर बैठे-बैठे उस पर पंखा डुलाओ कि जिससे एक भी मक्खी बैठने नहीं पाये।'

'इस बार अधियादारों के यहाँ से बाँटकर फसल तो दूसरी बार की अपेक्षा कम नहीं पायी है मैंने।'

गिदर मंडल को लगता है कि उसकी सज्जनता को लक्ष्य बनाकर मोसम्मात ने यह बात कही। वह बिगड़ उठता है।

'तुम्हारे अकेले की बात सोचने से ही तो दुनिया नहीं चलेगी। गाँव के अन्य लोगों की बात भी सोचनी होगी।'

बात की झांस से मोसम्मात थोड़ी ठंडी पड़ जाती है। कहती है 'सो तो होगा ही।'

ढोड़ाय से और रहा नहीं जाता है। बहुत देर तक उसने अपने मन से लड़ाई की है।

'गाँव के लोगों को क्षति कहाँ हो रही है, सो भी तो जरा सुनूँ। तेरे सिपाही ने वजन किया, कियाली काट लेने के लिए और अधियादारों ने वजन किया है बिना कियाली लिए ही। अपने घर के गुरु-पुरोहित के अंश बँटवारा होने से पहले ही जो तुम काट रखते थे, सो नहीं चलेगा। अपने हिस्से से राजपूत लोग खिलाएँ न अपने पुरोहित को चार ऊँगली गहरी छाली से बना हुआ दही। चार दुहरी कम्बल के आसन पर बैठायें न अपने ब्राह्मण देवता को! अधियादार लोग अपने हिस्से से क्यों देंगे? वे ब्राह्मण क्या अधियादारों के यहाँ पूजा करते हैं?'

मोसम्मात ढोड़ाय को चुप होने को कहती है। प्रायः ताड़ना ही कर बैठती है वह। 'बात हो रही है गिदर की मेरे साथ, और तू क्यों बीच में बोलने आता है, ढोड़ाय?''

गिदर ढोड़ाय की बातों का उपयुक्त उत्तर ढूँढ़ नहीं पाता है। हाथ की एक मुद्रा दिखाकर वह अंग-भंगी कर कहता है 'तुम अपना बटुआ कहीं न भरने लग जाना मनेजर साहब।'

'क्या? क्या कहा?' ढोड़ाय उठ कर खड़ा हो गया। पल भर में उसके चेहरे का भाव बदल गया था।

सगिया और मोसम्मात उन दोनों के बीच में आकर खड़ी हो गई हैं। हमलोगों के द्वार पर गिदर का अपमान हुआ, शर्म से मुँह नहीं दिखाया जायगा। नहीं, नहीं, तू शांत हो ढोढ़ाय !

'मैं क्या उसके खेत की मुसहरनी हूँ कि वह मुझे गाली देगा ? और, मैं हँसकर दुलार करूँगा ? मैंने क्या उसके रुपये कर्ज खाये हैं ? नमकखोर कहीं का !'

गिदर मंडल और बात नहीं बढ़ाता। ठीक ऐसा होगा, यह उसने आशा नहीं की थी। ढोढ़ाय ने जो मुसहरनी की बात कही, सो कहीं कानी मुसहरनी का इंगित नहीं तो कर कहा ? अभी तुरन्त शायद वह सगिया और मोसम्मात के सामने उस बात को लेकर और भी हल्ला करना शुरू कर देगा, सगिया की आशा, अर्थात् सगिया की माँ की जमीन की आशा उसने अभी भी नहीं छोड़ी है।

'चलूँ, धूप उग गई' कहकर वह धीरे-धीरे उठकर निकल जाता है। दूर से वह कह जाता है 'देख, छोटे मुँह से बड़ी बात ठीक नहीं।'

ढोढ़ाय इस बात का जवाब नहीं देता है। गिदर के चले जाने पर वह मोसम्मात या सगिया किसी से कुछ भी नहीं बोलता है !···मोसम्मात कहती है, हम लोगों की बातचीत के बीच न बोलो। जिनके लिए इतना करता हूँ, भला वे ही यह कहते हैं। इस 'नमकहराम' स्वार्थी औरत के यहाँ और उसका दाना-पानी नहीं है। रामजी की सृष्टि यह पूरी दुनिया उसके सामने पड़ी हुई है। दोनों हाथ हैं, तो दो मुट्ठी अन्न मिल ही जायगा। न तो कोई चीज यहाँ आते वक्त वह यहाँ लाया ही है और न वह कोई चीज यहाँ से जाते समय ले ही जाना चाहता है। दोनों औरतों में किसी की ओर न देखकर वह बाहर की ओर पग बढ़ाता है।

सगिया अपनी माँ की उस बात के बाद से ही ढोढ़ाय को घूर रही है।

'माँ बूढ़ी है ! उसकी बात का क्या कोई ठीक है ? उसकी बात पर गुस्सा न हो, ढोढ़ाय !'

जो सोचा जाता है वह किया भी जा सकता है क्या ? और फिर सगिया की आँखों के आँसुओं को देखने के बाद भी !

मोसम्मात 'बेटा' कहकर उसके पास आकर खड़ी होती है।

'बड़ा बुद्धू है तू। इस परदेसी बेटे को लेकर देखती हूँ अच्छी मुश्किल में पड़ गई। बैठो ! दातून करो ! मैं तब तक मकई का लावा भूँज लाती हूँ।'

सगिया माँ को याद दिला देती है।—'देखना फिर लावा कहीं ज्यादा न भुँज जाय।'

बूढ़ी को यह कहना नहीं पड़ेगा।

असल में ढोढ़ाय को गुस्से की अपेक्षा अभिमान अधिक हुआ था। [illegible] लोगों पर आ सकता है। यहाँ इतने ही दिनों के अन्दर ढोढ़ाय को [illegible]

अधिकार पैदा हो गया है। नहीं तो क्या ढोढ़ाय का गुस्सा इतनी जल्दी शान्त होता ? और, इस तरह निःशब्द !

□

खेती वाली जाति के राज्य पर शनि की दृष्टि

केवल बिसकन्धा में ही क्यों, जिरानिया जिला भर में अकाल आया है। धीरे-धीरे, दबे पांव, वह आ रहा था कई वर्षों से। पैसे का अकाल। बड़े किसानों के यहां धान है। अब तक कोई चिन्तित नहीं था, लेकिन क्या करना होगा, यह किसी को मालूम नहीं था। बच्चन सिंह को भी नहीं। सभी अपनी-अपनी जान बचाने में व्यस्त हैं। पुराने धान से बाबूसाहब के पांच-सात सौ मनवाले गोले भरे हुए हैं। बिना मांगे जो धान आयेंगे उन्हें रखने के लिए जगह का इन्तजाम करना कठिन है। गत बार मचान पर जूट सड़ा था। पानी की दर से उन्हें बेचना पड़ा था मंगतूराम की अढ़ती में। कितनी खुशामद करनी पड़ी। वह कहता था कि उसके गुदाम में जगह नहीं है। जूट तो इतना होने पर भी बिका था, पर धान और मकई अनोखी बाबू बेच ही नहीं सके थे। साल के पलटा खाते-न-खाते मकई में पिल्लू लग गया था। इसलिए गांव के अन्दर ही उनकी खैरात करनी पड़ी थी। बिना मांगे फसल देने का ही नाम खैरात है। एक लम्बी कॉपी में अँगूठे की छाप देकर उन्हें लेना पड़ता है। जाड़े के अन्त में इसका डेढ़ गुना रब्बी की फसल से वह चुकाना पड़ेगा। इस बार सस्ती दर से उन्हें खैरात छोड़ी थी तो दूसरी बार दुगुना लगना ही था। लेकिन उन्होंने देते समय साफ-साफ कह रखा है, उनके पास फजूल बातें नहीं हैं, दूसरे किसानों की तरह वे लुका-छिपाकर कुछ नहीं करना चाहते हैं, साठ के वजन से लेना होगा, और लौटाना होगा अस्सी के वजन से—जो कि यहां चलता है। खाने के लिए मकई लेने पर यही दर है। बीज के लिए लेने पर उसकी दर और भी अधिक है।

पिल्लू पड़े भुट्टा के दानों को किसी ने बीज के लिए लिया भी नहीं था। इससे केवल खाना चल सकता है।

पैसे का अकाल इस बार कैसे धान के अकाल में बदल गया यह कोई नहीं जान पाया था। रब्बी की फसल के बाद इस बार लाठी के बल से भी कुछ विशेष नहीं मिल सकेगा। यह सभी किसान जानते थे। इसीलिए इस बार बाबूसाहब ने बहुत-सी जमीनों को बिना आबाद किये ही रख छोड़ा था। बेच न सकने से फसल से लाभ ही क्या है। गोले में भला और कितना अँटेगा ? फसल यदि बिकी भी, तो जितनी कीमत मिलेगी है, उससे खर्च भी पूरा नहीं होगा।

यही अकालवाली बात आजकल रोज चलती है—मठ के सामने, भवन की बैठक में। असाढ़ खत्म हो गया है, पर धान रोपने के लायक पानी कहाँ हुआ ? इन्द्रासन में भी इस बार आग लगी है। आम भी अगर अच्छा फलता, तो कम-से-कम उन्हें पेड़ के नीचे से बटोरकर कुछ दिनों तक चल जाता। औरतों ने पूर्णिमा के रोज जाट-जाटिन का गाना गाया, फिर भी वर्षा कहाँ हुई ? लोग खायें क्या ? वन-अमरूद चल रहा है। मैने के फल और ताड़ के पकने में अभी बहुत देर है। जब टोला पर कु-दृष्टि पड़ती है, तो ऐसे ही पड़ती है। शीत जैसे फटे हुए कंठ से होकर देह में घुसता है। इधर से सम्हालो तो उधर से घुसेगा। चींटियों की कतार मुँह में अण्डे लेकर जाती है, फिर भी वर्षा नहीं होती है।

वर्षा नहीं होने से मन ललचाता है। फिर, वर्षा होने से भी क्या होगा यह सोचने पर भी मन खराब हो जाता है। बीज के लिए धान तक किसी के पास नहीं था कि जिससे बिचड़ा बनावे। होने से भी आफत और न होने से भी आफत। इधर बाप कुत्ता खाता है तो उधर माँ का परान निकलता है। वह किस्सा जानते हो न ? बाप मांस पकाने को कह गया है। माँ ने पका रखा है एक कुत्ते का बच्चा। अब अगर बेटा बाप को कह दे यह बात, तो माँ का परान निकल जाय, और न कहे तो बाप को कुत्ते का मांस खाना पड़े। यह भी वैसा ही हुआ है बूढ़े दादा!

बूढ़ा दादा अन्धेरे में अन्दाज लगाकर देखने की चेष्टा करता है—बिल्टा फिर तो कहीं मजाक नहीं कर रहा। ऐसा मजाकिया है यह छोकरा! ऐसा तो मालूम नहीं हो रहा है कि वह अभी मजाक कर रहा है।

'समझा बिल्टा। बाबूसाहब का यह पाप का पैसा भी रहेगा नहीं। यह मैंने कह दिया, देख लेना। नहीं तो फिर मेरे नाम से कुत्ता पोसना। चाहे उनके अगले जनम के कमाये हुए पुण्य कितने भी रहें।'

मन की गहराई से एक जैसे दुःख में टोले' के सभी के मन ने आवाज दी है। इसीलिए बिलटा को बिल्टा कहकर पुकार रहा है, बूढ़ा दादा।

रामचन्द्रजी के राज्य के नियम-कानून सब बदल गये हैं क्या ?

'अउर करइ अपराध

कोउ अउर पाव फल भोगु।'

कसूर करता है कोई, फल भोगता है कोई। आश्चर्य है!

उसी रात एक हल्की वर्षा हो गई। कलियुग में लोगों के मन मे पाप आ घुसा है। इसीलिए जाट-जाटिन के गीत का फल पाने मे देर होती है। वर्षा होते समय गाँव भर के सभी जाग उठे थे। सभी घरों में स्त्री-पुरुष यह चर्चा कर रहे थे कि यह पानी अभी तुरन्त रुक जायगा। इस एक चुल्लू पानी से क्या होगा ? केवल कुश की जड़ें बड़ी सुई की तरह अंकुर छोड़ेंगी—हल चलाने के समय पैरों में चुभने के लिए! लेकिन धूल तो मिट जायेगी।

आकाश टूटकर पानी बरस रहा है। सभी देख रहे हैं कि पलनिया के नीचे से पानी का स्रोत बह रहा है। फिर भी कोई अपनों के पास, अपने घर के लोगों के पास सच्ची बात नहीं कहेगा।

वर्षा के रुकने पर अभी-अभी गाँव में थोड़ी आश्वस्ति आयी है। इतने में अचानक हल्ला-गुल्ला सुनाई पड़ता है। दूर, पश्चिम की ओर से।

जरूर कोई चोर-वोर होगा। अपने घरों में चोरी चली जाने के लायक कोई चीज के न रहने पर भी सभी दौड़ते हैं—लाठी, बांस, सहजन की डाल—जिसके हाथ के सामने जो जुट जाय, उसे ही लेकर। बिसकंधा में भग्न मठ की कृपा से ढेले-पत्थरों का अभाव नहीं है यह गनौरी को याद आ जाती है पैर में ईंट की ठोकर खाकर। गोंछ भरकर वह ईंटें ले लेता है। आवाज तब तक बाबूसाहब के मकान की ओर पहुँच गई थी।

रात को बाबूसाहब के मकान के चारों ओर गाना गाता हुआ, नहीं तो बाँसुरी बजाता हुआ पहरा देता है एक भीमकाय संथाल। उसके हाथों में रहता है तीर-धनुष और भाला। पास ही संथाल-टोली में उसका घर है। दिन भर वहीं सोता है, और रात को बाबूसाहब की दी हुई पचई पीकर वह ड्यूटी देता है। उसी आदमी ने बाबूसाहब के पश्चिम वाले खेत की तरफ छप्-छप् की आहट पाकर सोचा था कोई रीछ नहीं तो नीलगाय-बाय होगी। ओलती के बगल दबाते हुए झुक-झुककर आगे बढ़ गया था। फिर उसने अच्छी तरह आँखें पोंछी थीं। अपने हाथों की उँगलियों को तो वह ठीक ही गिन सक रहा है। भाग्य था कि उसने तीर नहीं चलाया था। उसके बाद उसने चिल्लाकर लोगों को जगाया था।

कोइरी-टोले का दल बाबूसाहब के घर पर पहुँचकर देखता है। ताज्जुब की बात है। अनोखी बाबू खड़ाऊँ से पीट रहे हैं बूढ़ा दादा को। बगल में रखा हुआ है एक बोझा धान। बूढ़ा दादा रो रहा है और अनोखी बाबू के पैर पर सर पीट रहा है। 'और कभी ऐसा काम नहीं करूँगा, छोटे मालिक।'

संथाल कहता है—'बाँसुरी रुकते ही, जो ऊपर से बाबूसाहब चिल्लाते हैं कि मैं ऊँघ रहा हूँ, सो देखो, मैं जगा रहता हूँ या नहीं।'

फिर वह बढ़ आता है कोइरी-टोला के लोगों के पास, सारी घटना उन्हें समझा देने के लिए। समझाने की जरूरत नहीं थी।

वह संथाल हँसते-हँसते बेदम है। छोटे मालिक को उसने नीचे से पुकारा है, उनकी निद्रा भंग करने के लिए। नींद भी क्या टूटती है? भांग की नींद है। वर्षा के बाद वाली! नींद टूटने पर मुझपर गुस्से से लाल हो गये। जैसे मैं काली गाय को बछड़ा हो रहा है, यह कहकर बुला रहा हूँ।

टोले के लोगों पर नजर पड़ते ही सहसा बूढ़ा दादा की रुलाई बन्द हो जाती है। शर्म से वह इस तरफ देख भी नहीं सकता है।

अनोखी बाबू की नजर इस तरफ पड़ती है। 'भागो! भागो साले सब! चोट्टों

का दल ! चोर की मदद करने आया है। इस आदमी को आज पकड़कर रखो। सुबह इसे जेल भेजूंगा।'

बूढ़ा दादा फूट-फूट कर रो उठता है।



मधु-वन का शान्तिभंग

बाबूसाहब के मकान से कोइरी-टोला के लोग आकर बैठते हैं बिल्टा के घर के सामने वाले मचान पर ! काम बूढ़ा दादा ने नाजायज किया है। चोरी करना क्या भले आदमी का काम है ? छिः, छिः, यह क्या दुर्मति आई थी बूढ़े को। दो दिन के बाद मरोगे, भला अभी भी परमात्मा से डर नहीं लगता है ? तुम्हे अभाव है, वह तो सभी को है। पर ज्यादा भूख लगने से क्या लोग दोनों हाथों से भात खाते हैं। असम्भव काण्ड है।

लेकिन बूढ़ा दादा की इस विपत्ति के समय तो निश्चिन्त होकर सोया नहीं जा सकता है। कुछ तो करना ही है। अभी बाबूसाहब नहीं उठे थे। थोड़ी रात रहते ही वे नींद से जागते हैं। ·खबर तो तू खाक रखता है, सिर्फ फद्-फद् करता है, गनौरी ! अब तक बाबूसाहब जमकर ध्यान में बैठे होंगे।

लखमनिया की नानी बाबूसाहब के यहाँ काम करती है। वह कहती है कि 'धियान' करते समय बाबूसाहब के कमरे में एकदम हवागाड़ी की तरह आवाज होती है। फिर गले के भीतर से वे पेट में रस्सी घुसाते हैं। बाबूसाहब की घर वाली ने कहा है कि ऐसा करने से जवानी लौट आती है। बूढ़े को फिर से दाँत उगते हैं। उसके बाद वे चरवाहों को बुला लेती हैं, भैंसों को चराने ले जाने के लिए।

अनोखी बाबू ने ही तो खड़ाऊँ के साथ बूढ़ा दादा के माथे के केश उखाड़ लिये हैं। देखो, अब बाबूसाहब क्या करता है। गुड़ की मक्खी को भी बिना चूसे नहीं फेंकता है वह चमार ! लचुआ चौकीदार तक को तो वह छोड़ता और भला वह छोड़ेगा बूढ़ा दादा को ? यह बात थाना में जाकर कहने तक की हिम्मत न पड़ी हाड़ी के बेटे को, फिर घोड़े पर चढ़ने का शौक है।

बड़ा निरीह आदमी है बूढ़ा दादा !

हाँ तो लचुआ हाड़ी की बात ही जब तुमने छेड़ी, तो कहता हूँ। उसी से मैंने सुना है कि थाना में आजकल बाबूसाहब का सुग्गा नहीं बोलता है। उसी ने कहा है कि दरोगा साहब इधर बाबूसाहब के पक्ष के नहीं हैं। मोटे तौर पर पान खिलाने से भी

नहीं। बाबूसाहब ने कचहरी में मुकदमा लड़कर दरोगा साहब के कब्जे से बैलगाड़ी को छुड़वा ली है।

इसीलिए दरोगा साहब बेइज्जत हुए हैं अपने ऊपरवाले कर्मचारियों के सामने।

बिल्टा! तूने उस दिन देखा नहीं? वह जो हाकिम की हवागाड़ी बिगड़ गई थी पक्की पर। गाँव के लोग बुलाने आये, वे गिदर मंडल के बरामदे की खटिया पर बैठे, पर वे बाबूसाहब के घर की चौहद्दी में नहीं गये। लछुआ चौकीदार ठीक ही कहता है। कलस्टर-हाकिम, सभी आजकल बाबूसाहब के खिलाफ हैं—उनके लड़के लाडली बाबू ने महात्माजी में नाम लिखवाया है न इसीलिए।

दरोगा साहब हाथ के आदमी न होते तो क्या कोई शौक से थाने के अहाते में घुसता भी! इस दरोगा साहब की जब तक नहीं बदली नहीं होती है तब तक बाबूसाहब थाने की राह से नहीं गुजरेंगे। यह मैं जमीन पर लोहे की लकीर खींचकर कह रहा हूँ।

सभी चैन की साँस लेते हैं। खैर बूढ़ा दादा को तब सरकार की खिचड़ी नहीं खानी होगी। दो-चार हाथ मार पर ही खेप लेगा।

इतनी देर में सभी अस्पष्ट रूप से समझते हैं कि यद्यपि वे यहाँ बैठे हुए थे बूढ़ा दादा के मामले को लक्ष्य बनाकर, फिर भी मन के भीतर चुपके से आना-जाना कर रही थी कोई और ही चीज। मुख से उन्होंने अवश्य कहा है कि रामचन्द्रजी बूढ़ा दादा को पकड़वाकर हम लोगों को सावधान कर रहे हैं, कह रहे हैं कि यह न समझो कि मैं सो रहा हूँ। अभ्यास के वश में हो उन्होंने यह बात कही है, किन्तु साथ-ही-साथ उन लोगों ने यह भी समझा है कि उस कथन में कहीं एक असंगति है। मन की मक्खन पिघलाई हुई बात और मन की बोली का फर्क सुनते ही मालूम हो जाता है। इसीलिए न किसी-किसी आदमी को पंडितजी का रामायण पाठ सुनते ही आँखों में आँसू आते हैं, तो किसी को ऊँघने!

भींगी मिट्टी की गंध किसी के मन को भली-भाँति स्थिर नहीं होने दे रही है। किसी के वह प्रसंग के छेड़ने पर बाकी सभी कतरा जाते। सभी को याद आ रही है अपनी-अपनी अक्षमता की बात, दुर्भाग्य की बात! इच्छा होती है इसी रात को एक-बार अपनी जमीन देख आयें। लेकिन उसके बाद? बूढ़ा दादा के उस मामले की एक निष्पत्ति होती है, लेकिन मन के भीतरवाले प्रश्न का क्या कोई जवाब ही नहीं है? वैसी मीठी गंध से भरा हुआ भींगा खेत क्या वैसा ही रह जायगा रामचन्द्रजी? अपने से जो बात नहीं कही जा सकती है वह कही जा सकती है केवल उनसे।

भोर के प्रकाश में दिखाई पड़ता है कि इतनी आँखों के आइनों पर भींगे खेत का धब्बा पड़ गया है।

ढोड़ाय खाँसकर गला साफ कर लेता है। अपनी बातों का वजन बढ़ाने के ध्येय से वह सीधा होकर बैठता है।

जब दरोगा, हाकिम, चौकीदार बाबूसाहब के खिलाफ हैं, तो फिर डरने को क्या है ?

यह फिर क्या कहता है ढोड़ाय ? सोचा शायद काम की बात छेड़ेगा वह, जो बात वर्षा हो जाने के बाद से ही सबके मन में फिर-फिरा रही है। फिर से बूढ़ा दादा वाली बात उसने शुरू की। बूढ़ा दादा उसे जरा प्यार करता है न, इसीलिए बूढ़ा दादा की विरामहीन निरर्थक गप्प जो सुनता है, उसे ही वह बूढ़ा प्यार करता है।···नहीं, ढोड़ाय के चेहरे पर हँसी की झलक देख रहा हूँ। दुष्टता से भरी हुई हँसी की ! जरूर कोई मतलब लेकर उसने यह बात कही है। अरे, जब कहते ही हो, तो साफ-साफ कहो न ! दो-दो मोसम्मात को कब्जे में पा लिया है, अपना कहने के लिए यहाँ तेरे कुछ नहीं है, तुझे हँसी न आयेगी तो किसे आयेगी ? कितना भी हो परदेसी आदमी है। गाँव के लोगों के लिए मन के भीतर से हमदर्दी आयेगी कैसे ? ऐसी अवस्था में हँसी-मजाक न करना रे ढोड़ाय ! यह सब करना जाकर अपने मलहरिया में, समझा छोकरा ! सभी चीजों के लिए एक समय होता है। 'खीरा सबेरे हीरा।' खीरा तक खाने के लिए एक समय है।

ढोड़ाय बिगड़ जाता है, 'अरे ! मेरी बात भी तो पहले सुनो। तब न कहो ? परदेसी आदमी की बात सुनने से क्या कानों में पिल्लू पड़ेंगे ? सभी मिलकर दल बाँध-कर चलो बाबू साहब के यहाँ।'

उसके बाद ढोड़ाय साफ-साफ और सजा-सम्हालकर अपनी बात सबों को कहता है।

····· '' सिर्फ मुँह की बात से मालपुआ छानने से कुछ नहीं होगा', यह कहकर ढोड़ाय अपनी बात समाप्त करता है।

दो-एक क्षीण प्रतिवाद सुनाई पड़ते हैं। 'सिर्फ बन्दूक को ही कुछ दिन पहले सरकार ने छीन लिया है, नहीं तो बाबूसाहब फिर भी बाबूसाहब ही हैं। दरोगा के कब्जे से गाड़ी—बैल छीन लाने की हिम्मत वे अब भी रखते हैं। भला रहेगी नहीं ? असेसर जो हैं वे।'

ढोड़ाय क्रोध से गरजता है, इस बार से देख लेना, रोज पानी बरसेगा, पानी से भरे हुए खेत के किनारे बैठ-बैठकर तुम लोग क्या दिनाई खुजलाओगे और रामजी आकर तुम लोगों के बाल-बच्चों के मुँह में कौर खोंस जायेंगे ?'

'वह संथाल पहरेदार लेकिन मरखंडी भैंस की तरह तीर-धनुष लेकर दौड़ आयेगा तब ?'

'अरे नहीं, नहीं ! सूरज उगने के साथ ही साथ वह ड्यूटी खतम कर घर चला जाता है। शेष पर्यन्त जैसे इस संथाल के घर चले जाने पर ही उन लोगों के भविष्य का कार्यक्रम निर्भर कर रहा था। फिर भी क्या दिल की धड़कन बन्द होती है ? शायद

उसे भुलाने के लिए सभी बिल्टा के साथ स्वर में स्वर मिलाकर चिल्लाते हैं—'बजरंग-बली, महावीर जी की जय।'

भोर के प्रकाश की आग उस वक्त लगी है बिसकंधा के आकाश में, मठ के ऊपर वाले पीपल में, ढोंड़ाय आदि की आँखों में।····

बाबूसाहब धान के चोरी होने की बात रात को ही जान गये थे। लेकिन उस समय उन्होंने इस पर हल्ला-गुल्ला नहीं मचाया था। घर के मालिक की बातों का वजन रहना चाहिये। समय नहीं असमय नहीं, जब-तब हाँउ-हाँउ करने से कोई उस आदमी को कुछ भी नहीं लगाता है। भोर को दातून करने के बाद उन्होंने फीता गले में घुसाया ही था कि सहसा कानों में आती है महावीरजी की जय की आवाज! जाने कैसा तो लगा। आज तो कोई त्योहार-परब नहीं है। मठ में फिर सालों ने कुस्ती का अखाड़ा खोला क्या? लौंडे-छौंडे तो समझते नहीं हैं, लेकिन तर्क करने आते हैं। स्कूल और कुस्ती का अखाड़ा, दोनों ही संस्कार बिगाड़ने भर को हैं। इसीलिए तो लड़कों को कहता हूँ कि तुम लोग ठोकर खाकर सीखोगे। बिना कीर्तन के, बिना पूजा के महा-बीरजी की जय का नारा लगाना बड़ा कुलक्षण है। हल्ला इसी तरफ आ रहा है पल भर में वे समझ जाते हैं कि कोइरी-टोला के लोग उस चोट्टे को छुड़वाने के लिये दरबार करने आ रहे हैं। इन लोगों को रामजी सुमति क्यों नहीं देते हैं उनके राज्य में तो कभी चोरी नहीं होती थी। लड़के लोग हुए हैं अपदार्थ! सिर्फ एक दिन बड़का को लाठी उठाते देखा था। सो भी देखा लाठी के पतले भाग को उसने लिया था मुट्ठी में। यह क्या कुदाल चलाना है। अभी भी नींद नहीं टूटी है। वर्षा के बाद वाले दिन वह झटपट उठकर खेत देखने जायेगा, धान रोपने की व्यवस्था करेगा, सो तो नहीं, अभी भी सो रहा है।····देखूँ, कितना सो सकता है।....मैं हरगिज आवाज देकर नहीं जगाऊँगा।····

बाबूसाहब के घर के नजदीक आकर ढोंड़ाय आदि के दल का उत्साह जरा ठंडा पड़ जाता है। दो-एक को नीम के दतवन तोड़ने की बात याद आती है। जिसको मौका नहीं मिलता है, वे भी पीछे रहना चाहते हैं। परदेसी आदमी को कितनी सुविधा है! न वह बाबू साहब की जमीन की अधियादारी ही करता है, न कर्ज खाता है, और न लाठी के युग के जवान बाबूसाहब को खबर रखता है।

'बच्चन सिंह कहाँ हैं? हम उनसे भेंट करना चाहते हैं।'

'बाबूसाहब से? क्यों? जरूरत है, तो छोटे मालिक के आने पर उनसे मुलाकात करना।'

'अरे, बच्चन सिंह ही सब हैं—अनोखी बाबू को सामने रखकर वे ही तो सब काम चलाते हैं।'

बाबूसाहब के कान खड़े हो जाते हैं। उनकी देहली में खड़ा होकर कह रहा है बच्चन सिंह! किसी बूढ़े की आवाज तो नहीं मालूम पड़ती है?

वे सामने जाकर खड़े होते हैं। उनके सामने कोइरी-टोला के लोगों को एक टाँग

पर खड़े रहने का नियम है। दाहिने पैर से बायें पैर के ठेहुने को लपेटकर दोनों हाथ जोड़कर जमीन्दार के सामने खड़ा होना—केवल इस गाँव का ही रिवाज नहीं, इस मुल्क का रिवाज है।

बाबूसाहब अवाक् हो जाते हैं। और भी अवाक् हो जाते हैं अपनी सहनशीलता देखकर।

'हुजूर हम लोग आये थे एक निवेदन करने।'

बाबूसाहब को इच्छा होती है कि वे कहें 'फिर मेरे पास क्यों?' लेकिन ये लोग जानते जो हैं कि बच्चन सिंह अनोखी बाबू को सामने रखकर स्वयं ही काम चलाता है। उन्हें लगता है कि कुछ देर पहले तक भी वे यह बात इतना साफ-साफ नहीं जानते थे। वे इनके सामने पकड़े गये हैं।

ढोड़ाय ने मन-ही-मन तैयार होने का काफी समय पाया। सचमुच परदेशी होने में लाभ है। हारने की भी परवाह नहीं, गाँव छोड़कर चला जाना हो, तो उसकी भी परवाह नहीं। जहाँ उसकी जड़ थी, भला वहाँ भी पंचों से टक्कर लेने में वह पीछे नहीं रहा और यहाँ डरने जायेगा? वहाँ उसने हार मानी थी जाति के शिरोमणि से नहीं, अपने मन की एक दुर्बलता से। नहीं तो क्या ढोड़ाय किसी के सामने नीचा होता है?

फिर, जब वह जानता है कि वह रामजी के सामने कोई पाप नहीं कर रहा है, कोई अन्याय नहीं कर रहा है। दरोगा साहब हाकिम के पास नहीं जा सकेंगे, यह बात उसे ज्ञात न रहने से उसके मन में इतना बल रहता है या नहीं, कहना कठिन है।

बाबूसाहब पूछते हैं—इस चोट्टे को छुड़वाने के लिए क्या दरबार करने आये हो?'

'नहीं हुजूर हम लोग धान लेने आये हैं'

'धान? तू फिर कब से धान का बालिस्टर हुआ? तू तो मोसम्मात के यहाँ काम करता है।'

ढोड़ाय इस बात का कोई जवाब नहीं दे सकता है! जवाब देता है बिल्टा। 'हुजूर ही माँ-बाप हैं। हुजूर के जूते का बोझा ढोकर हम लोगों का दिन चलता है। आज हम लोगों के खेतों के लिए धान चाहिए ही।'

बाबूसाहब जैसे आदमी भी अचकचा जाते हैं, बिल्टा के गले की स्वर की दृढ़ता देखकर। उसमें प्रार्थना का लेश-मात्र भी नहीं है। वे अभी लोगों को इकट्ठा कर सकते हैं। पर उससे क्या अपनी दुर्बलता को प्रकट नहीं होगी? अपने आदमी भी हैं कितने? सब तो खेत में चले गये हैं। चरवाहे अभी तक भैंस चराकर लौटे नहीं हैं। अनोखी बाबू सो रहे हैं। उन्होंने कोइरी लोगों के गले से ऐसा स्वर कभी नहीं सुना है। सचमुच वे बूढ़े हो गये हैं, नहीं तो इस मामूली घटना पर तुरंत कोई हुक्म देने से पहले ही क्यों इतनी तरह तरह की बातें मन में आती हैं?....

बाबूसाहब की बात का जवाब ऐन मौके पर मन में नहीं आया था। ढोड़ाय को अपने पर गुस्सा आता है।

ढोड़ाय आदि बखारी की तरफ बढ़ते हुए कहते हैं—हमलोग बखारी से नापकर धान निकाल रहे हैं। एक छटाँक धान भी इधर-उधर नहीं होगा। सब का नाम लिख रखिये गुमास्ताजी! सभी अँगूठे की छाप दे देंगे। उगरा है आप लोगों के यहाँ? आप ही गिनकर दीजिये गुमास्ताजी एक-एक कर। सभी एक साथ भीड़ मत लगाओ।

बाबूसाहब को और अधिक सोचने की उन्होंने फ़ुर्सत नहीं दी है। गुस्से से उन्हें अपने हाथ को दाँत से काटने की इच्छा होती है। अभागा लाडली अगर गंज के बाजार में कपड़े की दूकान के सामने महात्माजी का नारा न लगाता, तो आज यह काण्ड नहीं हो सकता था। अब तक यहाँ गोली चल जाती, फिर बाबूसाहब खुद घोड़े पर चढ़कर थाना जाते। अपनी लाठी पर वे और भरोसा नहीं करते हैं। फिर भी गाँव में उनका एक सम्मान है, छोटा जो होना था, तो वे हुए ही हैं।

'बखारी की टोप को खोलकर ऊपर से धान ले लो। रात धान में पानी पड़ा है, पुरानी टोप के भीतर से। उसे उतार रखना, मरम्मत करवाना होगा। धान भी जरा हवा-पानी पाये।'

उदारता का आवरण पहनाकर बाबूसाहब अपना सम्मान बचा लेने की व्यर्थ चेष्टा करते हैं। वे समझते हैं कि उन बातों से कोई काम नहीं हुआ। साले सब समझते हैं। रहते हैं वैसे चुपचाप। फिर भी मन को प्रबोध देने की चेष्टा करनी पड़ती है।

आँखों के सामने इस धान का वजन करना उनसे और देखा नहीं जाता है!

'गुमास्ताजी! लिख रखना सब का नाम।' यह कहकर बाबूसाहब गोशाला की तरफ चले जाते हैं। धान के लेने-देने जैसी तुच्छ मामूली बात में माथा-पच्ची करने का उन्हें समय नहीं है—ऐसा भाव दिखाकर वे जाते हैं।

गोशाला में जाने पर भी निस्तार नहीं। वहाँ भी मूर्तिमान लोग जाकर हाजिर हैं। 'फिर क्या?' जहाँ तक हो सके कड़े भाव से बाबूसाहब पूछते हैं। बोलना चाहा था उन्होंने कितनी जोर से, पर स्वर कैसा धीमा हो गया।

'धान का बिचड़ा भी हम लोगों को चाहिए हुजूर।' इस बार ढोड़ाय ने जवाब ठीक कर रखा है। बोलें तो फिर बाबूसाहब उसे 'बालिस्टर।'

'मेरे अपने खेत में भी रोपने के लिए रखना लेकिन।' लचुआ चौकीदार भी कम-से-कम अगर आज उनके कब्जे में रहता। यह बात सोचकर भी बाबूसाहब के मन को जरा सान्त्वना मिलती। तब वार्धक्य के कारण आज उसकी यह दुर्बलता नहीं हैं, वह एक ग़लत सन्देह हुआ था, उनके मन में राजपूत केवल लाठी ही चलाना जानता है, ऐसी बात नहीं, जरूरत पड़ने पर वह 'भूमिहार चाल' भी दिखा सकता है। अँगूठे की छाप गुमास्ताजी ने ठीक-ठीक लिया तो?

गिरे हुए दाँतों की फाँक में बाबूसाहब की जीभ न मालूम क्या ढूँढ़ती फिर रही है।

□

बाबूसाहब का कटक संचारण

इसके बाद से कोइरी लोगों के साथ बाबू साहब का झगड़ा खूब अच्छी तरह जमा। भला इतनी बड़ी स्पर्धा। राजपूतों के घर के बर्तन माँजते जिनके सात पुरखों के जन्म बीते, भला वे रोब दिखाएँगे बाबूसाहब को! चोरी करें, फिर आँखें दिखाते हैं। गुमास्ताजी पर हुक्म चलाते हैं। बर्दाश्त करेंगे बच्चन सिंह? स्नान करने के बाद बाबूसाहब से तिलक करने में विलम्ब नहीं किया जाता है। अँचाने के बाद हाथ को उल्टी तरफ से सुफेद मूँछों की जोड़ी को सँवार लेने में भूल हो जाती है। पुराने जमाने की तरह बैठक-खाने के बरामदे में आकर वे फिर बैठना शुरू करते हैं।

यह क्या हो रहा है दिन-ब-दिन! अंगरेजों का राज चला गया क्या, महात्माजी के दो मुट्ठी नमक से! अनोखीबाबू की नींद अब भी टूटी नहीं है क्या?

'जाओ, जल्दी छोटे मालिक को बुलाकर लाओ!'

गुमास्ताजी तटस्थ हो उठते हैं। बाबू साहब का यह चेहरा उनका अपरिचित नहीं है। अभी तुरन्त वे निकालने को कहेंगे पुराने, अँगूठों की छाप वाले, कागज। एक के बाद एक अद्‌भुत फरमाइशें शुरू हो जायेंगी। बूढ़े होने पर उनका मिजाज पहले से भी अधिक चिड़चिड़ा हो उठा है।

पुराने नहीं। बाबूसाहब धान के सिलसिले में ली गई अंगूठों की छाप देखना चाहते हैं। छाप लिथड़े-लिथड़े लग रहे हैं।

'गुमास्ताजी! सभी कामों में आप हड़बड़ी करते हैं।'

गुमास्ताजी सर खुजलाते हैं।

कागज को दूर से देखने पर वह दाग स्पष्ट हो उठा है। उस बात को कड़क कर कहने की वजह से वे जरा अप्रस्तुत हो गये हैं। सुई में धागा वे अभी भी पहना सकते हैं। बहुत दिनों के बाद कागज हाथ में लिया है न, इसीलिए!

'गुमास्ताजी, चरवाहे लौटे हैं?'

'जी, हाँ हुजूर!'

बुद्धिमान आदमी के लिए इशारा ही काफी है। गुमास्ताजी अँगूठे की छाप वाले कागजों को लेकर वहाँ जाते हैं, जहाँ, भैंसें खूँटे में बँधी रहती हैं। अधिकांश की देह की कीचड़ अभी भी नहीं सूखी है। एक सूखी-सी देह देखकर गुमास्ताजी उसी पर रगड़

कर उन कागजों को जरा गन्दा कर लेते हैं। बाबूसाहब को वे और बातें करने की तकलीफ नहीं देंगे। कागजों पर और क्या लिखेंगे सिर्फ इतना ही वे एक बार पूछ लेंगे। बस् ! और कुछ नहीं। इतने दिनों तक उन्होंने बाबूसाहब की खिदमत की है। बाकी सभी कार्य उन्हें मालूम हैं। काम भी क्या बड़ा है, चीनी घोला हुआ पानी थोड़ा-सा यहाँ-वहाँ कागजों के ऊपर लगा देना। फिर चींटियों के आने पर उन्हें बाँस के चोंगे में भरकर, खोंसकर रख देना होगा रसोई-घर की ओलती में। भूसे के अन्दर रखने की अपेक्षा ओलती में चीज अधिक बढ़िया बनती है।

गुमास्ताजी जब बैठकखाने में लौट आये, तब बाबूसाहब अनोखी बाबू से बातें कर रहे थे। छोटे मालिक, देखता हूँ, बाबूसाहब के सामने ही पलंग पर बैठे हैं। उम्र भी तो हुई। दो-दिनों के बाद केश पकेंगे। भला अब भी नहीं बैठेंगे ?

'आओ गुमास्ताजी, तुम भी सुनो !'

'अनोखी बाबू ! आप चले जाइये जिरानिया। अनिरुध मोख्तार से सलाह लेकर जोत के कोइरी रैयतों पर बाकी हरजाने की नालिश ठोंक आइये। भला होंगे ही कितने रैयत ! अधिकांश कोइरी ही तो दररैयत अधियादार हैं। जहाँ भी आपसे सम्भव हो, इन लोगों की जगह पर संथाल-टोली के लोगों को बहाल कीजिए। वह जो नया आदमी है, ढोड़ाय न क्या तो नाम है, वह फरार-वरार तो नहीं है ? एक दिन भी घर जाने का नाम नहीं लेता है। यही शायद सब को उकसा रहा है। मोसम्मात राज पारभंगा की रैयत है। मेरी होती तो थोड़ा-सा चाप देते ही उसे हटा देती। इस मामले में अनोखी बाबू, आप एक बार राज पारभंगा के तहसीलदार से मिल सकते हैं। गुमास्ताजी, आप भी जायेंगे। बाबूसाहब जानते हैं कि गुमास्ताजी के साथ न रहने पर अनोखी बाबू इन सब कामों की थाह नहीं पायेंगे।

इतनी देर में गुमास्ताजी बोलने का साहस पाते हैं। डिस्ट्रिक्टबोर्ड के कांजी-हाउस वाला इंसान अली हाथ का आदमी है। बाबूसाहब के रुपये से ही उसने नीलाम में डाक लगाकर कांजीहाउस लिया है। 'मोसम्मात के खेत में रात को गाय-भैंस छोड़ने से तीन दिनों के अन्दर वह वश में हो जायगा। हुजूर, गुड़ से ही अगर मक्खी मरे, तो फिर जहर देने की क्या जरूरत है ?'

बाबूसाहब गुमास्ताजी को चेतावनी देते हैं। केवल बातें नहीं, जो जरूरत समझो, करना।

कोइरी लोगों ने राजपूत बच्चन सिंह को चुनौती दी है। बड़ी स्पर्धा हुई है कोइरी लोगों की ! गांव के अन्य सभी राजपूत इस मामले में बाबूसाहब की यथासाध्य मदद करने को तैयार हैं। इसलिए दूसरे ही दिन से छोटे मालिक शाम से भांग के शर्बत का घड़ा लेकर बैठते हैं। शर्बत का लोटा उनकी ओर बढ़ाकर छोटे मालिक हँसते हुए उनकी खातिर करते हैं। 'जात-बिरादरों की खोज-खबर नियमित रूप से लेने की इच्छा उन्हें सदा-सर्वदा से ही है। राजपूत ही राजपूत की गति है, सो चाहे चन्देल हो,

पाहे बुन्देल ! और कुछ न हो, मोहब्बत नाम की तो कोई चीज है ही दुनिया में ! ह-ह-ह ।'

जो लोग चौरासन में बैठना भूल गये थे, वे भी अपनी भूल सुधार लेते हैं।

'जब से जनेऊ लेकर छत्री हुआ है तभी से चर्बी चढ़ गई है हरामजादे कोइरी लोगों को !'

'चर्बी भी तो क्या ऐसी-वैसी चर्बी ?'

'समझे छोटे मालिक ! छोटे लोगों को सर पर चढ़ाया है, लाडली बाबू आदि ने ! नुनिया लोग माथे पर टोपी लगाकर भले आदमियों के सामने घूमते फिर रहे हैं।'

'अरे नुनिया की बात छोड़ दो, गजाधर सिंह ! जेल में मोची-चमार का छुआ हुआ अन्न क्या लाडलीबाबू नहीं खा रहे हैं ?'

'हाँ, तुम्हें तो जेल को सभी हालतें मालूम है, लछमपत सिंह !'

लछमपत सिंह एक बार घोड़ा-चोरी में जेल गया था। 'बाप का बेटा हो तो चले आओ' कहकर लछमपत सिंह गजाधर सिंह का गला दबाता है।

सभी के मिलकर उन्हें छुड़ा देने पर दोनों ही कहते हैं बाबूसाहब का घर न होता तो आज यहाँ एक काण्ड हो जाता।

'और कुछ न हो, मोहब्बत नाम की भी तो कोई चीज है दुनिया में !'

कोने की तरफ के किसी का नशा जम आया है। वह कहता है 'तुम लोग क्या कोइरी लोगों से लड़ सकोगे ? वे लोग जूठा धोने वाले सिपाही हैं।'

'एक हाथ में थाली की ढाल और दूसरे में झाडू की तलवार देकर उनमें से एक को बैठा दीजिए अपने बदमाश घोड़े की पीठ पर ! फिर छोटे मालिक उस घोड़े को चाबुक लगावें सटासट !'

भाँग के ऊपर इस सूक्ष्म राजपूती-रसिकता के आवेग से कमरे भर के लोग हँस कर लोट-पोट हो जाते हैं।

'समझे अनोखी बाबू ! औरत छाती की ओर खींचती है सुख के समय और जाति छाती की ओर खींच लेती है विपद् के समय।'

'यह तो है ही ! मोहब्बत नाम की भी तो एक चीज है दुनिया में।'

□

ढोड़ाय का अमृत-फल-लाभ

कोइरी लोग भी बैठे नहीं रहते हैं। राजपूतों द्वारा जमीन पर आँके हुए लोहे के दाग को मिटाकर वे लड़ाई में कूद पड़ते हैं। कुछ दिनों में किस बात को लेकर झगड़े का आरम्भ हुआ है, यह सभी भूल जाते हैं। और, कहाँ जाकर वह खत्म होगा,

यह केवल जानते हैं महावीरजी ! लेकिन घटना-स्रोत की प्रत्येक तरंग कोइरी-टोला के प्रत्येक आदमी तक जायेगी ही।

बाधा न पाने से ढोड़ाय का असली रूप नहीं खुलता है। इसलिए कैसे वह इसमें लिपट जाता, सो वह स्वयं ही नहीं समझ पाता है। समझने की शायद चेष्टा भी न की होगी उसने। यह टक्कर लेने की साध बड़ी मीठी है। शहद से वह लिपट जायेगी, यह जानकर भी मक्खी उसी पर बैठती है।

जिन रैयतों पर बाकी हरजाने की बाबूसाहब ने नालिश की है, वे दिग्भ्रमित हो यहाँ-वहाँ दौड़ते-फिरते हैं। बगल वाले गाँव के रामनेवाज मुन्शी जिरानिया की कचहरी में मुहर्रिरी का काम करते हैं। एक रविवार को कोइरी लोगों के दल के साथ ढोड़ाय मुन्शीजी के दरवाजे पर धरना देता है। आस-पास के गाँव के अनेक आदमियों ने पहले से ही वहाँ जाकर भीड़ लगाई है।

'बड़ी बुद्धि के आदमी हैं मुन्शीजी ! बालिस्टर को भी हरा देते हैं। नहीं तो क्या मँगनी में उन्होंने चश्मा पहनने का हक पाया है !'

बिलटा केहुनी से ढोड़ाय को टुकसाता है—'सुनो न वह क्या कह रहा है ?'

रामनेवाज मुन्शी तम्बाकू के कश के साथ निर्लिप्त भाव से कहे जा रहे हैं—

'उस बार लड़ाई के समय जिरानिया में दुश्मन का तमाशा हुआ था न ? उस समय काफी रुपया आया था। उसी से कमिटी ने 'वार' का कागज खरीदा था। वही रुपया अभी सूद और असल मिलाकर सात लाख हुआ है। कलस्टरसाहब अंगरेज के बच्चे हैं। उन्होंने कहा कि इन रुपयों से जिरानिया जिले की खेती-बारी की तरक्की करनी होगी, 'फारम' खोलकर। जिरानिया के पूरब में बकरहट्टा का मैदान है, वही मैदान खरीदा गया है उन रुपयों से ! उसी के खिलाफ बिजनबाबू वकील ने ततमा-टोली के 'पबली' की तरफ से 'आरजी' लिख दी थी। बिजनबाबू कहते हैं कि वह हमेशा से पबली की गाय चराने की जगह थी। पबली ने नमक तैयार किया था मरनाधार के पास। अनिरुध मोख्तार तो वह अरजी देखते ही थूक निगलते, माथे की चाँदी खुजलाते बेचैन हो गये। तब बुलाहट आई रामनेवाज मुन्शी की। सर्वे खतियान मुवक्किल की तरफ है, सेमल का पेड़ काटने का साक्षी है। दिया जवाब ठोंक। पटने के हाईकोट तक बहाल रह गया मेरा लिखा हुआ जवाब। यही तो गत सप्ताह पटने से लौटा हूँ। सिर्फ बिजन वकील ही क्यों, हाईकोट के हसन इमाम बालिस्टर तक मुलुर-मुलुर ताकते रह गये थे।'....

कोइरी-टोले के दल को देख मुन्शीजी चश्मे को नाक पर उतार लेते हैं। कान से कलम उतारकर खस्-खस् एक हिसाब लिख देते हैं। बाबूसाहब से मुकदमा लड़ने के खर्च का। पहले ही दिन लगेंगे छब्बीस रुपये। लम्बी तारीख चाहो तो फिर चार रुपये ज्यादा लगेंगे। ·· 'नहीं, नहीं, एक पैसा भी कम न होगा। रामनेवाज मुन्शी के पास मोल-मोलाई नहीं है। सस्ते का काम चाहो तो जिले में अनेक वकील-मोख्तार हैं।

रामनेवाज मुन्शी के पास क्यों आए ? तुम लोग अगर खर्च न कर सको, तो बाबूसाहब रख लेंगे रामनेवाज मुन्शी को। तुम लोग जैसे पक्के हो, बाबूसाहब भी उसी तरह हैं।'

ढोड़ाय का मन चाहता है कि मुन्शीजी बकरहट्टा के मैदान की, ततमा-टोली की बातें और भी बोलें। लेकिन क्या बोलेंगे मुन्शीजी ? यह आदमी अगर और थोड़ा-सा कम बुद्धिमान होता, तो अच्छा था। तब शायद बिजन बाबू वकील बकरहट्टा के मैदान को बचा ले सकते थे। हाईकोर्ट में।····

गाँव में लौटकर रुपयों का बन्दोबस्त नहीं होता है। जिनके नाम से मुकदमा नहीं है, वे क्यों पैसा खर्च करने जायेंगे ? यह क्या बिदेसिया का गाना है या छोकरबाजी नाच ? इस टोले की पंचायत का मंडर है गिदर मंडल ! झाड़ू मारो ! झाड़ू मारो ! यह अगर जाये बाबूसाहब के खिलाफ, तो हम जड़ छोड़कर पत्ते में पानी पटाने जायें।

काफी दिक़्क़त के बाद किसी तरह एक रुपया बारह आने का 'संचय' होता है। ढोड़ाय का मन खराब हो जाता है। उसी की सलाह के अनुसार बाबूसाहब का धान ले आने से ही इस झगड़े का आरम्भ हुआ है। और, भला वह कुछ मदद नहीं करेगा ? उसके अपने कहने लायक एक पैसा भी नहीं है। कमर की लँगोट और मुँह का दाना रामजी ने जुटा दिया है। उसने सोचा था कि जीवन में उसे और पैसे की जरूरत नहीं होगी। लेकिन महावीरजी ने जो गंधमादन पर्वत माथे पर लिया था, वह क्या अपना आहार-वस्त्र नहीं जुटा था, इसलिए ?

ढोड़ाय मोसम्मात के सामने मुकदमे के खर्च की बात छेड़ता है। मोसम्मात आँखों को कपाल पर चढ़ाकर चिल्लाती है—

'उनलोगों के बाप क्या मेरे पास कठौत में भर कर रुपये अमानत रख गये थे ? अरे मेरे हितैषी ! मेरे भाग्य में क्या सभी ऐसे आदमी ही जुटते हैं ?'

ढोड़ाय मर्मान्तिक पीड़ा से कराह उठता है मन-ही-मन ! गिदर मंडल ने जो चार आने की दर से उसका दरमाहा ठीक कर दिया था, कम-से-कम, वह भी अगर देती मोसम्मात ! लेकिन यह बात क्या मोसम्मात से कही भी जा सकती है ?

उस रात किसी भी तरह ढोड़ाय को नींद नहीं आती है।

मोसम्मात इस तरह फटकार सुनायेगी, यह ढोड़ाय ने आशा नहीं की थी। जिस आदमी ने एक पैसा भी दरमाहा नहीं लिया है, उसे ही इस तरह बातें सुनाने में जरा भी संकोच न हुआ ! सगिया भी नहीं खड़ी थी। वह भी तो माँ को कुछ कह सकती थी। किन्तु मोसम्मात की बात नाजायज नहीं है। इसलिए उस पर गुस्सा होना सम्भव नहीं है।

नींद नहीं आने पर ही मचान के खटमल तंग करते हैं। करने दो। आजकल सजग होकर रहने में ही मंगल है। नहीं तो गत सप्ताह, खूँटे से भैंस को खोल कर किसी ने भड़गड़े में नर्त्ती किया है। जरूर इसान अली का काम है। अपने हाथों

ढोड़ाय ने खूंटे में बांधा था। अड़गड़ा से छुड़वाने के लिए जाने पर देखता है कि बही के पांच दिन के पहले वाले पन्ने पर लिखा हुआ है। झूठ-मूठ का पांच दिन का चार्ज लग गया। यह सब किसका काम है, वह क्या मोसम्मात नहीं समझ रही है? फिर भी उसने मुकदमे के लिए दो रुपये मदद नहीं की?

इस पर 'उजाड़' की चलन चल रही है कुछ दिनों से। गांव में घोड़े का चरा हुआ देखते ही पहचान में आ जाता है। गाय-भैंस का एकदम लालची, कंगाल की तरह बिल्कुल सपाट मुड़कर खाना, और घोड़े खाते हैं, सूंघकर, उलट-पलटकर, फररर कर सांस छोड़कर, धूल उड़ाकर, पत्तों को खाते हैं, ठीक जैसे किसी ने कैंची से छांट दिया हो। घोड़े के खाने का अर्थ ही है राजपूत का काम। राजपूतों को छोड़कर भला गांव में और कौन घोड़े पर चढ़ता है! एक दिन चढ़ने गया था लचुआ हाड़ी।····

वही बच्चन सिंह घोड़े पर चढ़ा हुआ राजपूत बिजा सिंह बादलों से होकर उड़ता चला जाता था···मरनाधार में गड़ई मछली के आड़े-तिरछे पंखों के प्रवाह में वह छाया कहीं अदृश्य हो जाती है।····

मीठी चिन्ता के आवेग में ढोड़ाय की पलकें मूंदी आ रही थीं।···सहसा वह क्या? कपड़े की खस्-खस् आवाज है न? जैसे एक छाया कमरे में हिली। इन्सान-अली का भाड़े का आदमी तो नहीं है? मचान की बगल में रखे हुए भाले को ढोड़ाय कसकर पकड़ता है।

'कौन है?'

हाथभरी लाह की चूड़ियां खट-खट की आवाज कर उठती हैं! औरत!

'मैं, मैं! चुप!'

'सगिया!'

'इसे रखो ढोड़ाय।'

ढोड़ाय अवाक् हो जाता है। 'क्या है?'

'पैसे-कौड़ी तो मेरे पास रहते नहीं हैं। मां कहां छुपाकर रखती है, सो मुझे जानने भी नहीं देती है। मेरे गहनों को देवर ने इस मकान में लाने ही नहीं दिया है। यही सिर्फ मेरे पास है। मुकदमे में खर्च करना।'

वह चीज क्या है, ढोड़ाय उँगली से अन्दाज लगाने की कोशिश करता है।

'ना, मत करना ढोड़ाय।'

गला खँखारते हुए इनारा की तरफ से ध्वनि उठती है—'हो—हइ'' घर-वाला···जागो—ओ····ओ''ओ···हइ····।'

एकदम चौंक उठे हैं दोनों!

पचुआ चौकीदार ने कुछ दिनों से कोइरी टोला की तरफ पहरे देना बढ़ाया है। नहीं तो 'गरीब-मार' हो जायगा। एक बार पकड़ सके तो वह उस मुसलमान अड़गड़ा वाले का खन्दे खिलाकर छोड़ेगा!

घर के भीतर से मोसम्मात खाँसकर चौकीदार को आवाज देती है कि वह जगी ही हुई है।

अंधकार भरे घर में माँ की खटिया के नीचे काफी आवाज के साथ सगिया लोटे को रखती है।

□

कोइरी लोगों का धर्मीकरण

ढोड़ाय सगिया की दी हुई उस चीज को दिल कड़ाकर बेच नहीं सकता है। वह चीज है; ऐंठे हुए सूत के गुच्छों में गूँथी हुई एक माला। छोटे बच्चे के गले की माला यानी उसमें हैं चाँदी के दो रुपये। एक है रामचन्द्रजी वाला रुपया—तीर-धनुष कंधे पर लिए दोनों भाईयों का चित्र। दूसरा, एक फारसी लिखा हुआ सिक्का, अतिशय परिचित वस्तु। हिन्दू-मुसलमान, किसी भी तरह के भूत-दानव नजर नहीं दे सकते हैं इस माला के गले में रहने पर! जिन लोगों को परमात्मा ने दूध-घी खाने का मुँह देकर दुनिया में भेजा है, उन लोगों के बच्चे-बच्चियाँ ऐसी माला गले में पहनते हैं।

ढोड़ाय समझता है कि इस चीज की कीमत सगिया के पास कितनी है। कितने ही दिन बातों ही बातों में उस बच्चे की बात कहकर सगिया की पलकें भीग उठी हैं। उसे परमात्मा ने वह एक ही दिया था। तीन साल के उस उपद्रवी लड़के को ले जाने में तीन दिनों के ज्वर की भी जरूरत नहीं हुई। ज्वर के समय वह माँ को पहचान तक नहीं सका था एक पल के लिए।

उस समय वह क्या कहकर सगिया को सान्त्वना देगा, सोच न पाया था। इच्छा हुई थी उसके केशों में उँगली चलाते हुए उसे सुला देने की। इच्छा हुई थी कि कहे 'रोती क्यों हो सगिया?' ऐसा लगता है कि असली नुकसान तो उसी लड़के का हुआ, जो चला गया है। ऐसी माँ पाये था।

और भी कितनी ही बातें उस वक्त ढोड़ाय ने सोची हैं। लेकिन कहते वक्त अनाड़ी की तरह उसने कहा है 'लड़का भी कभी मरता है, सोना भी क्या कभी जलकर राख हो जाता है?' किसी का लड़का मरने पर यही कहने का नियम है। फिर भी सगिया को इस स्वर की गम्भीरता अप्रत्याशित लगी है। खुद व्यथा न समझने पर क्या इतनी हमदर्दी किसी को आती भी है? लड़के की माँ होती तो कोई बात थी। उसकी गोद सूनी करने वाले उस लड़के के लिए इस आदमी की इतनी व्यथा है!

सहसा ढोड़ाय ने महसूस किया है कि सगिया उसकी तरफ देख रही है, उसके चेहरे पर न मालूम वह क्या ढूँढ़ रही है।

जरा अप्रस्तुत होकर ढोड़ाय ने कह डाला है, 'जिनकी चीज थी उन्होंने ही लौटा लिया है।'

सगिया ने हाथ उठाकर दिया है, इसीलिए क्या ढोड़ाय उस माला को राजपूतों के साथ 'जिद्दा-जिद्दी' में खर्च कर दे? फिर लौटा देने से भी सगिया दुखित होगी। बात तो वह ज्यादा नहीं बोलेगी, किन्तु उसकी आँखों के कोने में आँसू आ जायेंगे, यह बात ढोड़ाय अच्छी तरह जानता है। इसीलिए उस माला को ढोड़ाय अपने ही पास रख लेता है। मन-ही-मन ढोड़ाय समझता है कि सगिया ने उसकी खातिर ही उसे दिया है।

गंज के बाजार का नौरंगीलाल गोलादार आदमी अच्छा है, कोइरी टोला के लोगों को उनके अँगूठे की छाप लेकर वह सात रुपए देता है। छाप बिना लिए चारा ही क्या है?

सात रुपए में भले ही न रख सको रामनेवाज मुन्शी को। अनिरुध मोख्तार भी कोई ऐसा-वैसा आदमी नहीं है! जल्दी करना चाहिए। परसों फिर बाबू साहब गये हैं असेसरी में। हाकिम से वे क्या करवा रहे हैं, कौन जाने!

अन्त में अनिरुध मोख्तार की ही सलाह के अनुसार कोइरी लोग काम करते हैं। उनकी एक बात—'समन या नुटिस कभी भी न लेना! बस! और कुछ करना नहीं होगा।'

दोनों पक्ष को ही अनिरुध मोख्तार मुकदमे में सलाह देते हैं। जिरानिया में अनिरुध मोख्तार की सलाह लेने कोइरी लोग कचहरी गए थे। रामनेवाज मुन्शी ने ही वहाँ अपनी गरज से पहले उनसे बातें की थी।

अरे भागते क्यों फिर रहे हो तुम लोग? बच्चन सिंह भी कई दिनों से मेरे यहाँ हैं। वे मेरे पास आये हैं तुम लोगों के खिलाफ मुकदमें की पैरवी के लिए नहीं, वे आये हैं दूसरे काम से! उनका नाम सेसर की तालिका से जाने क्यों छाँट दिया है। पेशकार साहब फिर से उनका नाम असेसरी में घुसाने के लिए माँगते हैं, दो-सौ रुपए। लेकिन बच्चन सिंह ऐसा चंट है कि वे पेशकार साहब को पच्चीस रुपयों से ज्यादे से खुश करने को राजी नहीं हैं। मैं कहता हूँ कि वाजिब खर्च करने में हिचकिचाने से कैसे चलेगा! खुद अपने गाड़ीवान और दोनों—सब मिलाकर शायद पचीस रुपयों का उन्होंने खाया है इन कई दिनों में, परन्तु फिर भी जायज खर्च वे नहीं करेंगे। काम में तो है केवल रात को मेरे यहाँ सोना, और दिन भर दुश्मन के फारम का मरनाधार वाले खेत में पानी सींचने बैठाया है न, वहाँ बैठ-बैठकर मूँगफली का खेत देखना। बेशी चालाक है न? राजपूती—बुद्धि और होगी ही कितनी!

'तब कहो कि बाबू साहब और सेसर नहीं हैं? तब जो उस दिन अंग्रेजी कुर्ता पर तहियाई भागलपुरी चादर कंधे पर डालकर शम्पनी पर वे आये? कोइरी टोला के बीच से आते वक्त चिल्लाकर पीछे के हरवंश सिंह सिपाही को बोले कि 'छ-सात दिन

लगेंगे इस असेसरी में । इस बीच पच्छिम टोला वाला खेत तैयार रहना चाहिए ।'

'मैं जो कह रहा हूँ कि उनकी असेसरी नहीं है, वह कुछ भी नहीं और उन्होंने क्या कहा, वही बड़ा हो गया ?' मुन्शी बिगड़ उठते हैं उन गँवारों पर ।

किसी को दी हुई गाली कोइरी लोगों को इसके पहले कभी इतनी अच्छी नहीं लगी है । यह बूढ़ा दादा की गालियों से भी मीठी है । ढोढ़ाय नहीं आया ! आता तो अभी जमता । उसके बाद मुन्शी जी काम की बात छेड़ते हैं—'तुम लोग हाजिर हो जाओगे क्या मुकदमें में ? कितने रुपए इकट्ठा किये हैं ? ठहरे कहाँ हो ?'

'अभी भी रुपए का बन्दोबस्त नहीं हुआ है' कहकर बिल्टा आदि किसी तरह उस दिन वह बात टाल जाते हैं ।

फिर गाँव लौटकर बिल्टा आदि गाना गाते हैं ।'''''

'मुन्शीजी की कोठरी में जज साहब की कचहरी बैठो, बच्चन सिंह मुन्शीजी का पाँवधरे, कहाँ गयी कुर्सी, अब कहाँ गयी सेसरी ?

'''''रे बिदेसिया !'



गिदर से बाबू साहब की मिल्लत

बाबू साहब के साथ गिदर मंडल की इन दिनों मिल्लत होने के कारण थे ।

थाना चौकीदारों ने कुछ दिन पहले हाट-बाट पर चट्टोधंद बजा कर कहा था कि गंज के बाजार में सभा होगी । किसकी न किसकी सभा होगी, थाना-पुलिस का मामला है । जैसा दिन-काल है, कोई और ज्यादा माथा-पच्ची नहीं करता है । खबर रखते थे केवल गंज के बाजार के लोग । मुल्क में चारो ओर अमन-सभा हो रही है थाना-थाना में दरोगा साहब ने भीतर-ही-भीतर ठीक किया है कि थाने की अमन-सभा के सभापति बनावेंगे राज पारभंगा के सकिल मनेजर को । उसी को मिटिन है । थाना अमन-सभा के नीचे, बाद में होगी; ग्राम अमन-सभा ।

मिटिन के समय नौरंगीलाल गोलादार का खद्दरधारी लड़का भोपतलाल एक कांड कर बैठा है । छोकरा पढ़ता था भागलपुर में । वहाँ से वह महात्माजी के आन्दोलन में तीन साल हो आया है । मिटिन में खड़ा होकर वह प्रस्ताव करता है कि जिसकी आय सौ रुपए से अधिक नहीं हो, वह अमन-सभा का सदस्य न बने । सभी तो अवाक् हैं । कहता क्या है छोकरा !

बाहर-बाहर अँग्रेजों की तरफ, भीतर-भीतर महात्माजी की तरफ, और हर वक्त अपनी तरफ—यही तो, देखता हूँ, सभी हैं । इस छोकरे ने दरोगा और सकिल

मनेजर के सामने अपनी तरफ की बात एक बार सोची ही नहीं ! अलबत् साहस है। हूल्ला-गुल्ला और हल-चल में उस दिन की सभा टूट जाती है।

उसी दिन बाजार के सभी जान पाते हैं कि थाने में अमन-सभा के सभापति मामूली 'अफसर' नहीं हैं। कलस्टर, हाकिम जो भी इधर आवें, पहले उन्हीं से आकर भेंट-मुलाकात करेंगे, उसके बाद बुला भेजेंगे, दरोगा साहब को थाना से ! वहाँ आकर भी दरोगा साहब कुर्सी पर नहीं बैठ सकेंगे। बैठें तो, तुरन्त दरोगागिरी नीलाम पर चढ़ेगी। सरकारी डाक एक ! सरकारी डाक दो ! सरकारी डाक तीन ! और, खिस्सा खतम !

उसके बाद एक दिन न मालूम कैसे सर्किल-मनेजर थाना अमन-सभा के सभापति हो जाते हैं। गिदर मण्डल होता है विसकंधा ग्राम अमन-सभा का मुखिया !

बड़ी जिम्मेवारी का काम है। महात्माजी के चेलों ने 'लंगटा लोगों' को माथे पर चढ़ाया है। इन लोगों ने आजकल साँप के पाँव देख लिए हैं। सरकारी कानून से तमाशा ! कानून का ही बंधन अगर शिथिल कर दे, तो फिर जात-पाँत, आचारः व्यवहार का बन्धन आयेगा कहाँ से ? भूत का नाच शुरू होगा देश में। होगा क्या, हो ही गया है।·· काम का दाम पायेंगे कुछ-न-कुछ। और, अच्छा काम कर सकने पर ईनाम-बखशीश की बात भी सरकार याद रखेगी। ··

दरोगा साहब ने और भी कितनी ही बातें बतलाईं गिदर मण्डल को।

इतना समझाने की जरूरत नहीं थी। गिदर मण्डल अच्छी तरह जानता है कि बिल्ली के भाग्य से छींका टूटने से लाडली बाबू ने महात्माजी और मास्टर साहब के फन्दे में पाँव दिया है। नहीं तो उस बच्चन सिंह के परिवार के रहते विसकंधा में और किसी का अफसर बनना सम्भव था ?

बाबू साहब भी अच्छी तरह समझते हैं कि दरोगा-पुलिस के खिलाफ रहने पर राजपूत की लाठी हो जाती है पट्टुए की सनाठी।

राजपूतों का घोड़ा हो जाता है गधा, अरे, बेवकूफ लाडली बाबू। तू समझता नहीं कि तुझे उस कुचक्री मास्टर साहब ने अपना बोझ ढोने का गधा बनाया है, ले जा रहा है घाट की ओर। खानदान की इज्जत को धूल में मिला दिया। अब क्या 'लंगटे' लोग बच्चन सिंह के परिवार को मानेंगे भी ? सेसरी की थोड़ी-सी जान अभी तक धुक-धुक कर रही थी, राजपूती कलेजे के अन्दर, इसीलिए उन गिद्धों ने अब भी नोंचकर खाया नहीं है। अब अमन सभा के मुखिया को अगर कब्जे में रखा जाय, तो वह समय-असमय पर काम दे सकता है। इसीलिए, जात की इज्जत भूलकर बच्चन सिंह ने खुद याचक बनकर हाथ मिलाया था गिदर मण्डल से।

और, गिदर मण्डल जानता है कि ढोड़ाय को अगर मजा चखाना हो, तो यह बिना राजपूतों की सहायता के सम्भव नहीं। उस पर लचुआ चौकीदार एक दिन एकान्त में उससे ढोड़ाय और सगिया के विषय में न मालूम क्या कह गया। फिर दांत निपोड़कर

वह हरामजादा हाड़ी का बच्चा जाते समय खोंचा दे गया कि तुम लोगों के घर की बहू की बात है, इसीलिए तुमसे चुपचाप कह गया मण्डल ।

उसी दिन से उसका मन ढोड़ाय पर और भी बिगड़ा है ।

और, वह बदजात कुटनी मोसम्मात ! वही तो सब खराबियों की जड़ है ।



कोइरी टोले का उद्योग

जिस रात सगिया ने माँ की खटिया के नीचे ठक्-सी आवाज कर लोटा रखा था, उसके बाद वाले दिन से उन लोगों के घर का भाव जरा गम्भीर सा हो जाता है । माँ-बेटी में अपनापा कम जाता है । जिस मोसम्मात के मुख में चौबीसों घण्टे फजूल बातों का ताँता लगा रहता, वह गम्भीर हो गई है । धूप, बादल, बैल, चूल्हा, हरेक चीज के नाम पर हुक्के के धुँये के साथ-साथ उगली जाने वाली गालियों का स्रोत मन्दा पड़ता है । मोसम्मात के साथ हो रहे बर्ताव मे ढोड़ाय अकारण ही एक अकड़न पाता है ।

ढोड़ाय सगिया को ठीक नही समझ सकता है । बड़ा दुःख होता है, बड़ी ममता होती है, सगिया को देखकर । दुनियाँ के दुःखों का बोझ, समता है, पत्थर बनकर सगिया के दिल पर जमा हुआ है, लेकिन उसे लेकर मुँह से आह निकालनेवाली लड़की वह नही है । सूरज भगवान की तरह, ठीक जिस वक्त जो काम करना चाहिए, वह चुपचाप करती जाती है, बादल से ढँक जाने पर भी काम में गैरहाजिरी नहीं । उसे देखते ही ढोड़ाय को याद आ जाती है गीत की राजकन्या की बात । इतनी भोली है, लेकिन इतना दुर्भाग्य लेकर पैदा हुई है ! बूढ़ी डाइन ने डाह से उसे नीम का पेड़ बना रखा है । फिर भी क्या राजकुमार को उसे पहचानने में भूल होती है ? सूखे नीम के तने से सर पीटते समय ढोलाकुमार का वक्ष आँसुओं से प्लावित हो जाता है । आश्विन की मरनाधार जैसी दोनों काली आँखों के नीचे क्या है, जानने की इच्छा होती है । सगिया के हँसते समय भी उसकी आँखें छल-छला रही हैं, ऐसा भ्रम होता है । औरत जात हम लोगों की तरह नहीं है, इसलिए उसे ठीक-ठीक समझा नहीं जाता है । एकदम अपना बनाकर खींच भी लेगी, फिर दूर भी रखेगी ।

नदी मरनाधार की तरह है सगिया । बाढ़ भी नही आती है, तट भी नहीं टूटते हैं, आँधी-तूफान में भी लहरें नही उठती हैं । फिर-फिर हवा से ऊपरी हिस्सा काँपता है, नीचे की बालू चमकती है । धूप मे जब ढोड़ाय जल-तप कर आता है, तो उसकी

दृष्टि हो जाती है बौका बाबा की तरह। मुंह से कुछ न कहने पर भी हमदर्दी का थोड़ा-सा स्पर्श लालची मन को बड़ा मीठा लगता है। इसे देखते ही मन भींग उठता है ठंढे मीठे रस से। यह पास है, यह महसूस करते ही मन भर जाता है।

आप से आप ढोड़ाय को और एक औरत की याद आती है। पान के पत्तों से पतले ओठ थे उसके। उसे देखते ही दिल के ऊपर मानों सांप उलट-पलट आता था। दिल का भीतरी भाग गर्म हो जाता था! गुड़ भी मीठा और चीनी भी मीठी। फिर भी लोग चीनी ही मांगते हैं।

नहीं, नहीं, थोड़ी-सी भी लगाम नहीं है उसे अपने मन पर। उस हरामजादी औरत पर वह अब भी मन खर्च कर रहा है। सगिया से तुलना करने पर रमिया जैसी औरत की दर है 'एक कौड़ी में तीन।'''वह रक्त का पिंड आज शायद तीन साल का उपद्रवी बच्चा है। वह अगर जिरानिया में रहता, तो उस बच्चे को दुल-दुल घोड़े के मेले में चीनी का घोड़ा खरीद देता। अभी भी शायद एक आदमी दे रहा है। और, वह दुष्ट बच्चा शायद उस पिंगल मरकट की छाती के लाल बालों में खेलने के घोड़े को चरा रहा है: खा घोड़ा, लाल घास खा! और, शायद खिल-खिलाती हुई हँसकर फटी जा रही है वह बे-जात औरत, जिसने ढोड़ाय की हरी दुनिया को गाय से चराकर ठूंठ बना दिया है?

बाहर कुछ लोगों का कंठ-स्वर सुनाई पड़ता है, 'क्या ढोड़ाय, इतने ही में सो गया है?'

'मैंने सोचा कि आज फिर तुम लोगों की जाति की मिटिन होगी, मठ के मैदान में.....'

'तू भी ऐसा ही है!'

बिल्टा मचान से खींचकर ढोड़ाय को उतारता है।

कोइरी लोगों के खेत की फसलें रोज रात को राजपूतों के गाय-भैंस-घोड़े खा जा रहे थे। यह हालत दिन-पर-दिन बढ़ती ही जा रही हैं। थोड़ा-बहुत फसल खिलाना तो सदा से होता है। दिल पर हाथ रखकर कहे तो सही, किस भैंसवार ने निःस्तब्ध रात में 'कलाय' के खेत की बगल से गुजरते समय दो-चार गाल फसल भैंस को नहीं खिलाई है। हो ही नहीं सकता है? भैंस की पीठ पर चढ़ते ही मन का भाव वैसा ही हो जाता है। भैंस की देह चमकेगी, हड्डी-पसली ढँक जायेंगी, फेन से भरी कढ़ाही में छर्र-छर्र दो मेटिया दूध ज्यादा मिलेगा—इसका लोभ कोई भी भैंसवार नहीं सम्हाल सकता है।

लेकिन यह है दूसरी चीज। सरासरी बदमाशी। एक सिपाही खैनी खिलाने का लोभ दिखाकर बूढ़ा दादा को, पक्की की ओर ले गया है, और दूसरे ने उस फांक में उसके खेत में एक दल गायों को घुसा दिया।

बिल्टा के खेत में क्या हुआ ! बाबूसाहब का चरवाहा एक अनजानी गाय के पीछे दौड़ा असली गायों के दल को बिल्टा के खेत की आड़ पर छोड़कर। उसने ऐसा भाव दिखाया जैसे दूर की गायों का दल कहीं दूसरे का खेत बरबाद न कर दे, उसके लिए उसकी चिन्ता का अन्त न हो। लेकिन सब समझते हैं। वह सब हम लोगों को मुखस्थ है। लेकिन सबसे जबुर काण्ड किया है मोसम्मात के जो-मटर के खेत में। रात को खेत का पहरेदार, मचान पर सो रहा था। मचान को चारो तरफ से नाग-फैनी के काँटों से घेर कर खेत में भैंस को छोड़ दिया है। भैंस को थड़गड़ा में देने से ही क्या होगा ? बाबूसाहब का ही तो थड़गड़ा है, इन्सान अली के नाम से लिया गया। कोइरी लोगों से भी मुसलमान अपने हुए। इसे लेकर डोड़ाय थाना-पुलिस करने में भी डरता है। दरोगा साहब फिर उसके घर-द्वार के बारे में पूछेंगे। जिरानिया की कचहरी में जाना पड़े ? नहीं, नहीं, वह पड़ना नहीं चाहता झमेले में।

लेकिन कुछ तो करना ही होगा खेत की फसल की रक्षा के लिए। गिदर मंडल अब फिर बाबूसाहब के साथ मिल गया है, जात के लोगों के विरुद्ध ! जात के मंडर बने हैं।

बाबूसाहब की 'धरमपुरिया चाल' देखा ? जात के मंडर से जात को बर्बाद करवा रहा है। सचमुच दाव-पेंच में राजपूत लोग, भूमिहार और कायस्थों से कुछ कम नहीं हैं।

इसलिए कल बिल्टा दल-बल लेकर गया था गिदर मंडल के पास, वह क्यों जात के लोगों के खिलाफ है। गिदर दाँत से जीभ काटकर कहता है 'तुम लोग भी क्या कहते हो ! मुझे क्या ब्याह-श्राद्ध का फिक्र नहीं है ? मैं जाऊँगा जात के विरुद्ध ? जात के सवाल पर मैं जात के ही पक्ष में हूँ, जिन्दगी भर ! लेकिन जानते हो भल-मनसाहत तो धो-पोछ नहीं सकता ? बाबूसाहब याचक होकर दोस्ती करना चाहते हैं, भला मैं कैसे नहीं करूँ ? और जाति का मंडर कहकर तुमलोग क्या मानते भी हो ? आजकल जात का मंडर है मलहरिया का ततमा। वह अगर दाहिने चलने को कहे, तो तुमलोग दाहिने चलोगे, बाँयें चलने को कहे, तो बाँये चलोगे।

कहाँ है रे बिल्टा, मोसम्मात के मनेजर साहब को क्यों साथ नहीं लाया है ? बिल्टा ने हँसकर जवाब दिया था कि गिदर गुरुजी से मिन्नत की है बूढ़े गिद्ध ने। अब से वह जिन्दा आदमी खायेगा। भला फिर क्या मनिजर इस तरफ आये ? पूँछ उठा कर गाँव से भागने को राह न पायेगा !

'बड़ा शैतान है तू बिल्टा' कहकर कोइरी लोग हँसते हैं। गिदर इस हँसी में साथ नहीं दे सकता है। उस शैतान की रसिकता का इंगित कहीं 'मायखोर' बात की ओर तो नहीं है ?....पूँछ उठाकर भागना....बूढ़ा गिद्ध !....

अप्रस्तुत हो गिदर मंडल ने कहा था 'कल साँझ को सभी आना मठ के मैदान

में। 'जतियारी' विचार किया जायगा''' तुम सबों ने मुझे जात के खिलाफ समझा !'

कोइरी लोगों की जाति की सभा में जाकर ढोड़ाय क्या करेगा ? इसीलिए आज ढोड़ाय जल्दी-जल्दी सो गया था। लेकिन विल्टा से क्या निस्तार है ?

⊡

ढोड़ाय की सुमंत्रणा

टोले के सभी लोग इकट्ठे हुए हैं मठ के मैदान में। बाहर के लोगों में से आया है केवल लचुआ हाड़ी। सबसे आखिर में पहुँचा गिदर मंडल।

'जो जाति जगी रहती है, वही जाति बची रहती है' कहकर गिदर मंडल बीच में जाकर बैठता है। बहुत सोचने के बाद यह बात रचकर वह आया है। अब इन्हें लोग समझें तो कुछ हो ?

सभी कहते हैं 'हाँ, यह एक मार्के की बात कही है मंडल ने।'

इसका अर्थ यह होता है कि किसी ने उस बात को समझा नहीं है। गिदर का मन पहले ही खराब हो जाता है।

राजपूत लोग कोइरी लोगों के खेत बर्बाद कर रहे हैं, यही बात सभी छेड़ना चाहते हैं। आज मोसम्मात के खेत में हुआ है, कल तुम्हारे खेत में हो सकता है। कहो, फिर क्या किया जा सकता है !

गिदर राजपूतों का प्रसंग दबा देना चाहता है। 'इसीलिए क्या छुरी से पानी काटोगे ? किसकी भैंस है, ठिकाना नहीं, पहले वह ठीक से जानोगे, तब न कहीं सोची जायेगी उसके बाद की बात ! नीलगाय-वाय आकर तो नहीं खेत खा रही है ?'

सभी हल्ला-गुल्ला शुरू करते हैं। 'क्या नीलगाय मचान के चारों तरफ नागफेनी का काँटा दे सकती है ?' 'जिस भैंस को पकड़कर इन्सान अली के अड़गड़ा में दिया, वह भी क्या काले रंग की नीलगाय है ?' 'तुम भी क्या कहते हो मड़र ! तुम्हारी तरह रामायण नहीं पढ़ना सीखा, है इसलिए क्या भैंस और नीलगाय में फर्क भी नहीं समझूँगा ?'

'अरे सो नहीं। संथालों ने जो उस दिन तीर-धनुष से नीलगाय मारा है खेत में, देखा नहीं ? मैं कह रहा था कि हो भी तो सकती है नीलगाय ?'

गनौरी कहता है—'नीलगाय की ही बात जब छेड़ी है, तो सुन लो एक बात। नीलगाय का मांस जब वितरित हो रहा था, संथाल टोला में तो पिथो संथाल क्या कर रहा था, सुना है ? कह रहा था कि तुमलोगों की जो जमीनें बाबूसाहब ने नीलाम लगवायी हैं, वे हम लोगों को देंगे, ऐसा वे कह रहे हैं। मैं कहता, नीलाम कब

करवाया ? अनिरुध मोख्तार ने कहा है बिना नुटिस लिए नीलाम नहीं होगा। तेरे कहने से ही हो जाता है !'

जो भी बात छेड़ो, राजपूतों का प्रसंग आ ही जायेगा ! गिदर मंडल विरक्त हो उठता है। इच्छा होती है कहे कि जाँते में मकई पीसने जाओ तो दानों में दो-चार घुन पीसा ही जायगा। किन्तु निरर्थक गोलमाल बढ़ाने से लाभ ही क्या है ? कहता है वह 'अनिरुध मोख्तार से भी आजकल संथाल लोग पंडित हो उठे हैं।'

बूढ़ा दादा इस बात में सम्मति देते हैं।

एक छोकरा कहता है, बूढ़ा दादा उस रात के वन्धन वाली बात नहीं भूल सका है।

ढोढ़ाय, बिल्टा को कोहनी मारकर याद दिला देता है कि असल काम की बात कुछ भी नहीं हो रही है। यही चीज तो चाहता है गिदर मंडल।

'बाबूसाहब शायद संथालों से धपा देकर सलामी लेना चाहते हैं।' बिल्टा ने फिर बाबूसाहब की बात छेड़ी है ! गिदर और एकबार बात का रुख घुमाने की चेष्टा करता है।

'जात में किसने-किसने उस दिन नीलगाय का मांस खाया था।' प्रायः सभी दोषी हैं। कोई जवाब नहीं देता है।'

यह क्या ! फिर जमीन से केंचुआ निकालते, साँप निकला !

बिल्टा कहता है, 'असल काम की बात पर आओ मड़र। मैं चाहता हूँ कि जात की तरफ से हमलोगों की औरतों को राजपूतों के यहाँ काम करना बन्द करा दो। जनेऊ लेने के बाद से कुशवाहा-छत्री मर्द लोगों ने राजपूतों के यहाँ का जूठन का काम बन्द कर दिया। तो फिर औरतें क्यों अब भी वह काम करती हैं ? हमलोगों के टोले की तीन-तीन लड़कियाँ शादी हो जाने पर भी ससुराल नहीं जाती हैं। वहाँ से लेने के लिए आने पर भी उनके माँ-बाप रोकसदी नहीं करवाते हैं। क्यों ? परगना भर के आदमी इस बात को जानते हैं। मेरी साफ-साफ बात है—राजपूतों के यहाँ दाई का काम करना बन्द करवा दो। घर में लछमनिया ने मेम की तस्वीर टाँगी है। आखिर पायी कहाँ से ?'

मठ के मैदान में भयंकर झगड़ा शुरू हो जाता है। बूढ़ा दादा काँपता है। क्या हुआ जा रहा है दिन-ब-दिन ! अब भी उसकी पतोहू को राजपूतों के यहाँ काम कर, जो भी हो, दो-मुट्ठी खाने को मिल रहा है ! 'अपने पैर पर कुल्हाड़ी न मारना रे बिल्टा। लेकिन हाँ, जिन औरतों की उम्र कम हो, उनके लिये एक नियम बनाने से अच्छा होता।'

एक ही साथ कई लोग खँखुआ उठते हैं।

'मेरी लड़की लछमनिया को इंगित कर तुमने यह व्यंग किया ? वह बाबूसाहब के यहाँ काम करती है इसलिए ?'

"तुम्हारी पतोहू की उम्र डेढ़ बीस हुई है, इसीसे क्या उसका चरित्र दूध से धुलकर पवित्र हो गया है ?'

'तेरे चोरी करने के कारण आज हमलोगों की यह हालत है, और भला तू मेरी लड़की को 'खोंटा' देते हो ?'

बिल्टा को और धैर्य नहीं रहता है। वह किसी की बातों में कान न देकर गिदर को कहता है 'क्या गिदर मंडल ? तुम जो मुँह से शब्द नहीं निकाल रहे हो, सो राजपूतों के खिलाफ की बात होने की वजह से ? कभी-कभी तो तुम अपनी बोली सुनाओगे ! तुम्हारे एक बार जीभ हिलाते ही तो सारी राजपूती गन्दगी साफ हो जाती है।'

गुस्से से गिदर मंडल का समूचा शरीर जल उठता है। फिर भी मुँह में हँसी लाकर वह कहता है—'यह क्या कुशवाहा-छत्रियों की जात की मिटिन है कि जात की तरफ से किसी चीज का फैसला होगा ?'

सभी अवाक् हो जाते हैं। यह एक जात की मिटिन नहीं है ! तब जो कल उसने सबों को कहा यहाँ जुटने ? सभी समय तुम एक ही मुँह से बोलते हो, या दूसरा भी मुँह तुम्हारा है ?

इतनी देर गिदर मंडल दाँतों से होंठ काटता है।

'जात की मिटिन होगी, यह मैंने कब कहा ? जात की अगर मिटिन होती, तो फिर इसमें लचुआ हाड़ी क्यों आया है ? वह ततमा क्यों आया है ? तंत्रिमा कोइरी नाम की भी एक नई जात की आजकल सृष्टि हुई है क्या ? क्या कहते हो चौकीदार ?'

लचुआ चौकीदार के सिवा इस बात के इंगित का, इस उत्तेजना के बीच कोई ख्याल नहीं करता है।

'प्रत्येक बात में यह गाँव सिर्फ मारकाट जानता है।'

गिदर मंडल थरफरा कर उठ पड़ता है। 'इन सब बातों में रहने का मेरा अभ्यास नहीं है और अमन-सभा का मुखिया होकर मैं वह कर भी नहीं सकता हूँ।'

ढोड़ाय की तरफ एक अग्नि-दृष्टि डालकर वह चला जाता है।

'अरे रे मेरे अभ्यास न रखने वाला ! देर हो रही है। जा जल्दी, कानी मुसहरनी के पास अभ्यास करने।'

इतनी देर में लचुआ चौकीदार कहता है कि गिदर मंडल ने उसे यहाँ आने को कहा था, अमन-सभा की बैठक हो रही है, कहकर।

यह बात है। हरामी का बच्चा, गायखोर !

'अमन-सभा की मिटिन की 'रिपोर्ट' महीने में एकबार न भेजने से दरोगा साहब बिगड़ते हैं।'

बहुत आशाएँ लेकर लोग जाति की सभा करने आये थे, साँझ का भजन बन्द

कर। जो लोग सांझ के भजन में आते हैं, वे ही भोज शादी और श्राद्ध के भोज में जाते हैं, 'विषहरी' और 'राम-नवमी' की पूजा करते हैं, 'रमैतनिया' और 'गमरा' के गानों की बैठकी करते हैं। आज क्या 'जतियारी' के लिए प्रस्तुत किया गया मन भजन में भी बैठता ? इस साले मिदर के लिए क्या आज जात का काम चटाई में डालना होगा ? तुम क्या कहते हो ढोड़ाय ?

'अरे जात का सवाल तो जात का सवाल है, इसीलिये क्या तू कुछ भी नहीं बोलेगा ? यहां उपस्थित न रहने से क्या तुझे कहता भी। जात के मामले में हम लोग क्या आजकल रामनेवाज मुंशी के पास नहीं जाते हैं ? अरे, तेरी देह में तो गर्मिया-कोइरी की छाप दे दी है, जात के मकर ने।'

बूढ़ा दादा बिल्टा की सलाह पर भरोसा नहीं पाता है। उसे पकड़कर धान कहो तो वह बांधकर लायेगा। धान कूटने समय समाठ मारना चाहिए धीरे-धीरे, सहा-सहा कर। तब न समूचा चावल निकल पायेगा ? जोर से मारो, तो चावल एकदम बर्बाद हो जायेगा। यह छोटी-सी बात भी बिल्टा समझता नहीं है।

सिर्फ ढोड़ाय ही क्यों, बिल्टा भी समझता है कि इस अभाव के समय कोइरी लोग राजपूतों के यहां काम करना बन्द नहीं कर सकतीं हैं। तब होता है कि कोइरी-टोला की लड़कियों की शादी के दो सालों के अन्दर पंचायती करवानी होगी। ऐसे भी हो। इन लड़कियों के कारण ही जात की बदनामी सबसे ज्यादा होती है। इसमें राजपूतों को कहने को कुछ नहीं है।

मनोरी बात छेड़ता है, कोइरी-टोला की लड़कियां बाबू सांयों के यहां दाई का काम करती हैं, इसीलिए क्या वे राजपूत मर्दों के कपड़े भी धोयेंगी ?

सभी आश्चर्यचकित होते हैं कि इतने बड़े अपमान की बात का अभी तक उन्हें ख्याल ही नहीं आया था। मनोरी बात बोलता है कम, लेकिन कहता है ऐन मौके पर और काम की बात।

सभी को मन-ही-मन अपमान महसूस होता है। खैर! राजपूतों के विरुद्ध तो वे कुछ 'जबरदस्त' कर भी सकते हैं। लेकिन मकर तो विरुद्ध रहा। वह फिर कहीं मौलवी के नाम पान वाली बात को लेकर नौटंकी न करे। बार-बार कुलम-कलम कर वही बात छेड़ रहा था। कलंक लेने के बाद से नौलचन्द का नाम चलने का मौका इसके पहले कोइरी-टोला के लोगों को नहीं आया था। सिरिंह का दर्शन है न बराबर उन्हें बार-बार नंदन की बात की याद दिला रहा था। बल्कि, आज की नौटंकी की बाबत उस मनाने के कलक्टर साहबों की तरह ही बड़ी आफत हो गई है। ढोड़ाय सभी को सावधान कर देता है, 'देखो, आज से और कोई नौटंकी नहीं कहना। कहना बदहरता, ऐसा सैल देता कहते हैं। सभी लोग इस मठ के सेवक हैं, बरगद के पेड़ के सामने प्रतिज्ञा करो कि कोई भी बात को लेकर नहीं करेंगे।'

'फिर नंदन की बात आने तो भी 'बदहरता' का नाम बनेंगे तो कुछ नहीं

बन्द नहीं करवा सकेगा।'

'बनहरना'! खूब दिमाग में तेरे आया है। लेकिन ढोड़ाय। रामनेवाज मुंसी का सागिर्द क्यों न बना तू?'

बनहरना! इतने बड़े एक प्रश्न का इतनी आसानी से समाधान हो जा सकता है, यह इसके पहले कोई कल्पना भी न कर सका था।

अलबत् चोखी वुद्धि है ढोड़ाय की।

बनहरना! बनहरना!

सहसा हँसी की धूम मच जाती है सभा में। बनहरना!

बूढ़ा दादा को हँसते-हँसते खाँसी आ जाती है। विल्दा को हँसते-हँसते आँखों मे आँसू आ गया है।

'मरा शायद अब बूढ़ा!'

तन्त्रिमा-कोइरी शब्द ढोड़ाय को अच्छा नहीं लगता है। गिदर उससे परिहास कर गया, और वह जवाब न दे सका उस बात का। वह जवाब दे सकता था। जान-बूझकर ही उसने कुछ नहीं कहा। न मालूम किस चीज की एक बाधा थी उसके मन में।

नहीं, और कोई शायद पकड़ नहीं सका है उस बात को।

आमने-सामने की दोनों पक्षों की लड़ाई ढोड़ाय बचपन से ही समझ सकता है। यह न मालूम कैसे अनेक दलों की लड़ाई, अनेक लोगों की लड़ाई, अनेक किस्म की लड़ाइयाँ एक साथ उलझी जा रही हैं। कौन किस दल में है, कौन दल कब किस पक्ष की ओर है—समझ में नहीं आता है। हक के धन को सम्हालने को लड़ाई छिड़ती है, यद्यपि एक हाथ से लड़ा नहीं जाता है। उसे अकेला पाकर ही न ततमा-टोली के पंचों ने जो करना नहीं चाहिए, वह किया था। यह अकेला लड़ना असम्भव होने के कारण ही लोग जात के दरवाजे पर सर पीटते हैं। इसीलिए न बच्चन सिंह अन्य राजपूतों को रोज साँझ को भाँग की शरबत पिलाते हैं। जात के बाहर के जिस व्यक्ति की सहायता मिलती है, लोग आप-से-आप उसी के पास दौड़ जाते हैं। इसीलिए न बाबू-साहब जाते हैं, मुसलमान इन्सान अली के पास। इसीलिये न बाबूसाहब खींचते हैं लाला कायस्थ रामनेवाज मुंसी को अपने पक्ष में! इसीलिए न कोइरी लोग ढोड़ाय जैसे रामायण न पढ़े हुए आदमी की भी सहायता माँगते हैं। राजपूत लोग उन लोगों से अधिक वुद्धि रखते हैं। वे कोइरी लोगों के मड़र को उसके दल से फोड़ लेते हैं, लें तो जरा कोइरी लोग एक भी राजपूत को उनके दल से अलग कर? संथालों को भी क्या बाबूसाहब ने अपने पक्ष में खींचा है? पिथो खामखा झूठ क्यों बोलेगा?

सगिया गुहाल में धुआँ करने के लिए आग जलाने आई थी। ढोड़ाय के प्रवेश करते ही उसने पूछा—क्या सब हुआ जतियारी-सभा में? तम्बाकू पीने की आवाज सुनकर ढोड़ाय समझ जाता है कि मोसम्मात भी खबर सुनने के लिये सोई नहीं है।

स्वयं आकर पूछे, तभी ढोड़ाय उसे खबरें सुनायेगा। नहीं तो क्या गरज पड़ी है ढोड़ाय को ?

सगिया ने सब कुछ सुनकर जाते समय कहा था 'भला इतना पाप क्या धरती-माई सह सकती है ?'



धरती माता का कोप

सगिया की बात शायद धरतीमाई के कानों में समा गई थी।

यह कैसी आवाज देती थी धरतीमाई को। गम्-गम्-गम्-गम् ! गुड़गुड़-गुड़गुड़ ! एक कोड़ी बादलों का गर्जन जैसे तड़प रहा हो उनके वक्ष के अन्दर ! हुंकार छोड़ रही हैं धरतीमाई ! उनकी छाती जैसे अब फट जायेगी। जब सोचा गया, नहीं हुआ क्या ? तड़तड़ा कर तम्बाकू के खेत के बीच से जमीन फट गई। फव्वारे से हवा के समान ऊँचा पानी और बालू निकला। दरारों के अन्दर से यहाँ, वहाँ, असंख्य जगहों पर। असंख्य हाथी अपनी सूंड़ के जरिए पाताल से पानी फेंक रहे हैं। आवाज रुकती ही नहीं। कुआँ बग-बग कर पानी वमन कर रहा है। चारों तरफ बालू का समुन्दर उफना रहा है। तम्बाकू का खेत कब पानी और बालू में डूब गया है, सो ढोड़ाय ने ख्याल नहीं किया था। डर से ढोड़ाय रामचन्द्रजी का नाम तक भूल जाता है। दुनिया अब चूर-चूर हो जायेगी। उसकी ओर खैर नहीं है। कहाँ डूब जायेगा वह ! सहसा न जाने क्यों, अस्पष्ट रूप से मालूम होता है—एकमात्र उस दूर की ऊँची पक्की सड़क तक जा सकने पर उसकी जान बच सकती है। ढोड़ाय ऊर्ध्वश्वास लेकर पक्की की ओर दौड़ता है। क्या दौड़ा भी जा सकता है। कांदो-बालू के अन्दर वह डलमलाता गिरा जा रहा है। असम्भव है। इस छोटे-से तम्बाकू के खेत को पार करने में ही उसका जीवन बीत जायेगा। ततमा-टोली की उस औरत का चेहरा अचानक याद आता है" तीन-चार साल का नंगा लड़का डर से उसकी छाती में मुँह छिपा रहा है···

'अगे मइया गे ! ए ढोड़ाय ! जान गई रे !'

सगिया का कंठ-स्वर सुनकर खड़ा होता है। इतनी देर सगिया की बात याद ही नहीं आई थी। तम्बाकू के खेत में वे लोग काम कर रही थी। ढोड़ाय लौटकर देखता है कि सगिया कमर तक घुस गई है एक दरार के अन्दर ! माँ-बेटी त्राहि-त्राहि चिल्ला रही हैं। ढोड़ाय और मोसम्मात मिलकर सहारा देकर सगिया को खींचकर उठाते हैं। माँ-बेटी ढोड़ाय को लिपटा कर रोने बैठती हैं। वे दोनों तब भी डर से थरथर काँप रही हैं। उनकी दिल की हल्की धड़कन भी जैसे ढोड़ाय सुन रहा हो। आनन्द

वन्द नहीं करवा सकेगा।'

'बनहरना'! खूब दिमाग में तेरे आया है। लेकिन ढोड़ाय। रामनेवाज मुंसी का सागिर्द क्यों न बना तू?'

वनहरना! इतने बड़े एक प्रश्न का इतनी आसानी से समाधान हो जा सकता है, यह इसके पहले कोई कल्पना भी न कर सका था।

अलवत् चोखी बुद्धि है ढोड़ाय की।

बनहरना! बनहरना!

सहसा हँसी की धूम मच जाती है सभा में। बनहरना!

बूढ़ा दादा को हँसते-हँसते खाँसी आ जाती है। बिल्टा को हँसते-हँसते आँखों मे आँसू आ गया है।

'मरा शायद अब बूढ़ा!'

तन्त्रिमा-कोइरी शब्द ढोड़ाय को अच्छा नहीं लगता है। गिदर उससे परिहास कर गया, और वह जवाव न दे सका उस बात का। वह जवाव दे सकता था। जान-बूझकर ही उसने कुछ नहीं कहा। न मालूम किस चीज की एक बाधा थी उसके मन में।

नहीं, और कोई शायद पकड़ नहीं सका है उस बात को।

आमने-सामने की दोनों पक्षों की लड़ाई ढोड़ाय वचपन से ही समझ सकता है। यह न मालूम कैसे अनेक दलों की लड़ाई, अनेक लोगों की लड़ाई, अनेक किस्म की लड़ाइयाँ एक साथ उलझी जा रही हैं। कौन किस दल में है, कौन दल कब किस पक्ष की ओर है—समझ में नहीं आता है। हक के पन को सम्हालने को लड़ाई छिड़ती है, यद्यपि एक हाथ से लड़ा नहीं जाता है। उसे अकेला पाकर ही न ततमा-टोली के पंचों ने जो करना नहीं चाहिए, वह किया था। यह अकेला लड़ना असम्भव होने के कारण ही लोग जात के दरवाजे पर सर पीटते हैं। इसीलिए न वच्चन सिंह अन्य राजपूतों को रोज साँझ को भाँग की शरवत पिलाते हैं। जात के वाहर के जिस व्यक्ति की सहायता मिलती है, लोग आप-से-आप उसी के पास दौड़ जाते हैं। इसीलिए न बाबूसाहब जाते हैं, मुसलमान इन्सान अली के पास। इसीलिये न वावूसाहब खींचते हैं लाला कायस्थ रामनेवाज मुंसी को अपने पक्ष में! इसीलिए न कोइरी लोग ढोड़ाय जैसे रामायण न पढ़े हुए आदमी की भी सहायता माँगते हैं। राजपूत लोग उन लोगों से अधिक बुद्धि रखते हैं। वे कोइरी लोगों के मड़र को उसके दल से फोड़ लेते हैं, लें तो जरा कोइरी लोग एक भी राजपूत को उनके दल से अलग कर? संथालों को भी क्या वावूसाहब ने अपने पक्ष में खींचा है? पियो खामखा झूठ क्यों बोलेगा?

सगिया गुहाल में धुआँ करने के लिए आग जलाने आई थी। ढोड़ाय के प्रवेश करते ही उसने पूछा—क्या सब हुआ जतियारी-सभा में? तम्वाकू पीने की आवाज सुनकर ढोड़ाय समझ जाता है कि मोसम्मात भी खबर सुनने के लिये सोई नहीं है।

स्वयं आकर पूछे, तभी ढोड़ाय उसे खबरें सुनायेगा। नहीं तो क्या गरज पड़ी है ढोड़ाय को ?

सगिया ने सब कुछ सुनकर जाते समय कहा था 'भला इतना पाप क्या धरतीमाई सह सकती हैं ?'



धरती माता का कोप

सगिया की बात शायद धरतीमाई के कानों में समा गई थी।

यह कैसी आवाज देती थी धरतीमाई को। गम्-गम्-गम्-गम्! गुड़गुड़-गुड़गुड़! एक कोड़ी बादलों का गर्जन जैसे तड़प रहा हो उनके वक्ष के अन्दर! हुंकार छोड़ रही हैं धरतीमाई! उनकी छाती जैसे अब फट जायेगी। जब सोचा गया, नहीं हुआ क्या? तड़तड़ा कर तम्बाकू के खेत के बीच से जमीन फट गई। फव्वारे से हवा के समान ऊँचा पानी और बालू निकला। दरारों के अन्दर से यहाँ, वहाँ, असंख्य जगहों पर। असंख्य हाथी अपनी सूँड़ के जरिए पाताल से पानी फेंक रहे हैं। आवाज रुकती ही नहीं। कुआँ बग-बग कर पानी वमन कर रहा है। चारों तरफ बालू का समुन्दर उफना रहा है। तम्बाकू का खेत कब पानी और बालू में डूब गया है, सो ढोड़ाय ने ख्याल नहीं किया था। डर से ढोड़ाय रामचन्द्रजी का नाम तक भूल जाता है। दुनिया अब चूर-चूर हो जायेगी। उसकी और खैर नहीं है। कहाँ डूब जायेगा वह! सहसा न जाने क्यों, अस्पष्ट रूप से मालूम होता है—एकमात्र उस दूर की ऊँची पक्की सड़क तक जा सकने पर उसकी जान बच सकती है। ढोड़ाय ऊर्ध्वश्वास लेकर पक्की की ओर दौड़ता है। क्या दौड़ा भी जा सकता है। कादो-बालू के अन्दर वह डलमलाता गिरा जा रहा है। असम्भव है। इस छोटे-से तम्बाकू के खेत को पार करने में ही उसका जीवन बीत जायेगा। ततमा-टोली की उस औरत का चेहरा अचानक याद आता है" तीन-चार साल का नंगा लड़का डर से उसकी छाती में मुँह छिपा रहा है···

'अगे मइया गे! ए ढोड़ाय! जान गई रे!'

सगिया का कंठ-स्वर सुनकर खड़ा होता है। इतनी देर सगिया की बात याद ही नहीं आई थी। तम्बाकू के खेत में वे लोग काम कर रही थीं। ढोड़ाय लौटकर देखता है कि सगिया कमर तक घुस गई है एक दरार के अन्दर! माँ-बेटी त्राहि-त्राहि चिल्ला रही हैं। ढोड़ाय और मोसम्मात मिलकर सहारा देकर सगिया को खींचकर उठाते हैं। माँ-बेटी ढोड़ाय को लिपटा कर रोने बैठती हैं। वे दोनों तब भी डर से थरथर काँप रही हैं। उनकी दिल की हल्की धड़कन भी जैसे ढोड़ाय सुन रहा हो। आनन्द

दायक नयापन महसूस होता है उसको। बूढ़ी रोती-रोती कितना ही क्या कहती जाती है।

····बकरी के कानों को पकड़ने पर वे-वे कर चिल्लाते समय उसकी दृष्टि कैसी हो जाती है, गौर किया है ढोड़ाय ! मेरी बेटी की दृष्टि हो गई थी उसी तरह····सगिया तेरी कमर में लटक गई थी। चोट-वोट तो नहीं लगी है ? मैंने सोचा, शायद मेरा कपाल जल गया। तेरे न रहने से क्या करती, सोचने पर दिल घबड़ा जाता है।····

ढोड़ाय सभी बातें अच्छी तरह सुन भी नहीं रहा है। मन चला गया है ततमा-टोली। वहाँ कौन रहा होगा ? बच्चा ? और उसकी माँ भी ? बच्चे की माँ का अमंगल वह नहीं चाहता है। दोष रमिया का नहीं, दोष ढोड़ाय के कपाल का है। पच्छिमी औरत कभी भी ढोड़ाय की माँ की तरह बर्ताव अपने बेटे के साथ नहीं करेगी। सभी माँ अगर वैसी होतीं, तो पाप के भार से आज की भाँति रोज भूकम्प होता। इस सगिया को ही देखो न, अब भी अपने मृत बच्चे की बात याद कर आँसू बहाती है। ढोड़ाय का घर-संसार अगर हरा भरा रहता, तो वह बंगाली बाबू-भइया लोगों के लड़कों की तरह उस लड़के को आराम से रखता। माँ के दूध के ऊपर से भी भैंस का दूध खरीदकर उसे पिलाता। भगवान का श्रेष्ठ दान है लड़का ! उसके अपने जात-बिरादरों ने ही जब उसके हाथ काट लिए हैं, तो फिर वह दोष किसे देगा ? दोष है उसके पहले जन्म के कर्मों का।····लड़के का चेहरा अगर पीले मर्कट की तरह हो। डर से उसका कलेजा काँप उठता है। कितनी ही बार उसे ऐसा लगा है। लड़के की बात याद आते ही यही बात सबसे पहले मन में आती है। नहीं, उसका मन कहता है कि ऐसा हो ही नहीं सकता है। रामचन्द्रजी हैं। कभी भी नहीं हो सकता है—चाहे कितना भी पाप उसने अगले जन्म में किया हो। उसके अपने लड़के को पराया होने दिया है, लेकिन मन की इस थोड़ी-सी सान्त्वना को वह किसी को भी छीन लेने नहीं देगा, स्वयं रामचन्द्रजी को भी नहीं। तब वह क्या लेकर रहेगा···क्रिश्चन होते ही रामचन्द्रजी के राज्य के अहाते से निकल जाना होता है ? दोनों को ही बचाना रामजी, आज के विपद से, वे क्रिश्चन नहीं हुए हैं।···किसके हाथों का कम्पन किसकी याद दिला देती है। सिहरती हुई स्मृतियाँ उठ रही हैं।····

सहसा सगिया पर दृष्टि पड़ती है। न मालूम क्या समझने की कोशिश कर रही है वह। शायद ढोड़ाय के चेहरे के ऊपर वाले लेख का अर्थ।

अप्रस्तुत के भाव को दूर करने के लिए ढोड़ाय सगिया को इशारा कर समझा देता है—'खैर, तेरी माँ का गुस्सा उतर गया है।' घर का गम्भीर-सा भाव दूर हो जाता है थोड़ा।

मोसम्मात का ध्यान तब तक जा पड़ा है बालू से भरे तम्बाकू के खेत पर। अपना कहने को उसका भगवान ने और रखा ही क्या है—लड़की और जमीन के सिवा ! शायद ईश्वर को इतना भी देखा नहीं जाता ?

साँप को देखने पर मैनों की टोली जिस तरह चहचहाती है, उसी प्रकार के

एक अविच्छिन्न हल्ला-गुल्ला से गाँव का वातावरण भर गया है। राजपूत-टोला की तरफ से ही वह हल्ला आ रहा है।

'कहाँ जाते हो ढोढ़ाय ?'

ऐसे समय एक मर्द पास में न रहने से मोसम्मात और सगिया को डर लगता है।

'अभी आया।'

न्याय-विचार की हद कर दी, रामचन्द्रजी ने ! गाँव का जो घर जितना बड़ा है, वह घर उतना अधिक टूटा है। कोइरी-टोला के खर के मकानों की कोई भी हानि नहीं हुई। पक्के दालानों से भरे राजपूत-टोले का चेहरा बना है सुअर के चर जाने के बाद वाले कंदे के खेत की तरह। बाबूसाहब के मकान के बीच दरार पड़ गई है। दालान को एकदम दो टुकड़ों में बाँट दिया। छत के एक तरफ से दूसरी तरफ जाना मुश्किल है।

ऐसी हालत में भी बिल्टा फुसफुसाता है—एकदम गंगाजी चली गई हैं छत के बीच से—

पैसा ! पैसा !

एक पैसा !

पैसा फेंको !

लाला देखो !

काली कलकत्तावाली !

पुल गंगाजी के ऊपर !

'ऐसी हालत में भी तुझे हँसी-मजाक सूझता है ?' ढोढ़ाय इतना तो जरूर कहता है, लेकिन सोचता है बहुत दिनों के बाद रामचन्द्रजी ने इस अंधी दुनिया को दिखाया है अपने न्याय-विचार का दुर्दम प्रताप। 'चार कँगला तो एक बँगला।' चार के गरीब रहने पर एक पक्का दालान होता है। रहे पक्के दालान में आराम से गिदर मंडल। कोइरी-टोला के अन्दर वही एक मकान सिर्फ बर्बाद हुआ है। खर के मकानों का जायेगा क्या ? थोड़ा-बहुत बाँस-खूँटे हिले हैं किसी-किसी के।

लेकिन राजपूत-टोला की औरतों और बच्चों पर इतना कठोर तुम्हें नहीं होना था रामजी। वे क्या इस ठंडी रात में बाहर बैठे रह सकेंगे ?

सबसे आश्चर्य का मामला हुआ पानी लेकर। उस बार हैजे के समय डिस्टिक बोर्ड ने टिऊब-वेल लगा दिया था मठ के मैदान में। उसमें पानी नहीं चढ़ा था। मिस्त्री लोग कह गये थे कि सदर से वे और भी नल लाकर गाड़ देंगे। उसी से पानी चढ़ेगा। मिस्त्री लोग जो गये, फिर कभी लौटकर नहीं आये। उस नल में, भूकम्प से, सहसा पानी आ गया है।

राजपूत-दर्पहारी अवधबिहारी रामचन्द्र जी की अद्भुत लीला है। विसकंधा के

सभी कुएँ बालू से भर गये हैं। राजपूत-टोला के लोगों को अब से पदार्पण करना होगा कोइरी-टोला, नल से पानी लेने के लिए। इनारे की फुटानी वे दिखाते थे इतने दिन.!

□

सगिया-ढोड़ाय संवाद

भूकम्प के हंगामे में गांव के झगड़े और दलबन्दी का मामला दब जाता है। बाबूसाहब के छोटे लड़के लाडली बाबू गांव लौट आते हैं, सरकार ने भूकम्प के कारण महात्माजी के चेले लोगों को जेल से मुक्त कर दिया है। मठ के टिऊबवेल पर चौबीसों घंटा मेला लगा हुआ है। दो कोस दूर की कोशी में सभी को स्नान करने जाना पड़ता है। वहाँ से स्त्रियां घैले में पानी भी ले आती हैं। नहीं तो नल पर राजपूतों के साथ धक्कम-धक्की कर पानी लेना क्या औरतों से सम्भव है? इसके अतिरिक्त कितना भी हो, राजपूत लोग भले आदमी हैं। घी-दही खाने का मुँह देकर भगवान् ने उन्हें भेजा है। कोइरी लोगों द्वारा थोड़ा-सा कष्ट स्वीकार करने से अगर वे आराम पाते हैं, तो पायें। इसमें तो कोइरी लोगों का पैसा खर्च नहीं होता है। लेकिन हाँ, आँखें दिखाकर अगर वे नल से पानी लेने का हक दिखाते, तो दूसरी बात थी।

दो घड़े पानी दो कोस ढोकर लाना—यह क्या छोटी-सी बात है। सगिया दो घड़े पानी नदी से लाकर रखने के बाद जैसे दम तोड़ रही है। ताक़त थी ततमा-टोली की उस पच्छिमी लड़की में! पानी से भरे तीन घड़ों को एक साथ ले आते समय एक बूंद भी पानी छिलक कर उसकी देह पर नहीं गिरता था। हर वक्त ढोड़ाय उसके साथ सगिया को मिला-मिलाकर देखता है। आँगन के अन्दर कुआँ न रहने से उस लड़की को नहीं चलता था। सगिया को लेकिन किसी भी बहाने की जरूरत नहीं है। खुद देकर ही पुलकित है, जो पाती है, उसी से खुश है। दावा किसी चीज का नहीं है। वह लड़की थी सुहागी बिल्ली—जितना दो उसे, उतना ही चाहिए—किसी भाँति तृप्ति नहीं है! जाड़े की रात में कम्बल का भी हिस्सा चाहिए, तब आराम से गवर-गवर आवाज करती हुई सोयेगी! नींद के आवेश में हाथ पड़ जाने से नोचना भी नहीं छोड़ेगी।

भाग्य है कि सगिया ने पच्छिम का तौर-तरीका नहीं सीखा है! इसीलिए ढोड़ाय ने यह सोचने के लिए पल भर भी अवकाश नहीं पाया है कि वह किस विषय में सगिया से हीन है।

इस अंचल में कुएँ बनाने का काम करते हैं नोनिया लोग। ये पहले मिट्टी से शोरा और नमक निकालने का काम करते थे। नमक के हल्के के समय ये ही लोग महात्माजी के चेलों को नमक तैयार करना सिखाते थे। इसीलिए इन लोगों पर तीन-

चार सालों से पुलिस की नजर थी। कलक्टर साहब के हुक्म से भूकम्प के बादवाले दिन ही दरोगा साहब थाने में तुनिया लोगों को बुलाने के लिए आदमी भेजते हैं। पूरे मुहल्ले में कुएँ साफ करने का काम करना होगा—यह वे कहते हैं। वे लोग चौकीदार की बात पर विश्वास नहीं कर सके थे। एक बार थाने में जाने पर दरोगा साहब जेल की खिचड़ी खिलायेंगे—इसी डर से सभी अपना-अपना गाँव छोड़कर भागे थे।

कुएँ से बालू छानने का काम ततमा टोली के लोगों के लिए नया नहीं है। सगिया को नदी से पानी लाने में बहुत कष्ट हो रहा है। ढोड़ाय के ऊपर से विपद का झोंका गुजरने के बाद उसने देखा है कि कुछ ही दिनों में रामचन्द्रजी की कृपा असंख्य-धाराओं में उसकी छोटी-सी दुनिया पर झरती है। फिर से वह काम में उत्साह पा रहा है।

सगिया ढोड़ाय को मना करती है, नहीं, नहीं, तुम इनारे के अन्दर मत उतरना ढोड़ाय। वैसे ही देखने में लग रहा है कि वह कुँआ बालू से भर गया है। लेकिन भीतर के पाताल में क्या है, कौन जाने!

ढोड़ाय हँसकर कहता है: 'धरती माई सीताजी को पाताल में खींच लेना चाहती हैं। मेरे जैसे खोटे सिक्के की उन्हें जरूरत नहीं है।'

सगिया के चेहरे पर सलज्ज हँसी की आभा खिल उठती है। 'तू ने ही तो खींचकर उठाया था।'

यों ही थोड़े उठाया था। 'जान चली गई रे ढोड़ाय' कहकर कैसा चिल्लाता हुआ था।

'जान का डर किसको नहीं है? तू क्यों दौड़ रहा था पक्की की ओर? उस वक्त तो हम लोगों को बात याद नहीं आई थी!'

बात सच है। ढोड़ाय लज्जित हो जाता है। बालू से भरी बाल्टी को वही सगिया के हाथ में देता है।

ढोड़ाय कुएँ से बालू निकालता है, सगिया बाल्टी भर बालू दूर फेंक आती है।

सचमुच, पक्की के साथ उसकी नाड़ी बन्धी हुई है। पक्की जैसे हृत के फाल का दाग हो, और उसकी दोनों बगल के पेड़ों की कतार—हलरेखा के दोनों किनारे की ऊँची मिट्टी। जीवन बीता है, उन पेड़ों के बहाने में, गोसाईं थान में, जाड़े की धोप में, वर्षा के पानी में, गरमी की लू और हवा में। पक्की के किनारे की मिट्टी काटने से बने गड्ढों को देखते ही उसके मन में भीड़ बनकर आते हैं—बनौचरा, बुढ़, टीकेदार साहब, ओवरसियर बाबू, और भी कितने लोग। वे सभी अच्छे आदमी थे। वहाँ का वह लड़का और उसकी माँ, तथा यहाँ की सगिया—इन दोनों के संयोग का सूत्र है यह पक्की। इसीलिए न उसका मन यहाँ से दौड़कर वहाँ जाता है, वहाँ से दौड़कर यहाँ आता है! वहाँ बापाव खाकर, इस पक्की को पकड़ कर वह यहाँ आया था, इसीलिए न आज यहाँ की सगिया आफत में पड़ने से जान बचाने के लिए उसे ही पुकारती है।

वरसात में दोनों तरफ पानी में डूव जाने पर भी वह रास्ता सर ऊँचा किये रहता है। पक्की ढोड़ाय के पास निर्विघ्नता, दृढ़ता तथा विशालता का प्रतीक है। इसीलिए वह दौड़ा जा रहा था पक्की की ओर अपनी जान वचाने के लिए।

'समझी सगिया! इसी पक्की को पकड़कर आया था, इसीलिए तो यहाँ पहुँचा था।'

'ठीक है। चुप रहते देख मैंने समझा कि मेरी वात पर शायद साहव को गुस्सा हुआ है। देखी हैं न पक्की की दरारें? उस दिन अगर दौड़कर मल्हरिया भी जाना चाहते तो जा नहीं सकते थे।'

सगिया व्यंग कर रही है, अथवा उसके दौड़ने का एक मन-गढ़ अर्थ उसने बना लिया है—वह ढोड़ाय ठीक-ठीक नहीं समझ पाता है। वातचीत के वीच कुएँ का वालू उठाने का काम चलता रहता है। जाड़े में भी सगिया के कपाल से पसीना झर रहा है। देखने में दुवली न होने पर भी सगिया कमजोर है।

'अव अधिक नहीं होगा तुझ से सगिया! यह क्या औरत का काम है? मैं बिल्टा को वुला लाता हूँ।'

'नहीं।'

छोटा-सा जवाव। रमिया होती तो जरूर कहती 'हुआ, हुआ। और मर्दानापन नहीं छाँटना होगा।' खेत में उसने अनेकों दिन सगिया के साथ-साथ काम किया है। लेकिन आज की तरह किसी भी दिन ढोड़ाय को काम करके इतनी तृप्ति नहीं हुई है। एक ही थाली में भात खाने की तरह! उसी तरह अपना-सा लग रहा है।

विल्टा भी आ जाता है। सिर्फ विल्टा ही क्यों, सिमट-सिमट कर मुहल्ले के सभी लोग आ जुटते हैं। केवल जुटते ही नहीं, ढोड़ाय की मदद भी करते हैं! कुएँ की वालू निकालने का काम इतना सहज है, यह पहले नहीं मालूम था।

साँझ के कुछ पहले लाडली वावू तक आकर ढोड़ाय की पीठ ठोंककर तारीफ कर जाते हैं।

'यही तो चाहिए। नहीं तो सरकार के भरोसे वैठे रहने से नहीं होगा। पक्की की दरारें मरम्मत होंगी, तव आयेंगे हाकिम साहव लोग हवागाड़ी पर! अलवत्त दृष्टान्त दिखाया है कोइरी टोला ने! राह दिखा सकने पर क्या साथ चलने वालों की कमी होती है? ढोड़ाय अव विसकंधा के सभी कुएँ तुम्हें और तुम्हारे दल को ही साफ करने होंगे। यही तो कांग्रेस और महात्माजी का हुक्म है!'

ढोड़ाय कृतार्थ हो जाता है। वह अवाक् हो जाता है, यह सोचकर कि एक ही माँ के पेट से लाडली वावू और अनोखी वावू—दो भिन्न-भिन्न किस्म के व्यक्तियों का जन्म कैसे होता है!

ढोड़ाय! ढोड़ाय!

इसके वाद, चारों तरफ केवल ढोड़ाय का नाम! सभी के खेत से वालू हटाने

: काम को देख-भाल ढोढ़ाय ही करता है, लेकिन क्यों उसने कुएँ से बालू उठाने का
ाम शुरू किया था, मन के कोने की उस गुप्त खबर को वह किसी को जानने नहीं देगा।
ह ढोढ़ाय की अपनी चीज है।



सगिया की याचना

कलियुग के रघुनाथ हैं महात्माजी। उनके चेले लोगों को कहते हैं 'कांग्रेस।' बेलायत से आया है लाल-टुह-टुह साहबों का दल, भूकम्प का नुकसान देखने के लिए। कांग्रेस के लोगों के साथ गंज के बाजार में जाते वक्त रास्ते में बिसकंधा के लाडली बाबू के घर से होकर जाते हैं। अतिथि-अभ्यागतों की अलबत्ता खातिरदारी कर सकते हैं बाबूसाहब लोग। वे पूड़ी नहीं खायेंगे। लोटा-भर गरमागरम भैंस के दूध में थैले से निकालकर डाला चाय का पत्ता। लाडली बाबू ने झट नये तैयार किये गये घर से एक थाली बूरा ला दिया। हाकिम दरोगा लोग इन दिनों बाबूसाहब के घर पर नहीं आते हैं, इसीलिए उनके यहाँ चाय नहीं थी, नहीं तो वैसे दसों साहब को बाबूसाहब भैंस के दूध से नहला दे सकते हैं।

इस दल के साथ लाडली बाबू भी गंज के बाजार में गये थे। लौटकर उन्होंने खबर सुनायी है कि कांग्रेस की तरफ से लोगों को सहायता दी जायेगी, खास कर गरीबों को। नया-नया कुँआ खुदवा दिया जायेगा—मिट्टी का पाट नहीं, सिमेंट का पाट दिया हुआ! लाखों की संख्या में सिमेंट के बोरे आये हैं जिरानिया मास्टर साहब के आश्रम में। बाँस, खर, लकड़ी की तो बात ही नहीं है। इस सरसोनी थाने का रिलीफ दिया जायेगा लाडली बाबू की रिपोट पर। इसीलिए सरकार ने कांग्रेस के लोगों को जेल से मुक्त कर दिया है। कहाँ गई अब साहबी टोपी पहनी हुई सरकार? धान की कितनी जमीनें बालू निकलने की वजह से ऊँची हो गई, उसकी खबर ली है क्या खस्सी खाने वाले यमराज दरोगा ने?

बड़ा अच्छा आदमी है लाडली बाबू। उन्होंने कांग्रेस को कह दिया है कि उनके अपने गाँव बिसकंधा की 'रिपोट' ऊपर से कांग्रेस के लोग आकर ले जायें। गाँव के सभी उनके परिचित हैं। किसको छोड़कर, किसको देंगे वे? सचमुच दैत्य-कुल में ऐसा प्रह्लाद पैदा हुआ कैसे? जिस दिन लाडली बाबू पहले-पहल जेल से आये, उस दिन बाबूसाहब ने सीधा हुक्म दिया था कि एक हफ्ते के अन्दर उन्हें कांग्रेस छोड़ना होगा। सुनने में आता है, लाडली बाबू ने भी उलटकर जवाब दिया था—आपको भी एक हफ्ते के अन्दर जज साहब की सेसरी छोड़नी होगी। वैसे ही जोंक के मुँह में नून, चूँवे की

बरसात में दोनों तरफ पानी में डूब जाने पर भी वह रास्ता सर ऊँचा किये रहता है। पक्की ढोड़ाय के पास निर्विघ्नता, दृढ़ता तथा विशालता का प्रतीक है। इसीलिए वह दौड़ा जा रहा था पक्की की ओर अपनी जान बचाने के लिए।

'समझी सगिया! इसी पक्की को पकड़कर आया था, इसीलिए तो यहाँ पहुँचा था।'

'ठीक है। चुप रहते देख मैंने समझा कि मेरी बात पर शायद साहब को गुस्सा हुआ है। देखी हैं न पक्की की दरारें? उस दिन अगर दौड़कर मल्हरिया भी जाना चाहते तो जा नहीं सकते थे।'

सगिया व्यंग कर रही है, अथवा उसके दौड़ने का एक मन-गढ़ अर्थ उसने बना लिया है—वह ढोड़ाय ठीक-ठीक नहीं समझ पाता है। बातचीत के बीच कुएँ का बालू उठाने का काम चलता रहता है। जाड़े में भी सगिया के कपाल से पसीना झर रहा है। देखने में दुबली न होने पर भी सगिया कमजोर है।

'अब अधिक नहीं होगा तुझ से सगिया! यह क्या औरत का काम है? मैं बिल्टा को बुला लाता हूँ।'

'नहीं।'

छोटा-सा जवाब। रमिया होती तो जरूर कहती 'हुआ, हुआ। और मर्दानापन नहीं छाँटना होगा।' खेत में उसने अनेकों दिन सगिया के साथ-साथ काम किया है। लेकिन आज की तरह किसी भी दिन ढोड़ाय को काम करके इतनी तृप्ति नहीं हुई है। एक ही थाली में भात खाने की तरह! उसी तरह अपना-सा लग रहा है।

बिल्टा भी आ जाता है। सिर्फ बिल्टा ही क्यों, सिमट-सिमट कर मुहल्ले के सभी लोग आ जुटते हैं। केवल जुटते ही नहीं, ढोड़ाय की मदद भी करते हैं। कुएँ की बालू निकालने का काम इतना सहज है, यह पहले नहीं मालूम था।

साँझ के कुछ पहले लाडली बाबू तक आकर ढोड़ाय की पीठ ठोंककर तारीफ कर जाते हैं।

'यही तो चाहिए। नहीं तो सरकार के भरोसे बैठे रहने से नहीं होगा। पक्की की दरारें मरम्मत होंगी, तब आयेंगे हाकिम साहब लोग हवागाड़ी पर! अलबत्त दृष्टान्त दिखाया है कोइरी टोला ने! राह दिखा सकने पर क्या साथ चलने वालों की कमी होती है? ढोड़ाय अब बिसकंधा के सभी कुएँ तुम्हें और तुम्हारे दल को ही साफ करने होंगे। यही तो कांग्रेस और महात्माजी का हुक्म है!'

ढोड़ाय कृतार्थ हो जाता है। वह अवाक् हो जाता है, यह सोचकर कि एक ही माँ के पेट से लाडली बाबू और अनोखी बाबू—दो भिन्न-भिन्न किस्म के व्यक्तियों का जन्म कैसे होता है!

ढोड़ाय! ढोड़ाय!

इसके बाद, चारों तरफ केवल ढोड़ाय का नाम! सभी के खेत से बालू हटाने

इतने दिनों तक उसने इस विषय में अपने मन पर कड़ी रास तान रखी थी। ढोढ़ाय यहाँ तक कि अपने ही आगे यह स्वीकार नहीं करना चाहता है कि जिरानिया का आकर्षण वह मन के ऊपर से मिटा नही सका है। कहीं कोई समझ ले, इसी डर से ढोढ़ाय जिरानिया से लौटे हुए कोइरी टोला के लोगों से स्वयं कुछ भी नहीं पूछता है। गत वर्ष बिल्टा ने मुकदमे की पैरवी से लौटकर कहा था कि बकरहट्टा के मैदान में फटफट कर हवागाड़ी चलती है और बीघा पर बीघा जमीन जोत डालती है। उस गाड़ी की मरम्मत के लिए घर बनवाया है, पनकी के पीपल के पेड़ के पास। दैत्य की आकृति की गाड़ियों को देखने पर डर-सा लगता है। इसी में उसने एक आदमी की जान ले ली है। वह आदमी पीछे खड़ा था। बिना कुछ कहे ही ऊपर के आदमी ने गाड़ी चला दी। फिर जायेगा कहाँ ? पीछे का वह आदमी हल के फाल से एकदम टुकड़ा-टुकड़ा हो गया है। सरकारी मामला होने के कारण किसी को सजा नहीं मिली, नहीं तो डेराइवर साहब को हाकिम फांसी पर लटका देते। रामनेवाज मुन्शी खुद कह रहा था।

ढोढ़ाय ने उस दिन बिल्टा से पूछा था—बकरहट्टा के मैदान के 'मैन' के जंगलों को भी काट दिया है क्या ?

बिल्टा को आश्चर्य हुआ था। हलवाली हवागाड़ी की बात जानने का आग्रह नहीं है इसे, यह जानना चाहता है 'मैन' के जंगल की बात ! कैसा तो है ढोढ़ाय !

ढोढ़ाय ने लजाकर कहा था—'मैन' की डाल के कुदाल का बेंट बनता है न, इसीलिए याद आया।

जिरानिया की ऐसी मुदरा खबरें और भी दो-एक दिन ढोढ़ाय के कानो मे पहुँची हैं। किन्तु अधिकांश गाड़ीवान आँखें मूँदकर कानों में रुई खोंसकर गाड़ी चलाते हैं। किसी तरह की खबर वे नहीं रखते हैं। केवल जिरानिया बाजार के भुट्टे की दर और बिना रोशनी पुलिस को नजर बचाकर बाजार के बीच से गाड़ी चलाने की करामात की अपनी बड़ाई करते हैं ! कोई अगर पकड़ता भी इन्हें, तो भी शायद महलदार अथवा अन्य किसी पहचाने हुए आदमी का कुछ संवाद मिल सकता था। दो साल पहले की बात एक युग पहले की बात मालूम होती है। और एक युग पहले की बातें मालूम होती हैं, उस दिन की। कितने दिन मन के कोने में कितनी ही इच्छा जागी है। बच्चे को देखने की रमिया की गोद में ! रात को जाकर बैलों की जोड़ी को जरा दुलार करने की। साहस नहीं हुआ है। ठेलकर दूर भगा दिया है उसने मन से इन सभी इच्छाओं को। बिसकंधा तो उसे खराब नहीं लगता है। आदमी को क्या कोई जगह भली-बुरी लगती है ! लोगों के साथ का सम्पर्क ही भला अथवा बुरा लगता है। यहाँ भी तो ढोढ़ाय का कितने लोगों के साथ नया-मीठा सम्पर्क हुआ है। बचपन की जान-पहचान और वयस्क अवस्था के परिचय में फर्क है—गर्म भात और ठंडे भात का फर्क। जिरानिया जाने की इच्छा होने पर भी उसने इतने दिनों तक ठीक कर रखा था कि अगर मर भी जाय, तो भी वह जिन्दगी भर उस तरफ नहीं जायेगा। अब वह निश्चय

करता है कि जाने की इच्छा न होने पर भी वह जायेगा। अपनी इच्छा ही जीवन की एकमात्र वस्तु नहीं है। कितने समय दूसरे की इच्छा भी रखनी पड़ती है। अपनी संकल्प-रक्षा की अपेक्षा सगिया की बहाना-रक्षा करने में मन को अधिक तृप्ति मिलती है।

अंधकार होने पर वह सगिया आदि को लेकर जिरानिया पहुँचेगा—जिससे ततमा टोली के किसी परिचित आदमी से उसकी भेंट न हो जाय।



पाप-क्षय का उपाय

जिरानिया में उस दिन मोसम्मात और सगिया ने जी भर कर महात्माजी के दर्शन किये। धन्य है उनके पुण्य का बल! धन्य हो रामचन्द्रजी! देखकर उन्हें और तृप्ति नहीं होती है। साधु-बाबाजी उन्होंने इसके पहले भी देखा है, लेकिन देवता का साक्षात् दर्शन इसके पहले नहीं हुआ है। चारों तरफ के सफेद प्रकाश उनके शरीर की शीतल ज्योति के सामने टिमटिमा रहे हैं।

कितनी ही तरह की बातें कही महात्माजी ने। उनकी बातें अपने कानों से सुन सकना क्या कम भाग्य की बात है?

....'पृथ्वी के पाप का बोझ बढ़ा है। इसी कारण देश में यह भूकम्प हुआ है।'

ढोड़ाय को लगता—महात्माजी ने ठीक कहा है। राजपूतों का पाप, ततमा टोली के मँड़र का पाप।

....'अछूत हरिजनों पर हम अन्याय करते हैं। उन्हें इन्सान नहीं समझते हैं। धरतीमाई उस पाप का बोझ नहीं सह सकी है।'....

यह बात ढोड़ाय ठीक से समझ नहीं सकता है। राजपूतों के पापवाली बात क्या गलत है? ततमा टोली के मँड़रों के पाप का क्या तब कोई वजन नहीं है?

....'इस विपद् में कितने लोग टूट रहे हैं। रामजी पर विश्वास रखना! समाज में जो सबसे नीचे है, उसके साथ भी भाई-सा बर्ताव करना। तब न दुनिया में राम-राज्य लौट कर आयेगा! राम-राज्य में :

नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना
नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना।

राम-राज्य में दरिद्र, दुःखी, निर्बोध अथवा अलक्षण-युक्त कोई आदमी नहीं रहेगा। उसी के लिए हम प्रयास कर रहे हैं, उसी के लिए तुम लोगों के मास्टर साहब प्रयास कर रहे हैं। उन्हीं पर हम लोगों ने इस जिले के भूकम्प को रिलीफ-सेवा का भार सौंपा है। जिन मास्टर साहब ने पृथ्वी पर राम-राज्य लाने के लिए अपना सर्वस्व

त्याग दिया है, मैं जानता हूँ, उनके हाथों से गरीबों पर अविचार नहीं होगा।' ···

इतनी देर में ढोड़ाय की निगाह पड़ती है मास्टर साहब पर, पहले की अपेक्षा वे थोड़ा वृद्ध मालूम हो रहे हैं। तो भी, एक परिचित आदमी का चेहरा उसे नजर आया है। इतनी दूर से भी बड़ा अपना-सा लगता है।

महात्माजी का पैर छूना क्या आसान मामला है? जिरानिया बाजार के बाबजी जैसे सुबह कबूतरों को दाने छींट रहे हों। वहाँ पहुँचने का उपाय सगिया नहीं करती। यहीं से पैसा फेंक दो सगिया, महात्माजी के नाम से! दो मेरे पास, मैं ही फेंक देता हूँ। तुम क्या उतनी दूर फेंक सकोगी?

भीड़ में कहीं देह न पिचने लगे। मोसम्मात को रोका नहीं जा सकता है। वह महात्माजी का पैर छूकर उन्हें प्रणाम करेगी ही। भीड़ के धक्के से वह आगे बढ़ जाती है। ढोड़ाय सगिया को अगोरने के लिए वहीं पर रह जाता है।

फिर ढोड़ाय और सगिया बहुत देर तक मोसम्मात की प्रतीक्षा में रहे। भीड़ पतली हो जाने पर भी मोसम्मात नहीं मिलती है। दोनों ही चिन्तित हो उठते हैं। गई कहाँ? गाँव के किसी आदमी के साथ भेंट हो गई होगी। शायद उन्हीं लोगों के साथ चली गई है। देखो तो जरा उसकी अक्ल।

जिरानिया की परिचित गन्ध सहसा ढोड़ाय की नाक में जाती है। अगर आँखें बाँधी हुई रहती, तो भी वह समझ सकता कि वह कहाँ आया है। जाड़े की साँझ में शहर से निकलकर यहाँ आते ही कनकनाहट थोड़ी अधिक मालूम होती थी। शुरू हो जाती थीं 'अमरलत्ती' से भरी बेर की झाड़ियाँ, हरियल के झुंडों की बरगद के पत्तों के साथ छेड़खानी।

एक अज्ञात भय की सिहरन से ढोड़ाय की देह कंटकित हो जाती है। दिल की धड़कन को घटाने की क्षमता यदि मनुष्य के कब्जे में रहती, तो अच्छा होता। न मालूम क्या सब तो हो रहा है। चारों तरफ ढोड़ाय ताक-ताककर देखता है। अंधकार में बकरहट्टा के मैदान में पेड़-पौधे हैं या नहीं, कुछ भी अन्दाज नहीं किया जा सकता है। उसने सुना तो था कि मूँगफली की खेती हो रही है। झटपट इस जगह को पार कर जाना होगा, अगर कहीं किसी पहचाने हुए आदमी से भेंट हो जाय। अपने घर की ओर ताकने में डर लगता है। उस तरफ को छोड़ अब तक ढोड़ाय ने अन्य सभी तरफ की चीजों को देखने की चेष्टा की है। अंधकार में कुछ भी नजर नहीं आता है, केवल दो-चार टिमटिमाते प्रकाश! जिस तरफ को वह नहीं देख रहा है, उसी तरफ की छवि उसके मानस पर उतरती है, उसके प्रत्येक रोमकूप में सनसनी जगाती है। यह केवल एक अहेतुक कौतूहल नहीं है। यह उसकी सत्ता का अंग है। उपेक्षा करने का उपाय नहीं है।····

····उसके घर के बाहर एक प्रकाश जल रहा है। ढिबरी का प्रकाश जैसा नहीं मालूम होता है। निश्चय ही वह बाबा की दी हुई विलायती लालटेन का प्रकाश है।

अगर वह छोटा बच्चा अभी उस प्रकाश के पास घूमता-फिरता रहता ! एक छाया भी अगर वहाँ हिलती दिखाई पड़ती ! सगियां अगर साथ नहीं रहती, तो वह उस घर के और कुछ निकट जाता ! फिर कहीं सगिया तो देख नहीं रही है ? गोसाईं-थान के बरगद का आंगन भांट के जंगल से भर गया है।

'यह गोसाईं-थान है सगिया। बड़े 'जाग्रत' हैं।' दोनों वहाँ प्रणाम करते हैं।

वहीं पर दीया रखकर प्रणाम करते वक्त और एक आदमी के केश के गुच्छे छितरा गये थे ! गलकट्टा साहब के हाते में वह बेर का पेड़ है या नहीं, यह कौन जानता है ! सूखे पत्तों से भरे एक गड्डे में ढोड़ाय का पैर पड़ता है—शायद भूकम्प के वक्त की दरार होगी ! लेकिन ढोड़ाय को लगता है, यह निश्चय ही बाबा के चूल्हे का गड्ढा है। न मालूम क्यों, वह उसे भी मन-ही-मन प्रणाम करता है।

बैलगाड़ी की कतार चली है सड़क से। जरूर ये सभी महात्माजी की सभा में गये थे। पक्की के किनारे यह किसका मकान है ? ऊँचा ! टिन का मकान। कुछ हाफपैंट पहने हुए आदमी गोल बनाकर खड़े हैं। यही क्या हलवाली हवागाड़ी मरम्मत करने का घर है, जिसकी बात बिल्टा ने की थी ! उन लोगों की बातें कानों में आती हैं।

'इतने दिनों से तो इतना हाय-तौबा मचा था। ले हलुआ ! तीन मिनट के अन्दर महात्माजी का तमाशा खत्म हो गया। खेल खत्म, पैसा हजम।'

कितने दिनों के बाद ढोड़ाय ने 'ले हलुआ, 'खेल खत्म, पैसा हजम'—ये बातें सुनीं। बिसकंधा में ये सब कोई नहीं बोलता है। इन दो-एक बातों के माध्यम से लग रहा है सम्पूर्ण पुरानी ततमा टोली उससे बातें कर रही है।

परिचित गंध फीकी होती जा रही है। ढोड़ाय को इस जगह को झट-पट पार कर जाने का और उत्साह नहीं है। शेष घड़ी तक वह उस गंध का उपभोग करने की चेष्टा करता है।···

इतनी देर में सगिया की बात कानों में आती है। 'यहाँ थोड़ा बैठकर माँ की प्रतीक्षा कर लेने से कैसा रहेगा। शायद पहले ही वह चली गई है।'

'ए गाड़ीवान ! ए शग्गड़ !'···तब महलदार सोये हुए गाड़ीवान को जगाकर पैसा वसूल रहा है। महात्माजी की कृपा से आज सहसा उसका मौसम जाग उठा है।

'नहीं, नहीं सगिया। और कुछ आगे जाकर मोसम्मात के लिए बैठा जायेगा।'·········

□

मोसम्मात का अभिशाप

ढोड़ाय और सगिया जब बिसकंधा पहुँचे, तब भी सगिया की माँ घर नहीं लौटी थी।

'यह देखो, क्या काण्ड हुआ! नहीं ढोड़ाय, तुम एक बार जिरानिया में भी को तलाश लो। तभी मैंने कहा था। कहाँ से कहाँ चली जायेगी। बूढ़ी है।'

'और कुछ देर देख लिया जाय। किसी न किसी दल के साथ वह जरूर आयेगी। और पक्की पकड़ कर अन्धा भी अकेला आ सकता है।'

सगिया विशेष आश्वस्त हुई, ऐसा नहीं मालूम हुआ। ढोड़ाय इनारे पर बैल के लिए पानी लाने चला जाता है। मोसम्मात दस मर्दों के बराबर है। वह भूलने वाली औरत नहीं है। यद्यपि यह बात सगिया से नहीं कही जा सकती है।

उत्कंठा से जब सगिया का पुण्य कमाने का मीठा आवेश करीब उड़ गया है, तभी उसकी माँ घर आ पहुँची। सगिया और ढोड़ाय दोनों ही चुपचाप बैठे हैं। दुश्चिन्ता से मुख का भाव गम्भीर है। चूल्हे में आग नहीं डाली गई है।

'''महात्माजी को प्रणाम करने के बाद भीड़ के धक्के से मोसम्मात न मालूम कहाँ चली गई थी। अन्धेरे में दिशा ठीक नहीं कर पायी थी। भीड़ के साथ यह मुल्क, वह मुल्क, सातों मुल्क घूमते-घूमते भेंट होती है गिदर मंडल से हलवाई की दूकान के सामने। गिदर उसे ले जाता है सभा के मैदान में। वहाँ जाकर कितना पुकारना, कितना हाँकना-डाकना—ओ ढोड़ाय! ओ सगिया। पर भला कौन सुने बूढ़ी की बात! तब वह रोकर छाती पीटती मरती है। गिदर कहता है 'चिन्ता किस बात की? वे घर ठीक ही लौटेंगे। उस हरामजादे के साथ भाग जाने वाली लड़की सगिया नहीं है। लेकिन जमाना खराब है, घी और आग! घर वे ठीक ही पहुँचेंगे, केवल पहले या बाद में। तो फिर तुम रोकर क्या करोगी? गाड़ी से तुम्हें ले जाऊँगा। और, रात को क्या निकला जा सकेगा? बूढ़ी हो, इतनी दूर पैदल चलकर आने की क्या जरूरत थी? मुझे खबर देती। मैं तो आजकल तुम लोगों का बेगाना होता जा रहा हूँ। महात्मा जी के दर्शन के बाद भी ऐसी प्रवृत्ति। रोने से क्या होगा? सब ठीक हो जायगा, महात्माजी के आशीर्वाद से।'

आँसू और ऊँघने के अवसर-अवसर पर मोसम्मात गिदर को मन की बातें कहती है। *बड़ा अपना आदमी लगता है आज गिदर। आदमी खराब नहीं है। लेकिन* दस आदमी मिलकर और खासकर ढोड़ाय ने दिनरात मोसम्मात के कानों में मन्तर पढ़-पढ़कर विष डाला है। उसने इतने दिन दूध-केले से विष वाला साँप पाला था। तुझे दोष नहीं देती गिदर। तू ने मेरे लिए खूब किया है। अपना हाथ मैंने स्वयं काटा है!

बातों-बातों में एक रात की बात निकल आती है। यह बात लखुआ चौकीदार

ने गिदर मंडल से कही थी। तुम जानती नहीं हो मोसम्मात कि इस बात को लेकर गाँव में काना-फूसी हुई थी। तुम्हें और कौन कहेगा यह बात ?

मोसम्मात की आँखों पर रामजी की कृपा से अभी भी छाली नहीं पड़ी है। कानों में भी वह रुई खोंसकर नहीं रहती है। इंगित से, इशारे से इनारे पर किसी ने व्यंग से इस बात को लेकर कुछ कहा ऐसा तो स्मरण नहीं आता है। पहले उसने समझा था शान्त हो जाता तो अच्छा है। इतनी देर में वह समझती है कि दुनिया भर के लोग अब तक उसे देखकर हँसते रहे। और आज के इस कलंक के बाद तो गिदर सारे गाँव में ढिंढोरा पिटवा देगा। इसकी अपेक्षा अगर सगिया को राजपूतों के यहाँ दाई का काम करने भेजा जाता, तो बदनामी कम होती।...

गाड़ी से उतरते ही ढोड़ाय और सगिया दौड़ कर आते हैं। दुनिया भर के प्रश्न लेकर, एक बात का भी जवाब नहीं देती है सगिया की माँ। सगिया ढोड़ाय को इशारा करती है 'खूब बिगड़ी है।' ढोड़ाय की तरफ न ताककर गम्भीर होकर सगिया की माँ घर के भीतर प्रवेश करती है।

ढोड़ाय अवाक् रह जाता है। हुआ क्या बूढ़िया को ? अभी मुहल्ले को जगा कर झगड़ा करने का समय है ? लेकिन जैसे आँगन में गाय मर गई है। गिदर भी साथ में जुटा है, देखता हूँ।

मोसम्मात ने मन ठीक कर लिया है।

'सुन ढोड़ाय। बहुत दिन से कहूँगी, ऐसा सोच रही थी। तुम्हें रखना और मुझ से नहीं पार लगेगा। मुँह में और, पेट में कुछ और मेरे पास नहीं है ?'

गिदर पूछता है—महीना-वहीना बाकी तो नहीं है ?

ढोड़ाय, सगिया और मोसम्मात—किसी के कानों में वह बात गई या नहीं, मालूम न हो सका।



सगिया अन्तर्धान हुई

जब भी ढोड़ाय का जीवन चलने लायक हो आता है, तभी एक आंधी उठकर सब कुछ बर्बाद कर जाती है। यह ढोड़ाय अपने जीवन में हरदम देखता आ रहा है। यही रामचन्द्रजी की रीति है।

उस दिन उसी वक्त वह बिल्टा के घर पर आया था। आते वक्त वह सगिया की तरफ संकोच के कारण ताक भी न सका था।

'नौकरी से जवाब हुआ है क्या रे ?'—बिल्टा हँसकर पागल हो जाता है।

गिदर भी इसमें है क्या ? वह मैंने पहले ही समझा था।'

टोले के लोग इसके लिये अधिक माथा-पच्ची नहीं करते हैं।

जवान मर्द है, खटकर खायेगा, उसके लिए यहाँ ही क्या है और वहाँ क्या है ? गाये के घाव से, कहते हैं, कुत्ते पागल होते हैं। अब वह डाइन मोसम्मात मरी या बची, इस पर कौन सोचकर हैरान होता है ? उस बुढ़िया के लिये सोचने का ठेका लिया है उस साले गायखोर ने। गिदर की देह से अमन-सभा की गंध उड़ती है। और अभी सरकार को अमन-सभा की जरूरत नहीं है। नये दरोगा साहब आये हैं। उनके साथ भूकम्प की रिलीफ को पटना को लेकर लाड़लो बाबू का काफी लगाव हुआ है। दरोगा-हाकिम लोग आकर बाबूसाहब की टूटी बैठक में ही हलुआ-पूरी डटा रहे हैं। अभी गिदर को और कौन राजपूत पूछता है ? बाबुसाहब की पूँछ पकड़कर वह जितनी दूर जायेगा, उतना ही उसे दरोगा और अन्य लोग कहेंगे कसकर पकड़े रहना गिदर। देखना, बाबू साहब का काछा कहीं खुल न जाय !

इतनी बातें ढोड़ाय को अच्छी नहीं लगती हैं। उसका मन खट्टा है।

कुछ दिनों के बाद विदेसिया के नाच का दल गाँव में आया था। गरमी और बरसात में ये गाँव-गाँव में नाच दिखायेंगे और जाड़े में घूमेंगे मेले में। पच्छिम की चीज है, चीज अच्छी है। हाट के चाले पर उतरा है 'विदेसिया' का दल। गाँव के बूढ़े-बच्चे टूट पड़े हैं। सरकार अभी विदेसिया के गाने पर अधिक खफा नहीं है, क्योंकि महात्माजी की नमक-तैयारी का गाना, ताड़ के पेड़ काटने का गाना, चर्खे के सुदर्शन चक्र से दुश्मन भगाने का गाना भूकम्प में लुप्त हो गया है। फिर भी लबुआ चौकीदार को अभी भी थाने में रिपोर्ट देनी होगी कि विदेसिया के दल ने कौन-सा गाना गाया।

ढोड़ाय दो दिन कहीं नहीं गया है। कहता है कि अच्छा नहीं लगता है। तीसरे दिन बिल्टा और गनौरी जबरदस्ती पकड़कर ढोड़ाय को ले जाते हैं। वे कहते हैं कितने नये-नये गाने मँगवाये हैं, लालमुनिया के गाने, गाय बेचने के गाने, और भी कितने। सुनने पर रुलाई आती है। आज ही शेष है। कल ये लोग चले जायेंगे फलका-हाट। तेरा कोई भी बहाना नहीं सुना जायेगा ढोड़ाय।

बाध्य होकर ढोड़ाय जाता है। उस वक्त गाना शुरू हो गया है।

गया है पूरब बंगाल मुल्क
मुझे छोड़कर मेरा राजा;
गया है नौकरी करने,
जरूर सूखकर हुआ होगा लकड़ी····
टेहुने तक रंगीन धोती कैसी शोभा दे रही थी ?
सोचते ही मन से रस टपकता है।
रे विदेसिया !
जानती हूँ, अभी तुम किसको बात सुन रहे होगे,

जानती हूँ, क्यों रोजगार के पैसे गिन रहे होंगे,
निश्चय ही उसके लिए खरीद रहे होंगे कशमकश चोली
रे विदेसिया।....

औरत और मर्द सभी, उस सीताजी जैसी अच्छी लड़की के दुःख पर व्याकुल होकर रो रहे हैं। यहाँ तक कि बिल्टा ने भी नाक साफ करने के बहाने छुपाकर आँखें पोंछ लीं। लेकिन ढोड़ाय निर्विकार है! सब फीका लग रहा है। कितनी अंग-भंगियों के द्वारा दिखाई हुई, कितनी कसरत कर गायी हुई अन्तिम पंक्ति ठीक ढोड़ाय के सामने आकर, फिर उसकी ठुढी पकड़कर, हिलाकर उस लड़की ने गाया—अरे विदेशी! जरूर बिल्टा के द्वारा सिखाया गया है। इसीलिए आज ढोड़ाय को पकड़कर लाया गया है। गुस्सा होने पर भी, गाना के वास्ते गुस्सा नहीं दिखाया जाता है। यह है इज्जत की बात। ढोड़ाय हँसकर गाँठ से एक आना पैसा निकालकर देता है। सभी हँसकर कहते हैं—खैर, इस आदमी को दिल तो है।

लेकिन यह गीत ढोड़ाय के मन में थोड़ा-सा भी आवेदन नहीं कर पाता है। देखना चाहिए, इसीलिए वह देख रहा है, सुनना चाहिए, इसीलिए सुन रहा है। वह अगर कशमकश-वाली चोलियाँ खरीदे, तो भी दुनिया में कहीं भी कोई नहीं रोयेगी। दुनिया में अगर उसके लिए रोने वाली कोई रहती तो फिर उसे दुःख किस चीज का था?

दूसरे दिन गांव में काफी हल्ला है—सगिया चली गई, विदेसिया के दल के साथ।

....उस दल के मालिक को देखा नहीं, सियार की पूंछ की तरह मूंछ वाला। तेल लगाकर केश सँवारे हुए, वह जो हरमुनिया बजाता था, उसी के साथ भाग गई है। रात नाच देखकर घर लौटी थी। फिर शेष रात्रि में उठकर बाहर जाने के बहाने फुर्र-सी उड़ गई। सुबह गिदर इस बात को छिपाने की चेष्टा कर रहा था। लेकिन कर न सका। न मालूम किसने-किसने तो जाते देखा है सगिया को विदेसिया के दल की बैलगाड़ी पर। झूठी बात नहीं, उन लोगों ने अपनी आंखों से देखा है, माथे पर कपड़ा तक नहीं दिया था उस बेशर्म औरत ने।

सगिया। भला सगिया भागेगी उस आदमी के साथ? ढोड़ाय को विश्वास नहीं होता है। माथे के कपड़े तक को उसने सर पर नहीं खींचा था गांव के लोगों को देखने पर भी? वह तो जोर से बोलना तक नहीं जानती है, गुस्सा करना भी नहीं जानती है, इसलिए गिदर को देखने पर वह आँखें नीची कर लेती है। बेटे की बात कहते वह रोती है। उसके मन के अन्दर तूफान बहे, तब भी उसके मुंह का भाव नहीं बदलता है। शीतल और मीठे वाक्य ही सदा उसके मुंह से झरते हैं। ठेहुने तक रंगीन धोती वाले गाना को सुनकर घर छोड़ने वाली लड़की तो वह नहीं है।

ढोड़ाय समझने की चेष्टा करता है। वह सगिया को जानता है। उस पर उसे

सा नहीं आता है। औरत जात पर ढोढ़ाय का मन और विपाक्त नहीं होता है। गिदर हाथ से सगिया बची है। विदेसिया के दल के उस मूंछ वाले पर भी उसे गुस्सा हीं आता है। उसका दुःख है, अपने कपाल को लेकर! हर जगह से उसे उसका कपाल उखाड़ फेंक रहा है। यहाँ तक कि रामजी पर भी आज वह दोषारोपण नहीं करता है। दुनिया चलाने का यही नियम है। अपने प्रयोजन से ही वे रामजी को पुकारते हैं। दुनिया को रामचन्द्रजी की आवश्यकता है, लेकिन उनका तो, दुनिया नहीं होने पर भी चलता है।

बिल्टा कहता है—दल का वह मालिक कौन जात है, कौन जाने। जाति की लड़की को ले गया, और भला सभी मिटमिटाते हुए देखेंगे? गया ही है वह कितनी दूर? कल से तो फलकाहाट में विदेसिया होने वाला है। यह सुन कर ढोढ़ाय के मन में भी थोड़ा खटका लगता है। वह आदमी मुसलमान तो नहीं है? जुलफी की बहार तो है?

मोसम्मात आकर रो पड़ती है। ढोढ़ाय तू एक बार फलकाहाट जा। तेरे कहने से वह लौट भी आ सकती है। मैं गिदर के साथ गई थी, पर लौटा नहीं ला सकी। वह हम लोगों से कुछ भी नहीं बोली।

गिदर पागल हो उठा है। उसने तो सब कुछ सम्हाल कर सजा लिया था। केवल एक पक्ष को उसने नहीं देखा, अब देखता है कि वही पक्ष असल था। मोसम्मात को लेकर लौटते समय गिदर आदि रामनेवाज मुंशी के घर से होकर आये थे। मुंशी जी ने कहा है कि इस पर मुकदमा नहीं चलेगा।

जुलफी वाले दल के पंडा को मैं जेल की खिचड़ी खिलवाकर छोड़ूंगा। सदर मे तीन दफे नालिश ठोकूंगा, चाहे जितना भी मुंशीजी मना क्यों न करें। मैं उसे नहीं छोड़ूंगा। अनिरुध मोख्तार से मैं एस० डी० ओ० साहब के पास मामला दायर करवाऊँगा! साला बोलता है—मैं उस औरत को ले आया हूं? वह खुद आयी है। लौटा ले जा सको, तो लौटा ले जाओ। मैं उसे रोकता नहीं हूं। बिदेसिया का गाना सुनकर हर हमेशा जवान छोकरियाँ घर छोड़कर भाग आती हैं। जितने दिन मन चाहे, रहो, जब चाहो, चली जाओ। उन्हें रोकता नहीं, तो इतनी उम्र वाली औरत को रोकूंगा? वह अगर चली जाना चाहती है, तो अभी चली जा सकती है।...उस धूर्त को मैंने जुलफी और मूंछ से ही पहचाना है। कितने भले आदमियों को देख लिया और हरमुनिया बजइया आया है मुझे कानून सिखाने। और बलिहारी है उस औरत की? गिदर का समूचा क्रोध इकट्ठा होता है सगिया पर।

मोसम्मात ढोढ़ाय के पैर पर सिर पटकती है। अस्वीकार न करना ढोढ़ाय कब तुझे कौन-सी बात कही है, उसे मन के अन्दर गाँठ बाँधकर नहीं रखना। बू हो गई हूँ, मुंह पर बन्धन नहीं है। मुझे पाँच-सात नहीं, यही एक बेटी है। उ गिदर के कारण ही आज मेरा ऐसा हाल है। उसे अगर चुमौना करने का दबाव न

जानती हूँ, क्यों रोजगार के पैसे गिन रहे होगे,
निश्चय ही उसके लिए खरीद रहे होगे कशमकश चोली
रे विदेसिया ।....

औरत और मर्द सभी, उस सीताजी जैसी अच्छी लड़की के दुःख पर व्याकुल होकर रो रहे हैं। यहाँ तक कि बिल्टा ने भी नाक साफ करने के बहाने छुपाकर आंखें पोंछ लीं। लेकिन ढोड़ाय निर्विकार है ! सब फीका लग रहा है। कितनी अंग-भंगियों के द्वारा दिखाई हुई, कितनी कसरत कर गायी हुई अन्तिम पंक्ति ठीक ढोड़ाय के सामने आकर, फिर उसकी ठुढी पकड़कर, हिलाकर उस लड़की ने गाया—अरे विदेशी ! जरूर बिल्टा के द्वारा सिखाया गया है। इसीलिए आज ढोड़ाय को पकड़कर लाया गया है। गुस्सा होने पर भी, गाना के वास्ते गुस्सा नहीं दिखाया जाता है। यह है इज्जत की बात। ढोड़ाय हँसकर गाँठ से एक आना पैसा निकालकर देता है। सभी हँसकर कहते हैं—खैर, इस आदमी को दिल तो है।

लेकिन यह गीत ढोड़ाय के मन में थोड़ा-सा भी आवेदन नहीं कर पाता है। देखना चाहिए, इसीलिए वह देख रहा है, सुनना चाहिए, इसीलिए सुन रहा है। वह अगर कशमकश-वाली चोलियाँ खरीदे, तो भी दुनिया में कहीं भी कोई नहीं रोयेगी। दुनिया में अगर उसके लिए रोने वाली कोई रहती तो फिर उसे दुःख किस चीज का था ?

दूसरे दिन गांव में काफी हल्ला है—सगिया चली गई, विदेसिया के दल के साथ।

....उस दल के मालिक को देखा नहीं, सियार की पूँछ की तरह मूँछ वाला। तेल लगाकर केश सँवारे हुए, वह जो हरमुनिया बजाता था, उसी के साथ भाग गई है। रात नाच देखकर घर लौटी थी। फिर शेष रात्रि में उठकर बाहर जाने के बहाने फुर्र-सी उड़ गई। सुबह गिदर इस बात को छिपाने की चेष्टा कर रहा था। लेकिन कर न सका। न मालूम किसने-किसने तो जाते देखा है सगिया को विदेसिया के दल की बैलगाड़ी पर। झूठी बात नहीं, उन लोगों ने अपनी आँखों से देखा है, माथे पर कपड़ा तक नहीं दिया था उस बेशर्म औरत ने।

सगिया। भला सगिया भागेगी उस आदमी के साथ ? ढोड़ाय को विश्वास नहीं होता है। माथे के कपड़े तक को उसने सर पर नहीं खींचा था गांव के लोगों को देखने पर भी ? वह तो जोर से बोलना तक नहीं जानती है, गुस्सा करना भी नहीं जानती है, इसलिए गिदर को देखने पर वह आँखें नीची कर लेती है। बेटे की बात कहते वह रोती है। उसके मन के अन्दर तूफान बहे, तब भी उसके मुँह का भाव नहीं बदलता है। शीतल और मीठे वाक्य ही सदा उसके मुँह से झरते हैं। ठेहुने तक रंगीन धोती वाले गाना को सुनकर घर छोड़ने वाली लड़की तो वह नहीं है।

ढोड़ाय समझने की चेष्टा करता है। वह सगिया को जानता है। उस पर उसे

आ नहीं आता है। औरत जात पर ढोड़ाय का मन और विपाक नहीं होता है। गिदर हाथ से सगिया बची है। विदेसिया के दल के उस मूँछ वाले पर भी उसे गुस्सा ही आता है। उसका दुःख है, अपने कपाल को लेकर। हर जगह से उसे उसका पाल उखाड़ फेंक रहा है। यहाँ तक कि रामजी पर भी आज वह दोषारोपण नहीं करता है। दुनिया चलाने का यही नियम है। अपने प्रयोजन से ही वे रामजी को पुकारते हैं। दुनिया को रामचन्द्रजी की आवश्यकता है, लेकिन उनका तो, दुनिया नहीं होने पर भी चलता है।

बिल्टा कहता है—दल का वह मालिक कौन जात है, कौन जाने। जाति की लड़की को ले गया, और भला सभी मिटमिटाते हुए देखेंगे? गया ही है वह कितनी दूर? कल से तो फलकाहाट में विदेसिया होने वाला है। यह सुन कर ढोड़ाय के मन में भी थोड़ा खटका लगता है। वह आदमी मुसलमान तो नहीं है? जुलफी की बहार तो है?

मोसम्मात आकर रो पड़ती है। ढोड़ाय तू एक बार फलकाहाट जा। तेरे कहने से वह लौट भी आ सकती है। मैं गिदर के साथ गई थी, पर लौटा नहीं ला सकी। वह हम लोगों से कुछ भी नहीं बोली।

गिदर पागल हो उठा है। उसने तो सब कुछ सम्हाल कर सजा लिया था। केवल एक पक्ष को उसने नहीं देखा, अब देखता है कि वही पक्ष असल था। मोसम्मात को लेकर लौटते समय गिदर आदि रामनेवाज मुंशी के घर से होकर आये थे। मुंशी जी ने कहा है कि इस पर मुकदमा नहीं चलेगा।

जुलफी वाले दल के पंडा को मैं जेल की खिचड़ी खिलवाकर छोड़ूँगा। सदर में तीन दफे नालिश ठोकूँगा, चाहे जितना भी मुंशीजी मना क्यों न करें। मैं उसे नहीं छोड़ूँगा। अनिरुध मोख्तार से मैं एस० डी० ओ० साहब के पास मामला दायर करवाऊँगा! साला बोलता है—मैं उस औरत को ले आया हूँ? वह खुद आयी है। लौटा ले जा सको, तो लौटा ले जाओ। मैं उसे रोकता नहीं हूँ। विदेसिया का गाना सुनकर हर हमेशा जवान छोकरियाँ घर छोड़कर भाग आती हैं। जितने दिन मन चाहे, रहो, जब चाहो, चली जाओ। उन्हें रोकता नहीं, तो इतनी उम्र वाली औरत को रोकूँगा? वह अगर चली जाना चाहती है, तो अभी चली जा सकती है।···उस धूर्त को मैंने जुलफी और मूँछ से ही पहचाना है। कितने भले आदमियों को देख लिया और हरमुनिया बजइया आया है मुझे कानून सिखाने। और बलिहारी है उस औरत की? गिदर का समूचा क्रोध इकट्ठा होता है सगिया पर।

मोसम्मात ढोड़ाय के पैर पर सिर पटकती है। अस्वीकार न करना ढोड़ाय कब तुझे कौन-सी बात कही है, उसे मन के अन्दर गाँठ बाँधकर नहीं रखना। बू[illegible] हो गई हूँ, मुँह पर बन्धन नहीं है। मुझे पाँच-सात नहीं, वही एक बेटी है। उ[illegible] गिदर के कारण ही आज मेरा ऐसा हाल है। उसे अगर जुर्माना करने का दबाव [illegible]

देती, तो मेरी सगिया ऐसा नहीं करती। तू एक बार जा न ढोड़ाय!

ढोड़ाय जब फलकाहाट पहुँचा, तो रात हो गई। ईंट का चूल्हा बनाकर, सगिया दल के लोगों के लिए पकाने को बैठी है। मुहल्ले के लोगों ने भीड़ लगायी है कुछ ही दूर पर। गोला के सामने वाले नाम के पेड़ के नीचे। जुलफी वाला, दल का मालिक, उसी के बीच में बैठकर बातों की तुबड़ी से असर जमा रहा है। दल के अन्य सभी हाट में इधर-उधर छितराये हैं।

ढोड़ाय को आश्चर्य लगता है। थोड़ा-सा भी विलक्षण नहीं देखा गया सगिया के चेहरे और बर्ताव में?

कौन, ढोड़ाय? अपने बैठने वाली ईंट को सगिया बढ़ा देती है। ढिबरी के प्रकाश में चेहरे के भाव नजर नहीं आते हैं। इस प्रकाश-अंधकार की लीला में सगिया का नरम मुखड़ा पत्थर की मूरत-सा लग रहा है। उसके आँसू भी क्या सूख गयें हैं। ढोड़ाय को देखने पर भी क्या उसकी आँखों के कोने में दो बून्द आँसू नहीं आने चाहिए। अद्भुत लड़की है। बोलती नहीं है। एक बात भी क्या ढोड़ाय से बोलने की उसे इच्छा नहीं हो रही है?

लोटा ले जाने की बात ढोड़ाय के मुँह से नहीं निकालती है। दरोगा-हाकिम सामने वह बोल जाता है, और यहाँ क्या बोलेगा, ढूँढ़ नहीं पा रहा है।

वह कहता है—'गिदर मंडल आया था न?'

कहते ही उसे मालूम होता है कि ठीक यह गिदर की बात ही अभी नहीं छेड़नी ाहिए थी।

'नहीं।'

फिर शब्द खत्म हो जाते हैं। सगिया भात का माड़ पसाती है। ढोड़ाय एक धजली पाट की लकड़ी तोड़कर अंधकार में जमीन पर क्या-क्या आँकता है।

'मोसम्मात ने भेजा है।'

कहते ही फिर ढोड़ाय को लगता है, जैसे वह गलती कर रहा है। ठीक बात नहीं कही गई है। सगिया मुँह उठाकर ताकती है। ढिबरी का प्रकाश मुँह पर पड़ा है। मुँह देखकर उसके मन को पकड़ना कठिन है। फिर भी, ढोड़ाय को लगता है जैसे उसकी दोनों आँखें न मालूम क्या पूछना चाहती हैं। अगर अभी वह बोले 'अच्छा। इसीलिए आये हो!' बातों का सूक्ष्म पेंच ढोड़ाय नहीं समझता है। जो मन में आता है, वही कह डालता है। आज उसे क्या हो गया है? जो कहना चाहता है, वह क्यों नहीं बोल सक रहा है। कुछ भी क्या उसके बोलने को नहीं है? कितनी ही बातें उसने इतने दिनों में सोची हैं। कुछ नहीं कहना ही अच्छा था। नहीं आना ही उचित था। खैर, आया था, इसीलिए तो भेंट हुई।

ढोड़ाय उठ खड़ा होता है।

'माँ को देखना।'

फल्गु में भी बाढ़ आती है, चली जाती है। आँसू छिपाने के लिए दोनों ही अँधेरे की तरफ मुँह फेर लेते हैं। □

लंका काण्ड

कोइरी लोगों का निद्रा-भंग

बहुत दिन पहले महात्माजी के एक चेले विसकंधा के लोगों की भूकम्प के कारण होने वाली क्षति का हिसाब करने आये थे। बहुत पढ़ित आदमी थे, सभी से पूछ-पूछ कर बहुत कुछ कागज पर लिख ले गये थे। लाडली बाबू के यहाँ वे ठहरे थे। सबने सुना था कि उनकी 'रपोट' के अनुसार ही भूकम्प की रिलिफ सबको दी जायेगी।

उसके बाद साल घूम गया, रिलिफ की ओर से कोई आवाज कोइरी टोला के लोगों ने नहीं सुनी। एक प्रकार भूल ही गये थे वे यह बात। सहसा एक दिन न मालूम कैसे, सभी जान गये कि बाबूसाहब के घर में जो स्तूपाकार ईंटों और सिमेंट के बोरे इकट्ठे किये गये हैं, वह कांग्रेस की तरफ से दी गई रिलिफ की है। गिदर मंडल ने भी पाये हैं। दो सौ टिन, सखुए की लकड़ी, चूना, सिमेंट तथा और भी कितनी ही चीजें।

उसी बात पर बिल्टा दल बाँधकर दौड़ता है जिरानिया के मास्टर साहब के आश्रम की ओर। अनेक किताबें उलट-पलट कर मास्टर साहब विसकंधा की रिपोर्ट ढूंढ़ निकालते हैं। उसमें लिखा हुआ है—'कोइरी टोला में गिदर मंडल को छोड़ बाकी सभी के घर खर के हैं। खर वाले घरों को भूकम्प से कोई खास क्षति नहीं पहुँची है। केवल जिन घरों के बीच से दरारें गुजरी थीं, उनके नाम ये। कोइरी लोगों ने अपने घर खुद मरम्मत कर लिये हैं। घर के भीतर की दरारों को तो बहुत पहले ही उन लोगों ने भर लिया था। असल क्षति हुई है गाँव के पक्के दलानों को। क्षति के परिमाण की लिका बाद में दी गई है। उसी परिमाण में इन लोगों को रिलिफ देनी चाहिए। इरी टोला के एक गिदर उर्फ गिरिधारी मंडल को छोड़ बाकी सभी क्षतिग्रस्त ईंट के : राजपूत टोला में हैं। कोइरी टोला की जिन जमीनों में बालू निकली थी, उन्हें पहले उन लोगों ने साफ कर लिया है। इनारे की बालू छानने के लिए भी वे परमुखापेक्षी ी हैं, इसके लिए वे सचमुच प्रशंसा के पात्र हैं। यहाँ के इनारे के पाट कई जगहों : फट गये हैं। लेकिन डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का एक ट्यूब-वेल कोइरी टोला में रहने की ह से गरमी में लोगों को असुविधा नहीं हुई थी। जमीन से बालुओं को हटाने पर भी छ-कुछ बालू रह ही गयी है। उन सब जमीनों में मूँगफली लगाकर देखा जा सकता। दुरनामेंट एग्रिकल्चर फार्म से कुछ-कुछ मूँगफली के बीज कोइरी खेतिहरों को ना वांछनीय समझता हूँ। राजपूत टोला को एक नया इनारा देना चाहिए, उनके भी पक्के इनारे बरबाद हो गये हैं। संथाल टोला में कुछ भी क्षति नहीं हुई है। वे, लू में गड्ढे खोदकर जो जल निकलता है, उसे ही पीने के काम में लाते हैं। कम्प रिलिफ के रुपयों से संथाल टोला के लिए एक इनारा अथवा ट्यूब-वेल देना

कोइरी लोगों का निद्रा-भंग

बहुत दिन पहले महात्माजी के एक चेले बिसकंधा के लोगों को भूकम्प के कारण होने वाली क्षति का हिसाब करने आये थे। बहुत पंडित आदमी थे, सभी से पूछ-पूछ कर बहुत कुछ कागज पर लिख ले गये थे। लाडली बाबू के यहाँ वे ठहरे थे। सबने सुना था कि उनकी 'रपोट' के अनुसार ही भूकम्प की रिलिफ सबको दी जायेगी।

उसके बाद साल घूम गया, रिलिफ की ओर से कोई आवाज कोइरी टोला के लोगों ने नहीं सुनी। एक प्रकार भूल ही गये थे वे यह बात। सहसा एक दिन न मालूम कैसे, सभी जान गये कि बाबूसाहब के घर में जो स्तूपाकार ईंटों और सिमेंट के बोरे इकट्ठे किये गये हैं, वह कांग्रेस की तरफ से दी गई रिलिफ की है। गिदर मंडल ने भी पाये हैं। दो सौ टिन, सखुए की लकड़ी, चूना, सिमेंट तथा और भी कितनी ही चीजें।

उसी बात पर बिल्टा दल बांधकर दौड़ता है जिरानिया के मास्टर साहब के आश्रम की ओर। अनेक किताबें उलट-पलट कर मास्टर साहब बिसकंधा की रिपोट ढूँढ़ निकालते हैं। उसमें लिखा हुआ है—'कोइरी टोला में गिदर मंडल को छोड़ बाकी सभी के घर खर के हैं। खर वाले घरों को भूकम्प से कोई खास क्षति नहीं पहुँची है। केवल जिन घरों के बीच से दरारें गुजरी थीं, उनके नाम ये। कोइरी लोगों ने अपने घर खुद मरम्मत कर लिये हैं। घर के भीतर की दरारों को भी बहुत पहले ही उन लोगों ने भर लिया था। असल क्षति हुई है गाँव के पक्के दलानों को। क्षति के परिमाण की तालिका बाद में दी गई है। उसी परिमाण में इन लोगो को रिलिफ देनी चाहिए। कोइरी टोला के एक गिदर उर्फ गिरिधारी मंडल को छोड़ बाकी सभी क्षतिग्रस्त ईंट के घर राजपूत टोला मे हैं। कोइरी टोला की जिन जमीनो में बालू निकली थी, उन्हें पहले ही उन लोगो ने साफ कर लिया है। इनारे की बालू छानने के लिए भी वे परमुखापेक्षी नहीं हैं, इसके लिए वे सचमुच प्रशंसा के पात्र हैं। यहाँ के इनारे के पाट कई जगहों पर फट गये हैं। लेकिन डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का एक टिऊब-वेल कोइरी टोला में रहने की वजह से गरमी में लोगों को असुविधा नही हुई थी। जमीन से बालुओं को हटाने पर भी कुछ-कुछ बालू रह ही गयी है। उन सब जमीनो मे मूंगफली लगाकर देखा जा सकता है। दुरनामेंट एग्रिकल्चर फार्म से कुछ-कुछ मूंगफली के बीज कोइरी अधियादारों को देना वांछनीय समझता हूँ। राजपूत टोला को एक नया इनारा देना चाहिए, उनके सभी पक्के इनारे बरबाद हो गये हैं। संथाल टोला में कुछ भी क्षति नहीं हुई है। वे, बालू मे गड्ढे खोदकर जो जल निकलता है, उसे ही पीने के काम में लाते हैं। भूकम्प रिलिफ के रुपयों से संथाल टोला के लिए एक इनारा अथवा टिऊब-वेल बनवा

देने से उन रुपयों का अपव्यय करना नहीं होगा, ऐसी ही हम लोगों की धारणा है।'

इसका स्थूल अर्थ मास्टर साहब ने बिल्टा आदि को समझा दिया।

जिनके-जिनके घर में घी-मक्खन है, वे रिलिफ पायेंगे? इसी का नाम है रपोट? वही कहो। जब उस आदमी ने बाबूसाहब के घर में पूड़ी-हलुआ खाया था, तभी समझना चाहिए था। मास्टर साहब अगर खुद रपोट लिखते, तो उसमें महात्माजी की बात रहती। महात्माजी ने कहा था कि कांग्रिस की तरफ से गरीबों को मदद दी जायेगी। जो लोग खुद खर्च कर सकते हैं, उन्हें नहीं। उनकी बातें रहीं कहाँ?

गाँव लौटकर सभी ढोड़ाय को दोष देते हैं। उसके कहने में पड़कर खुद जमीन से बालू हटाकर यह फल हुआ? कुएँ की बालू नहीं उठाई जाती, तो अच्छा था। रपोट में एक रिलिफ की बात लिखना शुरू करने पर कितनी ही रिलिफें आ जाती हैं। सच में, ढोड़ाय की बातों में न आना ही अच्छा था। लाडली बाबू ने जो कहा था कि अपने हाथों से काम करना ही महात्माजी चाहते हैं, तो जिन लोगों ने अपने हाथों से बालू नहीं उठाया उन लोगों ने महात्माजी की रिलिफ पायी कैसे?

सिर्फ ढोड़ाय ही क्यों, कोइरी टोला का छोटा बच्चा तक समझता है कि रपोट बाबूसाहब के पक्ष में है। जितने लोग रिलिफ पा रहे हैं, वे सभी बाबूसाहब के पक्ष के हैं। रही सिर्फ संथाल टोला की बात। उन लोगों ने कैसे कांग्रिस में पैरवी करवायी, सो कोइरी टोला के लोग समझ नहीं पाते हैं। जाने दो। गरीब आदमी हैं। हम लोगों जैसा ही उन लोगों का दुर्भाग्य है। महात्माजी की नेक नजर अगर उन लोगों पर पड़ी हो, तो उसके लिए ईर्ष्या करना हम लोगों के लिए पाप होगा।

इन लोगों के प्रश्न का एक दिन सहसा समाधान हो जाता है। नौरंगीलाल गोलेदार का लड़का भोपतलाल एक दिन ढोड़ाय को पुकार कर कहता है—तुम लोग कान-नाक में तेल डालकर सोते हो? बाबूसाहब लोग संथाल टोले की बगल में जो नया कलम-बगीचा बना रहे है, उसी में लाकर बैठाया है कांग्रिस का दिया हुआ संथाल टोले का टिऊब-वेल। घूस खिलाकर महात्माजी के चेलों को।

गिदर मंडल कहता—जिनके टोले की बात है, वे ही समझें। हम 'पवली' को उस पर माथा लड़ाने की क्या जरूरत है?

भोपतलाल छोड़ने वाला नहीं। वह कहता है, मैं इस मामले को लेकर महात्माजी तक लिखा-पढ़ी करूँगा। बाबूसाहब आगे-आगे हल चलाते जा रहे हैं और तुम नकधर्मी पीछे-पीछे चले हो कोड़ी गई मिट्टी के कीड़े खाने। आश्चर्य है। गिदर मंडल बिगड़ता नहीं है। अच्छा बाबा, जिनकी चीज है, उन्हें पूछने से ही तो चिन्ता खत्म हो जाती है। वे टिऊब-वेल कहाँ बैठाना चाहते हैं। यह तो वे ही बतला सकते हैं।

बात सबके मन को जँचती है। दल बाँधकर सभी संथाल टोले में जाते हैं। संथाल लोग कहते हैं—रहने दो, टिऊब-वेल बाबूसाहब के बागीचे में। हम लोग वहीं से जल ले आयेंगे।

'देखो न ?'

अच्छा मेल चल रहा है, गायखोर गिदर के साथ मूलरखोर संथालों का। मुँह को केवई मछली फुस-मन्तर से निकल कर भागी है। इसीलिए गुस्से से गिदर अपने हाथ को दाँत से काट रहा है। और, अभी उसे मोसम्मात की ही क्या जरूरत है, अपने जात-बिरादर के साथ ही क्या सम्पर्क है? ढोड़ाय, तुझे उसने एक बार कहा था तत्रिमा-कोइरी? अब से हम लोग कहेंगे वह जात का राजपूत-कोइरी है। बाबूसाहब से उसने मन्तर लिया है, जानते नहीं हो? 'रपोट-बपोट' सभी उन लोगों ने मिलकर दुरुस्त कर दिया है। नहीं तो, मूँगफली के बीज को रिलिफ, राजपूतों के पत्तों से बटोरी हुई बखशीश।

दूसरे दिन ढोड़ाय मचान के नीचे वाली छाया में बैठकर थोड़ा-सा आराम कर रहा था। बिल्टा, काम कर रहा है पूरब के खेत में। अकेले बैठे रहने से ही उसका मन चला जाता है पक्की की ओर। पक्की के ऊपर बैलगाड़ियों की कतार ठीक चीटियों की कतार-सी मालूम होती है। धूल उड़ाकर कुरसेला की बस चली गई। यहाँ से गाड़ी के भोंपू की आवाज सुनाई पड़ती है। बैलगाड़ियाँ बस के चले जाने के बाद फिर कतार में जुट गई हैं। दूर, बैलगाड़ी को चले जाते देखते ही सनिया की याद आ जाती है। शायद एक मेले से दूसरे मेले में वह जा रही है, माथे पर कपड़े तक को उसने चढ़ने नहीं दिया है।

लाइन तोड़कर एक गाड़ी पक्की से इधर उतरी। गाड़ी के ऊपर बोझ लदे हैं। शायद बाबूसाहब के होंगे वे।···सहसा ढोड़ाय के हृदय का स्पन्दन जरा द्रुत हो जाता है।····वैसा ही तो लग रहा है! ठीक वैसी ही सीधी-सीधी सींगें। बाईं तरफ वाले बैल के कपाल का काला दाग और भी नजदीक आने पर नजर आता है।

इस गाड़ी और बैल के सम्बन्ध में ढोड़ाय को भ्रम नहीं हो सकता है। पूँछ के गुच्छे के आधे बाल सफेद हैं, दाहिने वाले सलिया बैल के।···

खेत से बिल्टा पूछता है, 'कहाँ की गाड़ी है ?'

'जिरानिया दुरमन के फारम की। यह बिसकंधा है न ? कोइरी टोला है ? यहाँ के लिए दुरमन के फारम से मूँगफली का बीज आया है।'

गाड़ीवान के गले का स्वर परिचित-सा लग रहा है। ···उसने जो सोचा था ठीक वही है। मंड़र! उसकी ततमा-टोली के मंड़र। उसकी गाड़ी मंड़र क्यों चला रहे हैं? न मालूम क्या सोचकर ढोड़ाय बगल वाले घेरे की आड़ में जाकर बैठता है। आस-पास के खेत से लोग आकर गाड़ी के चारों तरफ इकट्ठे होते हैं।

'फारम से कह दिया गया है कि जिसे-जितना देना आवश्यक है, लाडली बाबू खाता में लिख-लिखकर उसी प्रकार सभी को देंगे।'

'वहाँ, जो छत मुँह बाये हुई है, वही लाडली बाबू का घर है। वहीं खड़ी ले जाओ। और इस रास्ते से लौटने की जरूरत नहीं है। मुँह बाये हुए मकान के मुँह में

खोंस देना इन बोरों को ! उन लोगों का बड़ा पेट है । उसके बाद अगर कुछ बचे तो बांट देना राजपूत टोला में ।

गाड़ीवान के चेहरे पर प्रतिक्रिया झलकती है । वह पल भर में सारी बातें समझ लेता है ।

'अरे बिगड़कर क्या करोगे ? भूकम्प से तुम लोगों का हुआ ही क्या है । हम-लोग करते थे घरामी का काम और कुएं की बालू छानने का काम । भूकम्प से टूट जाने के बाद खपड़े के घर में टिन की छत बनी है । सभी घरों में टिऊब-वेल लगा है । तीस रुपये में टिऊब-वेल मिलता है । कौन भला और कुएं खुदवाये ! धरती माई का ख्याल ही कहूंगा इसे । इसीलिए न इन मूंगफली के बोरों पर बैठकर सारी रात काटनी पड़ रही है । जो पा रहे हो, ले जाओ । खेत में अगर न लगाओ तो खा जाना । यह भी थोड़े ही पाते ! वह आश्रम के मास्टर साहब ने रपोट देखकर फारम को 'हूँड़ा' मारा है कि एक साल से ऊपर हुआ, अभी तक चीनाबादाम के बीज बिसकंधा क्यों नहीं भेज सके ?'

बिल्टा बिगड़ उठता है 'काफी हुआ, तुझे और राजपूतों की तरफ से वालिस्टरी नहीं करनी होगी ! जल्दी निकल जा हम लोगों के टोले से ।'

गुस्से से गरजता हुआ गाड़ीवान बैल की पूंछ मड़ोड़ता है 'बाप का खरीदा हुआ रास्ता है तुम लोगों का । उधार बहुत है, तो खरीद लो घोड़ा—तुम लोगों के साथ वही हुआ है ।'

ढोड़ाय को घेरे की फांक से साफ दिखलाई पड़ रहा है ।....रास का तनाव शिथिल है, फिर भी दोनों बैल मुंह ऊपर किये हुए हैं ! हवा सूंघ रहे हैं क्या ? जरूर उसकी गन्ध पा रहे हैं । इच्छा होती है दौड़कर एक बार उनकी देह सहला दे । सहलाना तो दूर की बात है, ऐसा भाग्य देकर भेजे हो रामचन्द्रजी कि अपने गाड़ी-बैलों को भी घेरे की फांक से छुपकर देखना पड़ता है !

□

बाबू साहब का उल्लास

'सेसर' साहब का भारी पाये का खानदान । कुछ दिन तक चोट खाकर पड़ा हुआ था । इतने दिनों में वह फिर से गांव में सर ऊँचा कर जमकर बैठा है । लाडली बाबू ने ही जरा कुपथ पर पांव देकर परिवार की इज्जत को थोड़ा घटा दिया था । उन्हीं लाडली बाबू की कृपा से उन लोगों के कीचड़ पड़े घर-द्वार फिर से चमकदार और साफ-सुथरे हुए हैं । साथ-ही-साथ दरोगा साहब की नजर भी उन लोगों के लिए बदली

है। असल में सभी कुछ हुआ है समय के प्रभाव से, लेकिन बाबू साहब घर पर कहते हैं कि उन्होंने फिर से परिवार का भार अपने हाथों में लिया है, इसीलिए वे सम्हाल सके हैं।

बाबूसाहब आज साँझ के बाद अभी तक घर के अन्दर नहीं गये हैं। गिदर मंडर के लिए वे प्रतीक्षा कर रहे हैं। गिदर आजकल प्रायः रोज ही आ रहा है। परिवार के काम की तालिम देने के लिए बाबूसाहब पोते को लेकर इसी समय बैठते हैं। गिदर ने कहा है कि वह आज उस मामले को एक अन्तिम निष्पत्ति कर आयेगा। सब हो ही आया है। गिदर ने इस बार खूब किया है। उसने काम भी किया है खूब सजा-सम्हालकर। आज की खबर सुनने के बाद वे पूजा में जाकर बैठेंगे। पूजा के उपचार सब ठीक किये हुए हैं। घरवाली ने इस बीच दो बार बुला भी भेजा है। औरत का दिमाग। समझेगी कुछ नहीं, खाली रात हुई जा रही है, रात हुई आ रही है, चिल्लायेगी।

मन की अस्थिरता हटाने के लिए बाबूसाहब अभ्यास के अनुसार पोते को उपदेश देना शुरू करते हैं। वह बेचारा बहुत देर से बैठ-बैठकर ऊँघ रहा है।""अतिथि आने पर दूध-दही पूरा देना चाहिए, लेकिन हर वक्त कहना चाहिए कि आजकल दूध कहाँ है घर में? सभी भैंसें मर गई हैं।""मर्द की जमीन बढ़ती जाती है, और औरत की जमीन घटती जाती है, और हिजड़ा को जमीन ज्यों-की त्यों रहती है।""जमीन की सरहद पर ताड़ का पेड़ रोपना एकदम गलती है। ताड़ हिजड़े लोग रोपते हैं। वह एक बेढंगा लम्बा पेड़ है, साँप-गिद्ध का अड्डा है। दो पुश्त में जमीन बढ़ती है मात्र आधा हाथ।

""जिस तरफ लोगों का चलना-फिरना कम होता है, उसी तरफ की सीमा में बाँस लगाना अच्छा है, और घर के पास केले की झाड़। बाबूसाहब मन-ही-मन सोचते हैं, औरत की 'जमीन का धर्म ही है घट जाना। गिदर मंडर तो केवल निमित्त है।

गाँव के लोगों का न मन, न मति। धूर्त गिदर मंडर इतने दिनों में इस नरम जगह पर अघात दे सका था। बूढ़े का पाँच साल का नाती रक्त-वमन कर दो दिनों के ज्वर से मर गया था। उसके बाद ही गिदर ने बूढ़े दादा से न मालूम क्या सब तो कहा था।

'ठीक कहते हो गिदर, यह सब उसी डाइन मोसम्मात का ही काम है। यह तो मेरे दिमाग में पहले नहीं घुसा था!' बूढ़े दादा की कोटरगत आँखें उस बिल्ली की आँखों-सी होती हैं, जिसकी पूंछ पर लात पड़ गई हो। गुस्से की जलन के मारे जैसे अभी वह दीवाल नोचने लगेंगे।

बूढ़े दादा की पुतोहू चिल्लाकर रो रही थी। उसे सहसा ख्याल आता है कि मोसम्मात एक दिन उसके पास आग लेने आयी थी।

लछमिनिया की माँ ने भी गौर किया है कि मोसम्मात के खाने के बाद भी उसकी रसोई में एक थाली भात रोज ढँका रहता है। जरूर उन्हें खिलाने के लिए जिनका नाम नहीं लेना चाहिए।

साक्षी का अभाव नहीं होता है।

ऐसा कहा जाता है कि सारी रात मोसम्मात जागकर बैठी रहती है। पैर की आहट से चौंक उठती है।

सच में ऐसा ही है! बिल्टा ने भी एक दिन आधी और निस्तब्ध रात को खेत से पहरा देकर लौटते समय मोसम्मात के तम्बाकू पीने की आवाज सुनी है।

साँझ के बाद न जाने किसने तो मोसम्मात को हाट के चौराहे वाले पीपल के पेड़ के नीचे बैठे देखा है। उस दिन हाट का दिन नहीं था। चारों तरफ मौन। जीव-जन्तु का चिह्न नहीं है। बूढ़ी बैठी हुई है। पूछने पर उसने कहा था कि वह हाट के कुष्टरोगी को थोड़ा-सा भात देने आयी थी। बूढ़ी हूँ, थक गई थी, इसीलिए थोड़ा आराम कर रही थी।

और भी कितने ही तरह के प्रमाण मिलते हैं। किसी प्रकार के सन्देह की गुंजाइश नहीं है। 'गाँव के अन्दर रहकर यह काण्ड? जात की छाती पर बैठकर जात की ही दाढ़ी उखाड़ना? इसका अभी एक जतियारी न्याय करना होगा!'

'ठीक कहा है गिदर ने।'

बिल्टा तक कहता है 'नहीं, नहीं ढोड़ाय! यह हमलोगों की जाति का सवाल है, तुम इसके अन्दर नाक घुसाने मत आओ। वह वास्तव में डाइन है या नहीं, यह बिना देखे ही क्या कुछ किया जायगा? तुम्हें उसने घर से निकाल दिया था, तो भी तुम्हारी हमदर्दी नहीं गई है उस डाइन के लिए।'

'डाइन है या नहीं'—इस शब्द का अर्थ सभी जानते हैं, परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाने पर भी मुक्ति नहीं है। विष्ठा घोलकर खिलाने पर भी अगर वह स्वाभाविक रहे, तो फिर प्रश्न उठेगा उस चीज को खाये हुए आदमी को जाति में फिर से ग्रहण करने का! हर तरफ देखा जाता है। इस बात का भी महत्त्व कम नहीं है।

'अच्छा बिल्टा, तुम लोग गाँव भर अगर चाहो कि मोसम्मात गाँव छोड़कर चली जाय, तो वह चली ही जायेगी। लेकिन ऐसा नहीं कि उस पर कोई जुल्म करो। मैं उसे मना लूंगा। देखते नहीं, क्या थी और क्या हो गई है। बेटी के चले जाने के बाद। तू एक बार गिदर मंड़र से कहकर तो देख।'

अनेक आरजू-मिन्नत, अनेक तर्क और परामर्श के बाद गिदर ढोड़ाय का अनुरोध स्वीकार करता है। 'एक बार तेरा अनुरोध स्वीकार किया, इसीलिए बारबार अनुरोध करने नहीं आना।'

यहाँ से कुछ दूर, रामनेवाज मुन्शी के घर के रास्ते में एक गड्ढे की जमीन

...ऊग से ऊँची हो गई थी। वही जमीन गिदर मंडर ने बाबू साहब से कहकर मोसम्मात ...दिलवा दी।

... पुराने ढंग के आदमी हैं बाबूसाहब। कोई जाकर रो पड़े तो 'ना' नहीं कर ...कते हैं। खुशामद कर, जो चाहो उनसे पा सकते हो, पर बिगड़ कर बोलो, तो ठगे ...जाओगे। इसके अलावा मोसम्मात भी तो मेरी आत्मीय है। नगर से निकालना ही ...आजकल के दिन कठिन है। इसीलिए नई जमीन के बदले बाबूसाहब को कोइरी टोला ...की जमीन देनी पड़ी। लेकिन हाँ; रुपये की जरूरत तो सभी को है। बाबूसाहब को ...सभी 'डबल' आदमी समझते हो। अरे जैसा डबल आदमी, उसका खर्च भी वैसा 'डबल' है। उन सबों का अन्दाज तक तुमलोग कर नहीं सकोगे, समझा रे गनौरी! मेरा बहुत दिनों से लगाव है न, मैं जानता हूँ।' ...

इस बार सचमुच गिदर ने मोसम्मात के लिए खूब किया है। एक समय उसने जो रुपये खाये थे, वे सूद और असल मिलाकर पाई-पाई चुका दिया है। बाबूसाहब को कहकर उनके आदमियों के द्वारा तथा अपनी देख-भाल से मोसम्मात के छप्पर और खूटों को उखाड़कर उन्हें नयी जमीन पर प्रतिष्ठित कर आया है। कई दिनों तक उसने इसके लिए दिन-रात मिहनत की है।

ढोड़ाय मोसम्मात की ओर ताक नहीं सकता है। वह डाइन बूढ़ी न जाने कैसी तो हो गई है। पति का 'डीह' छोड़ते समय भी वह गला फाड़कर चिल्लाती नहीं है। जात के लोगों को वह गालियाँ तक नहीं देती है। उसकी जात के लोग तो बुरे नहीं हैं। जिसकी लड़की जाति और कुल डुबाकर निकल गई है, उसीको उन्होंने इतने दिन जाति से बहिष्कार नहीं किया है। जात के मड़र गिदर ने भी उसकी इस विपद् के समय जितना हो सका, किया है। वह अपने इस दुर्भाग्य के अन्दर से भी मंगल का संधान कर मन में आराम पाना चाहती है। गाँव के बाहर जाने पर सगिया शायद किसी दिन माँ के पास आ भी सकती है।" महात्माजी ने आज उसे जाति के लोगों के हाथ की बेइज्जती से बचाया है।

जाते समय घर के गोसाईं के 'पिण्ड' को गोद में लेकर मोसम्मात आँगन के तुलसी-दल को प्रणाम करती है—

'जय महावीरजी।'

बाबूसाहब सन्ध्या से इस खबर की प्रतीक्षा कर रहे थे। गिदर से खबर पा... ही वे अपने गोसाईं घर में प्रवेश करते हैं —अच्छी तरह पुकारने पर भक्त की बात उ... सुननी ही पड़ती है। कृतज्ञता के भार से गोसाईं के पैर के निकट से सर उठाने ... इच्छा नहीं होती है! अपनी ही जमीन से होकर अब उनकी गाड़ी सदर दरवाजे से ... पक्की पर जा सकेगी।

जय, जय हो जानकीवल्लभ रघुनाथजी। जय जानकी माई। जय लछमन... भरतजी, दशरथजी, कोशल्या माई, महावीरजी, शत्रुघ्नजी, सुग्रीवजी, विभीषण, ...

लछमिनिया की मां ने भी गौर किया है कि मोसम्मात के खाने के बाद भी उसकी रसोई में एक थाली भात रोज ढंका रहता है। जरूर उन्हें खिलाने के लिए जिनका नाम नहीं लेना चाहिए।

साक्षी का अभाव नहीं होता है।

ऐसा कहा जाता है कि सारी रात मोसम्मात जागकर बैठी रहती है। पैर की आहट से चौंक उठती है।

सच में ऐसा ही है ! बिल्टा ने भी एक दिन आधी और निस्तब्ध रात को खेत से पहरा देकर लौटते समय मोसम्मात के तम्बाकू पीने की आवाज सुनी है।

सांझ के बाद न जाने किसने तो मोसम्मात को हाट के चौराहे वाले पीपल के पेड़ के नीचे बैठे देखा है। उस दिन हाट का दिन नहीं था। चारों तरफ मौन। जीव-जन्तु का चिह्न नहीं है। बूढ़ी बैठी हुई है। पूछने पर उसने कहा था कि वह हाट के कुष्टरोगी को थोड़ा-सा भात देने आयी थी। बूढ़ी हूं, थक गई थी, इसीलिए थोड़ा आराम कर रही थी।

और भी कितने ही तरह के प्रमाण मिलते हैं। किसी प्रकार के सन्देह की गुंजाइश नहीं है। 'गांव के अन्दर रहकर यह काण्ड ? जात की छाती पर बैठकर जात की ही दाढ़ी उखाड़ना ? इसका अभी एक जतियारी न्याय करना होगा !'

'ठीक कहा है गिदर ने।'

बिल्टा तक कहता है 'नहीं, नहीं ढोड़ाय ! यह हमलोगों की जाति का सवाल है, तुम इसके अन्दर नाक घुसाने मत आओ। वह वास्तव में डाइन है या नहीं, यह बिना देखे ही क्या कुछ किया जायगा ? तुम्हें उसने घर से निकाल दिया था, तो भी तुम्हारी हमदर्दी नहीं गई है उस डाइन के लिए।'

'डाइन है या नहीं'—इस शब्द का अर्थ सभी जानते हैं, परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाने पर भी मुक्ति नहीं है। विष्ठा घोलकर खिलाने पर भी अगर वह स्वाभाविक रहे, तो फिर प्रश्न उठेगा उस चीज को खाये हुए आदमी को जाति में फिर से ग्रहण करने का ! हर तरफ देखा जाता है। इस बात का भी महत्त्व कम नहीं है।

'अच्छा बिल्टा, तुम लोग गांव भर अगर चाहो कि मोसम्मात गांव छोड़कर चली जाय, तो वह चली ही जायेगी। लेकिन ऐसा नहीं कि उस पर कोई जुलम करो। मैं उसे मना लूंगा। देखते नहीं, क्या थी और क्या हो गई है। बेटी के चले जाने के बाद। तू एक बार गिदर मंड़र से कहकर तो देख।'

अनेक आरजू-मिन्नत, अनेक तर्क और परामर्श के बाद गिदर ढोड़ाय का अनुरोध स्वीकार करता है। 'एक बार तेरा अनुरोध स्वीकार किया, इसीलिए बारबार अनुरोध करने नहीं आना।'

यहां से कुछ दूर, रामनेवाज मुन्शी के घर के रास्ते में एक गड्ढे की जमीन

भूकम्प से ऊँची हो गई थी। वही जमीन गिदर मंडर ने बाबू साहब से कहकर मोसम्मात को दिलवा दी।

··· पुराने ढंग के आदमी हैं बाबूसाहब। कोई जाकर रो पड़े तो 'ना' नहीं कर सकते हैं। खुशामद कर, जो चाहो उनसे पा सकते हो, पर बिगड़ कर बोलो, तो ठगे जाओगे। इसके अलावा मोसम्मात भी तो मेरी आत्मीय है। नगर से निकालना ही आजकल के दिन कठिन है। इसीलिए नई जमीन के बदले बाबूसाहब को कोइरी टोला की जमीन देनी पड़ी। लेकिन हाँ; रुपये की जरूरत तो सभी को है। बाबूसाहब को सभी 'डबल' आदमी समझते हो। अरे जैसा डबल आदमी, उसका खर्च भी वैसा 'डबल' है। उन सबों का अन्दाज तक तुमलोग कर नहीं सकोगे, समझा रे गनौरी! मेरा बहुत दिनों से लगाव है न, मैं जानता हूँ।' ···

इस बार सचमुच गिदर ने मोसम्मात के लिए खूब किया है। एक समय उसने जो रुपये खाये थे, वे सूद और असल मिलाकर पाई-पाई चुका दिया है। बाबूसाहब को कहकर उनके आदमियों के द्वारा तथा अपनी देख-भाल से मोसम्मात के छप्पर और खूटों को उखाड़कर उन्हें नयी जमीन पर प्रतिष्ठित कर आया है। कई दिनों तक उसने इसके लिए दिन-रात मिहनत की है।

ढोड़ाय मोसम्मात की ओर ताक नहीं सकता है। वह डाइन बूढ़ी न जाने कैसी तो हो गई है। पति का 'ढीह' छोड़ते समय भी वह गला फाड़कर चिल्लाती नहीं है। जात के लोगों को वह गालियाँ तक नहीं देती है। उसकी जात के लोग तो बुरे नहीं हैं! जिसकी लड़की जाति और कुल डुबाकर निकल गई है, उसीका उन्होंने इतने दिन जाति से बहिष्कार नहीं किया है। जात के मड़र गिदर ने भी उसकी इस विपद् के समय जितना हो सका, किया है। वह अपने इस दुर्भाग्य के अन्दर से भी मंगल का संधान कर मन में आराम पाना चाहती है। ·· गाँव के बाहर जाने पर सगिया शायद किसी दिन माँ के पास आ भी सकती है। ·· महात्माजी ने आज उसे जाति के लोगों के हाथ की बेइज्जती से बचाया है।

जाते समय घर के गोसाईं के 'पिण्ड' को गोद में लेकर मोसम्मात आँगन के तुलसी-दल को प्रणाम करती है—

'जय महावीरजी!'

बाबूसाहब संध्या से इस खबर की प्रतीक्षा कर रहे थे। गिदर से खबर पाते ही वे अपने गोसाईं घर में प्रवेश करते हैं —अच्छी तरह पुकारने पर भक्त की बात उन्हें सुननी ही पड़ती है। कृतज्ञता के भार से गोसाईं के पैर के निकट से सर उठाने की इच्छा नहीं होती है! अपनी ही जमीन से होकर अब उनकी गाड़ी सदर दरवाजे से सीधे पक्की पर जा सकेगी।

जय, जय हो जानकीवल्लभ रघुनाथजी। जय जानकी माई! जय लछमन जी, भरतजी, दशरथजी, कोशल्या माई, महावीरजी, शत्रुघ्नजी, सुग्रीवजी, विभीषण, ·· और

कोई नाम छूट तो नहीं गया ? रामचन्द्रजी के आयुधों के नाम उन्हें ठीक-ठीक याद नहीं रहा है। बूढ़े होने से अनेक असुविधाएँ हैं। परित्राणाय साधूनाम् रामो जातः हरिः, कहकर बाबूसाहब मंत्र समाप्त कर उठते हैं।

ओ अनोखी बाबू, कोइरी-टोला के भजन के दल को एक रुपया चार आने चन्दा सुबह भेज दीजिएगा ख्याल कर।....



रामराज्य आवाहन यज्ञ

रविवार पालन करने से कुष्टरोग दूर होता है, यह सत्य है, पर एक ही रविवार ालन करने से नहीं। इसे याद रखने योग्य स्मरण-शक्ति बाबूसाहब को इस बुढ़ापे ी है। आज पेड़ रोपो, तो दस साल के बाद फल लगेगा। जमीन-जगह की बात उतनी हड़बड़ी करने से कहीं चलता है ?

इसीलिए, सचमुच सिर पर आ गिरने के पहले कोइरी-टोला के लोग अपनी द की कल्पना भी न कर सके थे। अब सहसा जान सके।

संथाल टोली के लोग इस जिले के लोगों को कहते हैं—बिरकू। निहायत जरूरत ड़ने से वे बिरकू लोगों के मुहल्ले में नहीं आते हैं। इसलिए एक रात मठ के मैदान संथालों के दल को आते देख कोइरी-टोला के लोग अवाक् हो गये थे। बात क्या ? शिकार-विकार से तो लौट नहीं रहा है ? क्या रे, बड़ा शिकार है या छोटा ? ़गोश है या सियार ? बैठ रे, खैनी ले। आग लेगा ?

संथाल लोग पहले कुछ नहीं बोलते हैं। अँधेरे में उनके सफेद दाँतों को देखकर पता चलता है कि वे हँस रहे हैं। उसके बाद पिथो मांझी एक ही साँस में कह डालता है कि गेना, गनौरी, परसादी, भविया तथा और भी न मालूम किसको-किसको सात दिनों के अन्दर जमीन छोड़ देनी होगी।

पचई चढ़ायी है आज साले ने। चिल्लाहट के भीतर से धीरे-धीरे असल बात निकलती है। बाबूसाहब ने वे सभी रैयती जमीनें सलामी लेकर संथालों के लिए बन्दोबस्त कर दी हैं! डिग्री करवाकर उन्होंने दो साल पहले ही नीलाम में खरीद लिया था। तब जो अनिरुध मोख्तार कह रहा था कि बिना 'लुटिस' दिये कोई कुछ नहीं कर सकेगा ? हाकिम जाति के राजपूत हैं क्या ? नहीं, तो जरूर उसने घूस खाया है। नीलाम आखिर कब हुआ ? ढोल नहीं, ढाक नहीं, न गोरों का बाजा! चपरासी नहीं, लुटिस नहीं, निलाम होने से ही होगा ?

'जान कबूल!'

इस दिन जो हायाराई आरम्भ हुई, वह बहुत दिनों तक चली। थाना-पुलिस, मामा फौड़म-फोड़ी, फौजदारी-अदालत—किसी तरह जमीन की रक्षा नहीं की जा सकी। दरोगा, हाकिम, यहाँ तक कि अस्पताल का डाक्टर सभी बाबूसाहब के पक्ष में हैं। अन्त में एक दिन पुलिस के सामने संथाल लोगों ने जमीन पर मुर्गी काटकर खायी।

इसी वातावरण के बीच प्रथम बार, जिस दिन 'वालन्टियर' लोग गीत गाते हुए कोइरी-टोला में आये, उस दिन गाँव के बड़े लोग गाना सुनने के लिए उन पर टूट नहीं पड़े थे। महात्माजी के छोटे चेलों का नाम है 'वालन्टियर'।

लड़के उन्हें कहते हैं—यहाँ से सीधा जाने पर लाडली बाबू का घर मिलेगा।

वे लोग लाडली बाबू के घर की ही तरफ से इधर आये हैं। वहीं ठहरने के ध्येय से वे वहाँ गये थे। बाबू साहब ने खास कमरे में उन्हें बुलाकर कहा था कि वे गृहस्थ आदमी हैं। संसार-धर्म से उन्हें पेट पालना पड़ता है। लड़के उनके हाथ-पाँव हैं। उन्हीं में से एक को तो उन्होंने महात्माजी को दान ही कर दिया। लाडली बाबू के दोस्त लोग उनके बेटे के ही बराबर हैं। लेकिन इस मामले में उन्हें रहने देने का अर्थ है राज पारभंगा के विरुद्ध जाना। कोइरी टोला में वह टूटा हुआ मठ अभी भी आदमियों के रहने योग्य है। शीत आ गया है, अब वहाँ साँप का भय भी नहीं है।

'तुम लोगों के टोले में हम आये, और तुम लोग चले जाने का रास्ता बता रहे हो? टोले में हमलोगों को रहने देने से ही तो पुलिस नहीं पकड़ लेगी।'

संथाल, राजपूत और पुलिस के साथ इन कई सालों से कितना लड़ा, फिर पुलिस का क्या भय है? सुन्दर बाउ बोलते हैं वालन्टियर लोग।

'तास के गुलाम साहब का खेल जानते नहीं हो? हम लोगों का मुल्क वही गुलाम-साहब का राज्य है। अंग्रेज का दरमाहा पानेवाला नौकर है कलस्टर साहब, और पत्तल का जूठा उठाने वाला नौकर है जमींदार। सड़कर देखा है न? इन लोगों के साथ लड़ने से 'पबली' हार जाती है। महात्माजी के खेल में 'पबली' का एक्का बड़ा है।'

कितनी ही मजे की बातें बोलते हैं वालन्टियर लोग। बोट न क्या एक शब्द, वे ठीक नहीं समझ सकते हैं। केवल इतना ही समझते हैं कि एक तरफ महात्माजी हैं और दूसरी तरफ राज पारभंगा। महात्माजी की तरफ हैं कांग्रेस और मास्टर साहब। राजपारभंगा की तरफ हैं बाबू साहब, राजपूत, दरोगा साहब, इनसान अली बड़गड़िया, गिदर मंडल। बाबूसाहब के पाँव चाटने वाले संथाल लोग किस तरफ हैं, समझ में नहीं आता है और किस तरफ होंगे? जिस तरफ जौ का खेत है, उसी तरफ न भैंस मुँह बढ़ाती है।

'तुम लोग आदमी हो या नहीं? पबली की जमीन हड़प रहे हैं बाबूसाहब। मठ की जमीन। ऊख की खेती शुरू कर दी है जमीन पर। मठ के मकान से चौकठों तक को खोलकर ले गया है!'

ढोड़ाय कहता है—'हुजूर! भला अपनी जमीन को हम जान देकर भी बचा

नहीं सके, तो फिर पचली की जमीन का कहना ही क्या।' वालन्टियर लोग बातें कड़ी-कड़ी बोल रहे हैं, यह सत्य है, लेकिन बोल रहे हैं कीमती बातें। गुरुजी भी तो छात्रों को गालियाँ देते हैं, बाप भी तो बेटे को मारता है। नहीं तो फिर अपना आदमी है किस लिए ?

'हुजूर कहने जाओ बाबूसाहब और दरोगा हाकिम को। महात्माजी ने हम लोगों को कह दिया है कि जिस गांव के लोग तुम लोगों को हुजूर कहते हों, उस गांव में न रहो।'

कोइरी लोग सभी ढोड़ाय पर बिगड़ उठते हैं। 'महात्माजी का यह हुक्म तक नहीं जानता है, ढोड़ाय ?'

ढोड़ाय लज्जित नहीं होता है। कहता है 'हमलोग मूर्ख आदमी हैं, आँखों के रहते हुए भी अन्धे हैं। आप लोग रामायण पढ़े हुए आदमी हैं, आप लोगों को हुजूर कहना ही हमारे बाप-दादों ने सिखाया है। यह केवल आप लोगों की इज्जत करना नहीं, रामायण की भी इज्जत करना है।'

तब यही आदमी ढोड़ाय है। इसी की बात लाडली बाबू ने कह दी थी। इसकी बातों में ऐंठ तो खूब है। वालन्टियर लोग सहसा ढोड़ाय को 'आप' कहकर बातें करना शुरू करते हैं। इसी के द्वारा उनका काम बनेगा। एक नई अभिज्ञता है ढोड़ाय के जीवन में। उनके चेहरे से तो ऐसा मालूम नहीं होता है कि वे मजाक कर रहे हैं। आज उसने तेल लगाया है, इस कारण तो कहीं उन लोगों ने उसे बाबू-भइया नहीं समझा। न मालूम कैसी तो एक बेचैनी होती है।

आ गया ! आ गया ! फिर क्या आया ? सफेद बक्से में क्या ? वोट ! वोट ! भय का लक्षण तो नहीं देखता है वालन्टियर लोगों के चेहरे पर ! महात्माजी की खादी सफेद है, महात्माजी का बक्सा सफेद है। सफेद से मन का मैल दूर होगा। पाक़-साफ। जमीन्दारों ने खून चूसकर आप लोगों को पीला कर दिया है, इसीलिए आप लोगों का सफेद बक्सा है। देना ही होगा आप लोगों को, सफ़ेद बक्से में।

किसी प्रकार का चन्दा वसूलना तो नहीं ? इस टोले में जो लोग दस आने से ज्यादा चौकीदारी टैक्स देते हैं, केवल उन्हें ही वोट देना होगा। संथाल टोला में जो लोग पाँच आने टैक्स देते हैं, केवल वे ही वोट दे सकेंगे।

बूढ़ा दादा चैन की साँस लेता है। खैर था कि वह संथाल नहीं है। खूब बच गया है वह। उसे चौकीदारी टैक्स देने पड़ते हैं साढ़े छः आने।

बिल्टा की आँखें जल उठती हैं। जबरदस्ती है ? मेरा वोट लेना क्या खेल बात है ? सर्किल मनेजर, जमीन्दार-वमीन्दार मैं कुछ नहीं समझता।

सब कुछ सुनने के उपरान्त ढोड़ाय को लगता है कि 'धर्मदाय' की तरह गंज के बाजार में सफेद बक्से में वोट देना पड़ता है। नौरंगीलाल के गोले में जूट-तम्बाकू आदि बेचने जाते ही वह दाम से 'धर्मदाय' के नाम से हर गाड़ी चार आने की दर से

काट लेता है। नौरंगीलाल सुक्की को एक ताला लगे हुए बक्से के छेद में डालते समय सुर के साथ कहेगा ही—'गौ-सेवा की करो तैयारी, प्राण बचे गौ-माता के।'····

अद्भुत चीज है यह वोट। अचानक रुपये पाने से लोगों की इज्जत बढ़ती है, इसकी अभिज्ञता ढोड़ाय के जीवन में पहले ही हो गई है। वोट भी उसी तरह रातोरात लोगों की इज्जत बढ़ा देता है—केवल जो वोट देगा, उसकी ही नहीं, सारे गाँव की। इसीलिए सर्किल मनेजर साहब की तरह बड़े आदमी एक दिन बाबूसाहब को साथ लेकर कोइरी टोला आये। बाबूसाहब ने उनसे कहा था कि ढोड़ाय को समझाने में सफल होने से ही कोइरी टोला का काम बन जायेगा। उतने बड़े अफसर आदमी, ऐसा कहा जाता है कि पैखाने में भी जो कुर्सी पर बैठते हैं, जिनका अरदली जिरानिया से रोज सायकिल पर 'पावरोटी' और अखबार ले आता है। ऐसे सर्किल मनेजर साहब भी ढोड़ाय को पहचानते हैं। उसे नाम से पुकारते हैं, 'तू' न कहकर 'तुम' कहते हैं। गर्व से ढोड़ाय का मन भर उठता है।

वालन्टियर लोगों ने कहा है कि पूरे मुल्क में इस प्रकार का वोट हो रहा है। चेरमैन साहब अगर इसी तरह ततमा टोली जायें, तब न ततमा टोली को गाँव कहूँगा।

वालन्टियर लोग मठ के पीपल के पेड़ पर एक सुन्दर झंडा बाँध कर वहीं कुछ दिनों से मिलकर बैठे हैं।

एक दिन जिरानिया से लौटे हुए एक वालन्टियर ने झोले के अन्दर से महात्मा जी का एक पत्र निकालकर दिया। जो-जो वोट देगा सबके नाम से एक-एक पत्र। रामायण के हर्फ की तरह हस्ताक्षर है महात्माजी के। जो लोग दस आने टैक्स देते हैं उनकी पत्नियों के नाम से भी महात्माजी ने एक पत्र भेजा है। सन्त आदमी तो सभी का नाम-धाम सब कुछ जान सकते हैं। ततमा टोली में ढोड़ाय के भी चौकीदारी टैक्स डेढ़ रुपये लगाये गये थे। वहाँ यदि वह रहता, तो उसके नाम से भी महात्माजी की एक चिट्ठी आती 'रामपियारी जौजे ढोड़ाय' के नाम। अभी शायद रामपियारी, जौजे हो गया है सामुवर। महात्माजी की स्वीकृति का सील-मुहर पड़ रहा है इतने बड़े अन्याय पर। मन को खराब करने वाली इन सब बातों को ढोड़ाय मन से दूर हटाना चाहता है। महात्माजी शायद सामुअर धाङर नहीं लिखेंगे, लिखा रहेगा रामपियारी जौजे सामुअर हरिजन···क्या भाग्य है उन लोगों का, जो लोग महात्माजी का पत्र पाते हैं।···

अन्त में वालन्टियर लोग ढोड़ाय के नाम से महात्माजी के निकट से एक पत्र मँगवा देने को राजी होते हैं, इस शर्त पर कि ढोड़ाय उनके साथ-साथ आस-पास के गाँवों में महात्माजी के गाने गाता फिरे। आपका गला बड़ा अच्छा है, भजन के समय हमने सुना है न। यह बात किसी से हरगिज न कहे। वोट के दिन चिट्ठी ला देंगे।

धन्य है भाग्य उसका कि महात्माजी के चेले लोगों की नेक नजर में पड़ सका।

मन-ही-मन समझता था कि उसने दुनिया की बहुत कुछ चीजें देखी हैं। खाक जानता है वह। इतनी बड़ी बात है वोट, जिसके लिए सर्किल मनेजर ढ़ार पीटते हैं, महात्मा जी चिट्ठी देते हैं, उसके सम्बन्ध में वह कुछ भी नहीं जानता था। देवक्रम से वह वालन्टियर लोगों से जान सका है कि वोट का अर्थ सफेद बक्से में चिट्ठी डालनी होगी, महात्माजी की चिट्ठी के जवाब में बिना टिकट वाली ही चिट्ठी ठीक जगह पर पहुँचती है। उस चिट्ठी को पाते ही महात्माजी समझ जायेंगे कि तुम लोग रामराज चाहते हो या नहीं। पहले ही वे कानून बनायेंगे टैक्स घटाने का, और जमींदार को वश में करने का।

सफेद बक्से का गाना तो नहीं, रामराज्य कायम करने का गाना है, रामचन्द्र जी और महात्माजी के गानों की महिमा के प्रचार का भजन है। 'अष्ट-प्रहर भजन' के रोज जिस तरह का नशीला आवेग आता है, उसी प्रकार की मादकता है सादे बक्से के गाने में। रुकने की इच्छा नहीं होती है, धक्के मारकर ले जाता है। सर्किल मनेजर साहब की तरफ से रुपयों का लोभ दिखाने के लिए गिदर मंडल के आने पर उसे मारने की इच्छा होती है। वोट के दिन सर्किल मनेजर साहब के लोगों द्वारा कोशीघाट की नाव हटा लेने पर यह नशा तैरकर नदी पार करने को बाध्य करता है। संथालों के दल को उनके तम्बूओं में पूड़ी खाते देखने पर मन पागल हो उठता है, झपटकर छीन लेता है ढोड़ाय बगल वाले वालन्टियर के हाथ का चोंगा, गला फाड़कर चिल्लाता है—

मंगनी की कचौरी पाओ, तो खा लेना
मंगनी की गाड़ी पाओ, तो चढ़ लेना
पैसा पाओ, तो बटुआ में भर लेना
लेकिन कोठरी में जाकर बदल जाना
भाई मेरे...याद रहे...
सादा बक्सा, महात्माजी का सादा बक्सा।....

बाबूसाहब का पहरेदार विशालकाय तिलक माझी बहाने से तम्बू के बाहर आकर ढोड़ाय को इशारे से समझा जाता है कि वे लोग ठीक हैं।...

वालन्टियर लोग महात्माजी के चेले हैं, सच्चे आदमी हैं। उन लोगों ने उस दिन शाम में उनका अनुरोध कबूल किया था। एक सफेद और छोटे कागज पर महात्मा जी ने न मालूम क्या बड़ा सुन्दर लिख दिया है। होने दो छोटा! देश भर के लाखों लोगों को उन्हें लिखना पड़ रहा है। कितना लिखेंगे! एक ही चिट्ठी लिखने को कहने पर तो मिसिरजी हैरान हो जाते हैं।

वालन्टियर टूटी हुई आवाज में उसे कहता है—'तुम्हारा नाम ढोड़ाय कोइरी है, बाप का नाम है किरतु कोइरी-बिसकंधा का। हाकिम के पूछने पर कहना। मुखस्थ रखना—बाप का नाम किरतु कोइरी। हाकिम महात्माजी की ओर एक चिट्ठी देंगे। इस चिट्ठी को पाकर गिदर मंडल का 'तंत्रिमा कोइरी' शब्द ढोड़ाय को याद आ जाता है। एक अज्ञात उत्तेजना से उसका सारा शरीर सिहर जाता है, सभी लोग शायद उसे

देख रहे हैं, चलने के समय पाँव अकड़ रहे हैं। वह जब हाकिम के सामने जा पहुँचा तब हाकिम गुस्से से आग बबूला होकर पियो संथाल को डाँट रहे हैं। चिट्ठी डालने के पहले वह सफेद बक्से पर सिंदूर लगा रहा था।""मैं तुझे जेल में ठूँसूँगा, बक्से का रंग बदल रहा था।""

ढोड़ाय को देखते ही असहाय पियो को जैसे सहारा मिला।

'देखते हो ढोड़ाय, हाकिम का काण्ड ? मैं कहता हूँ, हाकिम तुम भी क्यों नहीं ले लेते बिड़ी-पान के लिए एक आना पैसा।""सो नहीं, मुझे जेल में ठूँसेगा, कह रहा है।'

हाकिम ढोड़ाय को बिना कुछ पूछे ही उसके हाथ से महात्माजी की चिट्ठी लेने के लिए हाथ बढ़ाते हैं। 'ढोड़ाय कोइरी ?' महात्माजी की नई चिट्ठी पर हाकिम डाकघर का मुहर लगा देते हैं। 'जाओ!' हाकिम की चिल्लाहट पर ढोड़ाय चौंक उठता है। तो भी अच्छा! हाकिम ने पियो को छोड़ दिया।

कमरे के अन्दर सफेद बक्से को प्रणाम कर ढोड़ाय चिट्ठी को उसके भीतर डालता है। धन्य हो महात्माजी, धन्य हो कांग्रेस का वालन्टियर, जिनकी दया से नगण्य ढोड़ाय रामराज्य कायम करने के काम में 'गिलहरी-कर्त्तव्य' निभाने का मौका पा गया। दुःख से उसकी छाती फट जाती है, वह अगर लिखना जानता तो अपने हाथ से महात्माजी को लिख देता। इस चिट्ठी के माध्यम से मुल्क के एक पार का आदमी कितनी दूर दूसरे पार के महात्माजी के पास पहुँच रहा है, एक साथ, एक समय पर। ततमा टोली, जिरानिया, पियो संथाल, वालन्टियर, तिलकू माझी, मास्टर साहब—सभी लोग एक ही चीज चाहते हैं। उन सबने एक ही चिट्ठी दी है महात्माजी को। सरकार, हाकिम, पुलिस, सर्किल मनेजर, बाबूसाहब, इनसान अली और शायद किरिस्तान साहेबर—सभी उनके विरुद्ध हैं। जाति का सादृश्य नहीं है, फिर भी तो इतने निकट आ गये हैं वे। जैसे रमिया और उसका बेटा अपना होने पर भी गैर हैं, वैसे ही ये सभी लोग गैर होने पर भी अपने हैं। मकड़े की जाल की भाँति हल्के सूत का बन्धन है, पकड़ते ही टूट जाता है, ऐसा महीन है। सभी समय पता भी नहीं लगता है कि वह है या नहीं, हवा से जब आन्दोलित होता है, भोर के ओस में जब भीग जाता है, सहसा प्रकाशित धूप की झलक जब पड़ती है तभी दिखाई पड़ता है, सो भी थोड़ा-थोड़ा। रामजी के राज्य में सशक्त धागे का जाल बीनते जा रहे हैं, उन्हीं के अवतार महात्मा जी, उस पच्छिमी लड़की का बन्धन, सात साल के बच्चे का बन्धन और रमिया के बन्धन की तरह यह बन्धन देह पर नहीं टिकता। झाम से रगड़ने पर भी कलेजे के ऊपर से उन दागों को मिटाया नहीं जाता। केवल अमता खाये हुए मुँह की तरह एक फीका और मीठा स्वाद रह जाता है।

'ए! अन्दर क्या कर रहे हो ?'

हाकिम की ताड़ना सुनकर वह झट से बाहर निकल आता है।

मन-ही-मन समझता था कि उसने दुनिया की बहुत कुछ चीजें देखी हैं। खाक जानता है वह। इतनी बड़ी बात है वोट, जिसके लिए सर्किल मनेजर ढ़ार पीटते हैं, महात्मा जी चिट्ठी देते हैं, उसके सम्बन्ध में वह कुछ भी नहीं जानता था। देवक्रम से वह वालन्टियर लोगों से जान सका है कि वोट का अर्थ सफेद बक्से में चिट्ठी डालनी होगी, महात्माजी की चिट्ठी के जवाब में बिना टिकट वाली हो चिट्ठी ठीक जगह पर पहुँचती है। उस चिट्ठी को पाते ही महात्माजी समझ जायेंगे कि तुम लोग रामराज चाहते हो या नहीं। पहले ही वे कानून बनायेंगे टैक्स घटाने का, और जमींदार को वश में करने का।

सफेद बक्से का गाना तो नहीं, रामराज्य कायम करने का गाना है, रामचन्द्र जी और महात्माजी के गानों की महिमा के प्रचार का भजन है। 'अष्ट-प्रहर भजन' के रोज जिस तरह का नशीला आवेग आता है, उसी प्रकार की मादकता है सादे बक्से के गाने में। रुकने की इच्छा नहीं होती है, धक्के मारकर ले जाता है। सर्किल मनेजर साहब की तरफ से रुपयों का लोभ दिखाने के लिए गिदर मंडल के आने पर उसे मारने की इच्छा होती है। वोट के दिन सर्किल मनेजर साहब के लोगों द्वारा कोशीघाट की नाव हटा लेने पर यह नशा तैरकर नदी पार करने को बाध्य करता है। संथालों के दल को उनके तम्बूओं में पूड़ी खाते देखने पर मन पागल हो उठता है, झपटकर छीन लेता है ढोड़ाय बगल वाले वालन्टियर के हाथ का चोंगा, गला फाड़कर चिल्लाता है—

मंगनी की कचौरी पाओ, तो खा लेना
मंगनी की गाड़ी पाओ, तो चढ़ लेना
पैसा पाओ, तो बटुआ में भर लेना
लेकिन कोठरी में जाकर बदल जाना
भाई मेरे···याद रहे··
सादा बक्सा, महात्माजी का सादा बक्सा।····

बाबूसाहब का पहरेदार विशालकाय तिलक माझी बहाने से तम्बू के बाहर आकर ढोड़ाय को इशारे से समझा जाता है कि वे लोग ठीक हैं।···

वालन्टियर लोग महात्माजी के चेले हैं, सच्चे आदमी हैं। उन लोगों ने उस दिन शाम में उनका अनुरोध कबूल किया था। एक सफेद और छोटे कागज पर महात्मा जी ने न मालूम क्या बड़ा सुन्दर लिख दिया है। होने दो छोटा! देश भर के लाखों लोगों को उन्हें लिखना पड़ रहा है। कितना लिखेंगे! एक ही चिट्ठी लिखने को कहने पर तो मिसिरजी हैरान हो जाते हैं।

वालन्टियर टूटी हुई आवाज में उसे कहता है—'तुम्हारा नाम ढोड़ाय कोइरी है, बाप का नाम है किरतु कोइरी-बिसकंधा का। हाकिम के पूछने पर कहना। मुखस्थ रखना—बाप का नाम किरतु कोइरी। हाकिम महात्माजी की ओर एक चिट्ठी देंगे। इस चिट्ठी को पाकर गिदर मंडल का 'तंत्रिमा कोइरी' शब्द ढोड़ाय को याद आ जाता है। एक अज्ञात उत्तेजना से उसका सारा शरीर सिहर जाता है, सभी लोग शायद उसे

पक्के मिर्च का भी वही दर है। गोलदार ने ही तो सिखाया है—क्या उतने खेत पर
रा दोगे, कच्चा ही बेच दो। नोरंगीलाल ने ही सर्व प्रथम कच्चा मिर्च भेजना शुरू
या है। रेलगाड़ी से। बाबूसाहब अगर बिगड़ेंगे, तो वह बैठ-बैठकर दाँतों से अपनी
ह के केशों को काटेगा।

लाडली बाबू कहते हैं—'हाँ, पूरबी बंगाल की तरह नरम पानी वाले देश में
लोग बिना कच्चा मिर्च खाये नहीं जीते हैं। मैं एक बार गया था। खाली पानी, खाली
पानी। यों ही क्या बंगाली लोग यहाँ आकर जमकर बैठे हैं। इस मास्टर साहब को ही
देखो न। इस बार वह जरूर डिस्टिबोड का चेरमेन होने की कोशिश करेगा।'

इस बात को कोई किसी प्रकार का महत्त्व नहीं देता है। ढोड़ाय को जरा आनन्द
ही होता है। लेकिन पुराने चेरमेन की तरह बड़े आदमी का काम मास्टर साहब चला
सकेंगे? बड़ी अच्छी औरत थी, चेरमेन साहब के घर की बूढ़ी माईजी।

सभी जानते हैं कि लाडली बाबू इस बार कांग्रेस की तरफ से डिस्टिबोड में खड़े
हो रहे हैं। हाथ काटेंगे इस बार। डिस्टिबोड में जाने के पहले ही अड़गड़िया इनसान
अली और गंज के अस्पताल का डाक्टर उनके कब्जे मे थे। राजपूतों के साथ जमीन के
झगड़े होने के समय कुछ कहने जाओ तो कहते थे, मैं तो जमीन के बारे में कुछ भी
नहीं जानता हूँ, जमीन की देख-भाल करते हैं अनोखीबाबू और बाबूसाहब।

मुँह पर से मक्खी नहीं भगा सकते हैं। हम लोग सब समझते हैं, रे, सब
समझते हैं।

लाडली बाबू भी इन लोगों का हाव-भाव सब समझते हैं, लेकिन फिर भी वे
हिम्मत नहीं हारते हैं।

सहसा इसी बीच एक दिन टोला भर के लोगों को न्योता पड़ गया गिदर मंडल
के यहाँ सत्यदेव की कथा सुनने का।

बात क्या है? वह कंजूस आदमी तो बिना पैसे किसी को देह का मैल तक
देने को राजी नहीं होता है। और, भला वह खर्च करेगा डेढ़ सौ रुपये बिना किसी
मतलब के? अरे बाबूसाहब के दिये हुए भजन-पार्टी वाले पैसे तो नहीं? ठीक-ठीक,
ठीक।, उगल रहा है। देव-दानव वहीं पुरोहित-गुणी का पैसा भी कहीं किसी के पेट में
रहता है? चाहे वह कितना बड़ा गायखोर क्यों न हो।

ढोड़ाय को निमन्त्रण नहीं मिला था। सभी की आँखों मे खटका लगता है।
जतिभारी सत्यदेव की कथा है। ऐसा तो किसी ने सातों जन्म मे कभी नहीं सुना है।

वहाँ जाकर इस तरफ की कोइरी जाति का प्रधान गरभू पत्तनिदार को देखकर
वे स्थूल-रूप से मामले का अन्दाजा कर लेते हैं।

पूजा के बाद गरभू पत्तनिदार काम की बात छेड़ता है···मिलकर राजपूत और
भूमिहार ब्राह्मण को ठंडा करना होगा। महात्माजी का कांग्रेस नाम मात्र को ही है।
राजपूत और भूमिहारों ने ही महात्माजी को ठगकर वश मे किया है।' लाडली बाबू?

लाडली बाबू का सिंहासन लाभ

लाडली बाबू ने फिर कोइरी-टोला में आना-जाना शुरू किया है। आदमी अच्छा है, महात्माजी का चेला है। 'दो बार हो आया है।' लेकिन तब भी राजपूतों की झाड़ पर विश्वास नहीं किया जा सकता है।

बिल्टा विरक्त हो उठा है। यह जो हर तीन महीनों के बीच, नियम से वोट शुरू हुआ है, उसका खात्मा है या नहीं ? असल काम की बात कुछ भी नहीं है, केवल तीसों दिन 'वोट' 'वोट'। वैसे, वोट चीज खराब नहीं है। उस दिन वे लोग दरोगा साहब और सर्किल मैनेजर साहब को बिना आदाब किये उनकी देह से सटकर चले गये थे। कांग्रेस के लोग लाट साहब के साथ लड़े हैं, वे दारोगा, जमींदार को, गले की गोली तक बिना हिलाये, निगल सकते हैं। और इन राजपूतों को ? पता भी नहीं चलेगा—ऊँट के मुंह में जीरा। फूः।

लाडली बाबू के सामने राजपूतों के विरुद्ध बोलने का उन्हें साहस हुआ है। पहले वाले वोट के बाद से। वालन्टियर ने कहा है कि कांग्रेस की तरफ से अधियादारों के लिए नया कानून बनेगा। और, किस चीज की परवाह है।

बाबूसाहब की खुशामद करके भी तो गनौरी, भबिया, परसादी—कोई जमीन की रक्षा नहीं कर सका है। भोला को जाना पड़ा है कटिहार, काम के लिए। गनौरी, भबिया, और परसादी गये हैं कुरसेला। वहाँ तीन साल से राज दारभंगा की चीनी की मील खुली है। वे और अधिक बाबूसाहब का पैर चाटना नहीं चाहते हैं। रही समय-असमय पर कुछ खर्च-वर्च की बात। रामजी के आशीर्वाद से बाजार का नौरंगी लाल गोलदार, भोपतलाल का बाप जरूरत होने पर खर्च देता है। जितना चाहो। अच्छे खून का आदमी है। उधार चुकाने तक रस्सी में जो गाँठ बधी रहती है, उसे आजकल उसने कभी गड़बड़ नहीं किया है। वही अगर होते बाबूसाहब। सब मालूम है। इतने सालों से बाबूसाहब और उनके गुमास्ता को देख रहा है। एक बात का आदमी है नौरंगी लाल गोलदार। उसने साफ कह दिया है कि ऊख और मिर्च की खेती करनी पड़ेगी। नहीं तो उसके गोले की तरफ आने की जरूरत नहीं है। वह कुरसेला मील में ऊख भेजता है और मिर्च भेजता है पूर्वी बंगाल। उसी की गाड़ी आकर गाँव से ले जाती है फसल। किसी तरह की हुज्जत नहीं, तो फिर राजपूतों की इतनी खातिरदारी किस लिए ? विपद् के समय रामचन्द्रजी कौवे के मुंह से रास्ते का ठिकाना भेज देते हैं। इसीलिए न उन लोगों ने नौरंगी लाल से रोपने के लिए ऐसे ऊख पाये हैं, जो बाबूसाहब तक नहीं जुटा सके हैं। रीछ उन ऊखों को चबाने जाय तो उसका दाँत टूट जाय। पटनई मिर्च के बीज दिये हैं। इतना बड़ा-बड़ा, ऊँगली की तरह। कच्चे मिर्च का जो दर

है, पक्के मिर्च का भी वही दर है। गोलदार ने ही तो सिखाया है—क्या उतने खेत पर पहरा दोगे, कच्चा ही बेच दो। नोरंगीलाल ने ही सर्व प्रथम कच्चा मिर्च भेजना शुरू किया है। रेलगाड़ी से। बाबूसाहब अगर बिगड़ेंगे, तो वह बैठ-बैठकर दाँतों से अपनी मूँछ के केशों को काटेगा।

लाडली बाबू कहते हैं—'हाँ, पूरबी बंगाल की तरह नरम पानी वाले देश में लोग बिना कच्चा मिर्च खाये नहीं जीते हैं। मैं एक बार गया था। खाली पानी, खाली पानी। यों ही क्या बंगाली लोग यहाँ आकर जमकर बैठे हैं। इस मास्टर साहब को ही देखो न। इस बार वह जरूर डिस्ट्रिक्टबोर्ड का चेयरमेन होने की कोशिश करेगा।'

इस बात को कोई किसी प्रकार का महत्व नहीं देता है। ढोड़ाय को जरा आनन्द ही होता है। लेकिन पुराने चेयरमेन की तरह बड़े आदमी का काम मास्टर साहब चला तो सकेंगे? वही बच्चों औरत थी, चेयरमेन साहब के घर की बूढ़ी माईजी।

सभी जानते हैं कि लाडली बाबू इस बार कांग्रेस की तरफ से डिस्ट्रिक्टबोर्ड में खड़े हो रहे हैं। हाथ काटेंगे इस बार। डिस्ट्रिक्टबोर्ड में जाने के पहले ही अहगढ़िया इनसान अली और गंज के अस्पताल का डाक्टर उनके कब्जे में थे। राजपूतों के साथ जमीन के झगड़े होने के समय कुछ कहने जाओ तो कहते थे, मैं तो जमीन के बारे में कुछ भी नहीं जानता हूँ, जमीन की देख-भाल करते हैं बनोखीबाबू और बाबूसाहब।

मुँह पर से मक्खी नहीं भगा सकते हैं। हम लोग सब समझते हैं, रे, सब समझते हैं।

लाडली बाबू भी इन लोगों का हाव-भाव सब समझते हैं, लेकिन फिर भी वे हिम्मत नहीं हारते हैं।

सहसा इसी बीच एक दिन टोला भर के लोगों को न्योता पड़ गया गिदर मंडल के यहाँ सत्यदेव की कथा सुनने का।

बात क्या है? वह कंजूस आदमी तो बिना पैसे किसी को देह का मैल तक देने को राजी नहीं होता है। और, भला वह खर्च करेगा ढेड़ सौ रुपये बिना किसी मतलब के? अरे बाबूसाहब के दिये हुए भजन-पार्टी वाले पैसे तो नहीं? ठीक-ठीक, ठीक।, उगल रहा है। देव-दानव वही पुरोहित-मुंशी का पैसा भी कहीं किसी के पेट में रहता है? चाहे वह कितना बड़ा गायखोर क्यों न हो।

ढोड़ाय को निमन्त्रण नहीं मिला था। सभी की आँखों में खटका लगता है। गवियारी सत्यदेव की कथा है। ऐसा तो किसी ने सातों जन्म में कभी नहीं सुना है।

वहाँ जाकर इस तरफ की कोइरी जाति का प्रधान मरनू पत्तनिदार को देखकर वे स्थूल-रूप से मामले का अन्दाजा कर लेते हैं।

पूजा के बाद मरनू पत्तनिदार काम की बात छेड़ता है"'मिलकर राजपूत और भूमिहार ब्राह्मण को ठंडा करना होगा। महात्माजी का कांग्रेस नाम मात्र को ही है। राजपूत और भूमिहारों ने ही महात्माजी को ठगकर वश में किया है।""लाडली बाबू?

कहाँ थे लाडली बाबू जब इनसान अली अड़गड़िया के बड़गड़ा से एक लाल रंग का बैल कपूर की तरह बकरईद के पहले उड़ गया था । उस समय कहाँ थी राजपूतगिरी ? 'महावीरी झण्डा' लेकर जाने के दिन कितने कलक्टर को खबर दी थी ? हाथ कंगन को आरसी क्या ? बहुत बड़ी-बड़ी बातें सुनाई थीं कांग्रेस ने महात्माजी के वोट के पहले । अभी भी सुन रहा हूँ कानून बन रहा है । एक कानून भी नहीं बनायेगा । यह कह देता हूँ ।…इन लोगों की ही मदद से अगली बार वोट में कांग्रेस जीता था । इस बार इसीलिए हम लोगों ने निश्चय किया है कि कुर्मी छत्री, कुशवाहा छत्री और यदुवंशी छत्री—ये तीनों जातियाँ मिलकर राजपूत और भूमिहारों के विरुद्ध खड़े होंगे । इन तीनों जातियों से मिलकर बना है 'त्रिवेनी संघ ।'

क्या सुन्दर नाम है ? त्रिवेनी संघ ?

बूढ़ा दादा गरभू पत्तनीदार को सुनाकर बिल्टा को पूछता है—'इतनी बुद्धिभरी बात जिन्दगी में कभी सुनी थी ?'

राजपूती शान दिखाने आता है ! अवज्ञा से टेढ़े ओठों की फिचकारी से चिक्-चिक् की आवाज के साथ खैनी घुले थूक फर्श पर गिरते हैं ।

गिदर अब तक बोला नहीं था । सभी के उठने के समय वह केवल इतना कहता है 'जो जाति सोई रहती है, वह जाति जीती नहीं है ।'

बिल्टा के मन को यह बात धक् से लगती है । इसके पहले भी न मालूम कहाँ उसने एक बार गिदर के मुँह से यह बात सुनी थी, घर लौटते वक्त वह सोचने की चेष्टा करता है ।

डिस्टिबोड ढोड़ाय के निकट जैसी जीवन्त वस्तु है, वैसी इन लोगों के सामने नहीं । बचपन में उसने दिन रात डिस्टिबोड की चर्चा सुनी है—बाबू लाल चपरासी, ठीकेदार साहब, सनीचरा का दल और महलदार रोड पिउन ! निःस्तब्ध आधी रात की नींद से जगकर उसने डिस्टिबोड के घड़ी-घर की घड़ी बजने का शब्द सुना है ।…फिर भी इस डिस्टिबोड के मामले में कोइरी टोला के लोग उसे प्रश्रय ही नहीं देना चाहते हैं । ढोड़ाय की पक्की का मालिक डिस्टिबोड न मालूम कैसे कोइरी लोगों के लिए जतियारी सवाल बन गया है । चौबीसों घण्टा 'त्रिवेनी संघ' सुनते-सुनते कान झन्ना गये ।… ग्वालों में दो भाग हैं, जानते हो न ? 'किसनौल और मजरौठ' एक दूध में पानी मिलाता है और दूसरा नहीं मिलाता है । दूध में पानी मिलाने वाले यमदूतों को राजपूतों ने महात्माजी के नाम से अपने दल में खींच लिया है ।…और भी कितनी ही बातें ।

…एक पेड़ की छाल क्या दूसरे पेड़ में लग सकती है ?

ढोड़ाय को लगता है, जैसे उसे सुनाकर ही बूढ़ा दादा यह कहता है ।

वोट के दो दिन पहले खबर मिलती है कि गरभू पत्तनिदार ने अपनी उम्मीदवारी लौटा ली है । बिना वोट के ही लाडली बाबू डिस्टिबोड में जायेंगे ।

जाति का प्रधान गरभू पत्तनिदार, भला उसने राजपूतों से रुपये खाकर जाति

के साथ ऐसी नमक हरामी की ! इसलिए शायद कई दिनों से मिंदर लाडली बाबू के साथ-साथ घूम रहा है ।

इसके कुछ दिनों के बाद, न मालूम कैसे, लाडली बाबू डिस्ट्रिबोड के चेरमैन बन गये ।

तब जो लाडली बाबू ने कहा था कि मास्टर साहब चेरमैन होंगे ? इस बार सचमुच राजपूत लोग सबको काटकर फेंक देंगे ।

कोइरी-टोला से कोई उस दिन खेत में काम करने नहीं गया था ।

□

अनाहूत देववाणी

चेरमैन होने के बाद से लाडली बाबू के जिरानिया में मास्टर साहब के आश्रम में ही रहते हैं । डिस्ट्रिबोड से ओवरसियर बाबू ने आकर पक्की से बाबूसाहब के मकान तक नया रास्ता बनवा दिया है । कुरसेला—जिरानिया लाइन की वह नई बस रोज उसी सड़क से होकर बाबूसाहब के द्वार पर आकर खड़ी होती है । बाबूसाहब प्रति दिन जिरानिया के अनिरुध मोख्तार के पास जाते हैं । ढोड़ाय आदि अस्पष्ट रूप से अनुभव करते हैं कि कोई विपद् उन पर आ रहा है । कहाँ से होकर आयेगा, कैसे आयेगा यह वे नहीं जानते हैं ! लेकिन बाबूसाहब रोज कचहरी जा रहे हैं । जरूर रामनेवाज मुन्शी उन्हें कानूनी सलाह दे रहा है ।

ढोड़ाय साफ-साफ नहीं कहता है, किन्तु वे सभी जानते हैं कि अधियादारी का विपद् एक ही ओर से आता है—जमीन की ओर से ! जिस दिन चाहे बाबूसाहब उन्हें जमीन पर से हटा दे सकते हैं । इतने दिन हो गये, अभी तक कांग्रेस का कानून नहीं आया ! वालन्टियर को पूछने पर वह कहता है—कानून क्या नारंगी का बीज है, जो जमीन में दाब दो, तो फुच-से पौधा बाहर निकल आयेगा ?

इधर बाबूसाहब रोज संथाल टोला और कोइरी टोला के अधियादारों को बुला भेजते हैं । फिर से अंगूठा-छाप देने ।

सभी प्रायः अधीर हो उठे हैं । ऐसे समय एक दिन सचमुच कानून आ ही गया । महात्माजी ने वालन्टियर के द्वारा पटने से उसे भेजा है ।

वालन्टियर कहता है कितना लीजियेगा—एक, दो, तीन, चार, और भी, और भी…

बिल्टा 'और एक' कहकर सर्कस के 'जोकर' की तरह बटुआ से बीगे निकालता है ।

मर्द की बात, हाथी के दांत। कांग्रिस ने अपना वचन रखा है या नहीं, देखिए। महात्माजी के चेले लोग दो मुंह से नहीं बोलते हैं। बिना रसीद के कोई अधियादार फसल नहीं दीजिएगा। अठारह सेर पायेगा जमीन्दार और बाइस सेर पायेंगे आप। आधा-आधी नहीं।

और कोई जमीन्दार मजकूरी सिपाही नहीं रख सकेगा।

जो लोग नकद टैक्स देते हैं, उनका टैक्स घट जायेगा। जिनकी जमीन निलाम हो गई है, वे उन्हें लौटा दी जायेंगी। उसके लिए दरख्वास्त देना होगा। 'फारम' पर। मेरे पास फारम है। मैं सस्ते में आप लोगों को फारम दूंगा। आठ-आठ आने कीमत है, सफेद रंग का है। रामनेवाज मुन्शी आदि बेचेंगे चार आने की दर से, लेकिन उनका रंग पीला है, जिनमें सावजी पोस्तादाना बेचता है। मेरा फारम पटने का छपा हुआ है। आजकल कांग्रिस की सरकार है, कांग्रिस का हाकिम है, इसीलिए कांग्रिस के फारम पर ही अच्छा फल होगा। खाता-खेसरा नम्बर देना होगा दरख्वास्त पर। जिन लोगों को मालूम नहीं है, वे तीन-तीन रुपये दें। मैं जमीन्दारी-सिरस्ता से मँगवा दूंगा।

जमीन पर आप लोग कुआँ भी खोद सकेंगे!

इतने दिनों तक वह क्या सम्भव नहीं था? अपनी अज्ञानता पर ढोड़ाय मन-ही-मन लज्जित होता है। स्वर्ग का भंडार खोल दिया है वालन्टियर ने। संथाल लोग फिर आ जुटे हैं? बैठो, बैठो। मृदंग लाते तो अच्छा रहता, बड़का मांझी!

ढोड़ाय थोड़े-से सकरकन्द घूर की आग में डालता है।

घूर के धुएँ से चारों तरफ का कुहासा और भी अंधकारमय हो उठा है। ढोड़ाय को लगता है, जैसे धुएँ की कुंडलियाँ एक-एक आदमी के चेहरे की भांति कुहासे में अन्तर्हित होती जा रही हैं। जरूर किसी के बाप-दादों की आकृति है। बाप-दादों ने स्वप्न में भी जो कल्पना नहीं की थी, वही आज वालन्टियर ने दिखाया है। उसकी आंखों के सामने स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है—सुनहले धानों का स्तूप, जो 'मोरंग' के पहाड़ की तरह ऊँचा हो उठा है। उस तरफ बैठा हुआ है बाबूसाहब का सिपाही बटेसर सिंह!

वालन्टियर उठ खड़ा होता है। बाबूसाहब के नये बैठक-खाने में उसके सोने का बन्दोबस्त हुआ है।

वही अच्छा होगा वालन्टियर, इस जाड़े में!

वालन्टियर को शायद थोड़ी लज्जा आती है। वह आग के अन्दर से एक सकरकन्द निकाल लेता है।

'हम लोग भी किसान के लड़के हैं, कीर्तिगंज के राजा के खानदान के आदमी नहीं। लाडली बाबू के यहाँ नहीं खाया है, यह सुनने से वे दुःखित होंगे, इसीलिए....।

सभी दल बाँधकर उसे बाबूसाहब के मकान के फाटक तक पहुँचा देते हैं।

'बन्दगी'।

वालन्टियर कहता है 'नमस्ते !'

लौटते समय रास्ते में बड़का मांझी कहता है—किताब पढ़ा हुआ आदमी है वालन्टियर, देखते नहीं हो 'में में' बोलता है, पछाँही बिल्ली की तरह।

सभी हँसकर बड़का मांझी के कथन का समर्थन करते हैं।

ढोड़ाय को लगता है—बहुत भोला है महात्माजी का वालन्टियर। इसकी बातें सुनने में अच्छी लगती हैं, उसे देखने से भक्ति होती है। फिर भी, न मालूम कहाँ, एक व्यवधान है। अच्छे न होते, तो क्या यों ही रामायण पढ़े हुए आदमी द्वार-द्वार घूमते-फिरते हैं। रामायण के अक्षरों ने उनके और वालन्टियर के बीच एक पतला-सा पर्दा तान रखा है।

□

रसीद प्राप्ति की विपत्ति

गंज के बाजार के मोपतलाल ने ढोड़ाय को कह दिया था कि नये कानून के अनुसार बारह वर्ष से ज्यादा दखल रहने पर अधियादारों को बाबू साहब किसी तरह नहीं हटा सकेंगे।

इसकी चर्चा तो वालन्टियर ने नहीं की थी।

मर-मिट जाओ, तब भी दखल नहीं छोड़ना। 'अठारह-बाइस' बँटवारे के समय पहले रसीद लेना, तब फसल देना। वही रसीद बाद में हाकिम के सामने दखल का प्रमाण बन जायेगी।

बड़का मांझी भी साथ आया था। वह पूछता है 'और दरोगा के सामने ?'

'वहाँ भी।'

'वही रसीद ?'

'हाँ।'

अद्भुत है। ऐसा सोचने से भी मन में उद्वेग आता है। फसल देने की बात एक टुकड़े कागज पर लिख देगा और वह हो जायेगी रसीद! दुनिया की मिठास का भंडार, जो उस कागज के टुकड़े में है, क्या पहले वह जानता था? कच्चे धान का दूध जैसे धीरे-धीरे कड़ा होकर चावल हो जाता है, उसी तरह वह रसीद दखल का प्रमाण हो जायेगी! हद की है कांग्रेसी सरकार कि बेदखल न कर सकने का अर्थ ही है, जिसके, नीचे की मिट्टी है, उसी की हो जायेगी।

इतना ऊँचा आड़ दिया हुआ है चारों तरफ, इकट्ठे किए हुए खर-पात के

टुकड़ों को भी उस आड़ के बाहर नहीं जाने देगा, थोड़ा-सा गोबर भी जाने नहीं देगा खेत के बाहर। खेत से बाहर निकलने के समय पैर में लगे कादो-मिट्टी को आड़ के किनारे पोछ लेगा। वह अपनी चीज है। एकदम अपने बेटे की तरह वह बूढ़े बाप को खिलायेगी।............

उसी रात कोइरी और संथाल लोग मठ के मैदान में इकट्ठे होते हैं। खेत में फसल तैयार है। वही देख महात्मा जी ने जल्दी से कानून भेजा है।

हल्ले गुल्ले के बीच इस विषय पर कुछ भी विशद आलोचना नहीं होती है। महात्मा जी ने कानून बना दिया है। और, किस बात की चिन्ता है। रसीद दखल है, रसीद जमीन है, जान कबूल, मर-मिट जाओ, रसीद लो, फसल दो! रसीद दो, फसल लो! महावीर जी की जय! महात्मा जी की जय! भोपतलाल वालन्टियर से भी अच्छा आदमी है, लेकिन वालन्टियर की तरह वह हम लोगों के गांव में आता कहाँ है? केवल दुकान और बाजार करता रहता है।

रसीद चाहने का पहला झोंका गुजरा संथाल टोली के ऊपर से।

ढोड़ाय ने कह दिया था कि फसल काटकर टोले के खलिहान में इकट्ठा करो। वहीं बँटवारा होगा। नहीं तो बाबू साहब के खलिहान में एक बार जाने से न तो वे रसीद देंगे, न अठारह-बाइस का बँटवारा ही करेंगे।

खेत में फसल काट रहे थे बड़का माझी, उसकी स्त्री और पतोहू। खबर पाकर बाबू साहब हाथी पर सवार होकर गये थे, पीछे घोड़े पर लाठी लेकर बटेसर सिंह था। पीछे से, घोड़े की टाप सुनने से हाथी तेजी से दौड़ता है। इसीलिए सिपाही जी पैदल न आकर घोड़े चढ़कर ही आये थे। विशेष कोई गड़बड़ी होगी, यह बाबू साहब ने सोचा भी नहीं था। केवल संथाल टोली को जरा भय दिखाने के लिए उन्होंने हवा में एक गोली छोड़ी थी, और तत्क्षण डुम-डुम की आवाज से भैंस के चमड़े के नगाड़े बज उठे थे। तीर, धनुष, लाठी, खन्ता आदि लेकर प्रत्येक घर से बच्चे, बूढ़े, औरत, मर्द सभी निकल आये थे।

सभी आकर खड़े होते हैं बड़का माँझी के खेत के आड़ के ऊपर। एक तरफ थोड़ा-सा रास्ता छोड़कर खेत में हाथी को घुसने देने के लिए। डुम-डुम की आवाज से नगाड़े अविराम बजे जा रहे हैं। काटे चलो बड़का माझी, रुको नहीं। उधर मत ताको। घबड़ाओ नहीं। नगाड़े की आवाज सुनकर कोइरी टोला के दल आ चले। कल इस पर चर्चा हो गई है। किसी के मुँह पर बिन्दु मात्र भी भय नहीं है, सभी निर्लिप्त- भाव से खड़े रहकर मजा ले रहे हैं।

पिथो माझी की बहू ऊख चबाती, हाथी की तरफ बढ़ गई। अद्भुत साहस है। कस कर अपनी लाठी पकड़ता है बटेर सिंह। वही कहो, संथालिन हाथी का विष्ठा उठा रही है। बड़े-बड़े बरगद के छिलके रहते हैं इसके अन्दर। अच्छा जलावन बनता है उनसे। पिथो की स्त्री दूरदर्शी गृहिणी है, ऐसा सुनाम है टोले में।

'चलो महावत !' बाबू साहब लौट जाते हैं।

डिग-डिग, डिग-डिग : विजय के उल्लास से नगाड़े की ताल द्रुत हो उठती है। बड़का माझी हुँकार छोड़ता है, 'हां, खेत के अन्दर नाचना शुरू करो। पैरों के कुचलने से तो फसल झड़ गई।'

कौन उसकी बातें सुनता है। सभी उस वक्त गला फाड़कर चिल्ला रहे हैं 'रसीद दो, फसल लो।' बाबू साहब को वे सुना रहे हैं।

ढोड़ाय को दूर से दौड़ता हुआ आते देखकर इतनी देर में सथालों को ख्याल होता है कि कोइरी टोले का कोई भी नगाड़े की आवाज सुनकर नहीं आया है। ढोड़ाय केवल दुःखित ही नहीं, काफ़ी लज्जित हुआ है। हाँफता हुआ वह कहता है—'कोई भी नहीं आये बड़का माझी। वालन्टियर अभी आया था, कलस्टर साहब का कागज लेकर। उसमें लिखा हुआ है, बाबू साहब 'किसान' हैं। उनके अधियादारों पर अठारह-बाईस का कानून नहीं चलेगा! वह कानून है राज दारभंगा के अधियादारों के लिए।'

वालन्टियर की बात पर कोई विश्वास नहीं करता है। उस दिन वह एक बात और आज दूसरी बात कह रहा है। सभी कोइरी उस पर खफ़ा हो जाते हैं।

'मर्द है! बाबू लोगों के घर की औरतों की साड़ियाँ फींचते-फींचते साले की मर्दानगी ख़त्म हो गई है।'

ढोड़ाय इस बात का जवाब नहीं दे सका था। भला महात्मा जी के कानून को कलस्टर साहब ने बदल दिया? कलस्टर साहब क्या महात्मा जी से भी बड़े हैं?

उसके बाद ही चला था थाना-पुलिस। तीन सथालों को कैद हुआ था। रसीद किसी ने नहीं पायी थी। हाकिम ने कहा था कि इनके अँगूठे की छाप दिये हुए कागज में लिखा हुआ है कि एक साल के लिए इनको जमीन दी जाती है। ये लोग जबरदस्ती दूसरे की फसलें ले रहे थे।

ढोड़ाय आदि क्या करेंगे, सोच नहीं पाते हैं। भोपतलाल के पास सलाह लेने जाने को भी मन नहीं चाहता है। उसने शायद पंडित जी को 'कोदो' देकर पढ़ना-लिखना सीखा था—कानून का एक हर्फ भी पढ़ नहीं सकता है।

किसके पास आवेदन करने से सुविचार होगा, यह ज्ञात नहीं है। डिस्टिबोड के नये नीलाम की डाक में लाडलो बाबू ने इनसान अली की जगह गिदर मंडल को अरगड़ा दिया है। गिदर ने काम बनाया है! बाबू साहब का ही बेनामदार है। इसीलिए इनसान अली हरे झंडे वाले 'मुसली लिग' में गया है, और पटने के 'जिन्दाबाद साहब' या किसके पास तो उसने शिकायत की है। भोपतलाल ने एक दिन बाजार में इस बात की चर्चा सुनी थी।

इसीलिए इच्छा न रहने पर भी भोपतलाल के पास दौड़ता है। भोपतलाल कहता है 'इन लोगों को ठंडा कर सकते हैं, एक मात्र किसान सभा के स्वामी जी।'

उसके बाद कोइरी टोला के लोगों की अँगूठे की छाप को लेकर वह न मालूम क्या सब लिखना-पढ़ना करता है।

कहाँ से क्या हो जाता है, सो ढोड़ाय नहीं जानता है। सहसा एक दिन एक हाकिम आकर हाजिर होते हैं। वे बाबू साहब के बैठक-खाने में किसी तरह नहीं ठहरे। ठहरे जाकर इनसान अली के मकान में। कलस्टर साहब ने कोइरी टोला को रसीद देने के सिलसिले से उन्हें भेजा है। हाकिम कहते हैं, दोनों पक्ष से दो आदमी बोलेंगे। बाबू साहब के पक्ष से कागज-पत्र दिखाते हैं रामनेवाज मुंशी, और कोइरी टोला के सभी लोग ढोड़ाय को सबके पक्ष से बोलने को कह रहे हैं। ढोड़ाय कहता है—भोपतलाल को बुलाओ। लेकिन बिल्टा आदि कोई भी भोपतलाल पर विश्वास नहीं कर पाते हैं। उसकी कानूनी विद्या की दौड़ पहले ही देख ली गई है।

विजय वकील को भला हराता रामनेवाज मुंशी ? कानून के तूफान में एकदम उड़ा ले जायेगा ! ढोड़ाय का दिल धुक-धुक करता है। पहले लगा था कि वह ठीक-ठीक नहीं बोल सकेगा, पर एक बार शुरू करने के बाद रसीद और दखल की बात को छोड़ दुनिया का सभी कुछ उसके मन से मिट जाता है।

रामनेवाज अधिक कुछ भी नहीं बोलता है। केवल सात-आठ साल पहले धान लेने के समय वाली अंगूठे की छापों को हाकिम को दिखाता है। अंगूठे की छाप में यह स्वतः लिखित हो गया है कि कोई रसीद नहीं पायेगा।

हाकिम रामनेवाज मुंशी और बाबू साहब की ताड़ना करते हैं, 'सब समझते हैं, हम घास नहीं खाते हैं।' फिर अँग्रेजी में न मालूम क्या-क्या बाबू साहब की ओर देखते हुए कहते हैं ! अलबत्‌ कहा है लेकिन ढोड़ाय ने।

किन्तु, अन्त में हाकिम की राय से क्या होता, लाडली बाबू भी हाकिम हैं। नई हवागाड़ी खरीदी है चेरमेन साहब ने, देखा नहीं ? सरकारी हाकिम कभी कांग्रेसी हाकिम के विरुद्ध जा सकते हैं ? सभी हाकिमों में जात-बिरादरी है। देखा नहीं, बाबू साहब की नई सड़क से होकर इन सरकारी हाकिम की हवागाड़ी आई ? अन्य किसी की गाड़ी क्या बाबू साहब उस सड़क से आने देते हैं ?



वालन्टियर का पतन

रामरूप, गनौरी, परसादी, और भविया—ये लोग तीन साल से काम करते थे कुरसेला चीनी-मील में ! पूरे वर्ष मील नहीं चलती है। इसीलिए, कई महीने गाँव में रहना ही पड़ता है। वालन्टियर के फार्म के ऊपर अंगूठे की छाप देने के लिए गाँव

आये थे, बाबू साहब से नीलाम की गई जमीन फिर से पाने के ध्येय से, उसके बाद और लौटे नहीं थे। फिर किस दिन हाकिम जमीन लौटा देने के लिए आकर खोजें, इसी की इन्तजारी में थे। हाकिम की डाक और नीलाम की डाक। एक, दो, तीन, खत्म! इसीलिए लौटने का साहस नहीं हुआ था। खानदान की आयोग्य औलाद हैं वे, बाप-दादों की अरजी हुई जमीन की भी वे रक्षा न कर सके। दूसरे की जमीन के धान से घर की औरतों का नवान्न करवाया है उन्होंने। उनके बाप-दादों का पद-रज उस जमीन में मिला हुआ है, वे लोग ऊपर से देख रहे हैं। महात्मा जी की कृपा से वह जमीन फिर से पाने का एक सुअवसर मिला, लेकिन फारम का जवाब आया कहाँ? प्रत्येक व्यक्ति ने वालन्टियर को सात रुपये बारह आने के हिसाब से दिया है, फारम के कोने की तरफ वालन्टियर ने लिख दिया था, फिर भी हाकिम आवाज क्यों देते? एक साल से ऊपर हो गया।

और भी अनेक लोगों की शिकायत तीसों दिन ढोड़ाय के पास आती है।

वालन्टियर ने आना भी कम कर दिया है। एक दिन ढोड़ाय की उससे भेंट हुई थी। गनौरी आदि के 'फारम' की बात पूछते ही वह कहता है, 'डेढ़ लाख दरखास्त हैं, ढोड़ाय जी, आपको तो मैं वाकिफहाल आदमी के रूप में ही जानता हूँ। इतना कैसे चलेगा?'

ढोड़ाय जी! आश्चर्य शब्द है। देह के अन्दर सिहरन हो जाती है। जब उसने पहले-पहल 'आप' शब्द सुना था, उस दिन मन में एक बेचैनी हुई थी। केवल 'आप' शब्द दूर ठुकराता है, अपना नहीं बनाता है। लेकिन ढोड़ाय जी! यह शब्द सुनते ही लगता है कि वालन्टियर ढोड़ाय को जो स्वीकृति दे रहा है, वह अनिच्छा से नहीं। मात्र एक व्यक्ति उसको अपना प्राप्य दे रहा है। इज्जत देह पर लिखी रहती है तभी, तो लोग कहते 'जी'। बड़ी मीठी अनुभूति है इसकी, एकदम नई। इसके बाद, वह आज वालन्टियर को दरखास्त के बारे में और कुछ नहीं पूछ सकता है। बड़ा अच्छा है वालन्टियर। अब से वह भी 'वालन्टियर जी' कहेगा।

उसकी अपनी एक धूर भी जमीन नहीं है, रामायण भी वह पढ़ना नहीं जानता है। किन्तु वालन्टियर जी ने आज उसे पन्द्रह बीघे जमीनवाले आदमी की इज्जत दी है। फिर भी क्यों, आज उसे 'बन्दगी' करने में बाधा महसूस हो रही है? 'नमस्ते वालन्टियर जी!'

'नमस्ते!'

गनौरी को वालन्टियर का हाव-भाव अच्छा नहीं लगता है। यह भी कभी होता है कचहरी में? किसी प्रकार की खोज खबर नहीं कचहरी से! जमीन चली जाने के समय ऐसा ही हुआ था? सहसा मालूम हुआ था कि उनकी जमीन नीलाम हो गई है। इस मामले को लेकर टाल-बहाना मत करना ढोड़ाय। पहले ही कहता हूँ, तू टोले

का सरगना आदमी है। गिदर मंडल की तरह मैंट़र होता, तो क्या तुम मेरे पास दौड़ आते।

'रहने दो गिदर को माँद में बन्द।' बिल्टा की रसिकता पर बूढ़ा दादा हँस उठता है।

इन सब कामों का भार किस प्रकार और कब ढोड़ाय पर आ पड़ा है, यह गाँव के किसी से पूछने पर पता नहीं चलेगा। जल की धारा क्यों नीचे की ओर लुढ़ककर एक ही जगह जमा होती है?

इन सब कामों में ढोड़ाय को थकावट नहीं होती। बाप-दादों का डीह छोड़ने का क्या दुःख है, सो ढोड़ाय समझता है। काम के बहाने वह अपने मन को ढाँक रखना चाहता है। अपने को वह गलत समझने की चेष्टा करता है। कई तरह की छवियाँ उसे अनवरत नीचे की तरफ खींच रही हैं, वह जाना चाहता है ऊपर। बाबा की मिटती हुई स्मृतियाँ हाथों के इशारे से उसे बुलाती हैं, पट की छवि के महावीरजी जिन दोनों पैरों की तरफ ताककर उसे पथ का इंगित दे रहे हैं, वहाँ पहुँचने के पथ का निर्देशन दे रहे हैं उसी चरण के आश्रित महात्माजी। यह जो संथाल टोली, गंज का बाजार, भोपतलाल और वालन्टियर के पास दौड़ रहा है, दूसरे के काम से, यह स्वयं का नशा नहीं है। रामचन्द्रजी के हुक्म को मानने का नशा है, और दस आदमी उसके पास आकर उसे जो इज्जत दे रहे हैं, उसकी कीमत देने का नशा है। फिर उसे लगता है कि यह सब अपने मन को भुलाने की 'नौटंकी' है! मन के नीचे, बहुत भीतर, एक जगह है, जहाँ किसी का हुक्म नहीं चलता है, कीमत देने-लेने की बारी वहाँ अचल है। रामचन्द्रजी एक हाथ से लेते हैं और एक हाथ से देते हैं। उन्हीं की कृपा से आज गाँव के लोग उसके पास आकर अपने दुःख की बातें कहकर मन को हल्का कर जाते हैं, टोले के लोग 'सरगना' कहते हैं, हाकिम के सामने वह रामनेवाज मुन्शी से बहस करता है, वालन्टियर—'ढोड़ाय जी' कहता है। लेकिन रामचन्द्रजी ने ढोड़ाय से जितना लिया है, आशीर्वाद के साथ उन्होंने क्या उतना लौटा दिया है? छि, छि, यह क्या सोच रहा है वह? इसका भी क्या कोई हिसाब-किताब चलता है, ऊख और कच्चे मिर्च की तरह?

काफी खुशामद कर ढोड़ाय उसे राजी करवाता है—कचहरी से दरखास्तों का क्या हुआ, इसकी जानकारी लाने के लिए। भोपतलाल पाँच रुपये खर्च कर कचहरी के सिरस्ते में काफी ढूंढ़ता है, कोइरी टोला की कोई दरख्वास्त कचहरी में नहीं है।

वह आकर कहता है : वालन्टियर ने रुपये खा डाले हैं। उसकी वालन्टियरी मैं निकालता हूँ, महात्माजी के पास चिट्ठी लिखकर। तुम लोग इस कागज पर अँगूठे की छाप दो।

'अँगूठे की छाप? मर जाएँ, तो भी नहीं!'

सभी के चेहरे पर कठिनता की रेखा उभरती है। जीवन में एक ही बार आदमी गलती करता है। बाप-दादों का उपदेश न मानकर अँगूठे की एक ही छाप से भिखारी होने को चले हैं, टोला भर के लोग! 'बाप रे बाप! नहीं, नही, भोपतलाल जी, बाबू साहब ने ही शायद कचहरी में रुपये खर्च कर दरख्वास्तो को हटवा दिया है।'

□

वालन्टियर का पुनरुत्थान

गंज के बाजार में सर्किल मनेजर साहब के बँगले में एक 'कल' है न, जिसके द्वारा मेमसाहब लोग उन्हें गाना सुनाती हैं, उसी 'कल' मे लाट साहब ने उनके पास खबर भेजी है कि विलायत में अंग्रेज और जर्मन में लड़ाई छिड़ गई है। वहाँ के हाट में ढोढ़ाय आदि ने यह बात सुनी थी। वहाँ और भी कानाफूसी हुई थी कि लड़ाई मे मिर्च और तम्बाकू खूब लगते हैं। दाम बढ़ेगा। नौरंगीलाल गोलदार चाहे जो कहे, कच्चा मिर्च और नहीं बेचना चाहिए। खेत में ही उन्हें पकाना ठीक है।

इसके कुछ ही दिनों के बाद गाँव में वालन्टियर आकर हाजिर होता है। इतने दिन लाख कोशिश के बावजूद भी उसका पता नही मिला था। लेकिन आया जब, वह भी एकदम आने के लायक आना था। फौज की वर्दी पहनकर, खट-मट खट-मट करता हुआ, गाँव के कुत्ते भोंकते हुए दौड़ आते हैं, छोटे बच्चे छिपते हैं, बिल्टा की बूढ़ी चाची माथे के पटसन जैसे सुफेद बालों पर घूँघट खींच लेती है। ढोढ़ाय तक सोचता है, 'बन्दगी हुजूर' कहे या नमस्ते।

वालन्टियर काफी दूर देश से आ रहा है। उसने रंगरेज-जर्मन लड़ाई की ताजी नई खबर सुनायी है। लड़ाई की खबर फौजी आदमी नहीं जानेगा, तो कौन जानेगा? सबसे जबरदस्त खबर है, कांग्रेस रंगरेज सरकार की दी हुई पटने की गद्दी पर लात मार कर चली आई है।

'तब तो महात्माजी का हुक्म मुल्क में और नहीं है?'

'नहीं है, इसीलिए तो ढोढ़ायजी आप लोगो के पास आया हूँ, आप लोगों को कांग्रेस की फौज में भर्त्ती कराने।'

'फौज में?'

सभी चिल्लाना शुरू करते हैं। बिल्टा की चाची चिल्लाकर रो उठती है। बूढ़ा दादा वालन्टियर का हाथ पकड़ लेता है—जैसे भी हो, दरोगा को कहलाकर हम लोगों का नाम फौज से कटवा दो वालन्टियर! ऊखल बन्धक रखकर मैं तुम्हें खुश करूँगा।

लड़ाई की खबर पहले दिन सुनकर सबको लगा था कि विलायत मे लड़ाई हो

रही है, तो उसमें बिसकंधा को क्या है ? यह फिर कौन-सी आफत उपस्थित हुई ? वे नहीं चाहते हैं मिर्च को खेतों में पकाकर बेचना।

वालन्टियर तब कांग्रेस की फौज में भर्ती होनेवाले 'फारम' निकालकर सबको समझाता है कि वह इतने दिन रामगढ़ में था। वहाँ आगामी वर्ष महात्माजी का बहुत बड़ा जलसा होगा। वहीं वालन्टियर फौजी 'टिरेनी' लेने गया था। अब वह जिरानिया के सबको फौज में भर्ती कर स्वयं 'टिरेनी' देगा। उसी के फारम हैं ये।....

फारम का प्रसंग आने पर इतनी देर में गनौरी काम की बात छेड़ने का सुयोग पाता है।

'लटपट बातें छोड़ो वालन्टियर। हम लोगों की जमीन फिरसे दिलाने वाली दरखास्तों का क्या हुआ ? एक साल से तुम हम लोगों को हैरान कर रहे हो ?'

महात्माजी का चेला होने से क्या होता, वालन्टियर जानता है कि कब गुस्से से जल उठना होता है।

'नमकहराम कहीं का !' फिर ढोड़ाय को कहता है—'किस खास्ता-खांचे में फेंक रखा है, उसका क्या कोई हिसाब है ? उस पर कांग्रेस के वजीर लोगों ने इस्तीफा दिया है, और अभी क्या साहब कलस्टर उन सब दरखास्तों को पढ़ेंगे, ऐसा समझते हो ? इतने दिन वही साहब उस हरिजन मन्त्री के लड़के को सफर के वक्त गोद में लेकर उनकी नाक का 'नेटा' पोछते थे।....' और भी कितनी ही बातें वालन्टियर जी कहता जाता है। चार आना भर भी ढोड़ाय आदि नहीं समझते हैं। सुनने का भी उन लोगों को उत्साह नहीं है। बिल्टा तक के मुँह से बातें नहीं निकलती हैं। कितने दिनों से उसने सोच रखा था कि वालन्टियर आने पर उसे पकड़ेगा।

कोइरी टोला का कपाल ही जला हुआ है ! रंगरेज-जर्मन लड़ाई की गरम और ताजी खबर के अन्दर कोइरी टोला के इतने लोगों की हँसी और क्रन्दन, आशा और आकांक्षा न मालूम किस खाते में अन्तर्हित हो जाती है।

जाते वक्त वालन्टियर अफसोस कर जाता है—ससुर लोग युद्ध में हारना नहीं जानते हैं।....

कोइरी टोला के गिदर को भी कम दुःख नहीं हुआ है। उसने इधर डेढ़ साल से खद्दर पहनना शुरू किया था। शान्ति किसी चीज में नहीं है। सबसे चिन्ता की बात है कि 'रात्रि-पाठशाला' के नाम पर वह एक लालटेन, और महीने में एक टिन किरासन का तेल और भी न मालूम क्या-क्या लाडली बाबू की सहायता से पाता आ रहा है। इतने दिन इन्सपेक्टर साहब ने लाडली बाबू के डर से कुछ करने का साहस नहीं किया था। अब वे जरूर रिपोट कर देंगे कि गिदर मंडल ने कोइरी टोला में कोई स्कूल नहीं खोला है। वह कहता है—'कांग्रिस ने गद्दी से इस्तीफा देने के पहले एक बार भी पबलिस की बात नहीं सोची। लो ! दो साल खूब उड़ाया है हलुआ-पूड़ी, अब मजा चखायेगी सरकार।'

मृत कोशी को तथा कोशी के किनारे वाली परती जमीनों को गाँव के लोग किस दृष्टि से देखते हैं, यह बाबू साहब जानते हैं, इसीलिए उन्हें इतनी चिन्ता है।

उन जमीनों को बहुत दिनों से लोग राज पारभंगा की परती जमीन के नाम से जानते थे। नदी के किनारे वाली जमीन पर बाबू साहब की नजर ज्यादा है। नदी और नाव ही उन्हें पसन्द हैं। उनके साथ क्या रेलगाड़ी की तुलना हो सकती है? नदी के पथ से ही वे प्रथम बार यहाँ आये थे। दूर-दूरान्तर से मिट्टी की गंध जिन्हें आकर्षित करती है, बेर के पेड़ों को जड़ समेत उखाड़ फेंकने की जिनमें ताकत है, सेमल का पेड़ काटकर खेत तैयार करने का तरीका जिसे मालूम है, बबूल का पेड़ देखते ही जिसे हल की बात याद आती है, रीछ के साथ लाठी लेकर भिड़ने की हिम्मत जो रखता है, वही नदीपथ से आता है। और, रेलगाड़ी आकर्षित करती है दूध-घी पीये हुए लोगों को, जो बेर के पेड़ को देखने पर रेशम और लाह की बात सोचते हैं, सेमल के पेड़ कटवाते हैं। कटिहार के दियासलाई के कारखाने के ठेकेदार के लिए, स्टेशन के पास बबूल का पेड़ देखने से दौड़कर एक दँतवन काटकर ले आते हैं और तुरन्त उसे बक्से में भरते हैं। वह 'रामे-राम दोये-दो' वाला दल धनी होने के लिए जमीन खरीदता है। जो इज्जत और प्रतिष्ठा चाहता है, उसे तो इस पथ से ही आना होगा।

कोइरी और संथाल लोग चाहे कितना भी तंग क्यों न करें, जमीन रखने में है एक गंभीर आत्मप्रसाद, अंतहीन आकांक्षाओं की नसों में है गंभीर परितृप्ति का भाव, किन्तु चैन नहीं है। घूम-फिरकर मक्खी के नाक पर बैठने से ध्यानी संन्यासी लोग भी विरक्त हो उठते हैं, तो फिर बाबूसाहब का तो कहना ही क्या है। कोइरी-संथालों की जो झड़पें शुरू हुई है, आठ-दस साल के पहले क्या नहीं रुकेंगी? नित्य नया फसाद लगा ही रहता है। करोगे अधियादारों का काम और मिजाज रखोगे दरोगा-पुलिस की तरह।

कोशी के किनारे वाली परती जमीन पर गत कई वर्षों से बाबूसाहब कलाई छींट रहे थे। वह थी गाँव के लोगों की गाय-भैंसों के चराने की जगह। कलाई-कुल्थी की कीमत ही क्या थी? गोले में सड़ता था। गाँवभर की गाय-भैंसों की देह भर आई है उन कलाई-कुल्थी को खाकर, बाबूसाहब ने एक दिन भी मना नहीं किया है। इसीलिए राज पारभंगा की परती जमीन पर किसने कहाँ कलाई छींटा था—इस पर गाँव के लोगों ने दिमाग नहीं लड़ाया था। बाबूसाहब ने कई साल फसल काटने के बाद हाल में राज पारभंगा से उस जमीन का बन्दोबस्त करा लिया था। राज पारभंगा के मन में शायद कोई गोलमाल था, अथवा शायद सर्किल मनिजर ने चेरमेन साहब के पिता को नाराज करना नहीं चाहा था। इसलिए उन्होंने नाम मात्र सलामी के बदले ही उन जमीनों को छोड़ दिया था। उसी के बाद झगड़ा लगा था। संथाल टोली की भैंसों को नदी के किनारे से पकड़वाकर बाबूसाहब ने गिदर के अड़गड़ा में दिया था।

बड़का मांझी उस वक्त जेल से लौटा था। उसका बेटा कहता, 'अबके मुझे हो आने दो।'

बाबूसाहब के हिसाब में थोड़ी-सी गलती हुई थी। संथालों की भैंसें अरगड़ा में देने पर कोइरी टोला के लोग चिन्तित होंगे, ऐसा उन्होंने नहीं सोचा था। कोशी माई को लेकर ही सारा मामला है। भाई-भाई में फूट है, इसीलिए क्या वे माँ की बेइज्जती खड़े रहकर 'टुकुर-टुकुर' देखेंगे? वह जमीन उन लोगों के सारे गाँव की 'निकास' जमीन है। सभी की गाय-भैंसें उससे होकर जल पीने जाती हैं, औरतें जरूरत पड़ने पर जाती हैं नदी के किनारे। 'दस बीघा करम' है नदी के किनारे—जानवर के मरने पर उसे फेंकना होगा, छोटा बच्चा मरने पर उसे गाड़ना होगा। घर लीपने की मिट्टी लानी होगी वहीं से कोड़कर, उसी का नाम है 'निकास'। इस निकास को छीन लेने का क्या किसी कोई हक है!

साथ-ही-साथ उस मैदान में टोले की पंचायत बैठ जाती है। मैदान की ऐसी पंचायती बूढ़े दादा तक ने इसके पहले जिन्दगी भर में नहीं देखी थी।

इतनी बड़ी बात! यह है बाबूसाहब का जबरदस्त काण्ड! गिदर ने हाथ मिलाया है बाबूसाहब के साथ। साजिश नहीं रहती तो उसने अड़गड़े में भैंस क्यों ली! मंडर है, तो मंडर है। उसमें क्या है? गिदर का हुक्का-पानी बन्द कर दो। जिले की जाति के बड़े-बड़े धुरंधर लोग गिदर के वंश के आदमी हैं। गिदर गुरुजी बहुत कानून जानता है, यही भय का कारण है। साला गायखोर, गाय खाने के बाद हड्डियों को, निकास के चले जाने के बाद, फेकेगा किस चूल्हे में। कानी मुसहरनी जिस किसी तरफ अपनी कानी आँख घुमाती है उसी तरफ उसकी आबरू है, इसीलिए औरतों को जो निकास की जरूरत होती है, वह क्या गिदर समझेगा? भूकम्प की रिलिफ की दया से उसकी दीवाल आदि पक्की हुई है। और, उसे तो नदी के किनारे से मिट्टी काट लाने की जरूरत पड़ती नहीं है?

सभी ओर से विचार कर यह तय होता है कि गिदर का हुक्का-पानी बन्द करने के कारणों के अन्दर अरगड़े के मामले के साथ कानी मुसहरनी के मामले को भी जोड़ देना अच्छा है।

उसके बाद महात्माजी की जय का नारा लगाते हुए और अपनी-अपनी भैंसों को लेकर सभी संथाल टोले में पहुँचते हैं।

अरे डरने को क्या है? राजपूतों की लाठी आजकल भाँग घोटने वाली बेल की लकड़ी हो गई है। और फिर भाला के सामने लाठी क्या है? यहाँ से फेंकूंगा यह फनू-फनू''' । संथाल टोली और कोइरी टोला की गाय-भैंसों, बच्चे-बूढ़ों का विराट् जुलूस कोशी के किनारे वाले खेतों में जाकर प्रवेश करता है। आगे है ढोड़ाय और बड़का मांझी का बेटा।

दो दलों को बाबूसाहब एक ही साथ क्रोधित नहीं करते हैं। पलभर की असावधानी के कारण वे गलती कर चुके हैं। बाबूसाहब ने दो-मंजिले से उस दल को जाते देखा था। कुछ देर के बाद बटेसर सिंह सिपाही दौड़कर बाबू साहब को खबर देने आया था। मालिक बन्दूक रखने वाले दराज को तो खोलते ही नहीं, बल्कि हिल डोल कर भी वहीं बैठते हैं।

वे गलती कर चुके हैं, यह स्वीकार करने में द्विविधा करने से चलेगा नहीं ? बड़का माँझी के परिवार को सरकार की खिचड़ी खाने का भय दूर हो गया है। यह अच्छा लक्षण नहीं है।···शायद और भी कुछ साल प्रतीक्षा करना उचित था।···जाने दो, जो होने वाला था, सो हुआ। गुड़ से ही अगर मक्खी मरती है, तो फिर जहर देने की क्या जरूरत है ?

बटेसर सिंह काफी देर तक प्रतीक्षा के बाद भी कोई जवाब न पाकर चला जाता है।····

बाबूसाहब सोचने को बैठे हैं।

बाबू साहब का अक्षय-तूणीर-लाभ

जिरानिया टुरमन वाले फारम को चलाने के लिए एक कमिटी है। डिस्टिबोर्ड के चेरमेन साहब उसके सदस्य रहते हैं। लाडली बाबू पिछली बार जब घर आये थे, तब बाबूसाहब ने सुना था कि कमिटी ने ऐसा निश्चय किया है कि वह इस बार गाँव के लोगों की भलाई के लिए देहात में धीरे-धीरे कामों का विस्तार करेगी। इसी आधार पर बाबूसाहब के दिमाग में कई दिनों से एक बात नाच रही है।

लाडली बाबू ने चेरमेन होने के बाद से घर आना धीरे-धीरे घटा दिया है। कांग्रेसी चेरमेन हैं, परिश्रम ज्यादा है। पहले वाले, वकालत करने वाले राय बहादुर चेरमेन नहीं हैं। इसीलिए शायद उन्हें अवसर नहीं होता। कुछ दिनों से बाबूसाहब के घर की औरतों में काना-फूसी हो रही थी कि लाडली बाबू खुद अपना डेरा किराये पर लेंगे। मास्टर साहब के आश्रम में रहने से सुविधा नहीं हो रही है। कितने आदमी, साहब, पंडित और ठीकेदार चेरमेन साहब के साथ भेंट करने आते हैं···मास्टर साहब को आजकल कौन पूछता है ?···

फिर एक खर्च का रास्ता बना रहा है। आजकल के लड़के पैसों को नहीं पह-चानते हैं। केवल डेरा किराये पर लेने से चिन्ता का कोई कारण नहीं था, यह अच्छा ही था। मास्टर साहब के आश्रम में उन्हें ठहरने को और मन नहीं करता। लेकिन

सुनने में आ रहा है कि लाडली बाबू अपने स्त्री-पुत्रों को भी ले जाना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि अगर ऐसा नहीं किया गया, तो उनके लड़कों का पढ़ना-लिखना नहीं हो पायेगा। वहाँ जिला स्कूल है, बाबूसाहब ने भी देखा है। लोग कहते हैं कि राजपारभंगा के जमींदार के लड़के उसी स्कूल में पढ़ते हैं। उन्हीं लोगों के पढ़ने लायक विशाल जगह है वह—सदर कलक्टरी से भी बड़ी। हाँ, बड़े हुए हो, चेरमैन साहब हुए हो, तुम्हारे लड़के तो तुम्हारी तरह मजकूरी सिपाही के लड़के नहीं हैं। अवश्य पढ़ाना होगा उन्हें राजे-महराजे के स्कूल में। लेकिन बहू को लेकर जाना? कब्—भी नहीं! चन्दावत राजपूत के घर की बहू जाकर रहेंगी वहाँ? अपना घर छोड़कर? बाबूसाहब की देह पर लोग थूकेंगे नहीं तब? लाडली बाबू की माँ को उन्होंने जब सर्वप्रथम उनके देश से लाना चाहा था, तब क्या उन्होंने आना चाहा था? प्रायः जबरदस्ती से लाना हुआ था। और, शायद लाडली बाबू की स्त्री ही पति के कानों में यह मन्तर पढ़ रही है। उनकी माँ की तो यही धारणा है। आने दो लाडली बाबू को इस बार!

""चाँदनी रात में यहाँ से पक्की तक अस्पष्ट दिखाई पड़ रहा है। समूचा न मालूम कब एक 'चक' हो गया है। नई सड़क अंधकार में नहीं दिखाई पड़ रही है। परितृप्ति के बोझ के नीचे वह न मालूम कब दब गयी है। अभी मन पर बोझ बन कर छा रहा है कोसी के किनारेवाली जमीन का फसाद। हवागाड़ी की एक जोड़ी रोशनी उतरी पक्की से उनकी अपनी सड़क पर! इतनी दूर से भी वे दोनों रोशनी उन्हें दिखाई पड़ रही हैं। जैसे कोई उनके उतने शौक की सड़क पर प्रकाश डाल कर उन्हें दिखा रहा हो। कोई हाकिम-वाकिम है क्या? बाबूसाहब थोड़ा तटस्थ हो जाते हैं। अनोखी बाबू! ओ अनोखी बाबू! ऊँघ रहे हैं शायद। जरा देखिए तो कौन आया? खिड़की के अन्दर से प्रकाश उनके कमरे तक आया। नीचे लाडली बाबू का स्वर सुनाई पड़ता है। वही कहो! साथ में एक टोपी-धारी हाकिम है। बाबूसाहब अपने मन की अस्थिरता को छिपाने के लिए खासकर सीधा होकर बैठते हैं। नीचे हाँक-डाक की धूम मच जाती है।

कुछ ही क्षण बाद लाडली बाबू पिता से भेंट करने के लिए इस कमरे में आते हैं। कल भोर को ही चला जाना होगा। उनके साथ सफर में एक हाकिम है। उस वक्त शायद बाबूसाहब की पूजा शेष नहीं होगी, इसीलिए अभी भेंट करने आये हैं।

'इतने दिनों के बाद आये, सो भी जैसे धान रोपने का काम छोड़ आये हो!'

भाषा चिढ़ की होने पर भी बोलने के सुर में विरक्ति का आभास नहीं है।

'मैं अकेला रहता तो कोई बात नहीं थी। साथ के हाकिम तो भोर को ही जायेंगे न?'

'किस चीज के हाकिम हैं वे?'

'रेशम के हाकिम! भागलपुर से आये हैं।'

'अच्छा! तब इस जिले के हाकिम नहीं हैं?' लाडली बाबू को वे अधिक देर

नहीं पायेंगे । इसीलिए बाबूसाहब और विलम्ब नहीं करते हैं, एकदम कोशी के किनारे वाली जमीन के सम्बन्ध की बातें छेड़ते हैं ।

लाडली बाबू कहते हैं, उसमें क्या है । ये रेशम के अफसर इस तरफ के कई गांवों में रेशम के कीड़ों की खेती का केन्द्र खोलना चाहते हैं । उसी की जगह देखने वे यहां आये हैं । लड़ाई के समय खूब दाम चढ़ेगा रेशम का । रेशम के कीड़ों को खिलाने वास्ते रेड़ी की खेती के लिए नदी के किनारे की जमीन मिले तो वे लोग लेंगे । एक किस्म की नई जाती की रेड़ी का बीज निकला है, पेड़ बड़ा नहीं होता है, हाथ से ही फसल उतारी जा सकती है । वे ही लोग निकट में घर बनायेंगे कीड़े रखने के लिए । दुरमन के फारम से मैं भेज दूंगा दो 'कामदार' को । देहात में नये किस्म की खेतीबारी की शिक्षा देना ही उनकी ड्यूटी है । बकरहट्टा के मैदान में दुरमन वाला फारम नुकसान पर चल रहा है । एकदम बलुआही जमीन है, मुंगफली तक अच्छी नहीं लगती है । इसीलिए सरकारी कमिटी ने इसके कार्य को दूसरी ओर भी बढ़ाने का ...श्चय किया है । फौजी डिपार्टमेंट के साथ भी बकरहट्टा के मैदान को लेकर बात-...त चल रही है ।...

लाडली बाबू और भी क्या-क्या तो बोल जाते हैं । वे सब बातें बाबूसाहब के ...नों में भी नहीं पहुँचती हैं । इतनी जल्द इतने बड़े प्रश्न का समाधान हो जा सकता ... । यह बाबूसाहब कल्पना भी नहीं कर सके थे । गर्व और तृप्ति से उनका मन भर ...ठता है । धन्य है वह औरत, जिसने इस चेरमेन साहब की तरह लड़के को गर्भ में ...रण किया था । उसकी देह, सचमुच दो सेर चांदी धारण करने योग्य है । वृथा ही ...तने दिनों तक लगता था कि वह ठेकू की फसल चोरी-चोरी बेचकर पैसा जमाती है । ...ह चोरी नहीं, उसके अगले जन्म के जमाये हुए पुण्य की कमाई है । बहुत साल पहले ...ा एक चित्र उनकी आंखों के सामने जीवित हो उठता है....उस वक्त हरियाना गाय ... भी सुकुमार और चिकनी थी उसकी देह । गोरे रंग के ऊपर नीले रंग के गुदने की मीनाकारी की गई है, गोद में नन्हा-सा लाडली है । मां की नाक से निकले हुए तम्बाकू के धूंये की कुण्डली को पकड़ने की चेष्टा कर रहा है । कौशल्या माई की तरह देखने में लगती है । बड़ा अच्छा लग रहा है सोचने में । लेकिन लाडली बाबू क्या सोच रहा है ? इसीलिए कहना पड़ता है, 'अपने डिस्टीबोड का हालचाल कहो !'

मंत्री की गद्दी छोड़कर ही कांग्रिस ने गलती की है । और भी गलती करेगी अगर वह डिस्टीबोड छोड़ दे । छोड़ने से तो सरकार को ही सुविधा है, सरकार डिस्टीबोड के सभी पैसे लड़ाई के काम में लगायेगी । यही तो उस दिन सड़क का रोल डिस्टीबोड से मँगवा भेजा है । मैं रहता तो दो-चार महीने उस चिट्ठी का जवाब नहीं देता ।

वह तो है ही ।

सो नहीं, न एक पाई, न एक भाई, कहकर जेल में चले जाने से ही अंग्रेज हार जायेगा ! मैंने तो साफ कह दिया है कि चेरमेन के पद से मैं इस्तीफा नहीं दूंगा !

पबलिक की भलाई के लिए ही यहाँ आया हूँ। जब तक हो सके, यथासाध्य, पबलिक का उपकार कर जाऊँगा।""

ये बातें सुनते-सुनते आनन्द और उद्वेग से बाबूसाहब की साँसें तेज हो रही थीं। खैर है, रामचन्द्रजी ने लाडली को सुमति दी है, खूब सम्मान बचाया है! ऐसा जमाना आया है कि बेटा अगर चेरमेन न हो तो आजकल जजसाहब के ससुर को भी कोई नहीं पूछता है, उसके अधियादार तक नहीं। चेरमेन साहब का बाप न होने से, पक्की के किनारे वाले मिट्टी काटे हुए गढ़ों में धान नहीं लगाये जा सकते हैं, तीन रुपये में बन्दोबस्त नहीं लिए जा सकते हैं। ऐसे बेटे पर जो बिगड़ता है, वह बेटे का बाप नहीं है।

'सुनिये लाडली बाबू! कनियाजी को अगर ले जाना चाहते हैं, तो एक अच्छी आबरूवाला डेरा ठीक कीजिएगा। ससुर साहब की मर्यादा के योग्य डेरा होना चाहिए। राजपूतों का नियम है कि दाँत वाले हाथी की पीठ पर चढ़कर भी बाहर से आँगन दिखाई न पड़े, ऐसी ऊँची दीवाल होगी मकान की। रेशम का वह साहब तो बदमिजाज नहीं है? चलिए, एक बार उनसे भेंट कर आऊँ। वे कह रहे थे कि एड़ी की गोटी काट कर तितली के निकल जाने के बाद गोटी को उबालना पड़ता है। खैर, निश्चिन्त हो गया! अब प्राणि-हत्या नहीं करनी पड़ेगी। एक जीवन तुम तैयार नहीं कर सकते हो, तो जीवन लेने का तुम्हें क्या अधिकार है?' मरने के बाद अगर राम जी यह पूछते तो वे क्या उत्तर देते? सीढ़ी से उतरते हैं। मृत्यु की बात अचानक याद आने की वजह से मन खराब हो जाता है। सीढ़ी से उतरते वक्त उन्हें लगता है, जैसे वे पातालपुरी की गंभीर गहराई में उतरे जा रहे हैं।

'लाडली बाबू! आपने हाकिम के लिए इनसान अली के यहाँ से भला-बुरा कुछ पकवा-उकवा कर लाने के लिए कह दिया है न?' रेशम के हाकिम बड़े हाकिम हैं।



सतियागिरा का उत्सव

आज दंगल तमाशा है कोइरी टोला में। वालन्टियर गाँव में सतियागिरा करेगा। 'रमखेलिया का नाच' आने पर भी गाँव में इसी तरह का हल्ला हो जाता है। किन्तु, सतियागिरा उससे भी महान् वस्तु है। सतियागिरा का मतलब क्या होता है, सो ढोड़ाय भी नहीं जानता है, लेकिन लगता है, यह बात सुनी हुई है। भूत की कहानी सुनने का असल आनन्द है शरीर के रोमांचित होने में। सतियागिरा के रहस्य

के साथ भी वैसा ही भय मिला हुआ है—पुलिस, लालपगड़ी, हलवैलों का क्रोक होना, जेल की खिचड़ी, तथा और भी कितने जाने-अनजाने आतंक सतियागिरा के कौतूहल के साथ मिले हुए हैं। महात्माजी के नाम का सम्मोहन है कि बीस कोस दूर के ऋष्य-शृङ्ग मुनि के मन्दिर में जल ढाल आने के समान परितृप्ति होती है।

ढोड़ाय को सारी रात नींद नहीं आई है। इतनी बड़ी-बड़ी जिम्मेवारी इसके पहले कभी उसके माथे पर नहीं पड़ी थी। सभी सम्हाल सके तो! 'डावर कमठ कि मन्दर लेहीं?' उथले का कछुआ क्या मन्दर पहाड़ का भार सह सकता है! दूसरे गाँव से भी कितने लोग देखने आयेंगे। आसपास के इतने गाँवों के रहते भी वालन्टियर ने उनके गाँव को ही चुना है। अब कोइरी टोला की इज्जत उसी के हाथ में है। वालन्टियर जिस किसी गाँव में जाता था, उसी गाँव के लोग उसे लोक लेते थे। यह क्या नमक तैयारी के युगवाला विदेसिया का गाना है? उस वक्त लोग थाना-पुलिस के भय से गाँव के बाहर तमाशा करवाते थे। कोइरी टोला का बड़ा भाग्य है कि वालन्टियर ने इसी जगह को पसन्द किया है।

वह जिस दिन जगह ठीक करने के लिए आया था, उस दिन बोला था कि महात्माजी ने अंग्रेजों के विरुद्ध सतियागिरा करने के लिए अच्छाई देखकर उसे चुन लिया है। बड़े अच्छे आदमी हैं वालन्टियरजी, नहीं तो क्या यों ही गत वर्ष से महात्मा जी ने उसे फौजी-वर्दी पहनने का अधिकार दिया है। इतने दिन बाबूसाहब वालन्टियर को भूकम्प-रिलिफ के रुपये से बनाये हुए नये बैठक-खाने में रहने देते थे, सबसे कसी हुई रस्सी की खटिया पर सोने देते थे, गिलाफ लगाया हुआ तकिया देते थे, ग्रामोफोन के पुराने रिकार्ड की रकाबी में भरकर छोटी इलाइचियाँ देते थे। कांग्रेस का मंत्रित्व टूटने से सब 'छू मन्तर, फुस बिल्ली' हो गई है। जो लाडली बाबू महात्मा जी के उतने प्रिय चेले हैं, उन्होंने उनका हुक्म नहीं माना, चेरमेनगिरी की कमाई के लोभ से। यह आदमी केवल मुंह से ही मलपुआ छानता है, सो पहले क्या कोई सोच सके थे? असल काम के वक्त ही न समझा जाता है कि कौन किस दल का आदमी है! यों तो ऐरू-गैरू-नत्थू-खैरू सभी अच्छी गाड़ी चलाते हैं, ऐसा सुना जाता है। अँधेरी रात में गड्ढे-पोखरे में गाड़ी उलटने के समय जो बचा ले, उसे ही न कहते हैं अच्छा गाड़ीवान! हमेशा हाकिम-पुलिस के पक्ष में हैं वे लोग। देखता तो आ रहा हूँ! लड़ाई के समय अंग्रेजों का पैर नहीं चाटेंगे, तो क्या करेंगे? चौपाये जानवर जिस तरफ हरियाली देखते हैं, उसी तरफ दौड़ते हैं! ये हैं सींगवाले राजपूत।

ढोड़ाय के कामों का अन्त नहीं है। ऐसे बे-अक्ल हैं टोले के छोकरे कि उन्होंने वालन्टियर की माला के लिए रात को बाबूसाहब के ही बागीचे से फूल चुरा लिये हैं। बाबूसाहब के घर के फूल से क्या महात्माजी का काम होता है? मठ के पीपल पर वालन्टियर का दिया हुआ महात्माजी का झण्डा टाँगा गया है। चार कोस दूर के थाने से दरोगा साहब देख सकें, तो देखें। अपनी छाली पड़ी हुई आँखों को ऊँगली से साफ

कर बूढ़ा दादा कहता है, यह महावीरी झण्डा उठाकर अच्छा नहीं किया ढोड़ाय। इन्सान अली 'लिग' में खबर देकर कहीं हाकिम को न गाँव बुला लाए। बेटा, आजकल शंख बजाने को कहता है 'कौड़ी फूंकना।'

बिल्टा सुबह से ही ढोल पीटने को बैठा था। बूढ़ा दादा की बात से न मालूम उसे क्या होता है? ढोल छोड़कर उठता है और नदी के उस पार वाले ग्वालों की बस्ती से बजइया-समेत शंख लाने के लिए जाता है। टोले की स्त्रियाँ रांधने में निपुण गनौरी बहू के यहाँ परामर्श कर रही हैं। वहाँ आलू की तरकारी पकेगी। चन्दा बटोरकर डेढ़ पाव आलू खरीदा गया है। बेचारे वालन्टियर को अब न जाने कितने दिन जेल की खिचड़ी खानी होगी?

शिवजी को बेल-पत्ता और महात्माजी को खादी! वालन्टियर को बैठने के लिए खादी का आसन देते तो अच्छा होता। गिदर ने कुछ दिन खादी पहनी थी। नहीं, उससे कोई चीज नहीं माँगी जायेगी, चाहे इस त्रुटि के लिए मन में कितना भी असंतोष लगा रहे। दरोगा साहब को देने के लिए एक कुरसी की भी जरूरत थी, पर वह मिलेगी कहाँ?

वालन्टियर गाँव आते ही पूछता है, अभी तक दरोगा साहब नहीं आये हैं? अभी तक क्यों नहीं आये? गोसाईं ठीक माथे के ऊपर आते ही सतियागिरा करने का नियम है। पन्द्रह दिन पहले सरकार के पास मैंने रजिस्ट्री नुटिस भेजी है। फिर भी दरोगा साहब अभी तक नहीं आये? जाड़े का दिन है, दिन छोटा होता है। काफी सोच-विचार कर, ठीक दोपहर का समय रक्खा था। जिससे यहाँ से थाना-जेल तक दिन रहते-रहते पहुँच सकूँ।

अजीब चीज है यह सतियागिरा। गंज के बाजार का नाटक सर्किल मनिजर के न आने तक शुरू नहीं होता है। उसी तरह सतियागिरा भी दरोगा साहब के न आने तक शुरू नहीं होता है।

ढोड़ाय समझाता है, अरे नहीं, नहीं। यह एक लड़ाई है। महात्मा जी के साथ रंगरेज की लड़ाई। राम-रावण के युद्ध में रामजी के अनुचरों की जिस तरह रावण के नाती-पोतों से लड़ाई हुई थी, उसी तरह महात्मा जी का चेला वालन्टियर लड़ेगा रंगरेजों के नाती दरोगा साहब के साथ।

यही कहो ढोड़ाय! यह दरोगा साहब के साथ उठा-पटक होगा? सो नहीं, केवल सतियागिरा! सतियागिरा!

वालन्टियर सबकी भूल-धारणा को सुधार देने के लिए न मालूम क्या-क्या सब कहता है, किसी की समझ में नहीं आता है। वालन्टियर रुकता ही नहीं। बड़ी सुन्दर-सुन्दर बातें कहता है। लेकिन कोशिश करने पर भी कोई अर्थ समझ में नहीं आता है। सतियागिरा का मनगढ़ा अस्पष्ट अर्थ और भी गड्ड-मड्ड हो जाता है। साधु-सतों के कहने का ढंग ही ऐसा होता है। बीच-बीच में गर्दन हिलाकर सम्मति प्रकट

के साथ भी वैसा ही भय मिला हुआ है—पुलिस, लालपगड़ी, हलवैलों का क्रोक होना, जेल की खिचड़ी, तथा और भी कितने जाने-अनजाने आतंक सतियागिरा के कौतूहल के साथ मिले हुए हैं। महात्माजी के नाम का सम्मोहन है कि बीस कोस दूर के ऋष्य-शृङ्ग मुनि के मन्दिर में जल ढाल आने के समान परितृप्ति होती है।

ढोड़ाय को सारी रात नींद नहीं आई है। इतनी बड़ी-बड़ी जिम्मेवारी इसके पहले कभी उसके माथे पर नहीं पड़ी थी। सभी सम्हाल सके तो! 'डाबर कमठ कि मन्दर लेहीं?' उथले का कछुआ क्या मन्दर पहाड़ का भार सह सकता है! दूसरे गाँव से भी कितने लोग देखने आयेंगे। आसपास के इतने गाँवों के रहते भी वालन्टियर ने उनके गाँव को ही चुना है। अब कोइरी टोला की इज्जत उसी के हाथ में है। वालन्टियर जिस किसी गाँव में जाता था, उसी गाँव के लोग उसे लोक लेते थे। यह क्या नमक तैयारी के युगवाला विदेसिया का गाना है? उस वक्त लोग थाना-पुलिस के भय से गाँव के वाहर तमाशा करवाते थे। कोइरी टोला का वड़ा भाग्य है कि वालन्टियर ने इसी जगह को पसन्द किया है।

वह जिस दिन जगह ठीक करने के लिए आया था, उस दिन बोला था कि महात्माजी ने अंग्रेजों के विरुद्ध सतियागिरा करने के लिए अच्छाई देखकर उसे चुन लिया है। वड़े अच्छे आदमी हैं वालन्टियरजी, नहीं तो क्या यों ही गत वर्ष से महात्मा जी ने उसे फौजी-वर्दी पहनने का अधिकार दिया है। इतने दिन वावूसाहव वालन्टियर को भूकम्प-रिलिफ के रुपये से वनाये हुए नये वैठक-खाने में रहने देते थे, सबसे कसी हुई रस्सी की खटिया पर सोने देते थे, गिलाफ लगाया हुआ तकिया देते थे, ग्रामोफोन के पुराने रिकार्ड की रकावी में भरकर छोटी इलाइचियाँ देते थे। कांग्रेस का मंत्रित्व टूटने से सब 'छू मन्तर, फुस विल्ली' हो गई है। जो लाडली वावू महात्मा जी के उतने प्रिय चेले हैं, उन्होंने उनका हुक्म नहीं माना, चेरमेनगिरी की कमाई के लोभ से। यह आदमी केवल मुंह से ही मलपुआ छानता है, सो पहले क्या कोई सोच सके थे? असल काम के वक्त ही न समझा जाता है कि कौन किस दल का आदमी है! यों तो ऐरू-गैरू-नत्थू-खैरू सभी अच्छी गाड़ी चलाते हैं, ऐसा सुना जाता है। अंधेरी रात में गड्ढे-पोखरे में गाड़ी उलटने के समय जो बचा ले, उसे ही न कहते हैं अच्छा गाड़ीवान! हमेशा हाकिम-पुलिस के पक्ष में हैं वे लोग। देखता तो आ रहा हूँ! लड़ाई के समय अंग्रेजों का पैर नहीं चाटेंगे, तो क्या करेंगे? चौपाये जानवर जिस तरफ हरियाली देखते हैं, उसी तरफ दौड़ते हैं! ये हैं सींगवाले राजपूत।

ढोड़ाय के कामों का अन्त नहीं है। ऐसे घे-अवल हैं टोले के छोकरे कि उन्होंने वालन्टियर की माला के लिए रात को वावूसाहव के ही वागीचे से फूल चुरा लिये हैं। वावूसाहव के घर के फूल से क्या महात्माजी का काम होता है? मठ के पीपल पर वालन्टियर का दिया हुआ महात्माजी का झण्डा टाँगा गया है। चार कोस दूर के थाने से दरोगा साहव देख सकें, तो देखें। अपनी छाली पड़ी हुई आँखों को ऊँगली से साफ

बातें कहता जाता है।........काफी देर तक बोलने के बाद अन्त में बड़ी अच्छी बातें बोलना शुरू करता है। बाबू साहब को कहता है 'जुलुमकार'। पर्वलिस के जुलुमकार के विरुद्ध खड़े होते ही सबसे बड़ा जुलुमकार अंग्रेजी सरकार उसे सहायता करने को आ जाती है। 'यह देखिए, कोसी के किनारे वाले गाँव के 'निकास' को बाबू साहब ने हड़प लिया। बढ़ा दिया अंग्रेज सरकार को। कोड़ों के रहने के लिए सरकार ने जैसा शानदार मकान बनाया है, वैसा घर आप लोगों के टोले में एक भी है? रेड़ी के बीज विलायत चले जायेंगे, लड़ाई के काम से, और आप लोगों की खूँटे में बँधी हुई गायें पानी न पाकर तड़प-तड़प कर मरेंगी। रेशम की चादर ओढ़ेंगी बाबू साहब जैसे जयचन्दों की औरतें, और आप लोगों के घर माँ-बहनों की आबरू-इज्जत बचाना असम्भव हो जाएगा'..............

वालन्टियर की बातों ने जैसे चिनगारियाँ छिड़क दी हैं। सभी का खून खौल उठा है। सभी का मन एक हो गया है। वालन्टियर जी ऐसी बातें कह सकता है, यह पहले किसी को ज्ञात नहीं था। कीमती बात कही है उसने—'जुलुमकार!'

वालन्टियर लत्तुआ चौकीदार की तरफ ताक कर कहता है, 'कह देना अपने दरोगा को, सरकार के विरुद्ध मैंने क्या-क्या कहा है। कानून अगर तोड़ना है, तो अच्छी तरह तोड़ना अच्छा।'

उत्तेजना से सभी उठ खड़े हुए हैं। बूढ़ा दादा की छाती पर, गालों होकर बहती हुई आँसुओं की धारा आती है। वह कहता है, सभी बैठ जाओ। अभी तो सतियागिरा बाकी है। अभी सब उठ क्यों पड़े?

उस वक्त कौन किसकी बात सुनता है?

वालन्टियर कह रहा है 'अंग्रेज' और सभी कहते हैं, 'जुलुमकार!'

ढोड़ाय कहता है 'बाबूसाहब!' सभी कहते हैं 'जुलुमकार!' 'लाडली बाबू!' 'जयचन्द!'

न मालूम किस वक्त सबने वालन्टियर के साथ-साथ चलना शुरू किया है। कोशी के किनारे, जहाँ रेशम के कोड़ों का घर बना है, वहाँ तक जाकर सभी जी भरके चिल्लाते हैं। उसके बाद वालन्टियर जी 'न एक पाई, न एक भाई, अंग्रेज की लड़ाई' कहकर भँइसदियरा का रास्ता पकड़ते हैं।

महात्मा जी का आदेश है कि जब तक पुलिस नहीं पकड़े, गाँव-गाँव में यह कहते हुए घूमते-फिरते रहो। साँझ होने के पहले शायद भँइसदियरा पहुँच नहीं सकोगे। देखते नहीं हो, हवाई जहाज चला है। जिरानिया में नेपाली फौज भर्ती करने की छावनी खुली है। वहाँ के फौजी हाकिम रोज हवाई जहाज से कलकत्ते से आना-जाना करते हैं।

छोटे बच्चे वालन्टियर की दी हुई मालाओं को लेकर छीना-झपटी कर रहे हैं। वालन्टियर इतनी दूर से पहचान में नहीं आ रहा है। उसके हाथ के वार्निश किए हुए

चरखे के बक्से पर धूप चमक उठी है। कोशी के किनारे वाले टोले के पीछे अब गोसाईं अस्त होंगे।

'परनाम महात्माजी !' 'परनाम !' 'परनाम !'

सभी लौटकर देखते हैं, मठ के मैदान में बूढ़ा दादा तब भी औरतों को बैठा रखा है। सभी के आने पर सतियागिरा शुरू होगा, इसलिए।

बड़े हाकिम का आगमन

बेचारे वालन्टियर को गिरफ्तार न कर दरोगा साहब ने बड़ी मुसीबत में डाला है। एकबार ज्वरग्रस्त शरीर लेकर उसने कोइरी टोला में आकर टूटे हुए मठ में आश्रय लिया था, तभी से वह वहीं रह गया है। दो-चार दिन बीच कर, वह यह गांव, वह गांव, मास्टर साहब का आश्रम आदि घूम आता है। कोइरी लोगों की टोला के भी इच्छा है वालन्टियर उन्हीं लोगों के गांव में रहे। उसके रहने से समय-असमय में थोड़ा बल मिलता है। जिरानिया से लौटते ही वह हर बार अपनी खद्दर की झोली से महात्माजी का कागज निकालता है। उसके ऊपर रहता है महात्माजी का चित्र—हंस की पीठ पर उड़े चले जा रहे हैं आसमान में। उसमें से वह मुल्क की कितनी खबरें पढ़-पढ़कर सुनाता है। इसके अतिरिक्त वालन्टियर और भी कितनी खबरें लाता है।

…अंग्रेज को जर्मनों ने काबू किया है।…लाडली बाबू जिला 'कौमी मोर्चे' के सभापति हुए हैं, लोटा-भर रुपया दरमाहा पायेंगे सरकार से। बहुत बड़े हाकिम हैं। …जूट-तम्बाकू आदि का दाम बढ़ रहा है।…वह देखो, नेपाली रंगरूटों की हवागाड़ी चली हैं पक्की से—एक, दो, तीन, चार, पांच रोज बीस हवागाड़ियां जाती हैं। कुरसेला स्टेशन में ये रेलगाड़ी पर चढ़ेंगे। जिरानिया के बंगाली लोग आजकल बड़े कष्ट में हैं। बाजार की सारी मछलियां नेपाली रंगरूट लोग खरीद लेता है। खाते हैं कैसे, जानते हैं? जलाकर।…

लाडली बाबू और भी बड़े हाकिम हुए हैं—यह बात ढोड़ाय को अच्छी नहीं लगती है। कोइरी और संथाल लोगों ने बाबूसाहब की मठ के निकट की जमीन में गाय चराना शुरू किया था। वे जानते हैं कि इस जमीन को लेकर बाबूसाहब मामला-मुकदमा करने का साहस नहीं करेंगे। जो चुराकर खाता है, वह क्या हाकिम के पास जाता है? लाडली बाबू बड़े हाकिम हो जाने के बाद कहीं कलस्टर के द्वारा गोलमाल न करावें।

कलस्टर साहब नहीं हो, एस० डी० ओ० साहब को लेकर एक दिन लाडली बाबू सचमुच गांव आये। खबर दी कि मिटिन होगी, सभी भय से सशंकित हुए। आज

क्या वालन्टियर को जिरानिया न जाने से नहीं चल रहा था ? लाडली बाबू स्वयं आकर सभी को मिटिन में बुला ले गये।

ताज्जुब बात है। मिटिन में एस० डी० ओ० साहब जमीन की बात नहीं कहते हैं। केवल लड़ाई की बात बोलते हैं। हिटलर रावण की तरह 'जुलुमकार' है। सकरकन्द की खेती करना बहुत लाभदायक है। साढ़े सात रुपये मन की दर तक चढ़ा है। उचित है कि चोर-डाकुओं के विरुद्ध गाँव-गाँव में 'रक्षादल' कायम करें।

ढोढ़ाय हाथ जोड़कर उठ खड़ा होता है। 'हुजूर, हम लोगों के घर से डाकू लेगा ही क्या ?'

हाकिम समझाते हैं, 'ऐसा कहने से क्या चलता है ? गाँव में सबको मिल-जुल-कर रहना होगा।'

बड़का माँझी कहता है—'हाकिम, कहते तो ठीक हो। सुनने में ठीक बाप की बातों की तरह लग रहा है। लेकिन कोसी किनारे वाले 'निकास' में तुम लोग और लाडली बाबू आदि मिलकर रेड़ों की खेती कर रहे हो, हम लोगों के टोले की औरतें क्या कुरवा घाट के मेले के तम्बू की औरतें हैं ?'

एस० डी० ओ० साहब पहले-पहल यह बात समझ नहीं सके। लाडली बाबू की ओर ताकते ही वे अस्त-व्यस्त हो जाते हैं। बाबू साहब तहियाई हुई चादर पर हाथ फेरते हुए खाँसते हैं।

'जमाना आप लोग नहीं समझते हैं।'

हाकिम का चेहरा देख बिल्टा समझ सका या नहीं, इसीलिए रिंग़ो माँझी उसके पैर में खोंचा मार कर समझा देता है—'डाँट रहे हैं, रे, बाबू साहब को !'

'नहीं, नहीं लाडली बाबू, इन लोगों के साथ किये जाने वाले व्यवहार में परि-वर्तन होना चाहिए।'

लाडली बाबू भी यह बात अस्वीकार नहीं करते हैं। आजकल के दिनों में खेती-बारी कहो, या अन्य काम, जन-बल ही, असल बल है। फसल की कीमत बढ़ रही है। अभी इन लोगों के साथ झगड़ा-फसाद नहीं रखना ही अच्छा काम है।

यह बात बाबू साहब भी कुछ दिनों से सोच रहे हैं। लेकिन हाकिम उन्हें अलग बुलाकर भी तो ये बातें कह सकते थे।

एस० डी० ओ० साहब इनसान अली को साथ ले हवागाड़ी पर चढ़ते हैं। वे आज इनसान अली के घर ही खाना-पीना करेंगे।

लाडली बाबू घर लौटते वक्त कहते हैं, 'एस० डी० ओ० सम्बरी 'लिगी' है, इसीलिए वह इनसान अली अरगड़िया के यहाँ गया।'

'फिर उसने रावण की बात भाखन के बीच क्यों छेड़ी थी ?'

लचुआ हाड़ी कहता है, हाकिम बिगड़ा था क्यों ? जानते हो ? कौमी मोर्चा की मिटिन करेगा, यह कहकर लाडली बाबू ने हाकिम को यहाँ बुलवाया था। जिले के सभी

अमीरों को किसको कितना 'वार-फण्ड' देना होगा, सो कलस्टर साहव ने ठीक कर दिया है। उतना लाडली वावू नहीं देना चाहते हैं, यहाँ वुलाकर एस० डी० ओ० साहव को वे पाँच सौ रुपये लेने को कहते हैं। सुनकर आग-ववूला हो गये। कलस्टर ने लगाये हैं तीन हजार रुपये। एस० डी० ओ० क्या पाँच सौ रुपये लेकर छोड़ दे सकता है? तुम होते हो कौमी मोर्चा के सभापति?....

ढोड़ाय आदि को ये सव वातें सुनने का उत्साह नहीं है। ऐसी ऊट-पटांग गप्प करना पसन्द करता है लचुआ चौकीदार! यह चला जाय तो चैन मिले।

लचुआ हाड़ी के जाने के साथ-ही-साथ मन की वातें शुरू होती हैं।

लाडली वावू तव ज्यादा वड़े हाकिम नहीं हैं! देखा नहीं, एस० डी० ओ० साहव से भी छोटे हाकिम हैं वे?

हाँ, 'डवल' हाकिम की गरमी ही अलग होती है।

ऐसी डांट खायी है, मठ की जमीन को लेकर कि और गोलमाल करने का साहस नहीं करेगा। वावूसाहव के निकट से 'आधी वन्दोवस्त' में ली गई मठ की जमीन की फसलों का हिस्सा इस वार न देकर देखा जाय, तो अच्छा हो। देखा जाये। वावूसाहव क्या कहते हैं। मठ की पड़ती जमीन पर गाय चराने पर भी उन्होंने कुछ नहीं कहा था, सतियागिरा के दिन उतनी गालियाँ भी वे हजम कर गये हैं। वावू साहव को न देकर वालन्टियर को कुछ देने से अच्छा होगा? उसके भी तो वाल-वच्चे हैं अपने गाँव में।

वड़का माभी की भी वही राय है। तुम भी वूढ़ा दादा की तरह इन सव मामलों को लेकर फिस-फिस न करना ढोड़ाय, जो होने को है सो होगा। वाद में देखा जाएगा। आजकल काम लोगों के दरवाजे-दरवाजे पर घूम रहा है।

यह वात ढोड़ाय भी जानता है। यही परसों ही तो इनसान अली आया था, आदमी के लिए। उसी ने कहा, राजपूत लोग डिस्टीवोड का अरगड़ा उससे छीनकर उसकी 'सुयनी' करेगा। लड़ाई के लिए सरकार वहादुर ने डिस्टिवोड के हाथों से पक्की ले ली है। अव वह पक्की के किनारेवाले हर गाँव में आदमी रखेगी, रास्ता मरम्मत करने के लिए। उसी की ठीकेदारी इनसान अली ने पाई है। इनसान अली अड़गड़िया और भी कह गया था कि इसीलिए वावूसाहव ने पक्की के किनारे वाले तीन हिस्से पेड़ों को भट कटवा लिया। जिरानिया में उन्हें चालान किया है। वह रपोट करेगा लाटसाहव के पास। आज ही शायद कहेगा एस० डी० ओ० साहव के निकट, दोनों ही तो 'लिग' के आदमी हैं। ढोड़ाय अगर फिर से डिस्टीवोड के रास्ता मरम्मत की नौकरी ले! सोचने में भी वड़ा अच्छा लगता है। कहाँ गया है वह सनीचरा-वुधू का दल। रास्ते में काम करते-करते यदि वह कोशी-स्नान के दिन देखे कि वैलगाड़ी पर रमिया और उसका लड़का जा रहा है?....मन उदास हो जाता है।

नहीं, अभी पक्की की नौकरी लेने से ये लोग समझेंगे कि वावूसाहव के मुँह में इन लोगों को छोड़ वह भागकर जान बचा रहा है। ऐसा नहीं होगा।

नई खबरों वाला दूत

आजकल साल में जितने दिन हैं, उतनी खबरें है, हाट में जितने लोग हैं, उतनी ही खबरें हैं। और सभी खबरें सत्य हैं। नहीं पाने से मन ललचता है, मधु के छत्ते की खोज न पाने से जैसा लगता है, वैसा ही। अब तक मठ के मैदान में खबरें काफी दिनों तक टिकती थीं। उसमें से निचोड़-निचोड़कर रस लेना पड़ता था नौ-महीने, छै महीने तक। आजकल की खबरें आती हैं दौड़ लगाती हुई। एक सच्ची खबर दूसरी सच्ची खबर को ठेलकर अपनी जगह बना लेती है। कलवाली खबर कल खूब सच्ची थी, आजवाली खबर आज और भी सच्ची है। लेकिन सच के अन्दर भी तेज और फीका है। हाट के सत्य की अपेक्षा गंज के बाजार का सत्य कड़ा है। गनौरी की कुरसेला से लाई हुई खबर और भी कड़ी है। वालन्टियर की जिरानिया से लायी हुई रामायण के हर्फ की खबर—उसके ऊपर तो कोई बात ही नहीं है।

जापानी लोगों ने हिटलर के साथ हाथ मिलाया है। अबर बाध का खेल है जर्मनवाला। ले ले लाला। सुरुजजी महाराज और भुखभगमान की पूजा करते हैं जपानी लोग!

गाय-बाप के गोलमाल में वे नहीं हैं। मजा चखायेंगे वे इनसान अली मड़ग-ड़िया को!

''कागज से वे लोग हवाई जहाज बनाते हैं, रबर से जहाज बनाते हैं। टॉमी पल्टन को वे पानी पिलाकर छोड़ेंगे। पानी के नीचे से एकदम वे कलकत्ता से कुरसेला पहुँच जायेंगे।

राजपारभंगा की ओर से जब रेलगाड़ी भर आदमी को बिना कीमत पूड़ी तरकारी खिलायी जा रही थी, उसी समय एक दिन कोइरी टोला की कच्चे मिर्च की गाड़ियाँ नौरंगी लाल के गोले से लौट आयीं। लोगों का कहना है कि पूरबी बंगाल मुल्क को जपानी लोगों ने ले लिया है। हाट में और कितना कच्चा मिर्च बेचा जाये? सब बरबाद हो गये। कुछ दिनों के बाद कच्चे मिर्च की बिक्री फिर से हो रही है—नौरंगी लाल के गोले में, ऐसा सुनने में आता है। जिस गनौरी ने पहले वाली खबर दी थी, वही कह जाता है कि 'टिसन मास्टर' ने बखेड़ा शुरू किया था। वह जरूरत से ज्यादा 'पान खाना' चाह रहा था। इसीलिए कुछ दिनों तक नौरंगीलाल ने कच्चे मिर्च की खरीद बन्द कर दी थी। जपानी लोगों ने पूरबी बंगला को ले लिया है, न खाख!

पहले का जमाना होता, तो बिल्टा आदि उससे जरूर पूछते कि वह कितने

मुँह से बोलता है ? पर अभी किसी को यह ख्याल नहीं आता है । सात जंगल की लकड़ियाँ इकट्ठी कर बंडल बांधी है, सभी क्या समान रूप से जलती हैं ?

लेकिन हाँ, वालन्टियर की खबर के साथ गनौरी की खबर की तुलना करना ? किताब देखकर गनौरी कहे, तो सही कि रामनौमी कब है ? एक महीना पहले वालन्टियर कह गया था कि दूसरे महीने से पक्की से बैलगाड़ी नहीं जाने दिया जायेगा । कच्चे अंश से भी नहीं । पक्की से चलेगी केवल हवागाड़ी, फौजी सड़क बनी है पक्की, कामाख्या माई के देश से सरकार ने पच्छिम भागने का रास्ता बना रही है । वालन्टियर ने ठीक कहा था, या नहीं ? बरसात में कोई जिरानिया के बाजार में जूट ले जा सके थे ?

पक्की पर हरदम फौजी हवागाड़ी चल रही है । आखिर कितनी गाड़ियाँ फौजों की थीं ? वालन्टियर ने कहा था कि जिरानिया में टुरमन फारम की हलवाली हवागाड़ी मरम्मत के लिए और रखने के लिए जो घर था न, वहाँ सरकार ने हवागाड़ी मरम्मत करने का कारखाना खोला है । पक्की हिस्सा, एकदम टूटी हुई हवागाड़ियों से भर गया है । कितने ही घर उस तरफ बन रहे हैं । वहाँ बिजली लगायी जायेगी, और पूरब की तरफ वाले टुरमन के फारम के सीधा रेललाइन के पास फौज के साहबों ने काठ का स्टेशन बनवाया है । वहाँ उन लोगों ने बड़े-बड़े छप्पर बनाये हैं । गाय, घोड़े, बकरियाँ, खच्चर और भेड़ों से वे भरे हुए हैं । बलूची फौजी हैं । मुसलमान के अलावा इतना कसाई, और कौन होगा ? ऐसा होने पर भी मुसलमान बिगड़ेंगे, इस भय से सरकार ने वहाँ ऊँट और सूअर नहीं रखा है । फौज है या हाथी है । गाड़ीवान ! गाड़ीवान ! वर्दी पहना है, इस कारण बकरी के चरवाहे को फौज नहीं कह सकते हैं । और फारम का क्या हाल है, सो जानते हैं न ढोड़ायजी ? उन सब जानवरों को खिलाने के लिए विलायती घास रोपी गयी है । फिर उसका यत्न भी कैसा ? मरनाधार से नल लगाकर पिचकारी से जल दिया जा रहा है, खच्चरों के खाने की घास पर !

ढोड़ाय जानता है कि वालन्टियर झूठ नहीं बोलता है ।

वालन्टियर और भी कहे पक्की के किनारे वाली जगहों की खबरें । वहाँ के लोगों की कोई बात तो नहीं कहता है ? टुरमन फारम पर मन-ही-मन उसे आक्रोश है । उसने बकरहट्टा के मैदान को सदा के लिए नष्ट कर दिया था । चीनाबदाम का बीज देने आया था उस बार । हवागाड़ी के हल से चीनाबदाम पैदा करने चले थे, अब से फलेगी बकरी की 'भेलारी' ।

तब 'पक्की' भी क्या बदल गई ? खेत का रंग बदलता है, आदमी का मन बदलता है, आज का छोटा बच्चा कल जवान हो जाता है, ओझा की ताकत घटती है, रोजगार की धारा बदलती है, ततमा लोगों का मँडर बैलगाड़ी हांकता है, दुनिया की सभी चीजें बदलती हैं । बदलती नहीं केवल पक्की और रामायण । इन दोनों के साथ जो उसकी नाड़ी बँधी हुई है । ये सदा एक-सी हैं । पक्की के पीपल के पत्ते जाड़े में झरें, पछिया हवा से नये पत्ते उगें, बरसात में रास्ते की मिट्टी धुल जाएं । सड़क को चाहे

जितनी भी चौड़ी क्यों न करो, कमख्या जी से अगर चाहो तो उसे आगे ले जाओ न, इन बातों को तो बदलना नहीं कहता। कच्चे अंश से भी बैलगाड़ियाँ नहीं जायेंगी, गाड़ीवान का गाना रात को नहीं सुनाई पड़ेगा, लोग उसे इस्तेमाल नहीं कर सकेंगे, भेड़-बकरियों की कदर आदमी से भी अधिक होगी—इसी को कहते हैं बदलना। सिलीगुड़ी-नकसलबाड़ी से गोरे लोगों के लिए इस पथ से रोज डोम लोग सूअरों के झुंड ले जाते हैं, लेकिन लोगों को बैलगाड़ी पर धान नहीं ले जाने देते हैं। अद्भुत है। लगता है जैसे फौजी आदमी को छोड़ दुनिया में और कोई आदमी नहीं है।

वालन्टियर की बातें कानों में आ रही हैं—रुक-रुक कर, दम ले-लेकर—सौरा, सलिमपुर, बिरसौनी, बाजितगंज, सात कोदरिया..............................नहीं, नहीं, बिसकंधा मौजा का नाम नहीं है तालिका में.........

वालन्टियर की बातें अब शेष हुईं। वालन्टियर के हर सप्ताह जिरानिया से महात्मा जी का कागज लेकर आते ही सभी उसे घेर कर बैठते हैं। खबरें शेष होने पर सभी वालन्टियर को महात्मा जी के कागज में कचहरी का निलामी इश्तहार देखने को कहते हैं। कहीं बिसकंधा का तो नाम नहीं है? बाबू साहब का जरा भी विश्वास नहीं है। देखता तो हूँ। चाहे लाखों लड़ाई की खबर कहो, महात्मा जी की खबर कहो, और जिरानिया की फौजी छावनी की खबर कहो, इसके सामने और कोई खबर, खबर ही नहीं है।

जमीन के सामने भला दूसरी कौन-सी बात महत्त्वपूर्ण है? फौज चकरहट्टा के के मैदान की जमीन लेती है, सरकार कोशी के किनारे वाली जमीन लेती है। रोजगार का अर्थ ही जो है—जमीन। फिर रोजगार के साथ इज्जत चाहने पर भी जमीन की जरूरत है। खेती की जमीन, चारागाह की जमीन, भुट्टा की जमीन, धान की जमीन, तम्बाकू की जमीन, बसात की जमीन। जिसे है, वह और भी चाहता है, जिसे किसी दिन नहीं थी, वह भी आज चाहता है, और जिनकी थी और चली गई है, वे चाहेंगे ही। बदलने दो दुनिया को। रामायण का परिवर्तन हो, तो हो। जमीन, जमीन और जमीन! यद्यपि सभी उन्हें चाहते हैं रामायण के दृष्टान्त के बल पर ही!

एक अनजानी उत्कंठा से ढोड़ाय का मन उदास हो गया है!

□

दिव्य-दृष्टि लाभ

पक्की ढोड़ाय के पास एक सजीव वस्तु है। उसे किसी प्रकार का सन्देह नहीं है कि पक्की दूसरे किस्म की होती जा रही है। लोहे में घुन लगा है, सोने में जंग लगा

है, यह कलि का अन्त हो आया है क्या ? बाबूसाहब ने पक्की के किनारे के अनेक आम के पेड़ों को कटवा लिया था। कोशी से लेकर सिलिगुड़ी तक पक्की के पेड़ों के मधु के छत्तों को एक पंजाबी ठेकेदार ने ठेका लिया है। आसाम में फौजों के लिए शहद चलान किया जायेगा। फौजी हाकिम लोग, पक्की के किनारे वाली जमीन कितनी दूर तक उन लोगों की है, इस पर दिमाग नहीं लड़ाते हैं। इसीलिए बाबूसाहब ने दोनों किनारे की मिट्टी काटकर बनाए हुए गढ़ों में धान लगाया है।

दुनिया ठीक बदल नहीं रही है, टूटकर गिर रही है, धड़ाम-धड़ाम। इसके खूंटे इतने कमजोर हैं, यह पहले ज्ञात नहीं था। पैरों के नीचे की धरती कठिन है, उस पर खड़े होकर भी चैन नहीं है, सुनने को ही सकरकन्द साढ़े नौ रुपये मन है। ओझा के राज्य में उड़कर आया और जमकर बैठ गया राजा—सरकार बहादुर। इतने दिन वह 'इनर धनुस' की आड़ में इनरजी महाराज की तरह सात समुन्दर तेरह नदी के पार का राजा था। सुरुज भगवान की रूपकथा का राजा रखते थे दरबान, उस दरबान को पलकें तक झँपकाने का हुक्म नहीं था। 'राजकुमार' ढोला कुमार और बिजा सिंह का रूप तो कीर्तन के सुर में और ढोलक के बोल की पकड़ में आता था। इस राजा को जानने का वह उपाय भी नहीं है। वही राजा पास आ गये हैं। उसका अस्पष्ट रूप दिखाई न पड़ने पर भी उसे अनुभव किया जा सकता है। पक्की और जूट की कीमत का राजा, कपड़े और किरासन का राजा, जमीन और जमींदार, हाकिम—दरोगा और फौज का राजा, आसमान के हवाई-जहाज का राजा, हवा में फौजी हवागाड़ी की गंध का राजा। रामायण में ऐसे राजे का उल्लेख नहीं है। 'बिलेक मार्केट' का उल्लेख है ? लाडली बाबू ने अपने बैठकखाने में दूकान मन्जूर कर दिया था अनोखी बाबू, इनसान अली अड़गड़िया और गिदर मंडल इन तीनों को। पन्द्रह रुपये देकर नाम लिखाने पर, तब चीनीखोर लोग उस दूकान से सौदा पा सकते हैं। रामायण पढ़े हुए पण्डित जी भी नहीं जानते थे कि उस दूकान का नाम 'कन्ट्रोल' है। ये सब चीजें रामायण में नहीं रहती हैं, रहती हैं मास्टर साहब की नीलामी इस्तेहार वाली किताब में। वालन्टियर जी जानते हैं। इसीलिए न ये सब जानने के लिए वालन्टियरजी के पास बैठना पड़ता है।

बदलता है, फिर भी नहीं बदलता है, पुरानी रामायण और नयी रामायण उलझ जाती है। इनसान अली के पक्की के ठेकेदार होने के बाद भी उसका इनसान अली अड़गड़िया नाम दूर नहीं होता है। गिदर मंडल का मंडलपन दूर हुआ, फिर भी वह गिदर मण्डल ही रह जाता है। अड़गड़े में काम करने पर भी कोई उसे अड़गड़िया नहीं कहता है। कलकत्ते को सकरकन्द चलान करने का ठीका लेने पर भी कोई उसे ठीकेदार साहब नहीं कहता है। भांगखोर अनोखी बाबू को रात जागनी पड़ती है, इस-लिए दूसरी चीज खाते हैं। कौमी मोर्चे की सहायता से, कन्ट्रोल की दूकान के नाम से खरीदा हुआ नमक वह रोज रात को नाव पर लाद कर बंगाल मुल्क में चलान करते

हैं, फिर भी वह अपने को 'किसान' कहते हैं। कुरसेला के चीनी-मील के, और बस लाइन के मालिक हैं राजपारभंगा, फिर भी सभी उन्हें कहते हैं जमींदार।

जो भी चीजें हैं, सब सुनोगे आसाम जा रही हैं। दुनिया भर के लोग ठेकेदार हो गये हैं। मन दूसरे किस्म का होता जा रहा है! किसान लोगों ने गाय दुहना शुरू किया है। जिरानिया जिले में इतने दिनों तक गायें रखी जाती थीं—केवल बछड़े के लिए और गोबर के लिए। पेड़ से गिरे हुए फल, जिसकी इच्छा हो उसे लेने का अधिकार था। आजकल ठेकेदार लोग कच्चे आम को ही चलान कर दे रहे हैं, तो फिर पेड़ के नीचे फल आये कहाँ से? अगर दैवात् किसी बगीचे में पेड़ पर आम पकने दिया जाता है, तो वहाँ भी ठेकेदार लोग पेड़ के नीचे वाले फलों को उठाने नहीं दे रहे हैं।

आखिर कितना खा सकते हैं फौजी लोग?

ढोड़ाय किसी भी तरह नहीं समझ पाता है कि वे लोग इतनी चीजें लेकर क्या करते हैं—मधु से सकरकन्द तक।

वालन्टियर कहता है—'जो जैसा पाये, कर लेने का मौका आया है। ऐसा मौका जीवन में एक बार से ज्यादा नहीं आता है। कल यह सुविधा भी नहीं रह सकती है। महात्माजी क्या यों ही गरमाये हैं? बरदास्त के बाहर हो गया है। महात्माजी कह गये हैं कि यही उनकी अन्तिम लड़ाई है, दुनिया में रामराज्य लाने की लड़ाई!'

रामचन्द्र के अवतार हैं महात्माजी। रामायण के अक्षरों के समान उनकी बातों का वजन है।

'अब और पहले की तरह नमक तैयारी का फिस-स्-स और सतियागिरा का फुस्-स्-स् नहीं। वे सब थी लगे-लुल्हे की 'नौटंकी'। इस बार मर्द की लड़ाई है। रेल लाइन उखाड़ने की, तार काटने की तथा और भी अनेक-अनेक लड़ाइयाँ मास्टर-साहब ने पढ़ने से खबर पायी है।'

मास्टर साहब ने खबर पायी है? पढ़ने से? तब इस खबर पर अविश्वास करने का नहीं है। रेलगाड़ी से क्या रामराज्य में पहुँचा जा सकता है? उसके सहारे सभी चीजें आसाम भेजी जा सकती हैं, कुरसेला और जिरानिया स्टेशन से। बूढ़ा दादा वालन्टियर को पूछ रहा है; मतवाली गोरा-पल्टन क्या किरासन तेल पीती है? नहीं, तो इतने तेल का क्या होता है? बूढ़ा दादा पर ढोड़ाय का मन विद्रूप हो जाता है। कितना बेकार बक सकता है वह! अब जरूर वह दियासलाई, नमक और कपड़े की पोथी खोलकर बैठेगा। नहीं, नहीं, वालन्टियर, ये सब बातें जाने दीजिए। महात्माजी की बात कहिए। ढोड़ाय की इच्छा होती है और भी सुने, सभी बातें सुने। [illegible] इसमे रामायण सुनने का पुण्य। फिर भी ये बातें शुरू होने पर वालन्टियर से हटकर बैठने की इच्छा होती है। रावण की अपेक्षा अंग्रेज सरकार पर आक्रोश और भी [illegible] हो उठता है। धन्य है उसके पुण्य का बल, जो वह बैठे महात्मा का दर्शन कर सका था। इस दर्शन के साथ उसके जीवन का कितना अंश [illegible]

क्यों, और भी एक आदमी का ! वह अभी कहाँ पानी-कादों में घूमती फिर रही है, जीती है या मर गयी हैं, कोई नहीं जानता है।....

अजाने ढोड़ाय का हाथ चला जाता है कमर के बटुए पर, ऊपर से दाव-दाव कर देखने से चाँदी के सिक्के का पता चलता है। अच्छे लोगों का, अन्याय का प्रतिवाद करने का अद्‌भुत ढंग है। सगिया प्रतिवाद करती है, अपने को कादो में उतारकर, वावा ढोड़ाय से वदला लेते हैं अपने को हटाकर, महात्माजी अंग्रेजों के जुलम का जवाव देते हैं, जेल की खिचड़ी खाकर, सीताजी अपने को निश्चिन्त कर लेती हैं, धरतीमाई की गोद में जाकर।

'अजी वालन्टियरजी, गोसाईं वादल में ढँका हुआ है, इसलिए क्या आज खाने की फ़ुर्सत नहीं होगी ?'

वालन्टियर एक-एक शाम एक-एक आदमी के यहाँ खाता है। गनौरी की बहू उसे वुलाने आयी है।

'लगता है अब इस गाँव का दाना-पानी मेरे लिए खतम हुआ।'

फिर क्या हुआ ? गनौरी की वहू का मुँह डर के मारे सूख जाता है। इतने बड़े आदमी को खिलाने में कोई त्रुटि हो गई है ? इसका पति रहता है कुरसेला। गाँव में जमीन खरीदने के लायक रुपये जमने पर ही वह लौटेगा। अपने कष्टपूर्ण संसार में कितनी काट-छाँट करके उसे वालन्टियर को खिलाने की व्यवस्था करनी पड़ती है।

'नहीं, नहीं, सो नहीं कहता हूँ। जेल की खिचड़ी जल्द ही खानी पड़ेगी मुझे' —वालन्टिर सारा इतराना चाहता है।

'वावूसाहव ?'

'औरत की और कितनी अक्ल होगी ?' वूढ़ा दादा झुकी कमर को सीधा कर वैठता है, फिर इस वुद्धिहीना औरत की सारी वातें एक ही वाक्य में पानी की तरह साफ-साफ समझा देता है—'महात्माजी की लाइन उखाड़ी जायेगी।'

वालन्टियर का खाना-पीना शेष होने पर गांव भर के लोग उसे विदा देने आते हैं। 'जिरानिया से खवर भेजना वालन्टियर।'

'महात्माजी का मुँह रखना ढोड़ाय !'

'अजी वालन्टियर, रुको, रुको।' गनौरी की वहू दौड़ी आ रही है, अपने विछाने वाले वोरे को लेकर। 'देह और माथे पर इसे दे लो, नहीं तो एक कोस जाते न जाते इस तरह का चेहरा हो जाएगा।' गनौरी की वहू वावू साहव के मकई के अस्त-व्यस्त खेत की भुस की मूर्त्ति दिखाती है। जिस दिन कलस्टर साहव लाडली वावू के साथ कन्ट्रोल खोलने आये थे, उस दिन उन्हें दिखाने के लिये तितली-छाँट मूंछवाली हिटलर की भुस की मूर्त्ति यहाँ खड़ी की गयी थी। वे सव खुश हुए थे। धूप और वर्षा में अभी उसका चेहरा वदल गया है। उसे देखते ही गनौरी वहू हँसी थी, जिससे रामायण पढ़े हुए वालन्टियर जी पाट का वोरा लेते वक्त कुंठित होने का अवसर न पाये।

महात्मा जी ने अंगरेज को सावधान कर दिया है। कैसे क्या करना होगा, सो वालन्टियर नहीं कह गया है। लेकिन गिलहरी का कर्त्तव्य करने में ढोड़ाय पीछे नहीं रहेगा।



विसकंधा का अंगीकार

बाबूसाहब बहुत दिनों के अभ्यास के अनुसार आज भी हाट आये थे। दो दिनों से उनके मन में बड़ी आशंका रही है। उनकी छब्बीस बीघे की बाँस की बाड़ी को निर्मूल कर अनोखी बाबू ने कोशी-गंगा जी द्वारा बाँसों को पटने भेजा है। एक रुपये में एक बाँस है। इसलिए क्या सभी बाँस बेच देगा? लड़कों का यह लालचीपन बाबू साहब को पसन्द नहीं है। कहने पर भी नहीं सुनता है। तुम लोगों की चीज है, जो अच्छा समझो, करो। लेकिन उन्होंने शर्त करवा ली है कि उसमें से गाय, बैल, भैंस आदि खरीदने होंगे, चाहे कितना भी ज्यादा दाम क्यों न पड़े। कम से कम पाँच सौ गाय भैंस अगर न हो, तो उन्हें, अपने चरवाहे के दल के साथ मोरंग मे चरने के लिए नहीं भेजा जा सकता है। कई आदमी मिलकर भेजना होगा। वैसे लोगों को इस अंचल मे ऊँचे लोगों के अन्दर शामिल किया जाता है। ऐसी कीमत बढ़ रही है गाय-भैंसों की! बाँस की कीमत बढ़ना ही अनोखी बाबू देख रहे हैं, भैंस की कीमत बढ़ना उनकी नजर में नहीं पड़ता है।

उसी बाँस-बाड़ी को जमीन से वे बाँस की जड़ खोदकर निकलवा रहे थे, कई दिनों से। मुसहरों पर कोई काम छोड़कर निश्चिन्त होने का उपाय नहीं है। एक दिन कमाते हैं, तो दो दिन आराम करते हैं। तीन दिनों से बे-अकल वाले आदमी काम पर नहीं आ रहे हैं। वे समझते नहीं हैं कि आजकल के दस रुपये मन सकरकन्द के दिनों मे एक धूर जमीन बिना आबाद किये छोड़ देने से किसान का कितना नुकसान होता है। पोपई मुसहर हाट जरूर आया है, लेकिन वह गया कहां?

उसका दर्शन होता है कुएँ की बगलवाली भीड़ मे। राजपूत टोले के बिधितरवा को भी तो देख रहा हूँ एक कागज देख-देखकर न जाने क्या पढ़ रहा है। बैठो मुसहर हाड़ी लोगों से सटकर! महात्मा जी का हल्ला! ये सब जिन्दगी में उन्होंने काफी देखा है, सरकार बहादुर भुट्टा पीटने की तरह पीट देगी, और सब 'टांय-टांय फिस्-स' हो जायेगा। कई साल बीच देकर ऐसा होता ही है। इस बार जरा जल्दी हो रहा है। तो भाई, तुम लोग करते हो, तो करो। लेकिन उसमें फिर मुसहर-वुसहर को लेते हो क्यों?

'अरे पोपई, जरा इधर सुन।'

'यहाँ शोर मत मचाइए। कल सुबह आठ-नौ बजे जाऊँगा।'

'क्यों, यहाँ क्या रामायण-पाठ हो रहा है?' 'हाट में बातें करने पर भी टैक्स देना होगा? फिर यहाँ बकवास किया तो जीभ खींच कर, टुकड़े-टुकड़े कर फेंक दूँगा।'

बहुदर्शी बाबू साहब पल भर में समझ जाते हैं कि ये लोग जो कह रहे हैं, करने में वे आज नहीं हिचकेंगे। दरोगा साहब ने परसों ठीक ही कहा था, बाबूसाहब, इनसान अली, गिदर मंडल तीनों ने ही हँसकर टाल दिया था। उनके टोले का विचित्र नाम का छोकड़ा क्या सब कह रहा है, वह उनके कानों में भी नहीं जाता है। चारों तरफ इतनी भीड़ जम गई है कि बीच से निकलना भी कठिन है। वे वहीं पर बैठ जाते हैं। घड़ी का टाइम छाँटता है साला मुसहर! उसने सीखा है कहाँ से?

सरकार जुलुमकार! अंगरेज जुलुमकार! कहकर विचितर ने अपनी बात खत्म की। महात्मा जी गिरफ्तार! हो जाओ तैयार! ढोड़ाय सहसा उठ खड़ा हुआ है।

'कोई महात्मा जी के हुक्म के विरुद्ध नहीं जाना। जो खिलाफ होगा, वह पबलिस का दुश्मन है। बिसकंधा के बीसों कन्धे एक होने पर वहाँ किसी की दाल नहीं गलेगी। उनकी बात सब मानोगे न?'

सभी चिल्लाकर जवाब देते हैं, 'जरूर।'

'मर्द की एक बात।'

'जरूर।'

'देखो, जिसका एक बाप, उसकी एक बात!'

ऐसी मन के अनुकूल बातें क्या विचितर सिंह कर सकता है? ढोड़ाय की बातें मन में जाकर चुभती हैं। पैर ठोक-ठोककर तथा हाथ हिला-हिलाकर सभी चिल्लाते हैं। एक बाप, एक बात! एक बाप, एक बात! इतनी मन के अनुकूल बातें उन्होंने इसके पहले कभी नहीं सुनी थीं!

बिल्टा एक घंटा हाथ में लेकर खड़ा था। सहसा उसे विचितर सिंह के हाथ में देकर वह भीड़ ठेल कर बाबूसाहब के पास आता है। उनका हाथ पकड़ कर वह उन्हें खड़ा करता है। चुप क्यों हो? बोलो एक बाप, एक बात! बोलो, बोलो, रुको नहीं!

आज किसका मुँह देखकर बाबूसाहब जगे थे? सभी के थककर रुकने के बाद बड़का माँझी, लचुआ चौकीदार का हाथ पकड़ लेता है। कहोगे क्यों ये सब बातें अपने बाप दरोगा से? वह गर्दन हिलाकर समझाता है कि वह नहीं कहेगा!

'एक बाप, एक बात!'

चौकीदार को पकड़कर बाबूसाहब की बगल में खड़ा किया जाता है।

फिर बोलो! दोनों एक साथ बोलो!

महात्मा जी के काम में वे गिलहरी का कर्तव्य-मात्र कर सके हैं, यह सन्तोष

मन में लेकर वे सभी उस दिन घर लौटते हैं। ढोड़ाय को आगे रखकर मन में भरोसा मिलता है।

बिल्टा ने निश्चय किया था कि वह हाट में घंटा बजा देगा कि और किसी को चौकीदारी टैक्स नहीं देना होगा। एक बाप, एक बात के बीच में वह यथासमय वैसा करना भूल गया। और, अभी हाट टूट गया है।

□

रेशम-कोठी-दहन

इसके बाद कुछ दिन प्रायः नशे के बीच बीत जाते हैं। जो भी हो, कुछ करने का एक नशा। दल बाँध-बाँधकर सभी इधर-उधर जगह-जगह दौड़ते-फिरते हैं। सभी सब कुछ कह रहे हैं, महात्मा जी की सेवा के लिए। थाने में स्वराज हो गया। ढोड़ाय किसी को नहीं कहता है, पर मन-ही-मन उसे दुःख होता है कि उसने महात्मा जी का कुछ भी काम करने का मौका नहीं पाया! लोग समझें, दस आदमी कहें कि वह खूब महात्मा जी का काम कर रहा है। आज कई दिनों से उसकी यह कामना प्रबल हो उठी है।

गंज के बाजार का दागी अपराधी बिसुनी केवट तक नौपत लाल और वालन्टियर की प्रशंसा पा गया महात्मा जी का काम कर। थाने के कागज जलाने के दिन उसने दरोगा साहब की चालाकी पकड़ ली। लोग कहते हैं—ससुरा दरोगा ने 'दागी रजिस्टर' छुपा कर रद्दी कागजों को जलाने के लिए दिया था। फिर पिट्रोल से छोटे दरोगा समेत सारे थाने के कागजों को वह खत्म करता है। बीच से फाँकी के बदौलत मत बटोर लिया नौपतलाल और बिचित्तर सिंह ने। लेकिन वह बिसुनी केवट की तरह महात्मा जी का काम नहीं करना चाहता है। वालन्टियर का दर्शन मिलना ही कठिन है। नहीं तो ढोड़ाय उससे एक बात पूछता।.........

एक दिन बिसकंधा का दल कुरसेला के पास की एक रेल लाइन की घटना देख कर लौट रहा है। कंधे से तीर-धनुष लटकाये बड़का मांझी ने तान छेड़ी है। नशे की वजह से गला बन्द आया है। कल रात से ही संथाल टोले में पचई की धार बह रही है।

स्वराज हो गया है। बड़े दरोगा भागे हैं, सरकिल मनीजर ने हाकिम-टोप खोल डाली है। अब तक जुलुमकार सरकार को पचई पीने के कागज के कारण साल में एक रुपया देना पड़ता था। जय हो महात्मा जी! उनके राज्य में पचई पीने के लिए और कागज लेना नहीं पड़ेगा। मिलता अभी वह पचई का हाकिम, तो उसका कोट-

पतलून छीन लिया जाता। नाच साला, हाकिम नाच ! कैसे स्वराज आ गया, ठीक समझ में भी नहीं आया। महात्मा जी का काम जी भर कर किया भी नहीं गया। इसलिए दुःख के मारे बड़का मांझी को रुलाई आ गई है। इसीलिए टूटे हुए स्वर में उसने तान छेड़ी है—

........रेल लाइन उखाड़ डाली
तो पैर तोड़ दिये सरकार के।
तार काट दिये—
तो कान काट दिये सरकार के।
थाना जला दिये—
तो आँखें फोड़ दीं सरकार की !

नशे के आवेश में तू अंगरेजों के लिए रो रहा है क्या, बड़का मांझी ?

नशे के आवेश में ! पचई का भी क्या नशा होता है, और वह भी क्या लगेगा बड़का मांझी को ? वह देखो, कोशी के किनारे कौवे-चील उड़ रहे हैं—साफ देख रहा हूँ। नशा होता, तो क्या देख सकता था ?

यह कहते ही बड़का माझी को अपने पर सन्देह होता है। एक चील को उतनी चीलें तो कहीं नहीं देख रहा है वह ?

बिल्टा कहता है—'लगता है पतंग-चतंग उड़ रहा है।'

बड़का माझी निश्चित होता है—खैर तब दृष्टि की भूल नहीं है। शिकारी की अभिज्ञ दृष्टि से वह समझता है कि कौवे-चील उड़ रहे हैं रेशम के कीड़े के घर के ऊपर। उगरा साफ कर शायद रुग्ण कीड़ों को गिराया गया है।

नजदीक आकर देखता है कि ठीक वही है। तितली के हाकिम हाफ पेंट पहन रेशम के कीड़ों के घर की सीढ़ी पर खड़े हैं। दरोगा ने राज्य छोड़ा, फिर तितली का हाकिम ! अब तक किसी ने 'तितली के हाकिम' शब्द पर हँसने लायक कुछ ढूंढ़ नहीं पाया था।

ठीक कहते हो बड़का मांझी ! पचई के हाकिम का फुफेरा भाई है तितली का हाकिम। चौकीदार ने वर्दी छोड़ी है, लेकिन तितली के साहब ने पतलून नहीं छोड़ा है। गुड् मोर्टिंग ! गुड़ मोर्टिंग तितली साहेब ! सभी उल्लास से चिल्ला उठते हैं। हाफ पैंट पहना हुआ वह आदमी डर के मारे घर के अन्दर घुस जाता है। सभी उसी तरफ बढ़ जाते हैं।

सहसा ढोड़ाय के चेहरे पर एक चीज झलक पड़ती है। हाथ के निकट का इतना जरूरी काम क्यों अब तक स्मरण नहीं आया था, यह सोचकर उसे आश्चर्य होता है।

ढोड़ाय कहता है, बाहर चले जाओ तितली साहब, घर में हम लोग आग लगा रहे हैं। छप्पर के खर सभी एक-एक मुट्ठी खींचकर निकालते हैं।

लुंगी पहनकर तितली साहब बाहर निकल आया है।

साँस बन्द करनेवाले धुँये के अन्दर से ढोड़ाय रेशम के कीड़ों के उगरों को एक-एक कर निकाल मैदान में रखता है। किलबिलाते पिल्लुओं को देखकर घृणा होती है।

'यह तो अजीब काण्ड है। किसके लिए उन्हें बाहर निकालता है? अभी तो चीलें खा जायेंगी।'

'खाने दो!'

माथे में लपेटे हुए अँगोछे को बड़का मामी माथे से खोलकर ढोड़ाय के पैरों के पास रखता है, नाटक में उसने जैसा देखा है। 'ढोड़ाय, आज से मैं तेरा लोहा मान रहा हूँ। तेरे खून मे पानी नहीं है।'

ढोड़ाय को याद आती है बचपन की एक दिन की बात, जिस दिन रेवन गुणी ने लोहा माना था महात्मा जी का। आज संथाल टोली उसका लोहा मान रही है। इसमें आनन्द है। कल शायद और भी दूर के लोग उसकी तारीफ करेंगे। भेंट होने पर वालन्टियर जी उसकी पीठ ठोक देंगे। महात्मा जी का काम देखते ही देखते लोगों का मन बदल देता है। दूसरे कामों में केवल अपने गाँव के लोगों की ही प्रशंसा पाने से मन भर उठता है। इस काम में केवल उतने ही से तृप्ति नहीं होती है, किन्तु वैसी इज्जत पाने के लिए रामायण पढ़ा-हुआ आदमी होना पड़ता है।

उसे सचमुच तृप्ति हुई है पिल्लुओं को आग से बचाकर।

वास्तव में ढोड़ाय अपने को नहीं समझ सकता है। काम के अन्दर अपने को डुबाकर वह अपना संधान नहीं पाता है। कुछ दिन पहले की, जिस दिन पक्की के किनारे के बरगद का पेड़ काटकर रास्ता बन्द किया जा रहा था, उस दिन की बात है। कितनी मिहनत, कितनी हलचल थी, परन्तु उसमें से केवल एक ही बात उसे याद है। बहुत दिनों के बाद उस दिन उसने वहाँ गाँव की औरतों के बीच मोसम्मात को देखा था। मोसम्मात ने उसे एक तरफ अलग बुलाकर फुसफुसाकर कहा था—'तुम खुद बरगद का पेड़ काटने में मत रहना। उससे अमंगल होता है।'

कितनी अच्छी लगी थी उसे यह बात! महात्माजी के काम से भी अच्छा। उस दिन, कुछ क्षणों के लिए उसकी आँखों के सामने से महात्माजी का काम मिट गया था। वे बातें मन में गूँथ गई हैं। बड़का माँझी की बातें कानों में आ रही हैं।... मास्टर साहब कलस्टर होंगे। लाडली बाबू अंग्रेज के हाकिम होने गये थे, अब ले सुपनी! ढोड़ाय, तू दरोगा होने की कोशिश करना। तितली का हाकिम तो महात्माजी के राज्य में रहेगा ही।

□

आजाद-दस्ते में प्रवेश

जिस दिन बड़े दरोगा साहब को साथ लेकर गोरे लोग विसकंधा आये, उस दिन, सुबह को ही ढोड़ाय भाग आया था कोशी पार होकर आजाद दस्ते में। लचुआ चौकीदार ने खबर दे दी थी कि उसे पकड़ने के लिए ही टॉमी लोग आ रहे हैं।

चारों ओर की रंग-विरंगी चिड़िया लाल मुँहवाले खदेड़ने वालों को देखकर दिग्भ्रमित हो भाग रही थीं! साँझ हो जाने की वजह से एक ही पेड़ पर वे रात काट रही हैं। उसी का नाम है 'आजाद-दस्ता'। बोली मुखस्थ तोता है, नाचने वाली फिंगा है, पंक का पंछी टिटही है, सर्वज्ञ काक है। स्कूल के लड़के ही ज्यादा हैं। नाम पूछने पर नाम के अंत में वे 'आजाद' शब्द जोड़ देते हैं।

अच्छा-बुरा—जैसा आदमी चाहो, यहाँ पाओगे। काम के आदमी भी कम नहीं हैं? वालन्टियरजी हैं, भोपतलाल है, मिलिटरी से लौटा हुआ सरदारजी है, मास्टर साहब का दाहिना हाथ विसुन शुक्ला है। विसुन शुक्ला को घेर कर ही दल विकसित हुआ।

पुलिस की नजर बचाने के लिए दल के आदमी नये नाम पाते हैं, भोपतलाल का नाम हुआ है गांधी, विसुन शुक्ला का नाम हुआ है जवाहर, वालन्टियरजी का नाम हुआ है पटेल, विचितर सिंह का नाम हुआ है आजाद, मिलिटरी से लौटे हुए आदमी का नाम हुआ है सरदार। इस नाम के पाने से बढ़कर सम्मान दल में और नहीं है। इसे लेकर भी ईर्ष्या और द्वेष का भी अन्त नहीं है।

यह इलाका बाढ़ का है। तेरह मील के अन्दर हवागाड़ी का रास्ता नहीं है। टॉमी लोग यहाँ तक आ नहीं सकेंगे। निश्चिन्त होकर क्या-क्या गलतियाँ कर डाली हैं, उसी की विरामहीन चर्चा होती है।

ढोड़ाय के जाते ही वालन्टियरजी सबको कह देता है कि वह हम लोगों का परिचित आदमी है, खुफिया नहीं।

'वाबू साहब और इन्सान अली की चिड़िया मारने वाली दोनों बन्दूकों को अगर तू ने ले लिया होता रे ढोड़ाय।'

'वन्दूक! वन्दूक लेने को तो वालन्टियरजी ने कभी नहीं कहा है और भोपतलाल, तुम तो हम लोगों के वहाँ नहीं गये थे।'

सभी एक साथ हो-हो कर उठे। सबके चेहरे देखकर ढोड़ाय समझता है कि उसने अनजाने ही कहीं गलती कर डाली है। वह समझ नहीं पाता है कि उसने क्या कहा है? वालन्टियरजी कह देता है कि यहाँ वालन्टियरजी और भोपतलालजी कहकर पुकारना मना है, लेकिन जवाहर को विसुन शुक्ला कहकर बुला भी सकते हो। वह नया आया है। इसलिए इस बार के लिए उसकी अज्ञता दल के लोग माफ कर देते हैं।

गांधी हँसता है—'चिड़ियां मारनेवाली बन्दूक की बातें कहां से ले उड़े, तुम लोग अंग्रेजों के साथ लड़ोगे ?'

कोने से 'पटेल' गरज उठता है। 'डींग मत हांको गांधी! मह सबके सामने कह दिया है गांधी अगर चिड़िया मारनेवाली बन्दूक में भी टोटा भर सके तो मेरे नाम से कुत्ता पालना। फौजों से तो तीन-तीन राइफलें पड़ी हुई हैं। किसी को तो एक दिन भी चलाते नहीं देखा।'

'चलावेगा क्या टोटा खर्च करने के लिए। हम लोगों के स्कूल के पंडितजी कहते थे 'वृहद् दन्ता हि क्वचित् मूर्खाः।' पटेल इस 'क्वचित्' के बीच पड़ गया है।'

पटेल के सामने वाले कई दांत बड़े हैं। गुस्से से उसका सारा शरीर जल उठता है। एक साल भागलपुर कालेज में गांधी ने पढ़ा था, इसीलिए क्या वह संस्कृत में अपमान करेगा ?

दोनों में हाथा-पाई होने का उपक्रम होता है। जवाहर उन दोनों के बीच में पड़कर मामले को और ज्यादा बढ़ने से रोकता है।

कोई पीछे से कहता है, जवाहर सभी बातों में गांधी का पक्ष खींचकर बोल बोलते हैं। आजाद दस्ते में ये सब नहीं चलेगा।

फिर एक हल्ला शुरू होता है।

यह सब देख कर ढोढ़ाय एकदम हक्का-बक्का रह जाता है।

उस रात को ही ढोढ़ाय पर सामने वाले मैदान में पहरा देने की ड्यूटी पड़ती है। दो-दो आदमी एक साथ ड्यूटी करते हैं—गंज के बाजार का दागी अपराधी बिसुनी केवट। इसी ने थाना जलाने के दिन दरोगा साहब की चालाकी पकड़ ली थी।

वह ढोढ़ाय के साथ गप्प जमाता है। दुनियां की बहुत-सी खबरें वह रखता है।

"''तेरे बहू बेटे नहीं हैं घर में, तो फिर तू क्यों भागता फिर रहा है ? कोढ़ों के घर जलाने की सजा और कितने दिनों तक होगी, दूध में खटाई देकर जेल जाओगे, फिर छुटकारा पाकर वही दही खाओगे।''' बिसुन शुक्ला को इन लोगों के दल का पंडा क्यों बनाया है, जानते हो ? अभी काम में तो है केवल चंदा लेना। बिसुन शुक्ला मास्टर साहब का चेला है न, फिर भी लोग समझेंगे कि वे रुपये महात्माजी के काम में ही लगेंगे। देखा नहीं, इसीलिए तो दल की तरफ से नियम बना दिया गया है कि उसे बिसुन शुक्ला भी कह सकते हैं जवाहर भी कह सकते हैं। उन पांच-पांडवों को और किसी को असल नाम लेकर पुकारो तो सही! तभी खाना बन्द हो जायेगा।'''' पांचों गये भुखनाहा के बालेसर यादव के घर सोने के लिए। लोग ऐसा कहते हैं कि वह विश्वासी आदमी है। अरे सब समझता हूं, खूब दूध-दही चला रहे हैं वहां रोज रात को! देखा नहीं, उन्होंने यहां कितना थोड़ा-थोड़ा भात खाया ? तुम लोगों ने

भी महात्माजी का काम किया है, हम लोगों ने भी महात्माजी का काम लिया है। फिर भी दूध-दही के वक्त सिर्फ तुम ही लोग क्यों रहोगे ? अपने लोगों ने सब गांधी जवाहर वगैरह अच्छा-अच्छा नाम ले लिया। अरे मेरे अच्छे नाम लेने वालो रे ! जेल के अन्दर इन महात्माजी के चेले लोगों के कितने ही काण्ड मैंने देखे हैं।....बिसुन शुक्ला ने करनजाहा यूनियन बोर्ड को क्यों जलाया है, जानते हो ? उसने यूनियन बोर्ड का कर्ज खाया था। इसीलिए उसने हिसाब के कागज-पत्र नष्ट कर दिये। और आजाद दस्ते के नाम से लिये गये चंदे के रुपये भी ये भूत मिलकर खा जायेंगे। यह मैंने कह दिया, देख लेना। उसे अब चन्दा मत कहो।....

अपनी तर्जनी टेढ़ी कर वह बन्दूक का घोड़ा दाबने की मुद्रा दिखाता है। ... इसी के डर से। नहीं तो क्या कोई हाथ उड़ेलता ?....और कुछ दिनों तक देखो न ? रेलगाड़ी फिर से चलनी शुरू हो गयी है। यह रुपये का थैला ले-लेकर सभी काम के नाम से निकलेंगे।

असल राजनीति का प्रथम पाठ लेते-लेते ढोड़ाय जँभाई लेता है। बिसुन केवट कहता है, खूब थके हुए हो न ढोड़ाय ? कल सारा दिन और सारी रात तुम पैदल चले हो।....गांधी 'सुशील' के दल का है या नहीं, ठीक समझ में नहीं आ रहा है। 'सुशील' और 'कामिनी' दोनों सौत हैं, जानते हो न ? एक अगर कहे पूरब जाने की बात तो दूसरी पच्छिम जाने की बात कहेगी। कितना देखा है मैंने यह सब जेल में। एक दल अगर कहे सालन खाऊँगा तो दूसरा कहेगा अंडा खाऊँगा।... समझे ढोड़ाय, सभी काम में रुपये की जरूरत है। नहीं तो सब बैठ जायेंगे—बीच रास्ते में बैल के बैठ जाने की भाँति।....दो तो जरा खैनी, आँखों की पलकें भारी हो आ रही हैं। ए ! ए ढोड़ाय ! सोया है क्या रे ससुरा।....

दूसरे दिन खोज होने पर पता चलता है कि कार्टिज एक भी नहीं है। बिसुन केवट का भी कोई पता नहीं है। बन्दूकों में मात्र एक चली गई है। महात्माजी के काम में वह क्षति नहीं पहुँचाना चाहता है। इसीलिए उसने जरूरत के अतिरिक्त एक भी चीज नहीं ली है।

राम-राज्य-स्थापना के काम में अवहेलना करने का कलंक प्रथम दिन ही ढोड़ाय पर पड़ता है। दो दिन खाना बन्द रहने वाली सजा को वह सर झुका कर ग्रहण करता है।

□

स्वर्ग-सोपान का संधान

ढोड़ाय को सबसे अच्छा लगता है सरदार। कनौजी ब्राह्मण है वह। ठंडा स्वभाव है। पूजा करता है, रामायण पढ़ता है। सुबह दो-घंटा ड्रील करवाता है, फिर सारा दिन छुट्टी। छोटे-छोटे दल में कहीं तास, कहीं दस-पचीस खेल होता है। पटेल, गांधी और जवाहर ज्यादातर बाहर ही सफर में रहते हैं। कौन कहां और किसलिए जा रहा है, उसकी खबर ढोड़ाय नहीं रखता है। वह इसलिए खुश है कि सरदार ने उसे कहा है कि वह एक साल के अन्दर उसे रामायण पढ़ना सिखा देगा। सुस्वस्थ तुम्हें जब है ही ढोड़ायजी, तब शायद एक साल भी नहीं लगेगा। अब थोड़ा बहुत समय मिले, तो शुरू हो।

ढोड़ाय की भी यही चिन्ता है! इसी बीच एक दिन जवाहर ने उसे अलग बुलाकर चुपके से कहा था कि ढोड़ाय उन्हें बहुत पसन्द है। वह अगर राजी हो, तो वे उसे अपने साथ रख सकते हैं — अपने हाथों उसे काम सिखाने के लिए। तब वे ढोड़ाय को दल की तरफ से एक नाम दिलाने का भी इन्तजाम कर सकते हैं। 'इस्कुलिया' लोगों में अगर कोई होता तो इस प्रस्ताव से हाथों में चांद पा जाता। लेकिन ढोड़ाय राजी नहीं हुआ था। वर्ण-परिचय के अक्षर तो नहीं, रामायण के स्वर्ग में चढ़ने की एक-एक सीढ़ी! उसी फिसलने वाली सीढ़ी पर उसके जैसे अयोग्य आदमी को बाँह पकड़कर उठा रहा है सरदार।

दल का प्रत्येक आदमी जवाहर के ही सान्निध्य की कामना करता है। इसीलिए वे कल्पना भी नहीं कर सके थे कि ढोड़ाय उसके अनुरोध की अवहेलना करेगा। उसी दिन से वे ढोड़ाय के पीछे पड़ गये थे। कहीं दूर चिट्ठी भेजनी होती थी, तो उसकी ड्यूटी ढोड़ाय पर ही होती। यह दल के सब ने गौर किया था। लेकिन सुविधा कहने को इतनी ही थी कि जवाहर ज्यादातर बाहर ही रहते थे। उसी समय के लिए ढोड़ाय प्रतीक्षा किये हुए रहता था। मिलिटरी ड्रील करवाने से क्या होता, सरदार भावप्रवण आदमी है। उसने ढोड़ाय के सहानुभूतिशील मन के अन्दर एक ऐसी वस्तु का संधान पाया था, जो उसने दल के और किसी में नहीं पाया था।

ढोड़ाय ने गांधी को यह बात कही थी। वह कहता है, बहुत अच्छा किया है, जवाहर के साथ न आकर। वह तुम्हें कपड़े फिचवाने और बिछौना ढोने के लिए ले जा रहा था। 'इस्कुलिया' लोग वह काम नहीं करेंगे, इसलिए उसने उनसे कहा नहीं है। काम सिखाता न खाक! 'सभी खेलना मेरा खेला हुआ है।' जानता तो हूँ मैं उसे।

ढोड़ाय से धीरज नहीं धरा जाता है। 'गांधी, तुम लोग जो अक्सर पटना, भागलपुर, मुँगेर जाते हो। मेरे लिए एक रामायण खरीद लाना।'

सरदार कहता है, 'होगा, होगा। दादा मरेगा तव तो बैल का भी बँटवारा होगा ? इतनी हड़बड़ी किस चीज की है ?'

समझे न सरदार, होगा जरूर। लेकिन पहले से खरीदा हुआ रहने पर...............

उसे लगता है कि अगर अभी नहीं खरीदा जाय, तो फिर और कभी खरीदना सम्भव नहीं हो पायेगा।

'मेरी रामायण से नहीं चलेगा ?'—सरदार हँसकर ढोड़ाय से लिपट जाता है। 'गाँधी, कल तो तुम जमालपुर जा रहे हो। ले आना एक रामचरित-मानस ढोड़ाय के लिए खरीद कर !'

'ख्याल रहेगा तो ले आऊँगा।'

उस रात ढोड़ाय सोता नहीं। धन्य है रामचन्द्र जी, उसे इस पथ में ले आये हैं। सदा वे उस पर सदय हैं। पहले से उनकी इच्छा का पता नहीं चलता है, इसीलिए लोग गलती करते हैं। वह रामायण उसकी एकदम अपनी होगी। ठीक अपनी जमीन की तरह, अपने वेटे की तरह।........दूर मुखनाहादियारा में एक प्रकाश दिखाई पड़ रहा है। ठीक तारे की तरह, देखने में लग रहा है। चांचर के वन-गुलाव के जंगल के अन्दर तीतर की आवाज सुनाई पड़ रही है। खेर और बबूल के पेड़ों के नीचे वाले पानी की सड़ी हुई गंध भी मीठी लग रही है। यहाँ किसी विपद् की आशंका नहीं है, किसी समाज का दमन नहीं है। ब्राह्मण सरदार यहाँ उसके साथ बैठकर भात खाता है। सामने महात्मा जी का राम-राज्य स्थापना करने का काम अवश्य है। क्या है, सो वह नहीं जानता है। इस्कुलिया लोग भी नहीं जानते हैं। दल के प्रधान को पूछने पर कहते हैं, होगा, होगा। और कुछ दिन सब्र करो न। इसे लेकर ढोड़ाय को कोई खास दुश्चिन्ता भी नहीं है। उसके ऊपर जो हुक्म होगा, वह करेगा....तब तक उसकी रामायण भी आ जायगी। उसके बटुए के अन्दर सगिया के बेटे की माला को छोड़ एक रुपये तीन आने हैं। शेष रात्रि में जब गाँधी रवाना होगा, तब उसे बढ़ा देने का बहाना कर कुछ दूर तक वह उसके साथ जायेगा। उसके बाद चुपके से वह उसे एक रुपया, तीन आने देगा, रामायण का दाम ! महात्मा जी के पैसों से खरीदी हुई रामायण लेने से भला उसकी आँखें अन्धी नहीं हो जायेंगी ?

जिस दिन गाँधी जमालपुर से लौट कर आया, उस दिन दल में किसी की मानसिक अवस्था स्वाभाविक नहीं थी। रात को चौकीदार आकर खबर दे गया था कि जवाहर ने पुलिस के पास 'सरेंडर' किया है। उनके पिता को पकड़कर ले गया था, इसीलिए उनसे और नहीं रहा गया।

गाँधी कहता है, 'बन्दूक-पिस्तौल का आना शुरू हुआ कि देखकर घबड़ा गया 'घर में थूक फेंकना मना है'—इसके प्रचार का काम अगर आजाद दस्ता करता; तो जवाहर यहाँ बना रहता ! हरामी !'

पटेल कहता है, 'बहाना ढूंढ़ रहा था भागने का। कायर!'

आजाद को दृढ़ रूप से विश्वास है कि जवाहर पुलिस का मुखिया है। अब वह कहीं दल के सब को पकड़वा न दे। गाय ने जब एक बार उखली में मुँह डाला है तो क्या बिना कुछ खाये रहेगी?

ऐसे वातावरण के बीच भी ढोड़ाय का मन अड़ा हुआ है गांधी के झोले के ऊपर। काफी देर तक इन्तजार करने के बाद उससे और रहा नहीं जाता है। गांधी से सटकर वह बैठता है, जिससे उसे देखकर रामायण की बात याद पड़े। सरदार गांधी का झोला खोल लाल रंग की जेबी रामायण निकालकर ढोड़ाय के हाथों में देता है। क्या ठंडी है रामायण! ढोड़ाय के हाथ में कँप-कँपी लग गई है। गांधी ने उसकी ओर आँखें फाड़ कर देखा है। उसका ख्याल नहीं है ढोड़ाय को।

□

ढोड़ाय का नया नाम

"आजाद दस्ता' का नाम 'क्रांतिदल' हो गया है। नहीं तो भागलपुर, मुंगेर आदि जिलों के दलों को सहायता नहीं मिल रही थी। जमालपुर से पिस्तौल और कारतूस तैयार करने के औजार आये हैं, मुंगेर से मिस्त्री आये हैं। पटने से लाये गए 'इस्तहार' की इस्कुलिया लड़के दिन-रात बैठ-बैठकर नकल कर रहे हैं। यहाँ के क्रांतिदल का मंत्री बना है पटेल। आस-पास के बबूल की ठूंठें पिस्तौल छोड़ने के अभ्यास करने के कारण देखने में मधुमक्खी के छत्ते की तरह हो गयी है। बहुत-सी जगहों पर दल के केन्द्र बने हैं। नित्य नये-नये इस्कुलिया दल में भर्ती होने आ रहे हैं। कितने तो चले जा रहे हैं नेपाल।

सबसे बड़ी बात है, ढोड़ाय ने नया नाम पाया है। उसका नाम हुआ है 'रामायण' जी। सरदार ने ही प्रस्ताव किया है। गांधी को उस नाम पर आपत्ति थी। उसने कहा था कि अभी भी अनेक लीडरों के नाम बाकी हैं! क्रांतिदल में फिर रामायण-वामायण क्यों लाते हो? किन्तु, उसकी बात टिकी नहीं थी।

अभी और किसी को साँस छोड़ने की फुर्सत नहीं है। काम और बातों का अन्त नहीं है। गप्प के बीच जैसे लोग एक बात से दूसरी पर अज्ञात हो चले आते हैं, उसी प्रकार वे लोग चले आते हैं, एक काम से दूसरे काम में।

उस दिन मिनट में पटेल के दल ने गांधी के दल को हाफपैंट फींचने के मामले में हरा दिया था। आजकल सब की वर्दी हुई है खाकी हाफपैंट और हाफपैंट। पटेल

ने कहा था कि खाकी हाफपैंट को फींचना क्या ? वह क्या गंदा होता है ? निहायत जरूरत पड़ने पर महीने में एकबार फींचना ही काफी है। गांधी के दल ने कहा था कि इतने बड़े मामले में दल की तरफ से निर्देश देना ठीक नहीं होगा। आजाद ने गांधी का समर्थन किया था—कपड़ा फींचने वाले साबुन का खर्च घटाने के पहले पान-जर्दे का खर्च घटाना चाहिए।

वोट में हार जाने के साथ ही साथ गांधी के दल का एक छोकरा चिल्लाकर कहता है—पान का खर्च जिसकी आँखों में चुभता है, अपने हाथ की घड़ी क्या उसकी नजरों में नहीं पड़ती है ? मिनट में फिर से हल्ला हो जाता है। दल का पिराथीलाल पुलिस के पास आना-जाना शुरू करता था। इसीलिए उसे कई दिन पहले खत्म कर दिया गया था। कोशी में डालने के पहले आजाद ने लाश के हाथ से रिस्टवाच खोल लिया था।

'उसका नाम छीन लिया जाय।'

इसे लेकर वादानुवाद जब काफी जम गया है, ऐसे में आजाद उठ खड़ा होता है। नाटकीय भंगिमा में वह दोनों हाथ से फड़फड़ाकर कमीज फाड़ डालता है। अनावृत छाती में एक थप्पड़ मारकर वह कहता है—'छाती चीरकर अगर दिखाया जाता तो मैं दिखाता मेरे मन में क्या था ....!'

पटेल के चेहरे की कठिनता नरम हो आयी है ! 'देखूं, आजाद ! छाती को वह सांप लगाने वाली जगह ! घाव तो नहीं हुआ है, देखता हूं।........।'

साथ ही साथ सब की दृष्टि पड़ती है उसी पर। कोई तीन दिन हुए होंगे, हादिम में आजाद सोया हुआ था। मिलिटरी ने उस मुहल्ले को घेर लिया था। एक पुराना छप्पड़ जमीन पर उतारा हुआ था। आजाद ने उसी के नीचे घुसकर सारी रात वितायी थी। सुवह उसने देखा कि एक सांप दबकर मरा हुआ है उसकी छाती के नीचे।

जैसे किसी ने कहा—'थोड़ा आम का दूध क्यों नहीं लगा लिया छाती में ?'

आम के दूध का प्रसंग छिड़ते ही सहसा स्मरण होता है कि विसकंधा के लोगों ने खबर दी है कि ठीकेदार दो-एक दिनों के अन्दर आम का चलान शुरू करेगा। डोम बगीचे में बैठकर टोकरियां बिन रहे हैं।

खायेगी रे, आसाम की फौज ! चलो चलो। अभी चलो।........

घोड़े पर सवार होकर वर्दी पहना हुआ क्रांतिदल चलता है।

वगीचे में पहुँचते ही ठीकेदार कहता है; अभी हाथ में पैसा नहीं है और कई दिनों के बाद आम बेचकर ही मैं हुजूर लोगों को खुश करूंगा। मैं खुद आकर पहुँचा आऊँगा।

आजाद उसका गला पकड़ता है। 'साले, पीटकर तेरा बदन ढीला कर दूंगा। खुश जो करोगे, सो जानता हूं। आम तोड़ने के बाद भी जैसे तुम लोग यहाँ बैठे रहोगे न ?'

कोइरी टोला और संथाल टोले के जिन लड़कों ने बागीचे का काम किया है, उन्हें ही पेड़ पर चढ़वाकर सभी आम तोड़वाये जाते हैं।

'बांट देना अपने टोले में।'

ठीकेदार से और चांव नहीं रहा जाता है 'हुजूर लोग मेरा कसूर देख रहे हैं, क्योंकि मैं पच्छिम का आदमी हूँ। इस गाँव के गिदर ने 'कौमी मोर्चा' का चंदा माफ करवा देगा कहकर टोले से जो इतने रुपये लिए, उस पर आप लोग कुछ नहीं कहते हैं?'

'गिदर मंडल ?'

जो लोग आम तोड़ रहे थे, वे लोग कहते हैं कि यह बात झूठी नहीं है।

'तब हमलोगों को खबर क्यों नहीं दी ?'

'उसने तो हम लोगों पर 'बारलोन' नहीं बैठाया है, जो बैठा था, उसे माफ करा दिया है।'

गांधी उसकी ठुड्डी पकड़कर जोर से घुमाता है—बुद्धू कहीं का। माफ करवा दिया है! ऐ! तुम लोगों को कह देता हूँ आम बांटते समय सब को आम देना, पर इसे भूल से भी नहीं देना। माफ करवा दिया है।''''''''

गिदर मंडल का यह काण्ड! सब की नाक के नीचे!

यहाँ और समय बर्बाद नहीं किया जा सकता है।

गिदर के घर जाते-जाते बीच रास्ते में पटेल को ख्याल आता है कि हरिजन टोकरी बिन रहे थे, उन्हें आम देने की बात तो उन पेड़वाले छोकरों को कही ही नहीं गई है! फिर लौटकर कह आता है।

घर पर गिदर मंडल का दर्शन नहीं होता है। उंगली के खून से एक कागज पर गांधी न मालूम क्या लिखता है। फिर उसे आम की लेई से गिदर के बरामदे में साट दिया जाता है।

टोले के लोग कहते हैं इनसान अली अड़गड़िया को कहकर ही गिदर ने 'बार-फंड' माफ करवाया था। वह आजकल सदर में रहता है न। जिरानिया स्टेशन के पास अपने सम्बन्धी के साथ मिलकर उसने ठीकेदार का कारोबार खोला है, सभी हाकिमों से उसकी दोस्ती है।

सभी के खून खौल उठते हैं। हाथ के पास कोई नहीं मिल रहा है।

पटेल गरज उठता है, 'यहाँ इनसान अली क्यों नहीं रहता है?'

'हुजूर, आप लोगों के डर से।'

खैर! तो भी मन जरा ठंडा होता है।

राजपूत टोले में हल्ला हो गया है। 'केरान्दी! केरान्दी!' बाबू साहब लोटा लेकर बाहर जाने की चेष्टा कर रहे थे। वे पकड़ा जाते हैं।

'आइये! बहुत दिनों के बाद आप सब की चरण-धूल यहाँ गिरी है।'

गांधी कमर के भीतर से एक काले रंग का रिवाल्वर निकालकर खटिया पर

रखता है। हाव-भाव से वह ऐसा दिखाना चाहता है, जैसे वह कमर का बेल्ट थोड़ा ढीलाकर, केवल जरा आराम कर ले रहा है। फिर फरमाइश करता है—'किसी को थोड़े से दतवन देने को कहिएगा तो! छौ नीम के और चार बबूल के।'

इसका इंगित बाबू साहब समझते हैं। 'अजी अनोखी बाबू! ये लोग सुबह से कुछ नहीं खाये हैं, पहले इन्हें खिलाने का इन्तजाम कीजिए। अजी आजाद, आप तो घर के लड़के हैं। रसोई में जाकर महाराज को कह आइए न कि गोलमिर्च वाला खाना पटेल नहीं खाते हैं।'

क्रांतिदल के सभी सदस्य हंस पड़ते हैं। किस जमाने की दुनिया में है यह बूढ़ा? मिर्च नहीं खानेवाले वालन्टियर की तरह भी क्या क्रांतिदल में चलता है?

बाबू साहब सभी के चेहरे को आँखें फाड़-फाड़कर ताकते हैं। इन लोगों की बातचीत का कुछ भी पता नहीं चलता है।..........उन्हें खटिया से उठने नहीं दे रहे हैं, इसका कारण वे समझते हैं।.......... ....एक साथ सभी खाने को नहीं बैठेंगे, इसका भी कारण समझते हैं, उन्हें पूरा विश्वास नहीं होता है, इसलिए दो आदमी पहरे पर रहते हैं। लेकिन इन लोगों की हँसी, इन लोगों का क्रोध, इन लोगों की नजरें और इन लोगों की बातचीत—सभी बदल गये हैं। दल के अधिकतर लोग उनके पहले के परिचित हैं। वे कैसे इन कई दिनों में बदल गये? कोइरी टोला के ढोड़ाय के पैर में जूता चढ़ा है—शू-जूता। लोटा लेकर मैदान जायेगा तो भी पैर का जूता नहीं खोलेगा।....... .. ....जात का आदमी है बिचितर सिंह, गाँव का आदमी है ढोड़ाय, कितने परिचित हैं वालन्टियर और भोपतलाल!..........लेकिन अभी इनके सामने आने में डर लगता है।........

पान-जर्दा खाते हुए पटेल काम की बात छेड़ता है। 'और सिंह जी, आप तो माला-माल हो गये युद्ध के बाजार में।'......

'आप लोग क्या कहते हैं?'..........बाबू साहब मसूढ़ों से एक बार जीभ को चबा लेते हैं। यह क्या जुल्म है! कल ही तो ले गया है तीन सौ रुपये। फिर सरकारी हाकिम भी आकर ले गया चार सौ रुपये—न मालूम किस चीज का चंदा कहकर, गत रविवार को। दोनों तरफ से 'पबलिस' पर जुलुम।........

'देखिए पटेल जी, मैं क्या आप लोगों से बाहर हूँ? कल ही तो बिसुनी आकर क्रान्तिदल के लिए तीन सौ रुपए ले गया है। आपलोग कहें, तो रोज ही देना होगा, लेकिन...'

'कौन बिसुनी? बिसुनी केवट? किसने कहा कि वह क्रान्तिदल का आदमी है?'

'सभी तो ऐसा ही जानते हैं। वर्दी है, बन्दूक है, जूता है। कल वह यहाँ से रामनेवाज मुंशी के यहाँ गया था। अभी भी शायद वह वहीं है।'

'ऐसी बात है?' दस जोड़ी आँखों में आग जल उठती है। अभी भी शायद उस शैतान को पकड़ा जा सकता है। जल्दी! दस्ता! एक कतार!

धूल की आँधी बहाकर बाबूसाहब के घर से आफ़त विदा हुआ है। अब केवल सरकार के कानों में न जाय कि उन्होंने आज क्रान्तिदल को अपने यहाँ खाना दिया है। पुलिस को चैन नहीं।

देव-कृपा से बिसुनी रामनेवाज मुंशी के बैठक-खाने में मिलता है। रामनेवाज मुंशी से भी उसने तुरन्त दो सौ रुपए लिए हैं।

आजाद पहले ही जाकर उसकी बन्दूक छीन लेता है। एक भी कारतूस उसके पास नहीं मिलती है। वह कहता है कि सब खत्म हो गयी है।

अपनी बेवकूफ़ी पर रामनेवाज मुंशी अपना हाथ दाँतों से काटता है। बिना कारतूस की बन्दूक के डर से ही उसने दो सौ रुपए निकाल दिये हैं।

'दस्ता! एक क़तार।'

खींचते-खींचते बिसुनी केवट को ले जाया जाता है गाँव के बाहर—पामार साहब की नील कोठी वाले पोखरे के किनारे। एक बादाम के पेड़ से उसे बाँधा जाता है। बिसुनी चिल्लाकर रोता है। और कभी वह ऐसा कसूर नहीं करेगा, महात्माजी के नाम से छोड़ दो, उसके पास जमाये हुए बहुत से रुपये हैं, वह सभी दे देगा क्रान्तिदल को। उसके दो नाबालिग बच्चे अनाथ हो जायेंगे, तुम लोग भी बाल-बच्चों के बाप हो!''''

क्रांतिदल के लोगों ने ये सब काफ़ी सुना है....रामायणजी से और रहा नहीं जाता है। वह पटेल का हाथ पकड़ लेता है।

'नहीं, नहीं, इसे जान से न मारो। मेरा अनुरोध सुनो।'

गांधी विरक्त होता है। 'इसीलिए तो इन सब कामों में रामायणजी को लाने को मना करता हूँ।'

'इसका क्या कोई निश्चय था? पहले से जानूँगा कैसे?'

सभी ऐसा भाव दिखाते हैं, जैसे वे रामायणजी की दुर्बलता पर विरक्त हों। लेकिन रामायणजी की बातों पर चैन की साँस लेते हैं। वे लोग अपने को कठोरता के आवरण से ढाँकना चाहते हैं, नहीं तो दल में 'कायर' के नाम से बदनाम हो जायेंगे। इससे बढ़कर बदनामी दल में और कुछ नहीं है—सिर्फ़ 'बुफिया' शब्द को छोड़कर। ये लोग सभी, हर वक्त अपने को क्रांतिकारी प्रमाणित करना चाहते हैं! जो जितना निष्ठुर है, वह उतना अधिक क्रांतिकारी है। जो जितना लापरवाह है, वह उतना ही अधिक क्रांतिकारी है, जो जितना अपशब्द कह सकता है, वह उतना बड़ा क्रांतिकारी है। खाते समय जो जितनी उद्दण्डता दिखा सकता है, वह उतना ही क्रांतिकारी है। और भी बहुत-बहुत कामों, हाव-भावों से दल के साधारण अशिक्षित सदस्य अन्य लोगों की क्रांति के काम की योग्यता के बारे में विचार करते हैं।

दस जोड़ी विद्रूप-नजरें रामायणजी की ओर पड़ रही हैं। अभी भी शर्म मिट नहीं गया रामायणजी! 'नहीं, नहीं, पटेल, इसे और कोई सजा दो।' तब बाध्य होकर पटेल बिसुनी केवट को लघु-दण्ड का आदेश देता है।

क्षिप्र हाथ से आजाद हाफ-पैंट की जेव से आम और नाखून काटनेवाली छुरी निकालता है। आदमी की नाक का मांस इतना कड़ा होता है, सो क्रांति-दल में आने के पहले किसी को ज्ञात नहीं था। आजाद इस काम का विशेषज्ञ है। विसुनी केवट भीषण रूप से चिल्ला रहा है। कहें सभी उसे कायर! और देखा नहीं जाता है, रामायणजी आँखें मूंद लेता है।

फिर घोड़े की पीठ पर चढ़ते वक्त रामनेवाज मुंशी दौड़ता हुआ आकर कह जाता है कि विसुनी से पाये हुए दो सौ रुपए चंदा के नाम से लिख लिया जाय....नहीं, नहीं, एकदम रजिस्टर में सचमुच का लिखना नहीं—ये लोग भी आदमी हैं...यह ख्याल रखिएगा और क्या, मेरे नाम से रुपये पटेल जो!

दिन ढलता जा रहा है। रामायणजी के कर्म-व्यस्त जीवन के एक दिन का प्रोग्राम शेष होता है। अभी भी शायद और कोई नयी चीज याद आ जा सकती है गाँधी को, नहीं तो पटेल को।...

श्रान्त देह और मन लेकर अपने अड्डे तक लौट जाने की इच्छा नहीं होती है। इच्छा होती है रास्ते की वगल में ही सो जाए! लेकिन ढोड़ाय जानता है कि रात के अँधेरे में, जव चौकीदार के दिए हुए घास के पुलिन्दे माथे से लगाकर कतारों में लेटकर सभी सोने का वहाना करते हैं, तव सभी अपने मन के पास हिसाव मिलाकर देखते हैं। और सभी भले ही अस्वीकार करें, रामायणजी अस्वीकार नहीं करेगा। ववूल के जंगल में वौका वावा का दीर्घश्वास वह जाता है, सितारों की निष्पलक दृष्टि से याद आ जाती है एक आदमी की वात, आकाश के कपोलों से वहते हुए ओस से भींग उठता है धुएँ से दागदार वना हुआ वन्दूक का नाल तक, तव क्या रामायणजी को नींद आ सकती है?... फिर कल भोर होते-न-होते शायद इन लोगों को याद आ जायेंगी कितनी ही काम की वातें! इन नित्य-नूतन 'प्रोग्राम' के अन्दर भी क्या इतनी वैचित्र्यहीनता रह सकती है?...

अन्धकार-भरे गाँव की वगल से गुजरते समय सरदार कहता है, वह सुनो, क्या कह रहा है! वगल के खरवाले घर के अन्दर माँ-वच्चे को सुला रही है—

नूनू!
एत्ता भात खाओगे?
'केरान्टी' में जाओगे?
अरे हाथी दाम दो।
'केरान्टी' में नाम दो।
घोड़े की लगाम दो।
'केरान्टी' में काम दो।

गाँधी कहता है, देश में इसके वाद और वकरी चरानेवाला आदमी नहीं मिलेगा रे!

उसकी रसिकता पर कोई नहीं हँसता है। एक अपरिचिता माँ को, क्रांतिदत्त के उद्देश्य से दी गई श्रद्धांजलि रामायणजी के मन के सारे अवसाद को मिटा देती है। उन लोगों के परोक्ष में ही कही गई हैं, इसीलिए इन बातों का इतना मूल्य है। तब शायद उन लोगों ने महात्माजी का काम कुछ-कुछ किया है। लोग उन्हें काफी ऊँचा समझते हैं—क्रांतिदत्त को। कनौजी ब्राह्मण होने से निश्चय ही ऐसा अनुभव होता है। एक दफे सरदार को पूछ कर देखना चाहिए।



हताशा काण्ड

सगिया का पुनराविर्भाव

सरकार का अर्थ है फौज। उस फौज की हिम्मत बढ़ी है। पहले फौज के कैम्प गाँव के बाहर होते थे, काफी दूर, काँटा-तार से घिरे हुए। अभी फौज रहती है गाँव के स्कूल में। बलूची फौज का दल जब-तब घोड़े पर चढ़ कर गाँव-गाँव में टहलता फिरता है। गिदर मडल रात को कानी मुसहरनी को फौजी अफसर के तम्बू में भेजता है। और, दिन को उसे लेकर नये खान साहब इनसान अली के घर में बैठकर पैकारी जुर्माने की लिस्ट बनाता है। चौकीदार 'देहात' के पुलिन्दे अब क्रांतिदल को नहीं देता है। बेच देता है उन्हें बाबूसाहब की घरवाली कन्ट्रोल की दूकान में—ठोंगा तैयार करने के लिए। लाडली बाबू और इनसान अली, दोनों मिलकर नेपाल में चावल और कपड़े की आढ़त खोलते हैं, रात को उन्हें यहाँ से ले जाते हैं वे। बाबूसाहब के दस्तखत से लोग कपड़े पाते हैं। एक दिन खेत में काम करवाकर वे दस्तखत करते हैं।

पहले रामायणजी सुनता था कि कोशीजी से लेकर सिलिगुड़ी तक 'पक्की' है। अभी इतनी दूर तक पक्की को उसने देखा है, लेकिन उसने आदि-अन्त नहीं पाया है। उसने सुना है कि पूरब में पक्की चली गई है चीन तक, कामाख्या माई होकर, और पच्छिम में भी, न जाने कहाँ तक चली गई है, जिसका नाम उसे स्मरण नहीं आ रहा है। ऐसा ही होता है। रामायण पढ़ना सीखने पर भी 'देहात' के पन्ने पढ़े नहीं जाते हैं। किसी चीज का अन्त नहीं है।

दल के जितने लोग पकड़े जाते हैं, उतने नये लोग दल में भर्ती नहीं होते हैं। अभी भी आते हैं बीच-बीच में दो एक इस्कुलिया—रहस्य और रोमांच के आकर्षण से।

दल छोटा हो जाने से क्या होता है, दल के भीतर का गोलमाल दिनों-दिन बढ़ ही रहा है। कुछ दिनों से और अधिक बढ़ा है। गांधी गया था जिरानिया अच्छे लोहे की व्यवस्था करने। वहाँ के फौजी हवागाड़ी मरम्मत के कारखाने के सुरवन मिस्त्री से दल का परिचय है। जमालपुर का लोहा बड़ा खराब दे रहा था। उस लोहे की बनी हुई पिस्तौल का निशाना बहुत जल्द खराब हो जा रहा था। जिरानिया से गांधी इसके लिए रुपया मँगवा भेजता है। पटेल, गंज के बाजार के नौरंगीलाल गोलादार से चंदा लेकर गांधी को भी भेजता है। हालाँकि चंदा वसूला गया था पुराने क्रांतिदल के ढंग से—थोड़ा आराम कर लेने के बहाने से रिवाल्वर समेत कमर की बेल्ट खोलकर सामने वाली खटिया पर रख कर। पुराना ढँका हुआ मनोमालिन्य सहसा आन्दोलन पा ऊपर उठ आता है। पटेल कहता है, 'विलेक' में अगर मेरा बाप भी लाखों रुपये कमाता, तो मैं उसे भी नहीं छोड़ता। यह भगड़ा धीरे-धीरे दल के अन्दर फैल जाता है। एक के समर्थकों के हाथ अधिक बन्दूकें जाने पर दूसरे के समर्थक लोग भरोसा नहीं करते हैं।

रात के पहरे में दोनों दलों के दो-दो आदमियों को एक साथ ड्यूटी देनी पड़ती है।

दल की तरफ से तय होता है कि जो लोग सन् बयालिस में जेल गये थे और अभी लौट रहे हैं, उन्हें दल में खींचने की कोशिश करनी होगी। नहीं तो अनाड़ी रँग-रूटों से अधिक काम नहीं होगा। जेल से लौटे हुए लोगों को दल में लाने से लोगों की नजर में दल का सम्मान बढ़ता है, तथा रुपये-पैसे सम्बन्धी बदनामी भी थोड़ी घटती है। दल में अगर वह न भी आ सके, पर बाहर से भी तो वह मदद कर सकता है। सरकार ने जब उन्हें एक बार छोड़ा है, तब जल्द उन्हें पकड़ेगी नहीं। इसीलिए कौन कब छुटकारा पा रहा है, वह खबर दल के लोगों को कंठस्थ है।

बिसकंधा के बिल्टा और बड़का मांझी ने कुछ दिन पहले ही छुटकारा पाया है। इसीलिए पटेल, रामायणजी को उनसे मिलने की ड्यूटी देता है।

जाते समय सहसा पटेल कहता है :

'नहीं, ढोड़ायजी, मैंने सोचकर देखा कि बड़का मांझी से मिलने की और जरूरत नहीं है। उसकी बुद्धि बहुत मोटी है। चुपके से कोई काम उससे नहीं करवाया जा सकेगा। केवल बिल्टा से ही बातचीत कीजिएगा। और कुछ न करे, कम-से-कम दल के लोगों के मुकदमें की पैरवी भी अगर वह कचहरी में अच्छी तरह कर सके, तो बहुत काम होगा। बिजन वकील ने कहा है तीन गुना रुपया लेगा, तारीख के पहले उसे याद दिला देने के लिए भी तो एक आदमी की जरूरत है। आपका दोस्त है वह, आप के कहने से वह सुनेगा जरूर।'

'बिजन वकील को देने वाले रुपये आयेंगे कहाँ से ?'

रामायणजी ने विशेष कुछ सोचकर यह बात नहीं कही थी लेकिन सभी इसका उल्टा अर्थ लगा लेते हैं। सभी इसे दल के रुपये इन्तजाम करने के ढंग पर किया गया इंगित समझते हैं। और भी एक प्रच्छन्न मनोभाव है रामायणजी की बातों के पीछे, अपने को दल के अन्य सब से अच्छा समझना। यह क्रांतिदल के लोग बरदाश्त नहीं कर सकते हैं। उदग्र स्नायु की बारूद से धक्-सी आग जल उठती है।

गांधी कम्बल बजाकर कहता है—'जैसे भी हो, जुटाने होंगे इसके रुपये और सरवन मिस्त्री के रुपये।' कोई कहता है, 'रामायणगिरी छाँटने आते हो और अपनी ईमानदारी की ओर ताककर भी नहीं देखते हो ?'

'मुंह सम्हालकर बातें करना, कह देता हूँ।' उसकी ईमानदारी पर वे लोग प्रश्न उठा रहे हैं।

ये लोग ततमाटोली के 'पंच' नहीं हैं, जो ढोड़ाय के आँखें लाल करने पर भय खा जायेंगे।

'सर्च किया जाय रामायणजी का बटुआ।' रामायणजी का वक्ष कांप उठता है। इतनी देर में वह समझता है कि ये लोग क्या कहना चाहते हैं। उसके सोते समय इन लोगों ने उसका बटुआ खोलकर शायद देखा होगा।

नहीं, नहीं, विश्वास करो गांधी, सरदार तुम अविश्वास मत करो। यह राह-जनी का माल नहीं है। गबन मत समझो। यह रामायण हाथ में लेकर कह रहा हूँ। ईमानदारी पर ही अगर सन्देह करते हो, तो फिर मेरा रहा क्या ?'

सभी तरह-तरह की जिरह करते हैं। उसके विरुद्ध इतना विद्वेष आखिर कहाँ जमा था इन लोगों के पास। यह उसके मृत बेटे के गले की माला है, यह बात किसी ने विश्वास किया या नहीं, कौन जाने ? उसने अपने से कही क्यों नहीं, यह बात पहले ? उसकी बात विश्वास करने पर भी शायद सभी उसे स्वार्थी समझ रहे हैं, दल की इतनी आवश्यकता के समय भी अपनी चीज दल को नहीं दी है, इसलिए। पटेल और गांधी दोनों ही उसे अपने दल में खींचना चाहते हैं। अभी जिस किसी भी दल में जाने से उसका समर्थन मिल सकता था। अन्त में गांधी सबको शांत करता है। पटेल रामायणजी की पीठ ठोंक कर वह बात भूल जाने को कहता है। दल के अन्य सभी एक दूसरा विषय लेकर हँसी-मजाक शुरू करते हैं। यह सब दोस्ती और झगड़े का खेल उन लोगों में दिन-रात लगा रहता है। एक विषय लेकर अधिक देर तक दिमाग वे आजकल नहीं लड़ा सकते हैं। क्षण-क्षण में इनका मन बदलता है। तुम लोगों को बात सुनाने आये थे, हम लोगों ने भी तुम्हें सुना दिया है कि दल के और दस-पाँच आदमी की अपेक्षा तुम एक रत्ती भी अच्छे नहीं हो—यही है सबके मन का भाव।

आग में झुलसी झंगड़ियों को लेकर तब तक दल में छीना-झपटी शुरू हो गई है। एक आदमी रामायणजी को भी कुछ झंगड़ियाँ दे गया।

मन के ऊपर एक दुश्चिन्ता का बोझ लेकर रामायणजी बिसकंधा के पथ पर निकलता है। आज पहले ही यात्रा अशुभ हो गई है, किस्मत में क्या है, कौन जाने ! बटुआ को वह बाहर से दाब-दाबकर देखता है। इसे ही लेकर तो आज सारा गोल-माल हुआ। लेकिन जिसका दिया हुआ है यह, वह जरा भी खबर नहीं रखती है। वह जाते वक्त अपनी माँ को देखने को कह गई थी। वह क्या उसका अनुरोध पाल सका है ?

रामायणजी जब बिसकंधा पहुँचा, तब संध्या हो गई थी। भजन शेष होने पर जब बिल्टा घर लौटेगा, तब वह चुपचाप जाकर उससे भेंट करेगा। तब तक इस गाँव में कहाँ बैठकर रात काटेगा ? उससे अच्छा है, टोले के बाहर मोसम्मात के यहाँ जाना। इससे सगिया के जाने के समयवाले अनुरोध का भी पालन हो जाएगा। आज उसको, आने के पहले वाली घटना के कारण ही शायद सगिया की बात बार-बार याद आ रही है।

इस ओर कोई भय नहीं है। फौज का कैम्प है कोशी के किनारे, रेशम के कीड़े के घर की बगल में। माघ के महीने में नीची जमीन का जल सूख रहा है। आदमी के बराबर 'साबे घास' के अन्दर से चलने का रास्ता है। दूर, बाबू साहब के घर की ओर, और कोइरी टोला में गिदर मंडल के घर की ओर, शीत के धुएँ के भीतर से भी

अस्पष्ट प्रकाश दिखाई पड़ रहा है। बाकी गाँव में अँधेरा है।

मोसम्मात के घर के अन्दर जैसे बातचीत का शब्द सुनाई पड़ रहा है। उस बूढ़ी को सदा अपने आप बकने की आदत है। खैर, बूढ़ी तब अच्छी ही है। आंगन की फरकी अन्दर से बन्द है, इस सांझ में ही। गाँव में मिलिटरी कैम्प हुआ है, शायद इसीलिए। रामायणजी दरवाजे के बाहर जूता खोल रखता है। जूता पहनना और चाय पीने की आदत का लोग प्रयोग करते हैं, क्रांतिदल के विरुद्ध, डकैती की शिकायत के प्रमाण में। गाँव की साधारण जनता जानती है कि सत्पथ में रहने पर, उनलोगों की श्रेणी के किसी के लिए, इस विलासिता और व्यसन का खर्च जुटाना सम्भव नहीं है। इसीलिए जूता पहनकर सगिया की माँ के सामने जाने में लज्जा आती है।

'मोसम्मात ! ओ मोसम्मात ! घर में हो क्या ?'

'कौन है ?'

कहने का स्वर न मालूम कैसा तो लगता है। मन अभी तक अच्छी तरह स्थिर नहीं हुआ है, इसीलिए शायद ऐसा लग रहा है।

'मेहमान !'

शायद बूढ़ी भरोसा नहीं पा रही है। बगल वाले गोशाले में एक गाय बोल रही है। काफी दिन उसे मोसम्मात की गोशाला में बिताने पड़े हैं। वह गाय क्या उसके गले का स्वर पहचान सकी है ? वह गाय क्या अब तक बची हुई है ?

घेरे की फांक के भीतर से एक मृदु प्रकाश दिखाई पड़ रहा है। गोबर लगायी हुई सनाठी का प्रकाश निकट आ रहा है।

'कौन है ?'

'ढोंड़ाय !'

'ढोंड़ाय ?'

'सगिया !'

असंख्य प्रश्न ढोंड़ाय के मन में भीड़ बनाकर आते हैं। फरकी को थामकर खड़ा होना पड़ता है।

'अरी माँ, देख जाओ, कौन आया है। सुबह देखा इस फरकी के ऊपर एक कौआ दूसरे कौवे के मुँह में अन्न खोंस रहा है। तभी मैंने माँ को कहा था कि घर में अतिथि आयेगा। हमलोग माँ-बेटी दोनों मिलकर सोचती भर रही थीं कि न है भतार, पूत, न है सात पुर्खों में अपना कहने लायक कोई। डर से मरती हूँ। अतिथि कहने को है चोर-डाकू, नहीं तो फौजी कैम्प के सिपाही।'

इतनी देर में ढोंड़ाय की बात निकलती है। 'कब आई ?' जैसे काफी दूर से वह स्वर आया।

'यहीं, कुछ दिन पहले। आते ही मैंने माँ से तुमलोगों की सारी बातें सुनी हैं। देखूँ एक दफे 'मेहमान' का चेहरा अच्छी तरह ?'

सगिया सनाठी को ढोड़ाय की तरफ उठाती है। ढोड़ाय को लगता है जैसे सगिया पहले से जरा प्रगल्भा हुई है।

'यह क्या खाक चेहरा हो गया है घूम-घूम कर। कुछ खाते पीते हो, या ऐसे ही रहते हो ? फिर फौजी वर्दी बदन पर चढ़ाये हो। वह वर्दी आजकल सड़ गई है।'

नहीं, सगिया बदली नहीं है। ममताभरी झिड़कियाँ सुनते ही ढोड़ाय समझ जाता है। वह पहले से जरा काली हुई है, और बातचीत में उसका आत्मविश्वास काफी बढ़ा है। शायद प्रौढ़ता की सीमा पर पहुँची है इसलिए, अथवा शायद दुनियाँ के साथ इन कई सालों की यायावरी के कारण। ढोड़ाय गौर करने की चेष्टा करता है कि सगिया की दोनों आँखें उसकी आँखों में कुछ ढूँढ़ती फिर रही हैं या नहीं—पहले की तरह। नहीं। प्रश्न का उत्तर वह पा गया है। शायद उसे अब जवाब की जरूरत नहीं है। लेकिन सगिया ठीक वैसी ही है। नहीं तो क्या उसकी झिड़कियाँ भी कभी दुलार मालूम हो सकती थीं ?

बूढ़ी आकर ढोड़ाय से लिपट जाती है। तू तो हमलोगों को भूल ही गया है, बड़ा आदमी बनकर। तो भी, जो आज हमलोगों की याद आयी है, वह मेरे चौदह पुरखों का भाग्य है।

मोसम्मात की बात का ढोड़ाय प्रतिवाद नहीं करता है। बूढ़ी है। अच्छे मन से कह रही है। खैर था कि उसने जूते को बाहर रख लिया था।

सगिया क्या करेगी, समझ नहीं पाती है। खटिया पर कम्बल बिछा देती है, पैर धोने के लिए लोटे में पानी ला देती है। नारियल के तेल की शीशी उतार कर गरम करने के लिए सनाठी जलाकर बैठती है।

'देखो मेरी अकल। तबतक माँ से बातें करो।' तेल की शीशी ढोड़ाय के हाथ में देकर ही सगिया दौड़ती है गोशाला की तरफ।

'बेकार दौड़ रही हो सगिया ! बछड़ा खोल दिया गया है। अभी क्या एक को भी पाओगी वहाँ ?'

मोसम्मात से ही ढोड़ाय को सब कुछ मालूम होता है। जैसे अचानक वह चली गई थी, उसी तरह अप्रत्याशित-भाव से वह लौट आयी है। बीचवाले जीवन की दास्तान ढोड़ाय नहीं सुनना चाहता है। सगिया लौट आयी है, यही सबसे बड़ी बात है। सगिया की माँ न मालूम कैसी है ? सभी खबरें वह ढोड़ाय को सुनायेगी। बिदेसिया के दल के उस मूँछवाले हरामजादे ने फौज में न जाने क्या तो एक काम पाया है। कहते हैं कि उसे जगह-जगह जाकर फौज को गाना सुनाना होगा। जैसी सरकार, उसकी वैसी फौज। सगिया को उसने थोड़े ही छोड़ दिया था। वह उसी के बाद चली आयी है। मैंने उसे पूछा नहीं है ! उसने अपने ही जो कुछ कहना था, कहा है। जिस दिन वह आयी थी, उस दिन केवल उसने कहा था कि दो कोड़ी वर्ष की उम्र पार कर लेने पर लोगों की बातें मन पर चोट नहीं करती हैं।

उसके बाद फुस्-फुस् स्वर में ढोड़ाय के पास मुँह ले जाकर कहती है, टोले के लोग भी अब हम लोगों पर गरम हो गये हैं। भला होंगे नहीं ? तुम जब भागे न, उस बार टॉमी लोगों ने किसके घर में क्या किया था, वह तो सबका आँखों देखा हुआ है। दुनिया भर के लोग जानते थे कि टॉमी लोग मकई के खेत में नहीं घुसते हैं। इसीलिए गाँव की औरतों को रखा गया था मकई के खेत में। कौन कहता है कि ये नहीं घुसते हैं ? जाने दो वे सब बातें। भला गिदर कोइरी क्या पुराने द्वेष को छोड़ देता ?

बूढ़ी इतना बक सकती है ? यहाँ से दिखाई पड़ रहा है, सगिया ने चूल्हे पर न मालूम क्या चढ़ाया है। चेहरे के एक तरफ आग का प्रकाश पड़ा है। उसके च... जाने के बाद भी ढोड़ाय ने हाट में उसका यही रूप देखा था। घूंघट के साथ-सा... उसकी गम्भीरता उतर आई है।

इसी काम में वह अच्छी शोभती है। कितने दिन पहले के देखे हुए, वहाँ ... क आदमी की थोड़ी-सी तृप्ति के लिए नहीं, अपनी सारी एकाग्रता को सगिया ...ःशेष कर दिया है। दूसरे आदमी की तृप्ति के लिए नहीं, अपनी तृप्ति के लिए। इस ...दले में वह फिर से और कुछ नहीं चाहती है।

उसके लिए पकाना''' दूध दुहना''''न्योता देकर बुलाना, पीढ़ा डालकर बैठान... ...ाते समय एक के बाद एक सनाठी जलाना, उसके अकेले के लिए''''और किसी ...ाए नहीं''' ढोड़ाय को सोचने में भी बड़ा अच्छा लगता है।

कीर्तन की मत्तता दूर से कानों में आ रही है। अब शायद शेष होगा।

आंगन के घेरे के ऊपर से दिखाई पड़ता है। घने कुहासे के अन्दर जुगनू टिम...ाकर जल रहे हैं''''

मोसम्मात कहती है, 'हाथ पर जल डाल दो सगिया।'

सगिया हँस उठती है 'ढोड़ाय भी क्या मेहमान है, कि उसके हाथ पर जल डा... दना होगा।'

कहती है, लेकिन पानी ठीक ही डाल देती है।

'यह है सिरिपंचमी के मेहमानजी, तुम्हारे सोने की खटिया।'

'आज सिरिपंचमी है क्या ? और, क्या हम लोगों को दिन महीने का हिसा... भी है ?'

ढोड़ाय की इच्छा होती है, सगिया के पास दो-एक क्रांतिदल की बातें क... बहादुरी दिखाये, तथा और भी दुलार जतलाये। सगिया वह मौका नहीं देती है। ए... टूटी हुई कड़ाही में चूल्हे से आग ले आती है। लो, हाथ-पैर गरम कर लो। सिरि... पंचमी की जरा-सी अबीर वह ढोड़ाय के कपाल में लगा देती है। तुरत लगाये हु... नारियल के तेल पर अबीर चिपक जाती है। कम्बल के नीचे यह सुजनी ले लं... आराम होगा।

तकिये की, बहुत दिनों की संचित नारियल के तेल की सड़ी हुई गन्ध बुरी नहीं लगती है। मन के अन्दर इस गन्ध का परिचय अस्पष्ट हो आया है—धूप-बत्ती के बुझ जाने के बहुत देर बाद वाली फीकी सुगन्ध की तरह। ढोलक, खंजरी की आवाज अब सुनाई नहीं पड़ रही है। सुनाई पड़ने से अच्छा होता। बिल्टा अब शायद घर लौट रहा है। शीत के समय खाने-पीने के बाद एक बार कम्बल के अन्दर घुसने से फिर निकलने की इच्छा नहीं होती है।

आँगन के दरवाजे के बाहर एक प्रकाश दिखाई पड़ता है। ढोड़ाय उठकर किवाड़ की आड़ में जाकर खड़ा होता है। क्रांतिदल के आदमी के जीवन में यह सब बहुत बार घट गया है। जैसे कुछ लोग बाहर बातचीत कर रहे हैं। अन्धकार के अन्दर सगिया तथा सगिया की माँ, किसी का चेहरा नहीं दिखाई पड़ रहा है।

सगिया कुछ न बोलकर ढोड़ाय का हाथ पकड़ कर उसे खींच लाती है और बिछौने पर सुलाती है। फिर कम्बल और सुजनी से उसको आपादमस्तक ढाँक देती है। छिः! छिः! सगिया ने कैसी गलती कर डाली है। भीतर से दरवाजे की फरकी को बाँध देने से ही कुछ समय मिल जाता। कौन फिर इस रात को आया? सगिया की देखा-देखी मोसम्मात भी आँगन में उतरती है। हाथ में लालटेन है। किरासिन तेल जलाने वाले घर का आदमी देखता हूँ। कौन है?

'कहाँ हो जी मोसम्मात?'

'कौन है? गिदर-बहू! आओ, आओ! इतनी रात में? टोले के बाहर, तो मन के बाहर।'

'मन के बाहर होने से थोड़े ही आयी हूँ। आज टोले का, सिरिपंचमी का भजन हम लोगों के ही द्वार पर हुआ था न! इसीलिए सोचा प्रसाद और अबीर दे आऊँ दीदी को। तुम्हारे बेटे ने कहा—सो दे क्यों नहीं आती हो? दूर भी तो कम नहीं है। उस पर जैसा जमाना है, अकेले रास्ता चलने में दिन को ही साहस नहीं होता है, तो फिर रात का क्या कहना है!—उन मुँहबलों के उपद्रव से। काफी तकलीफ के बाद गनौरी के बेटे को साथ लेकर आयी हूँ।'

आजकल पैकारी जुरमाने का फौजी हाकिम गिदर मंडल की मुट्ठियों में है। इसीलिए कोई भी गिदर को क्रोधित करने को राजी नहीं है। वह भी इसी मौके पर जी-जान से मँड़र की गई मर्यादा फिर से पाने की चेष्टा कर रहा है। इसीलिए उसने घर में सिरिपंचमी के भजन का आयोजन किया था। और, सगिया के पास गिदर की बहू कृतज्ञ है। इसीलिए शायद आज प्रसाद और अबीर ले आयी है।

गिदर की बहू और गनौरी का लड़का अंधकार भरे शयन-गृह की ओर ताक रहे हैं। वे कहीं ढोड़ाय को तो नहीं देख रहे हैं! इन लोगों को बरामदे में उठ कर बैठने को कहा जायगा क्या? आग की कड़ाही लायी जायेगी क्या?

सगिया कहती है, 'माँ, प्रसाद और अबीर लो। ये लोग और

शीत में खड़े रहेंगे ?'

'नहीं, नहीं, मैं बैठूंगी नहीं। घर में दुनिया भर का काम छोड़ आयी हूँ।'

गिदर की बहू को विदा देने के लिए सगिया और मोसम्मात आँगन से निकलती हैं। दरवाजे के बाहर जाते ही गिदर की बहू कहती है—'मैंने जूते देखे हैं।'

हाथ की फुलौड़ी अचानक चील के झपट ले जाने के समय जिस तरह सारा मामला ही समझ में नहीं आता है, वैसी ही हालत होती है मोसम्मात और सगिया की। ढोड़ाय की भी कैसी अक्ल है ? तब वे घर में घुसने के पहले इसी बात की चर्चा कर रहे थे। सगिया कहती है, 'ओ-ओ-ओ-ओ-माँ। जरूर छोड़ गया है वह वैद। सफेद बैल खा भी नहीं रहा है, पी भी नहीं रहा है, दिनों-दिन अस्थि-पंजर निकलता आ रहा है। एक दिन बैल हाँकता हुआ जा रहा था। माँ ने उसे ही बुलाया। उसने कहा कि रोग कुछ नहीं है। देह में कीड़ा पड़ा है। इसीलिए ऐसा हुआ है ! थोड़ा हल्दी खिलाओ। किरासिन तेल में राख भींगो कर उसी से देह मल दो। एक दिन में अच्छा हो जायेगा। जले हुए कपाल में रामजी ने राख दी है, माना राख जुटी, लेकिन आजकल के दिन किरासिन तेल जुटाऊँ कहाँ से ?.....'

विदेसिया के दल के साथ सगिया ने इतने दिन बेकार नहीं बिताये हैं।

गिदर की बहू इन बातों से सन्तुष्ट हुई या नहीं, समझ में नहीं आता है। गनौरी का लड़का कहता है—'फौजी जूता है।'

'किसी फौज के आदमी से उस वैद ने खरीदा होगा।'

गिदर की बहू के कानों में इस बात का सुर एक अयाचित कैफियत-सा लगता है।

उन लोगों के दूर चले जाने पर सगिया माँ को कहती है, 'यह सब बातें ढोड़ाय से कहने की जरूरत नहीं है। एक दिन वह आराम से सोये।'

आज अपने घर में वह ढोड़ाय के दुर्वह जीवन को और अधिक भाराक्रांत नहीं करना चाहती है।

मोसम्मात गंभीर होकर तम्बाकू पीने बैठती है। उसके मन के अन्दर कुहासा जम आता है। उसकी लड़की शायद 'मेहमान' को बचाने जाकर फिर से एक कलंक का टीका ललाट पर पहन रही है। अब यह मामला रुके, तो खैर है।

प्रसाद खाने के बाद ढोड़ाय को लगता है कि अब बिल्टा से भेंट करने को जाना चाहिए। नहीं तो बाद में जाने से बिल्टा को भी असुविधा होगी। इसके अतिरिक्त क्रांति-दल का निर्देश है कि जिसके यहाँ खाओगे, उसके यहाँ सोना नहीं। काफी अनुभवी है यह निर्देश। यह बात न मान कर कब कौन कहाँ पकड़ा गया है, यह सब ढोड़ाय को ज्ञात है, इसीलिए आदेश अहेतुक नहीं लगता है ढोड़ाय को। वह प्रायः जबर्दस्ती ही, बिछौने से उठ पड़ता है। सगिया अवाक् हो जाती है।

'मुझे अभी जाना होगा, काम है।'

'इतनी रात में ?'

'रात को नहीं तो क्या ? सेंध क्या लोग दिन में काटते हैं ?' हँसकर ढोड़ाय मन के ऊपर वाले बोझ को हल्का कर देना चाहता है। उसे जाना ही होगा।

'हाँ, तुम लोग ही काम के आदमी हो।'

ढोड़ाय समझने की चेष्टा करता है कि क्या सोचकर सगिया ने यह बात कही। उसने परिहास तो नहीं किया ? ठीक समझ में नहीं आता है। मोसम्मात चौरे पर बैठकर तम्बाकू पी रही थी। थोड़ी-सी अबीर लगाकर ढोड़ाय उसे प्रणाम करता है। आज उसे मोसम्मात बड़ी ही अच्छी लगती है।

मोसम्मात भी ढोड़ाय के सर पर हुक्का से स्पर्श कर आशीर्वाद करती है, 'रामजी करें, तुम लोगों को सुमति हो। खाली रुपया कमा रहे हो, अब ब्याह-शादी कर संसारी बनो।'

प्रसाद की थाली से सगिया चीनी लेकर कपड़े के टुकड़े में बाँधती है और ढोड़ाय की वर्दी की जेब में उसे डाल देती है।

बूढ़ी कहती है, 'मिदर मंडल था इसीलिए चीनी जुटा सका था, नहीं तो आज कल क्या पूजा-परब करने का भी उपाय है ?'

यह कहकर वह स्वयं समझती है कि उसकी यह बात समयोपयोगी नहीं हुई है। झट सम्हाल कर वह कहती है 'ऐसे आने की क्या जरूरत थी ?'

""ढोड़ाय था ही कितनी देर। मात्र तीन-चार घण्टे होंगे। फिर भी उसके चले जाने पर घर सूना-सूना सा लगता है। जाड़े की रात में झींगुरों की आवाज से निःसंगता और भी अधिक महसूस होती है। ढोड़ाय की बात याद कर आग की कड़ाही को गोद के पास खींच लेने में संकोच होता है। आकाश-पाताल की चिन्ता कर निस्तब्ध शीतल मन को फिर से स्वाभाविक अवस्था में लाने की चेष्टा करनी पड़ती है। मोसम्मात को तो हुक्का है।

घर के निकट ही सियार बोल उठता है। आधी रात हो गई क्या ? उसके बाद कुत्ता भौंकता है। कुत्ते का स्वर कुछ टूटा-सा है। माघ के शीत में बाघ काँपता है, तो फिर कुत्ता को कौन पूछे ? गाँव का कुत्ता भला सियार के पीछे-पीछे इतनी दूर आया है ? सच में, ढोड़ाय की कैसी अक्ल है। कुत्ते, सियार भी तो जूते को बाहर से खींच ले जा सकते हैं।""म्याओ। म्याओ।""माँ और बेटी दोनों ही परस्पर के चेहरे की तरफ ताकती हैं। और किसी से भूल नहीं होती है। अब तक प्रायः समझ कर भी वे मन को फाँकी देने की चेष्टा कर रही थीं।

'तभी मैंने कहा था सगिया !'

'म्याओ !'

'कौन है ?'

'तेरा फूफा !'

फरकी ठेलकर टोले के लड़कों का दल आँगन में घुसता है। गनौरी के लड़के ने लौट कर मुहल्ले के दोस्तों को खबर दी थी। फौज का आदमी। फौजी जूते। गाँव के बाहर कर देने से क्या होता है? जात से तो कोइरी है। यह क्या कानी मुसहरनी है?

यहाँ आकर सभी देखते हैं कि फौजी फरार है। जूते नहीं हैं। सभी गनौरी के लड़के को कसूरवार करते हैं। जूते उसे ले जाने चाहिए थे। हाकिम के पास दाखिल करने के लिए। उसके बाद उन लोगों का सारा क्रोध जाकर ठहरता है सगिया पर।

स्वभाव जायेगा कहाँ? फिर जैसी की तैसी। फौज के आदमी के बिना आज-कल कहीं काम चलता है?····

सगिया कुछ नहीं बोलती है। ये लोग मुहल्ले के छोटे-छोटे लड़के हैं। पेट का बच्चा जीवित रहता तो वह आज इनसे कितना बड़ा होता। इन लोगों के पास अपने चरित्र की सफाई देने में भी घृणा होती है। और ढोड़ाय का नाम जान गया, तो शायद अभी गिदर मण्डल फौज में खबर दे देगा। शायद ढोड़ाय अभी भी नजदीक ही होगा।

'पहले एक बार टोले से बाहर किया था, अब देश से बाहर कराऊँगा। फौज का बाप भी तुम लोगों को नहीं बचा सकेगा।'

हँसी-व्यंग्य तथा गालियों की फुहार और आसन्न विपद् की आशंका से मोसम्मात दिमाग ठीक नहीं रख सकती है। यह ढोड़ाय ही हुआ है उसकी बेटी का काल।

'सुनो बच्चे!'

फिर मोसम्मात लड़कों को सभी बातें कहती है। एक बात भी वह नहीं छिपाती है। फौज के आदमी को घर में लाने की बदनामी की अपेक्षा ढोड़ाय को घर में आश्रय देने की बदनामी ज्यादा अच्छी है!

रामायणजी! चुप! चुप! आहिस्ता!

किन्तु लाख चेष्टा के बावजूद यह हल्ला चुपके से खत्म नहीं कर दिया जा सकता है। टोले के लोग भी तब तक चिल्लाने के लिए लाठी लेकर, पहुँच गये हैं। गनौरी के लड़के से वह खबर जानने के बाद मुहल्ले के बड़े लोग अपने में सलाह-परामर्श करने लगे थे।

जमे हुए कुहासे को चीरकर फौजी कैम्प की सीटी बज उठती है। रेशम के कीड़े वाले घर की ओर के बहुत-से टार्च का प्रकाश अन्धकार में दिखाई पड़ रहा है।

सीटी मारी है रे! भागो भागो! अब शायद आ पहुँचा।

रहते हैं केवल वे, जो लोग जा नहीं सकते हैं। लचुआ चौकीदार, मोसम्मात और सगिया।

····फौज पहले यहीं आये रामजी। तभी ढोड़ाय थोड़ा-सा समय पायेगा दूर चले जाने का!

□

रामायणजी का क्षोभ और निराशा

मास्टर साहब आदि को जेल से छुटकारा दिया गया है। मास्टर साहब ने छूटते ही छपा हुआ इस्तहार निकाला है। पटेल ने पढ़कर सुनाया।

'कांग्रेस के वे आदमी, जो आज भी फरार हैं, महात्मा जी के आदेशानुसार सरकार के सम्मुख जल्द निर्भीक चित्त के साथ हाजिर हो जायें। महात्माजी के इस आदेश के बाद किसी को छुपकर रहने का कोई अर्थ नहीं होता है। सर्वसाधारण को भी सूचना दी जा रही है कि इस महीने के बाद वे किसी फरार आदमी को कांग्रेसी समझने की भूल न करें। १९४२ ई० में, कांग्रेस के निर्देशानुसार जिन्होंने काम किया था, उनके विरुद्ध लाये गये उस समय के मुकदमों का सम्पूर्ण व्यय-भार हमलोग वहन करेंगे।'....

दल के अन्दर हल्ला शुरू हो जाता है। बकरी का दूध पीते-पीते मास्टर साहब की बुद्धि में भी बोतुहा-गंध आ गई है। जिनको फाँसी की सजा हो सकती है, उन्हें कहता है सरंडर करने के लिए। इसके बाद भी भला कोई क्रांतिदल को चंदा देगा? पकड़वा देगा, पकड़वा देगा। अपने लोग तो इतने दिन जेल में बैठकर मजा उड़ाते रहे। जिन लोगों ने प्राणों को हाथ में लेकर बाहर रहकर इतने दिन काम किया, उनके मुकदमे तक की पैरवी नहीं करोगे?

दल के कौन क्या मानी लगाते हैं मास्टर साहब के इस्तहार की, यह ठीक समझ में नहीं आता है। किन्तु, देखा जाता है कि पटेल कुछ दिनों के बाद हाकिम के पास 'सरंडर' करता है। आजाद एक काम से नेपाल जाकर फिर नहीं लौटता है। केवल रिवाल्वर ही नहीं, दल के दो हजार रुपये भी उसके पास थे।

रामायणजी को दुःख इस बात का है कि मोसम्मात और सगिया को पुलिस द्वारा पकड़े जाने की खबर पर क्रांतिदल ने पूँछ तक नहीं हिलायी, हालांकि स्पष्टतः उसने यह बात दल के लोगों से नहीं कही है। कहने से वे मिथ्यावादी रामायणजी के साथ तुरन्त झगड़ पड़ते। 'पूंछ तक नहीं हिलायी है।' कहने से हो जाता है? कितने सवाल, कितनी बहसें हुई थीं। नया प्रस्ताव पास हुआ था कि किसी काम से किसी के यहाँ अगर कोई जाय, तो कभी जूता खोल कर नहीं रखे।

यह बात असत्य नहीं है। लेकिन रामायणजी कहना चाहते हैं, दूसरी बात। औरतों की स्वीकारोक्ति लेते समय उनकी आँखों में मिर्च की बुकनी दी गयी थी—ऐसी जो एक बात चल पड़ी थी, उस पर क्रांतिदल ने दिमाग नहीं लड़ाया था। थोड़ी-सी खोज भी तो वह ले सकता था। नाक के सामने जो जुल्म कर रहा है, उसे सजा देने की हिम्मत अगर चली गई हो, तो आज इतनी पिस्तौल और कारतूस बनाने की क्या

जरूरत है ? उसके मन के अन्दर दल के विरुद्ध जो शिकायतें इकट्ठी हुई थीं, उनके साथ इसे भी उसने गूंथ रखा है। दल जैसा पहले-पहल अपना-सा लगता था, अब वैसा नहीं लगता है। ऐसा नहीं होता, तो अपने ही पास अपने ही विरुद्ध शिकायतें लानी पड़तीं ?

फिर भी जरूरत है जान बचाने की। इसके अतिरिक्त अभी काम भी क्या है ? एक साथ दो दिन एक जगह रहने का उपाय नहीं है। यहाँ तक कि चौकीदारों को भी देखने पर आजकल छिपना पड़ता है। जमाने लायक कोई चीज मन के कोने में नहीं मिलती है। कल सर छुपाने लायक जगह मिलेगी या नहीं, यह सोचकर मन को खराब करने में भी डर लगता है। रात को कुत्ते की आवाज सुनने पर धरफरा कर उठ जाना पड़ता है। घुन-लगे बाँसों में कीड़ा काटने की कुट-कुट की आवाज से भी घोड़े की टाप का भ्रम होता है। रात के अँधेरे में राह चलना पड़ता है। मैदान की गायें, भैंस तथा अन्य जानवर बरसात में सूखी जगह चुनकर खड़े होते हैं। इसीलिए रात को पानी और कादों के अन्दर की राह चलते समय पथ का अन्दाज लगाना पड़ता है—कहाँ उनकी आँखें जल रही हैं, यह देखकर रात किसी तरह कट जाती है ! पर दिन तो कटना ही नहीं चाहता है। घुड़सवार फौजी के घूमने-फिरने का नियम है रात को। लेकिन रात को, ड्यूटी में फांकी देकर वे सोते हैं, और दिन को घोड़े पर चढ़कर हाट जाते हैं। ड्यूटी और सस्ते में चीजें खरीदना, एक साथ करते हैं। इसके सिवा टोले-टोले में है सरकारी 'खुफिया'। दिन को इनकी नजर बचाकर चलना कठिन है।

कसकर पकड़ने के लायक मन के अन्दर कुछ भी नहीं मिल रहा है। इसके बाद क्या है, कोई नहीं जानता है। इतनी बातें हुईं, इतने तर्क हुए, पर रामायणजी को ऐसा याद ही नहीं आता है कि किसी ने एक दिन भी रामराज्य-स्थापित करने की बात कही हो दल में।

जान बचाने की अपेक्षा भी दल को ज्यादा जरूरत है रुपये की। इतने लोगों का खाना-पहनना चलाना ही होगा। अनिश्चित एवं प्रायः अज्ञात किसी उद्देश्य के लिए कारतूस तथा पिस्तौल की तैयारी का काम चलाये जाना होगा। क्रांतिदल के मुकदमे में विजन वकील तीन गुनी फीस लेता है। वह खर्च जैसे भी हो, जुटाना ही होगा। एक दो आदमी एक-एक गृहस्थ के घर जाने से खाने को तो भी मिल सकता है। लेकिन उसी में भय है—अगर गृहस्थ दुष्ट हो। इसके सिवा नये आदमियों को बन्दूक लेकर अकेला छोड़ने में भी डर-सा लगता है। कितने लोग बन्दूक लेकर भागे हैं, कोई ठिकाना नहीं है।

इतनी सावधानी के बावजूद रोज दल के अधिकांश लोगों के खिलाफ काना-फूसी सुनाई पड़ती है। यह केवल बाबूसाहब की तरह 'किसान' की वक्रोक्ति के माध्यम से नहीं। आजकल शिकायतें लाते हैं—घोड़े पर चढ़नेवाले गरीब दुकानदार, जूट की गाड़ी का गाड़ीवान, साफ-साफ भाषा में, क्रांतिदल के लोगों की बन्दूक दिखाकर दस-

पाँच रुपये लेने की शिकायतें। सब समझकर भी गाँधी कहता है : क्रांतिदल का नाम लेकर कोई बदमाश डकैती करता फिर रहा है। एक बार साले को पकड़ सकें, तो मजा चखायें !

सकरकन्द उखाड़ लिए गये खेत में खोंट-खोंट कर, तथा खोज-खोजकर जब ओर एक काली उँगली की तरह मोटी जड़ भी नही मिलती है, तब अगर दल के दो आदमी कहें कि देखें कुछ फरही-चूड़े आदि गाँव मे जुटाये जा सकते हैं या नहीं, तब उनसे कौन पूछने जाता है कि उनके पास पैसा है या नही। बात बढ़ाकर फायदा क्या है ?

इस अस्थिर तथा अनिश्चित जीवन मे सूक्ष्म अनुभूतियाँ क्रमशः भोथरी होती जाती हैं, भावना की धारा चलती है अप्रत्याशित गढ़े की ओर। सबों की त्रस्त और चंचल आँखो पर सन्देह की छाया पड़ती है। कोई किसी पर विश्वास नही कर पाता है। छोटे-छोटे विषयो पर झगड़ा खड़ा हो जाता है। उत्साह का फेन मिट रहा है। मन मजबूत अवलम्बन चाहता है। मंथन-दण्ड पर फेन लगा रहे, तो बचा जा सकता है। इसीलिए रामायणजी दिनों-दिन अपने को रामायण में अधिकाधिक समेट लेते हैं।



एन्टनी से साक्षात्कार

रामायण की आड़ में जाकर भी रामायणजी के मन की अस्थिरता दूर नहीं होती है, उसके अन्दर डूबे हुए रहकर भी वह मन में बल नहीं पाता है। किसी चीज में स्वाद नही मिलता है। एक सर्वग्रासी उदासीनता की छाया मन पर आ पड़ी है। शायद रामायण जी की तरह दल के और भी बहुतों के मन का भाव इसी प्रकार है। कौन जान पा रहा है ! *आजकल दल के लोग जो सोचते हैं, वह बोलते नहीं हैं,* जो बोलते हैं, वह करते नहीं हैं। सरदार की भी सुबह-शाम की पूजा बढ़ गई है।

फिर कहने आता है कि सगिया आदि के गिरफ्तार होने के समय—'पूँछ नही हिलायी है।' यह बात गलत है। दल कहाँ, दल की पूँछ ही मर तो है। वही कूदती है छिपकली की कटी हुई पूँछ की तरह, प्राण को बचाने की इच्छा मे कूदती है। नुकसान को पूरा कर लेने के लिए कूदती है। प्रधान जड़ कट गई है। अभी बचना हो, तो छोटे-छोटे विधि-निषेध और बड़ी-बड़ी बातों के बीच ही बचना होगा। जान बचाने की चेष्टावाली वैचित्र्यहीनता मात्र को ही प्यार करना होगा। दल की मिटिंग की विराम-हीन तुच्छताओं मे आनन्द पाना होगा।

नहीं तो होगी इस रामायणजी जैसी हालत । दल के साथ वह समान ताल में पद-क्षेप करता हुआ चला है, लेकिन ठोकरें खाता हुआ वह दौड़ा है चिन्ताहीनता से उत्साहहीनता के पथ पर, फिर उदासीनता से वितृष्णा की ओर। पथ ख़त्म हो आया है।

इसीलिए आजकल मिटिंग के समय भी वह बहुत दूर पर रामायण खोलकर बैठा रहता है। कोई कुछ नहीं कहता है। दल का उत्साह मर गया है। सभी जानते हैं कि गिरानीवाला परिवार जब छप्पर मरम्मत का पैसा नहीं जुटा सकता है, तब दीवाल के हाथी-घोड़े की 'रँगोलियों' पर अच्छी तरह रंग चढ़ाता है।

इसीलिए आजकल हुई है केवल मिटिंग। मिटिंग। मौका आ रहा है, तैयार हो, तैयार करो—ये बातें गत ढाई वर्षों से उन्होंने प्रत्येक मिटिंग में सुनी हैं।

आज की मिटिंग में मनोहर झा ने कह ही डाला 'फिर कब आयेगा मौका ?'

गांधी बिगड़ उठता है। 'कल का छोकरा है। स्कूल से भागकर क्रांतिदल में आया है। मैंने के रोयें-जैसी मूंछ-दाढ़ी बढ़ाकर चेहरा बदल सको, वह भी तुमसे नहीं होगा। और केवल बड़ी-बड़ी बातें। तुम हो भादों का सियार। भादों का सियार समझते हो न ? एक सियार भादों महीने में पैदा हुआ था। असाढ़-सावन इसने देखा ही नहीं था। जनमते ही वह कहता है—इतनी वर्षा तो मैंने कभी नहीं देखी है। तुम्हारे साथ भी वही बात है।'............

सबके मन की बात कही है 'इस्कुलिया' ने। लेकिन कोई उसका पक्ष लेकर कुछ कहने का साहस नहीं करता है। ऐसा करने से ही वह या तो कापुरुष होगा, नहीं तो गुप्तचर। केवल इसी भय के कारण किसी ने कुछ नहीं कहा, ऐसी बात नहीं, घोड़े पर चढ़ा हुआ राजकुमार विजा सिंह बनने का इनलोगों का स्वप्न बहुत दिन पहले ही टूट गया है। सभी मन-ही-मन समझते हैं कि इस खेल के दाँव में वे हार गये हैं। इन लोगों में अधिकांश अपने न लौटने का रास्ता बन्द कर आये हैं। कुछ शायद अभी भी घट जा सकता है—यह मिथ्या सान्त्वना भी अगर अपने मन को न दे सके, तो फिर ये क्या लेकर बचेंगे ? वह भी आज बन्द कर देना चाह रहा था मनोहर झा खुल्लम-खुल्ला आलोचना कर। गांधी ने ठीक जवाब दिया है।

किन्तु आज की मिटिंग इसके बाद और नहीं जमेगी। 'इस्कुलिया' के दल ने इसी बीच बीड़ी लेकर छीना-झपटी करना शुरू कर दी है। अभी शायद भयानक झगड़ा शुरू हो जायगा। रामायण ज्यों-की-त्यों सामने खुली पड़ी हुई है। अन्यमनस्क भाव से वह एक घास की फुनगी तोड़कर दाँतों से टुकड़े-टुकड़े कर काटता है। सामने की तरफ एकटक देखता है, लेकिन कुछ भी नहीं देख रहा है, मन न मालूम कहाँ उड़ गया है !

एक नया छोकरा अभी-अभी आया। चुप ! चुप ! फिर कौन आया ! आने की कोई खबर थी, क्या गांधी ? सभी के हाथ कमर पर चले गये हैं। कंधे पर एक थैला

। ! अभी भी अच्छी तरह मूंछें नहीं आयी है। तब जरूर 'इस्कुलिया' है। कमीज और ाफ पैंट से ही पता चल गया है। इस तरह के लड़के तो हर-हमेशा आते-जाते रहते , क्रांतिदल के आज के इस दुर्दिन में भी। एक बड़ी-बड़ी दाढ़ी-मूंछवाला आदमी ाजाक करता है, 'गांधी, पहले ही पूछ ले न, माँ को छोड़कर रह सकेगा या नहीं ? नहीं ो फिर हरेश्वर की तरह रात को भूत के डर से रोना-पीटना करेगा।'

इस हंसी की अभ्यर्थना से वह लड़का थोड़ा अप्रस्तुत हो जाता है। सभी उठे ाकर खड़े हुए हैं। तो भी थोड़ा-सा समय बीतेगा! मोड़ के अन्दर से गांधी का स्वर ाई पड़ता है—

'तरवन मिस्त्री ने इतना कम लोहा क्यों दिया ? इतने से क्या होगा ?'

'कहा है थोड़ा-थोड़ा ले आने को। एक साथ ज्यादा लाना ठीक नहीं है।'

'घर कहाँ है ?'

'जिरानिया।'

ामायणजी के कान खड़े हो उठते हैं। वह सीधा होकर बैठता है। छिः ामायण पढ़ते-पढ़ते उसने हाथ जूठा किया है। हाथ का तिनका फेंककर वह हाथ धोने ः लिए पानी उठाता है।

'नाम ?'

'एन्टनी।'

'असल नाम कहिए। हमलोगों के पास छिपाने की जरूरत नहीं है।'

'एन्टनी ही मेरा असल नाम है। हमलोग किरिस्तान हैं।'

'किरिस्तान ?'

किरिस्तान आया है क्रांतिदल में! सभी इस अद्भुत जीव से सटकर खड़े होते । ! सरकार का चर तो नहीं है ? किरिस्तान, मुसलमान, ये क्या कभी क्रांतिदल में ाते हैं ? पैकारी जुर्माने की लिस्ट में भी इन लोगों का नाम नहीं चढ़ता है।

'सरदार!'

सरदार को न मालूम क्या इंगित कर मुंह में बीड़ी लिए दो इस्कुलिया हँसते- ंसते एक दूसरे की देह पर ढल पड़ते हैं।

सरदार कनौजी ब्राह्मण है। क्रांतिदल में आया है, इसलिए वह जात नहीं दे सकता है। गत वर्ष एक मुसलमान नाच-गाना सिखाने के लिए कोई पन्द्रह दिन दल के ाथ था। उन दिनों खाने के समय सरदार दूसरी पंक्ति में बैठता था, उसी पर यह ारिहास हुआ। फिर एक किरिस्तान आया! अब जमेगा सरदार का!

सरदार कटकटाई आँखों से उन दोनों लड़कों की तरफ ताकता है। फाजिल हीं के ?

गांधी की जिरह अभी तक शेष नहीं हुई है।

'आपके पिता जी का नाम ?'

'मेरे पिता जी का नाम था सामुअर।'

'शादी की है आपने ?'

'नहीं।'

'जिरानिया में कहाँ पर घर है ?'

'शहर में नहीं। धांङर टोली जानते हैं ? पक्की के किनारे, जिस तरफ फौजी हवागाड़ी का कारखाना और टॉमी अफसरों का घर बना है, उसी तरफ हमलोगों का घर था। उस समय धांङर टोली के लोगों को हट जाना पड़ा था। टोला भर के लोग चले गये मोरंग, खेतीबारी करने। आदमी ज्यादा हो जाने पर धांङर लोग नहीं रहते हैं। केवल किरिस्तान लोग नहीं गये थे। कलस्टर साहब ने स्वयं आकर ततमा टोली में सभी किरिस्तानों के लिए रहने की जगह बना दी है। इसीलिए हम लोग अभी रहते हैं ततमा टोली में।'

'हमलोग के मानी ?'

'मैं और मेरी माँ !'

'तुमलोगों का गुजर-बसर कैसे चलता है ?'

'जिरानिया में सात फौजी अफसर—'टॉमी' रहते हैं। घास का अफसर, खेती का अफसर, गाय-घोड़े का अफसर, मोटर मरम्मत के कारखाने का अफसर —सब मिला-जुलाकर। उन लोगों के खाने-पीने की देख-भाल करती हैं बेटिस साहब की विधवा मेम, और उसे मदद करती है मेरी माँ। फादर टुडू पादरी साहब हैं न, उन्होंने ही वह काम दिलवा दिया है।'

रहने दो, सरवन मिस्त्री विश्वस्त आदमी है। उसने जब भेजा है, तब और सोचने की जरूरत नहीं है। इतनी बातें कोई बनाकर नहीं बोल सकता है। गांधी प्रश्न करना बन्द करता है।

'बुरा न मानना ! नये आदमी से यह सब पूछना हमलोगों का नियम है।'

रामायणजी जूठा हाथ धोकर लोटे को जमीन पर रखना भूल जाते हैं। पहले तो मस्तिष्क का भीतरी भाग पल भर के लिए सहसा बुझ जाता है, फिर ठंडी झुन-झुनी भरती है। मस्तिष्क में एक अज्ञात और अप्रत्याशित उत्तेजना का प्रवाह आकर टकराता है। चेतना के साथ ही साथ यह सारी देह और मन में फैल जाता है।

....जैसी उसने आशंका की है, अगर वैसा ही हुआ ? चारों तरफ से सभी उस लड़के को घेर कर खड़े हो गये हैं। हटने का कोई लक्षण नहीं है। केवल कुछ सर, वर्दी और पैरों का मेला है। इधर, स्वयं बढ़कर उस लड़के का चेहरा अच्छी तरह देखने का भी साहस रामायणजी को नहीं है। कौतूहल की अपेक्षा आशंका उसके मन में अधिक है। ऐसा होने पर भी इस सत्य को वह स्वीकार करना नहीं चाह रहा है, फिर भी, उसे देखना ही होगा। जब तक न देख ले, तब तक उसका निस्तार नहीं है।

उस तरफ बढ़ते समय उसका दिल काँपता रहता है। अंत में लगता है, वह मिथ्या ही इतने दिन अपने मन को प्रबोध देता आया है। उस लड़के का रंग साहबों की तरह है, केश पिंगल और आँखें बिल्ली-सी ! दिवालिया अगर होना ही हो, तो

खरीद लो हाथी—इसी प्रकार का एक लापरवाह तथा मानसिक बहाना कर वह भीड़ को ठेल कर उसमें प्रवेश करता है ! मन के अन्दर क्षीण आशा है कि बुरा समझ लेने से अच्छे के होने की सम्भावना बढ़ती है ।

जय हो रामचन्द्रजी ! धन्य तुम्हारी करुणा है ! लड़के का रंग साफ-चिकना काला है । आँखें, केश सभी काले हैं, उम्र के अन्दाज से काफी जवान चेहरा है । कितनी *उम्र हुई होगी ! पन्द्रह साल भी तो अभी तक नहीं पूरे होंगे....*

अपने जीवन के सबसे बड़े विपद् से आज बच गया है ।

""वह, जो बिना हुए नहीं रह सकता है । अभी भी चाँद और सूरज आकाश से मिट नहीं गये हैं । सब ने मिलकर अखाद्य-कुखाद्य भी इसे जरूर खिलाये होंगे ! किन्तु उसी से क्या अपना रक्त गैर हो जाता है ? गंगाजी में मैला गिरने से क्या पानी खराब होता है ? लड़का तो सोना है । गलाने और जलाने से ही सोने का असली रूप खुलता है । देह का दाग खोदकर फेंका नहीं जा सकता है, और यह तो लड़का है । अपना कहने के लायक तो उसे बस यही एक चीज है ।

गांधी परिचय करवा देता है, 'ये हो रामायणजी है ।'

'रामायणजी !'

इनका नाम एन्टनी ने सुना है, क्रांतिदल से लौटे हुए स्कूल के एक दोस्त से ।

यह लड़का रामायणजी को नमस्कार करता है । नम्र तथापि काफी प्रतिभावान है वह । कितनी दूर से वह पैदल आया है !

एकदम ठेहुने तक धूल लगी हुई है ! अभी तक उसने मुँह-हाथ धोने का अवसर नहीं पाया है ।

'ए इस्कुलिया लोग ! तुम लोग क्या सिर्फ गप्प ही करोगे ? कम-से-कम पहले दिन भी तो एन्टनी के लिए थोड़ा खाने-पीने का बन्दोबस्त कर दो ।'

वर्दी के जेब वाले कपड़े के टुकड़े में बाँधी हुई चीनी को रामायणजी, लोगों की नजर बचाकर, लोटे में घोलता है, इस श्रान्त लड़के को थोड़ा-सा शरबत पिलाने के लिए ।

□

नया नाग-पाश

रामजी की कृपा से रामायणजी ने अपना खोया हुआ धन फिर से पाया है । लार-चाटकर, उलट-पलट कर—कितने ही प्रकार से वह उसे देखता है ! दर्शन के इच्छुक को जैसे तृप्ति ही नहीं होती है— रोज-रोज देखकर भी । मन की शिथिल जड़ें...

ने फिर से कुछ रसदार मिट्टी का स्पर्श पाया है। वातावरण के विरामहीन सूखेपन से और उसका जी नहीं उमसता है! जोर से पकड़ने के लायक चीज पायी है। दुनिया आज उसके प्रति अनुकूल है। मन का मैल कट गया है, भीतर की ग्लानि समाप्त हो गई है। अजस्र क्षमाशीलता से मन-प्राण भर उठा है।

··· सब अच्छा है, सभी अच्छे हैं। ऊपर से मात्र बुरा ही नजर आता है, इसीलिए लोग गलत समझते हैं। दल के लोग जो छोटी-छोटी तुच्छताओं के अन्दर अपने को डुबा रखते हैं, उनका मन छोटा है, इस कारण नहीं, वे रामराज्य न ला सकने के दुःख को भूलना चाहते हैं, इसलिए। आत्म-हत्या से बचना चाहते हैं, इसीलिए। ततमा टोली के समाज ने भी उसे उचित ही सजा दी थी। बेटा होकर उसने बाबा के मन को दुःख दिया था। अभिमान से बाबा को देश-त्यागी होना पड़ा। जाति के देवता 'पंच' के मुँह से वह अभिमान बनकर निकला था, मन के निकट से प्रियजन को छीन लेने की व्यथा कैसी होती है, वह समझा देने के लिए। आँसुओं से बाबा का वक्ष प्लावित हुआ था। और, उसका मन इतने दिनों तक फूट-फूट कर रोया है। बाबा थे पुण्यात्मा आदमी, इसीलिए वे रामजी के मंदिर के द्वार-द्वार घूमते फिर सके हैं। और, रामायणजी है पापी आदमी, इसीलिए उसे भटकना पड़ रहा है मघइया डोम की तरह। रमिया पर भी उसने अन्याय किया था, अविचार किया था। सीताजी से भी अधिक दुःख उसे सहना पड़ा है। पच्छिम की तबीयत और ऊँचा संस्कार भूलने पड़े हैं। जिस आदमी का आश्रय लिया था, वह भी मरा है आसाम के चाय बागीचे में। अभी पादरी का पैर चाट कर और 'टॉमियों' के पत्तल चाट कर उसे दो-दो पेट चलाने पड़ रहे हैं। एन्टनी से ही ये सब बातें सुनी हैं। अपने ही से ऐन्टनी जो कहता है, सो कहता है, नहीं तो क्या रामायणजी जिरानिया की कोई बात उस लड़के से पूछ सकता है? रामायणजी को सबसे अधिक यह जानने की इच्छा होती है कि सामुअर हिन्दू हो गया था, ऐसा ही सभी जानते हैं, पर वह फिर किरिस्तान हुआ कैसे? उस पादरी के लिए ही तब रमिया के जात-धर्म सब नष्ट हो गये हैं। शायद कितने ही तरह के खाद्य-अखाद्य खाने पड़े हैं उसे। जो हो, फिर भी पादरी साहब आदमी अच्छे हैं। एन्टनी ने ही गांधी से कहा है कि वह जिरानिया जिला-स्कूल में पढ़ता है। स्कूल में उसे पढ़ने का व्यय देते हैं पादरी साहब। बड़े लोगों का स्कूल है वह, वहाँ लाडली बाबू का लड़का पढ़ता है, राज पारभंगा का लडका पढता है। फिर पादरी साहब को क्या

अभी भी कुछ कर डाल सकते थे। तब एन्टनी के लौट जाने की भी राह नहीं रहेगी। स्कूल में लड़कों को क्या पढ़ाया जाता है? इस्कुलिया लोगों को आज के दिन भी क्रांतिदल के नाम का मोह दूर नहीं हो रहा है। एन्टनी अभी 'सोनार बाबू' ने कब रेडियो में क्या कहा था, उसी की चर्चा करता है।

उसे इस निरर्थकता के आवेष्ठन से बचाना ही होगा। उस नासमझ लड़के का भविष्य वह नष्ट होने नहीं दे सकता। क्रांतिदल को सहायता करने की इच्छा हो, तो जिरानिया से भी की जा सकती है। जरूरत पड़ने पर वह सरवन मिस्त्री से सामान यहाँ पहुँचा देने का काम कर सकता है। एक बार अच्छी तरह फँस जाने से फिर बन्धन काटना कठिन होता है।.....अभी भी, इस लड़के के मन में पेंच नहीं घुसा है। उस दिन भी उसने पूछा था, 'अच्छा रामायणजी, स्कूल में जो मैंने सुना था कि एक दिन फौज की गोली तुम्हारी देह में लगी थी, लेकिन जेब की रामायण में उसके लगने की वजह से तुम बच गये थे। जरूर वह छर्रे वाला कारतूस था, है न?'

'धत् बुद्धू कहीं के! इन बातों पर तुम लोग भी औरतों की तरह विश्वास करते हो! क्यों स्कूल में पढ़ते हो, समझ में नहीं आता है।'

लड़का हतप्रभ हो गया था।

उस दिन खूब शोरगुल मचा कर सभी कुएँ पर स्नान कर रहे थे। एन्टनी अपने माथे पर जल डाल रहा है। वह जल उसके माथे और पीठ से लुढ़क रहा है। किन्तु उसकी गर्दन के पास वाली थोड़ी-सी जगह ज्यों-की-त्यों सूखी ही रह जा रही है। मानो अपने बदन पर ठीक-ठीक पानी ढालना नहीं सीखा है उस लड़के ने। रामायणजी से और रहा नहीं जाता है। दो तो जरा बाल्टी, कहकर वह कुएँ के पास जाकर खड़ा होता है। ऐसे-ऐसे उस जगह को भिगो दो! दूसरे सभी इस्कुलिया हँस पड़ते हैं। इस लड़के के प्रति रामायणजी के खिंचाव को सबने लक्ष्य किया है। रामायणजी यह हँसी झेल लेता है।

वह उस वक्त अपने भाव में ही विह्वल है—इस लड़के के माथे पर अगर एक चोटी रहती, तो क्या सुन्दर शोभती?

सबसे खुशी की बात यह है कि यह लड़का भी रामायणजी को पसन्द करता है। ऐसा बेअक्ल लड़का है कि घर से एक कम्बल तक साथ नहीं लाया है।....

रामायणजी को चुपके से उसने कहा था 'ये सब मिलिटरी अफसरों की कम्बल हैं न? कोने की तरफ अंग्रेजी हरफ लिखे हैं। उन्हें देखते ही सभी समझ जायेंगे कि उन्हें कहाँ से मिला है। इसीलिए संकोच के कारण नहीं लिया मैंने।'

'लज्जा किस बात की है, सुनूँ तो जरा? क्रांतिदल में क्या मिलिटरी रिवाल्वर नहीं है?'

रामायणजी यह कहता तो अवश्य है, फिर भी न मालूम क्यों, मिलिटरी अफसरों पर कृतज्ञता के बदले आक्रोश है।

'लज्जा क्या है, मेरी ही कम्बल में सोओ। मैं कह रहा हूँ, सोओ।'

सबके सो जाने पर वह उस निद्रित लड़के की पीठ सहला देता है। अँधेरे में उस लड़के के चेहरे की तरफ ताककर वह न मालूम किसके चेहरे के साथ उसका सादृश्य सोचने की चेष्टा करता है। स्वयं हवा खाने के बहाने एक पुराने अखबार से उस लड़के की देह से मच्छड़ों को भगाता है। हाय रे, पीठ पसीझ गयी है। जमीन से अभी भी गरम भाप उठ रही है न !

निद्राविहीन आँखों के सामने ततमा टोली की मधुर स्मृतियों के चित्र जीवन्त-हो उठ रहे हैं एक पच्छिमी लड़की का चित्र''''दीया देने आयी है गोसाईं थान में।''''

रामायणजी ने समझ भी नहीं पाया था, कब उसने गुनगुनाते हुए रामायण की चौपाई गाना शुरू किया था ! बचपन में, बाबा के साथ भिक्षा माँगने के लिये जाते समय जैसा गाता था !''''सहसा उसे ख्याल आया है। पागलपन नहीं है ? गत एक साल से दल के किसी ने गाना गाया है, ऐसा स्मरण नहीं आता है। सेन्ट्री ड्यूटी में था एक इस्कुलिया। वह नींद से भरे स्वर में चिल्लाता है, 'किसका रस जगा है इस आधी रात में ? पूरे दल को पकड़वाओगे क्या ?'

खैर ! रामायणजी पहले ही सावधान हो गया है। नये इस्कुलिया लोगों में कोई जानता भी नहीं है कि रामायणजी भी गा सकता है।

निम्रित इस्कुलिया लोगों में से कोई खांसता है। फिर एक के बाद एक, सभी इस्कुलिया लोगों के खांसने की आवाज रामायणजी के कानों में आती है। तब सब कोई इतनी देर मटकी मारकर पड़े हुए थे ?

बहुत बदमाश हैं ये लड़के। एक कह रहा है 'रामायण पढ़ना छोड़ दिया है आजकल रामायणजी ने कुछ दिनों से, देखा है न ?' पसन्द नहीं करने से भी रामायण जी मन ही मन स्वीकार करता है कि यह बात मिथ्या नहीं है। लेकिन हाँ, छोड़ देने की चीज है क्या वह रामायण पढ़ना ? यों ही नहीं पढ़ता है, माने यह—नहीं हो पाता है—और क्या।'''

□

हृदय-अन्वेषण का फल

उस दिन पामार साहब की टूटी हुई नील कोठी में था क्रांतिदल। पामार साहब बाप-दादों के जमाने में नोट छापते थे। अभी इस तरफ इतना जंगल है कि कोई आदमी नहीं आता है। लोग कहते हैं, यहाँ बाघ रहता है।

दिन की लू बहुत ही घटी है। किन्तु इस वक्त भी गरमी नहीं घटी है। एन्टनी बहुत देर से कम्बल पर करवटें बदल रहा है। दो बार उसने लोटे से पानी पिया है। रामायणजी से और रहा नहीं जाता है।

'क्या रे, क्या हुआ है एन्टनी ? उफ-आह क्यों कर रहे हो ? नींद नहीं आ रही है क्या ? जवाब क्यों नहीं देते हो ? दम घोंटनेवाली धूल में उसक-पुसक कर रहे हो ? यह लड़का कुछ कहेगा भी ?'

देह पर हाथ देकर वह देखता है—गरम, आग-सी देह।

उसी रात एन्टनी को शुरू हो जाती है, 'सुलवाई।' पछिया की धूल की आंधी बैसाख में प्रति वर्ष इसका विष फैला देती है पूरे मुल्क में—यह बात जिरानिया जिले का हर कोई जानता है। छोटे बच्चों को यह बीमारी हुई तो और निस्तार नहीं, बड़ों में तो अनेक व्यक्ति बच भी जाते हैं। इसीलिए इस धून की आंधी का समय आने पर माताएँ सशंकित रहती हैं। दूसरी बीमारी में तो झाड़-फूंक, मन्तर-जन्तर भी चलता है, पर इसका उपाय नहीं है। बेहोशी वाले ज्वर से आरम्भ होता है और चार ही दिन में खत्म ! जो बचता है, लोग उसके सम्बन्ध में कहते हैं कि बगभेरन्ड का रस बताशे के अन्दर डालकर खिलाया गया था, इसीलिए बच गया है। रोगी के मर जाने पर कलेजा फाड़कर रोते समय लोग बगभेरन्ड के रस की असफलता की बात सोचते भी नहीं। इसके बाद वाले कई दिनों तक रामायणजी ने अकेले हाथों यम से लड़ाई की।

खैर था कि वे उस वक्त नील कोठी के पास थे, इसीलिए उस लड़के ने सर छुपाने लायक जगह पायी थी। 'जरूरी मिटिंग' बैठती है। दल के सभी लोगों का एक जगह अधिक दिन रहना ठीक नहीं है। उस पर यह बीमारी भी संक्रामक है। अच्छे हो जाने पर भी शक्ति आने में बहुत समय लगेगा। रामायणजी को एन्टनी की सेवा करने के लिए बहुत दिनों तक यहाँ रह जाना पड़ेगा—इसे दल के लोग इतनी अच्छी तरह जानते हैं कि वे इस विषय में प्रस्ताव पास करना भी भूल जाते हैं। केवल तय होता है कि कान्तलाल नाम का एक आदमी रामायणजी की सहायता करने के लिए यहाँ रहेगा। वह आदमी काफी चालाक और चतुर है।

जाते समय गांधी रामायणजी को आश्वासन दे पाता है। इस बीमारी में वयस्कों को भय कम है। एन्टनी जवान लड़का है। दवा से ज्यादा जरूरत है सेवा और पथ्य की।'''

उसके बाद कई दिन ढोड़ाय वहाँ से हटा नहीं था। कान्तलाल को उसने रोगी के निकट भी नहीं आने दिया था। तुम सिर्फ रोज सुबह एक बताशे में बगभेरन्ड का रस ले आओगे, उसी से काम होगा।'''

सब कुछ जाननेवाला कान्तलाल कहता है, 'यहाँ की मिट्टी में अबरख है। लोग चाहे जो कहें, पर मेरी तो धारणा यह है कि धूल के साथ अबरख के कण पेट में जाने की वजह से यह बीमारी होती है। अबरख को गलाने के लिए 'वालिस' के जैसा और कुछ नहीं है। अबरख भी तो आग से नहीं जलता है। डालो तो यहीं उस पर एक बून्द वालिस, धुँआ निकल जायेगा, सो मैं कह देता हूँ।'

'अच्छा, तुम बगभेरन्ड का रस तो ले आओ।'

रामायणजी चाहता है कि यह आदमी दूर ही रहे। वह लड़का जब वेदना—

से अधीर होकर 'मायगे' कहकर कराहता है, रामायणजी अपने को स्थिर नहीं रख सकता है।

क्या हुआ बेटा ? कहोगे भी तो ! नाभी के चारों तरफ धीरे-धीरे दाब दूं ? अब थोड़ा आराम लग रहा है ? जरा अच्छा हो ले बेटा, तब तुझे ले जाऊँगा तेरी माँ के पास। माँ के पास जाने के लिए बड़ा बेचैन हो रहा है ? रोग होने से वही होता है। माँ जिस तरह रोगी की देख-भाल कर सकती हैं, उस तरह क्या कोई दूसरा कर सकता है ?

पन्द्रह साल का वह लड़का रामायण जी को लगता है, छोटा-सा बच्चा है। अपनी अक्षमता की बात रामायणजी स्वयं जितनी जानता है, उतनी कोई नहीं।

....वह एन्टनी का कोई नहीं है। कोई नहीं। सरकारी कानून का मुहर उस पर पड़ गया है। नहीं हो वह कोई एन्टनी का ! रहे वह लड़का अकेला अपनी माँ के पास। रमिया को दुनिया में और कोई नहीं है। बचा दो रामचन्द्र जी इस लड़के को। इसके चले जाने पर वह क्या लेकर दुनिया में रहेगी ? किरिस्तान है, इसलिए पैरों से ठुकराओ नहीं।

लड़के को जरा तन्द्रा आने पर वह उसके अजाने में रामायण निकालकर उसके माथे से स्पर्श करवा देता है। होने दो किरिस्तान ! रामचन्द्रजी को थोड़े ही जाति-विचार है। गुह, चांडाल को उन्होंने गोद में खींच लिया था। हाय रे, देखा नहीं था उसने, रामायण की बगल में एक तरह के कीड़ों ने घर बनाया है, ठीक घुन लगने की तरह पन्ने एकदम सट गये हैं, खोले नहीं जाते हैं। एक-एक कर खोलने में बहुत समय लगेगा। अभी रहने दो !....

रामायणजी की पुकार से भगवान ने मुंह उठाकर देखा था।

अब उस लड़के का विपद् दूर हो गया है। अब वह थोड़ा निरोग होने की ओर है। रामायणजी ने सेवा में जरा-भी त्रुटि नहीं होने दी है। माँ पास नहीं रहने की वजह से वह लड़का कहीं यह न सोचे कि उसकी देख-भाल अच्छी तरह नहीं हो रही है। इसी में वह थोड़ा चिड़चिड़ा हो गया है।....लड़का क्या अकेला माँ का ही होता है ? फिर भी माताएँ लड़के पर जादू कर देती हैं। बाप बेगाने का बेगाना ही रह जाता है।....इस रोग में जरूरत है सेवा और पथ्य की। कह तो गया था गाँधी जाते समय। किन्तु उसका इन्तजाम क्या कर गया ? पथ्य आयेगा कहाँ से ? 'बार्लिस' कहने से ही नहीं हो जाता है, उसमें भी पैसे लगते हैं। और आजकल जैसा आग-सा मूल्य है चीजों का ! जैसा दल है, उसकी वैसी ही व्यवस्था है। इन कई दिनों में खबर तक लेना किसी जरूरी नहीं समझा।.... नहीं, गाँधी रुपया पैसा देगा कहाँ से ? दल के पास पैसे कहाँ हैं ? कान्तलाल को कहने से ही वह अभी तुरंत किसी तरह जुटा कर ले आयेगा।....पर वह रामायणजी किसी तरह नहीं होने देगा।....अँग्रेज बादशाह की भी एक समय धनी था पामार साहब। इसीलिए न एक जमाने में उसके नाम से नोट चलते थे। उसी की टूटी हुई कोठी में बैठकर देखो रामजी, रामायण पढ़ा हुआ बाप

इस बेटे के मुँह में 'बालिश' नहीं दे पा रहा है।

…कमर के बटुये से रामचन्द्रजी का चित्र आंका हुआ तथा फारसी लिखावट वाले सिक्के की माला निकाल कर वह कान्तलाल के हाथों में देता है। गंज के बाजार में सुनार के पास बेचना। सो और नहीं कहना होगा कान्तलाल को। वह आदमी जरूरत से ज्यादा होशियार है।

कान्तलाल अवाक् होकर रामायणजी के मुँह की ओर ताकता है। इस चीज को लेकर दल में उसकी कितनी बदनामी हुई थी। रहने दो रामायणजी! यह तेरे मृत लड़के की चीज है। मैं, जैसे भी हो सभी चीजें जोगाड़कर ला रहा हूँ।

कान्तलाल आदि के जोगाड़ करने का रहस्य रामायणजी जानता है।

नहीं, नहीं। कान्तलाल के हाथ में माला थोंस देते समय रामायणजी से उस ओर देखा नहीं जाता है। नष्ट हो, तो हो। बाढ़ में बहे हुए दो हृदयों के बीच का एकमात्र सेतु। पीछे के उस पथ में रामायणजी और कभी भी नहीं लौटेगा। हो सके, तो मन के ऊपर से स्मृति के छिलके को वह हल्के हाथों उतार कर फेंक देगा' शायद वह अपने से ही खिसक जायेगा।

अब किसी तरह, यह लड़का जिसका है, उसे सही-सलामत लौटा देने से वह बच जायेगा। उसके बाद…

उसके बादवाली बातें भी लड़के के अच्छे होने की शुरुआत के साथ रामायणजी धीरे-धीरे सोचना आरम्भ करता है। बहुत दिन पहले की, मन के नीचे दबी बातें ऊपर उठती हैं। उस पश्चिमी औरत की बात उसके पूरे मन को घेर लेती है। इतने दिन वह अपने मन को धोखा देता आया है। मन को घेर रखने के लिए कितनी ही तरह की कड़ी दीवारें उठाने की चेष्टा की है। पानी के ऊपर घड़ियाल की देह का कितना अंश नजर आता है? अधिकांश भाग तो नीचे ही रहता है। उसे ज्ञात हो चुका है कि एक युग पहले की वह स्मृति मात्र ही असल है, बाकी सब तो है उसके ऊपर वाले छिलके हैं। प्याज के छिलके की तरह परत-दर-परत सजाया हुआ है,''''सामुबर मर गया है चायबगान में''''

□

स्वर्ण सीता

रात को गाड़ीवान गाड़ी चलाने को राजी नहीं होता—मिलिटरी के डर से। काफी कष्ट के उपरान्त कान्तलाल एक गाड़ी जुटाता है। घुड़सवारों से मुलाकात हो जाने पर उन्हें आठ-आठ आने पैसे देने पड़ते हैं। वह, जो गाड़ी भाड़े पर ले रहा है, वही देगा, इस शर्त पर गाड़ीवान राजी होता है। सांझ-रात को ही फौजी लोग टहल

लगाते हैं, इसीलिए आधी रात को गाड़ी से ढोड़ाय आदि रवाना होते हैं।

'नमस्ते कान्तलाल जी ! कह देना गांधी और सरदार को कि मैं एन्टनी को उसकी माँ के पास पहुँचा देने गया हूँ।'

कान्तलाल के साथ-ही-साथ क्रांतिदल का शेष संबंध भी मन की आड़ में हो जाता है। घर से भागा हुआ ढोड़ाय फिर से उस घर जलानेवाली औरत के पास लौटा जा रहा है, रामायणजी नहीं, ढोड़ाय ! रामायणजी पीछे ही छोड़ आया है क्रान्तिदल की दैनन्दिनी तुच्छता और विधि-निषेधों वाला ढाई साल का साथ। ढोड़ाय को लग रहा है कि इतने दिनों में वह अपने को खोज पा रहा है। इतने दिन के सुप्त-जीवन के मुरझाये मन ने नवजीवन—दण्डिया का स्पर्श पा आँखें खोलकर ताका है।

लड़का अभी भी देह में बल नहीं पाता है। ढोड़ाय ने रामायण के झोले को कम्बल से मोड़कर उसकी पीठ का सहारा बनाने के लिए तकिया बना दिया है। रुग्ण लड़का है, सोने को पाता तो अच्छा होता, लेकिन उसका भी क्या कोई उपाय रख छोड़ा है फौज ने ? पक्की से बैलगाड़ी नहीं जाने देगी। ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर क्या गाड़ी में सोया भी जा सकता है ? रोग के बाद एकदम नन्हा-सा, बहाना करनेवाले बच्चे की तरह हो गया है एन्टनी। गुस्सा, अभिमान, और बातचीत के माध्यम से वह ढोड़ाय के बहुत निकट आ गया है। एन्टनी की बातें खत्म ही नहीं होती हैं।

'धांङर टोली के लोगों को कलस्टर साहब ने जमीन देनी चाही थी। किन्तु फौज के आस-पास रहने की वजह से वे लोग किसी तरह राजी नहीं हुए।....जाने के पहले भी बूढ़ा इतवारी माँ के पास आकर कह गया कि धांङर टोली का भात हम लोगों के भाग्य में नहीं है, तो फिर उसके लिए सोचकर क्या करोगी एन्टनी की माँ ? माँ कितना समझाती है कि टॉमियों को तुम लोग जितना खराब आदमी समझते हो, उतने खराब वे नहीं हैं। इस पर इतवारी क्या कहता है, जानते हो ? कहता है कि वे किरिस्तानों के लिए अच्छे हो सकते हैं, हिन्दुओं के लिए नहीं ! रुपया जब दे ही रही है सरकार, तब जमीन लेकर खेतीबारी ही करूँगा नेपाल में।'....

...धांङर टोली का शुक्रा, इतवारी, बड़का बुद्धू, छोटका बुद्धू, करमा-धरमा का नाच, सनीचरा मृदंग बजा रहा है....

घर के लिए कष्ट हो रहा है, इसीलिए शायद वह लड़का वहाँ की इतनी बातें कर रहा है।

'टॉमियों में सभी खराब आदमी नहीं हैं। एक लँगड़ी और पगली लड़की है, रेंग-रेंग कर चलती है, गोसाईं थान के पास म्युनिसिपैलिटी के ट्यूब-वेल की बगल में रहती है, वह टॉमी को देखते ही उसे कहती है—साहब वह क्या है ? बन्दूक है ? एक सियार मार देना तो मुझे उस बन्दूक से। साहब लोग कहते, कल देंगे। और रोज उसे सिगरेट देते हैं। एक-आध पैसा नहीं, दो-दो आने, चार-चार आने पैसे। वह पगली तो किरिस्तान नहीं है ?'

...अगे फुलझरिया, बरगद के ठूसे का थोड़ा-सा अंचार ढोड़ाय को दे जा।

'''मानों मेंड़र-गली का स्पष्ट स्वर ढोड़ाय को सुनाई दे रहा है।

'रतिया छड़ीदार नाम का एक बूढ़ा है ततमा टोली में। फौजी लोगों को नीम का दँतवन देने का ठीका उसने कैसे पाया था, जानते हो रामायणजी? एक हगरा मूली भेंट लेकर एकदम बड़े साहब के ऑफिस में जाकर वह हाजिर हुआ। साहब तो हँसकर लट्टू हो गये। कहीं वह आदमी दुखित न हो, यह सोचकर, एक मूली साहब ने ऑफिस में ही बैठकर खायी। साथ-ही-साथ उसने रतिया छड़ीदार को दँतवन की ठीकेदारी दे दी। रतिया छड़ीदार क्या किरिस्तान है? किरिस्तान होने का क्या दुःख है, वह जो किरिस्तान नहीं है, वह नहीं समझेगा। ततमा टोली में हम लोग क्या शौक से आये हैं? फिर भी सभी वहाँ हमें घृणा करते हैं। घर लेकिन अच्छा है। आँगन में कुआँ है। नहीं तो म्युनिसिपैलिटी के ट्यूब-वेल में बड़ी दिक्कत होती! घर था बाबू लाल चपरासी के लड़के दुखिया का। बाबू लाल ने अब पेन्सन लिया है। इसीलिए दुखिया की नौकरी हुई है डिस्टिबोर्ड की दरवानगिरी में। वहीं दुखिया को क्वाटर दिया गया है। खाली घर में, पेन्सन के बाद चाय की दूकान खोलेगा, बाबू लाल ने ऐसा तय किया था। अभी वहाँ दूकान अच्छी तरह चल सकती है। इसीलिए तो बाबू लाल को क्रोध है हम लोगों पर।'

चाय की दूकान! ढोड़ाय को स्मरण आता है, उसे भी एक दिन बाबा ने दूकान खोलने को कहा था। कितनी कल्पनाएँ हुई थीं उस पर। लेकिन वह चाय की दूकान नहीं हुई।

'तो एन्टनी, तुम्हीं लोग वहाँ क्यों नहीं एक दूकान खोलते हो?'

लड़का शान्त क्यों हो गया! अच्छा वही कहो, झँपन आ गया है। दुर्बल शरीर है! अच्छी तरह सो जाओ एन्टनी। इस झकझोर में भला सोओगे कैसे? धूल की यह आँधी भी शुरू हो गई दिन के बढ़ने के साथ-ही-साथ! ततमा टोली की कथा सुनकर ढोड़ाय को तृप्ति ही नहीं होती है। कुछ ही देर बाद वह अपनी आँखों से सब चीजें देखेगा। फिर भी तीर्थ-यात्री का व्याकुलता भरा मन नहीं मानता है। 'अवध वहाँ जँह राम नेवासू' जहाँ राम रहते हैं, वही अयोध्या है। बड़ी अच्छी लगती है यह बात। वह कई बार मन-ही-मन इस पंक्ति को दुहराता है। ढोड़ाय ततमा टोली की वर्तमान छवि को अपनी कल्पना पर लाने की चेष्टा करता है, किन्तु पन्द्रह साल पहले की तथा, उससे भी पहले की ही छवियाँ केवल उसके मन में मूर्त हो उठती हैं। उस जमाने की उसकी परिचित दुनिया बालवाली मिट्टी बनकर उसके मन के गड्ढों को भर जाती हैं। लड़के के माथे में धूल लग रही है। ढोड़ाय जरा सूरज को आड़ बनाकर बैठता है।'''किरिस्तान होने का क्या दुःख है, वह जो किरिस्तान नहीं है, नहीं समझेगा।

इतने दिनों की बन्ध्या प्रतीक्षा हठात् नयी सम्भावनाओं का इंगित पा रही है।

पन्द्रह साल पहले ततमा टोली की पंचायत ने जो किया था, वह रुपये खर्च कर सकने पर, आज भी शायद सम्भव होगा। भला करेगा नहीं? रुपया पाने से ही

करेगा। गोसाईं थान को भेड़ों की जोड़ी 'कबूलती' करेगा। जिस पंचायत का मँड़र गाड़ी हाँकता है, छड़ीदार दँतवन की ठीकेदारी करता है। मँड़र का लड़का राजमिस्त्री है, उस पंचायत को क्या और विष-दांत हैं ?

दूर, पक्की के पेड़ों की कतार, इतनी धूल में भी दिखाई पड़ रही है, धुएँ की तरह। पंडुकी विरामहीन बोले जा रही है। धाङरटोली के लोग उस जमाने में कैसी चालाकी से पंडुकी पकड़ते थे। पहले एक पंडुकी पकड़कर फिर पंडुकी की बोली की नकल करते थे। यह बोली जिस पंडुकी ने सुन ली उसकी खैर नहीं, साथी पाने का दुर्वार आकर्षण उसे वहाँ खींच ले जायेगा ही।

बेलवाड़ी पंछी 'हुक-हुक' कर बोल रहा है। शायद वह अपना साथी ढूंढ़ रहा है।

....तुम लोगों को आज नहाना नहीं है क्या ? बेलवाड़ी पंछी कब से बोल रहा है ? कैसा बैल है ? बैल की देह का 'चमोकन' वहाँ पहुँचकर भी चुना जा सकता है ?

लग रहा है बिलकुल उसी दिन की बात है। दूर, निकट आ गया है। झिड़-कियाँ भी उसकी कितनी मीठी थीं। क्यों न हो ? पच्छिम की लड़की थी न ?

गाड़ीवान गाड़ी रोकता है। यहीं तक बैलगाड़ी को जाने दिया जाता है। धूल की गन्ध बदल गई है। पहलेवाली वह परिचित धूल की गन्ध आँखें बँधी रहने पर भी ढोड़ाय बतला सकता था। जहां उस जमाने में रेवन गुनी का घर था, वहाँ अब केवल उसके लीची के दो पेड़ वर्त्तमान हैं। गाछ के नीचे मचान पर फौज की वर्दी पहने कई आदमी हैं। औरत भी हैं वहां, शायद लीची के पेड़ के नीचे बैठक जमा लिया है।

कहीं भी बेर, मैन कांटा, कामिनी अथवा सेमल के पेड़ की निशानी तक नहीं है। कई लड़के-लड़कियाँ धूप से झुलसे हुए मैदान में गोबर उठा रहे हैं। उनमें दो हाफ-पैंट पहने हैं। उसके दल की लड़कियाँ ततमानी लग रही हैं। बचपन में ढोड़ाय आदि इस धूप से झुलसे हुए मैदान में आग लगाते थे। आजकल के लड़के शायद मिलिटरी के डर से वैसा नहीं कर सकते हैं।....बकरहट्टा का मैदान लेकिन हरा बना हुआ है। एन्टनी दिखाता है। वे घास के खेत हैं। उधर 'हाथी घास' है। हाथी-घास घोड़े नहीं खाते हैं, गायें खाती हैं। कुट्टी काटकर खिलाना पड़ता है। इधर 'गोलोमर' घास है। घोड़ों के लिए बक्से में पैक की हुई घास आती है, रेलगाड़ी से।

ऐसी धूप है ! आकाश में गोसाईं की तरफ ताक कर वह देखता है कि तीन पहर दिन चढ़ने में और ज्यादा देर नहीं है। लड़के का मुंह गरमी से लाल हो उठा। अपना कुरता खोलकर वह एन्टनी के माथे में लपेट देता है। ढोड़ाय के एक कंधे में है कम्बल से लपेटा हुआ रामायण का झोला। लड़का उसके कंधे का सहारा लेता हुआ चल रहा है। अभी भी वह पैरों में शक्ति नहीं पाता है। उसे सूरज की तरफ ताकते देख एन्टनी कहता है, 'दो बजे, अभी। वह ततमा टोली के लोगों की कतार चली है हाथी घास में पानी पटाने। एक से लेकर दो बजे तक खाने की छुट्टी है।'

मरनाधार काठ का पुल वैसा ही है। पुल के बल्ले पर बचपन में उसने जो

छूरी से काटकर तारा बनाया था, वह अस्पष्ट हो जाने पर भी अभी मालूम देता है। पुल के पास बड़े-बड़े चबूतरे बनाये गये हैं।

एन्टनी कहता है, इनमें बारहों महीने पानी रहता है। वह जो बगल वाले कटोरों को देख रहे हो न, उनमें गायें ज्यों ही मुँह डालेंगी, वे पानी से भर जायेंगे, ज्यों ही मुँह उठा लेंगी, पानी नहीं रहेगा।''''

उसकी गर्व से निकली हुई बातों का सुर ढोढ़ाय के कानों से खत्म नहीं होता है। गर्व की ही तो बातें हैं।

पहले यहाँ रास्ते पर ढोढ़ाय आदि द्वारा कनैल की कौड़ी खेलने के गड्ढे रहते थे। आजकल लड़के वह खेलते नहीं हैं क्या?

'जरा बैठोगे क्या एन्टनी, पेड़ के नीचे?'

'नहीं, एकदम घर जाकर बैठा जायेगा।' बैठने से थोड़ा समय मिल जाता। एन्टनी उसके कंधे पर हाथ रखे हुए है। उसके वक्ष की आकस्मिक धड़कनों को एन्टनी जान सक रहा है क्या? मन शेष घड़ियों में दुर्बल-सा लग रहा है। अपने इतने दिनों के आत्म-विश्वास को उसने हठात् खो डाला है। शायद इस दाढ़ी मूँछवाले फरार ढोढ़ाय को रमिया पहचान ही नहीं सकेगी। रमिया का मन अभी क्या चाहता है, वह तो ढोढ़ाय भी नहीं जानता है।

''' सारी दुनिया के द्वार पर सर पीट-पीटकर ढोढ़ाय लौट आया है तुम्हारे पास। तुम्हारे आकर्षण से, तुम्हारे दु:ख की बात सोच कर। उसी के लिए रामचन्द्रजी ने तुम्हारी सर्जना की थी। उसी के साथ तुम्हारा जीवन बँधा हुआ है। ढोढ़ाय अपमान की बात भूल गया है, आज उसे कोई अपमान-बोध नहीं है! बिना गर्व वह अपने को सौंपा देने आया है। तुम भी भूल जाओ बीचवाले युग की सारी बातें। जीवन की रामायण के बीच के अध्याय लेई से सटे रहें। खोलने की जरूरत नहीं है उन पन्नों को। तुम्हारे दु:ख को अगर ढोढ़ाय ही नहीं समझता, तो फिर कौन समझेगा?

रामचन्द्रजी के अलावा ढोढ़ाय के मन में शक्ति देने का और कोई सम्बल नहीं है। इसीलिए उसने कम्बल की गठरी को कसकर पकड़ा है।

एन्टनी जिस घर में ले जाता है वह ढोढ़ाय का अपना घर है। इसे ही उसके, चले जाने के बाद, दुखिया की माँ ने दुखिया को दिया था!

बाड़ से धँसते हुए दिवार से लगने के समय वह एक अहश्य हाथ का इंगित महसूस करता है'''

'''बैल के दोनों 'नाद' नहीं हैं। वहाँ दो मिट्टी के स्तूप ऊँचे होकर खड़े हैं।'''' हाकिम ने एन्टनी की माँ को वह मकान दिला दिया है। 'एन्टनी की माँ' शब्द रमिया को शोभा नहीं दे रहा है। वैसे लगता है कि हाकिम कर रहे हैं, पर हाकिम के हाथों से दुनिया में ये सब कौन करवा रहे हैं, उनकी खबर कितने आदमी रखते हैं?

'माँ जरूर घर आयी है। दो बजे अफसरों का खाना हो जाने पर माँ खाना लेकर घर आती है।'

एन्टनी बुलाता है, 'माँ, कहाँ हो ?'

आँगन में घुसते ही ढोड़ाय कम्बल की पोटली को चौरे के कोने पर रखता है। फिर वहीं बैठ जाता है। मन की उत्तेजना को कुछ घटाने के लिए। इसी कोने से पीठ का सहारा लगाकर ढोड़ाय के गाँव छोड़ने के दिन रमिया बैठकर छठ-परब की चीजों का पहरा दे रही थी। मुड़े हुए तुलसी-दल की मिट्टी की वेदी पर खटाई सूख रही है।

घर के भीतर से गले का स्वर सुनायी पड़ रहा है। रमिया का स्वर कुछ बदला-सा मालूम हो रहा है। अपना परिवर्त्तन अपने को ही पता नहीं चलता है। कम दिनों की बात थोड़े ही है!

'कौन है रे ? वही कहो। यह क्या चेहरा बना है ? रोज समझती थी एन्टनी की चिट्ठी आ रही है, सो वह चिट्ठी आज भी आ रही है, कल भी आ रही है। रहा नहीं गया, तो मैंने कल तालझड़ी के मिशन में चिट्ठी लिखवायी, ठीक ही समझी थी। बीमारी हुई थी! कौन-सी बीमारी ? ठहरो एक मिनट, बिछौना बिछाऊँ! बिना गये नहीं चल रहा था तालझड़ी के पादरी साहब से भेंट करने ? तू मुझे कितनी तकलीफें देता है। माँ होता, तो समझता। मर्द वह नहीं समझते हैं। मेरा कपाल ही जो जला हुआ है। और फिर किसकी झाड़ है, वह भी तो देखना होगा! उसी बाप का तो लड़का है।'

एन्टनी माँ का स्वभाव जानता है। ये सब बातें एकबार शुरू हो जाने पर माँ नहीं रुकेगी, यह वह जानता है। इसीलिए शायद माँ को शान्त करवाने के लिए ही बरामदे में ढोड़ाय को दिखाकर कहता है—'यही मुझे अपने साथ लाये हैं।'

'यहाँ बैठे क्यों हो ? लड़का कह रहा है कि तुमने उसकी बीमारी के समय बहुत कुछ किया है। एक तो तुम मुझसे बहुत कम उम्र के लगते हो, उस पर तालझाड़ी के मिशन के आदमी हो! सो तुम्हें, मैं आप नहीं कह सकूँगी, यह पहले ही कह देती हूँ।'

ढोड़ाय को जैसे चेतना नहीं है। खाली रंग की साड़ी पहनी यह प्रौढ़ा औरत ही एन्टनी की माँ है। चेहरा अस्पष्ट रूप से परिचित-सा लगता है। जैसे कभी उसने इसे पहले देखा हो। आइने के प्रकाश की झलक-सा सहसा स्मरण होता है—मोर्ली साहब के घर की वह 'आया' जिसे लेकर साहबों के घर के बावर्ची और अरदली के बीच उस जमाने में काफी हलचल थी। बहुतों के साथ इसकी आशनाई थी। धाङर टोली के पक्की मरम्मत करनेवालों के दल की चर्चा की एक बहुत बड़ी खुराक थी, इसके साथ सामुअर की आशनाई वाली बात! रमिया क्या तब...

एन्टनी की माँ तब तक जम कर बैठी है ढोड़ाय के पास। अपने विरामहीन दुर्भाग्य की बातें वह कहे जा रही है।

'''''इन लोगों की झाड़ ही ऐसी है। इसका बाप शादी के बाद जितने दिन एक साथ रहा है, मुझे जला खाया है। नशा-भांग कर सनीचरा धांङर की बहू को लेकर भागा था। वह जिन्दा है या मर गया है, उसकी खबर दस-बारह साल से नहीं है। मरने पर हड्डी जुड़ायी होगी। केवल शादी के बाद ही उसने मुझे जलाया है ? शादी के पहले भी क्या कम किया है! वह काण्ड अगर सुनो, तो कहूँ।'....

वही काण्ड ढोड़ाय सुनना चाहता है। सुनना चाहता है या नहीं, यह सोचने की अभी क्षमता नहीं है···रमिया ?'····अतल शून्यता के अन्दर वह कुछ अस्पष्ट बातों के आवर्त्त में क्रमशः उलझ रहा है। कुरवाघाट के मेले में जुएँ की दूकान के सादे छक्के का काँटा वन-वनाकर घूम रहा है। कहाँ जाकर रुकेगा ?

'कहने की भी है कौन बात ? लड़का बड़ा हुआ है। अपना तो तीन काल गुजर चुका, एक बाकी है। अब लाज ही क्या, शर्म ही क्या ?'

फिर स्वर नीचाकर वह कहती है : यह जो मकान देख रहे हो न, यह बाबूलाल चपरासी के लड़के ढोड़ाय का है। उसकी बहू से शादी करने के लिए उसने पंचों को रुपये खिलाकर अपना जात-धर्म खोया था। वह बहू तो एक मरे हुए बच्चे को प्रसव करने के साथ मर जाती है। उस लड़की का दोष था या नहीं, सो भगवान जानते हैं। सुनती तो हूँ कि उसे बिना खबर दिये ही पंचों ने ऐसा किया था। उस बार साहब पादरी लोग यहाँ से चले गये थे न, इसीलिए एन्टनी के बाप को हिम्मत पड़ी थी गोसाई थान में भेड़ की बलि देने की। उस समय एन्टनी मेरे पेट में था। राँची में जाकर साहब पादरी को पकड़ती हूँ। साहब तो गुस्से से आग हो उठे—एन्टनी के बाप के जात देने की बात सुनकर। साहब खुद आकर गुजर-बसर के पावने के मुकदमे की धमकी देकर किसी तरह हम लोगों की शादी कर देते हैं।····इस लड़के का मुँह देखकर ही उस अभागे से मैंने शादी की थी। नहीं तो अपने लिए सोचती तक नहीं। जबतक क्षमता है, खटकर खाऊँगी। प्रभु के पास प्रार्थना है, जब शरीर की शक्ति चली जायेगी, तब बचना न पड़े। नहीं तो क्या यह लड़का मुझे कमाकर खिलायेगा ? मैं उसके स्कूल के खर्च के लिए कहाँ-कहाँ गई, और कहाँ नहीं ? अरे, नहीं पढ़ोगे तो वही साफ-साफ कहो न। कमाकर खाने की उम्र हुई है। फौज के साहब को पकड़कर एक नौकरी ही जुटा देती हूँ। अनिरुध मोख्तार के लड़के ने हवागाड़ी मरम्मत के कारखाने में मिस्त्री का काम सीखना शुरू किया है। तुम नहीं सीख सकते हो ? नहीं तो, तो यहीं दूकान लगाओ। बिजन वकील के नाती की गोसाईं थानवाली चाय की दूकान चल रही है या नहीं ? भला मिलिटरी लोगों के रहते भी नहीं चलेगी ! सो नहीं, स्कूल नागा कर चले तालफड़ी के मिशन में ! यह देखो ! एकदम भूल ही गयी हूँ। पानी लाती हूँ, गोर-हाथ धोओ। जो भी हो, थोड़ा खा-पी लो। एन्टनी को केला खाना मना है क्या ? आज अच्छे केले लाई हूँ मेस से।'

बातें अन्त तक शायद ढोड़ाय ने सुनी भी नहीं थी। कई बातों की बालू गिरने की वजह से उसके शरीर और मन की सभी यन्त्रणाएँ सजग हो गई हैं। जूए के खेल में वह सब कुछ हार गया है। अवचेतन अवस्था में आँगन से बाहर निकल आता है। इस सीमाहीन और रिक्त जगह के अन्दर 'पक्की' या न मालूम किस नाम की एक अपरिचित सड़क से वह चला है। ठीक अनुताप नहीं, हताशा की ग्लानि ने उसकी निःसंगता को और भी निविड़ और भी दुःसह बना डाला है। एकदम अकेला है वह इस दुनिया में आज। हृदय के बोझ के दबाव से उसका दम घुटा-सा जा रहा है।····

आसमान में दिन का चक्का घुमानेवाले गोसाईं पश्चिम की ओर झुके हैं। उनके काम में विराम नहीं है। नीचे गोसाईं थान के गोसाईं हिम्मत हारकर जंगली दीमक का स्तूप बन गये हैं। पश्चिम में धूल की आंधी ने जिद पकड़ी है कि वह रुकेगी नहीं। धुंधली आंखों में एक आकृति क्रमशः स्पष्ट हो उठती है। सर्वग्रासी शून्यता के बीच इस पथ पर पैर रखने के लायक थोड़ी-सी कड़ी भूमि है। सीधी चली गयी है यह कचहरी, जेलखाना तथा और भी कितनी दूर। और ज्यादा दूर वह नहीं जाना चाहता है। जेल में सगिया है। चीनी भी मीठी है और गुड़ भी। फिर भी लोग चीनी ही मांगते हैं। और, चीनी न पाने से, तब गुड़ ?

अपनी सभी पूंजी खत्म कर डालने के बाद जैसे उसे याद आया है बहुत दिन पहले के चाल में खोंसे रुपयों की बात। ढोड़ाय चला है सरेंडर करने एस० डी० ओ० साहब के पास।

इक्कावाला चिल्लाता है—'एक सवारी ! कचहरी ! कचहरी ! चार आने !'

पंजाबी बसवाला चिल्लाता है—'कचहरी ! शहर ! तीन आने ! तीन आने ! कचहरी !'

एस० डी० ओ० साहब इजलास से उठ जायेंगे, तो शायद आज उसे जेल नहीं ले जाया जायेगा। रात भर थाना-हाजत में ही रख दिया जायेगा। ढोड़ाय बस में बैठता है। उसे जल्दी-जल्दी पहुंचना है एस० डी० ओ० साहब के पास।....

एन्टनी की मां शायद अब तक कह रही है—यह क्या है रे कम्बल में लिपटा हुआ ? वह आदमी छोड़ गया। रामायण ? तब वह आदमी किरिस्तान नहीं था ? तालझड़ी के मिशन से आया था, इसलिए मैंने सोचा, शायद वह किरिस्तान है। इसीलिए यहां न खाकर वह चला गया। आयेगा अभी बाजार से खाकर यह सब लेने के लिए।

क्रांतिदल के लोग कहेंगे 'कांग्रेस के बड़े नेताओं को सरकार छोड़ रही है, इसीलिए मौका देखकर 'सरंडर' किया है, 'कायर' ने।'

बूढ़ा इतवारी धांङर अगर रहता, तो दंतहीन मुंह से हंसकर बोलता—'ढोड़ाय आदि ढोढ़ा सांप की जात हैं। चाहे जितना भी नोचें, डंक मारें, तड़पायें, किन्तु आजीवन उनके विष-दांत नहीं उगते !'